संस्कृत वर्ष के उपलक्ष्य में

Catalogue of Sanskrit Manuscripts of Rampur Raza Library Rampur





RAMPUR RAZA LIBRARY

RAMPUR-244901 (UP) INDIA

Catalogue of Sanskrit Manuscripts
of
Rampur Raza Library Rampur



Catalogue of Sanskrit Manuscripts of Rampur Raza Library Rampur

Compiled by:
Dr. Farha M.A. Ph.D.

Foreword by:
Dr. Vidya Niwas Misra
Former Vice Chancellor,
Sanskrit University, Varanasi

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR 244901 (U.P.) INDIA

RAMPUR RAZA LIBRARY PUBLICATIONS
RAMPUR 244901 (U.P.) INDIA

संस्कृत वर्ष के उपलक्ष्य में

About the book

Name of the Book	:	Catalogue of Sanskrit Manuscripts of Rampur Raza Library, Rampur
Compiled by	:	Dr. Farha M. Phil, Ph.D. (Sanskrit)
Published by	:	Dr. W.H. Siddiqi (Former Director, Archaeological Survey of India) Officer on Special Duty Rampur Raza Library, Rampur
Edition	:	A.D. 2000
Qty	:	500
Printed by	:	Diamond Printers, Delhi
Price	:	Rs. 650/= Or $ 20/- Or £ 15/-

ISBN : 81-87113-42-1

RAMPUR RAZA LIBRARY
HAMID MANZIL, RAMPUR 244901 (U.P.) INDIA

Contents

List of Plates

1- A Page from Janamapatri of Husain Ali Khān son of Nawab Hāmid Ali khān.

प्रस्तावना

रामपुर लाइब्रेरी रामपुर यूँ तो अरबी फारसी की पाण्डुलिपियों के ग्रन्थागार के रूप में बहुत प्रसिद्ध है। इस लाइब्रेरी में अनेक महत्त्वपूर्ण संस्कृत पुस्तकें भी हैं जिनकी संख्या लगभग 453 है । इनमें कुछ सचित्र पाण्डुलिपियाँ भी हैं। अधिकतर पाण्डुलिपियाँ साहित्य विषय की हैं, जिसमें स्तोत्र संग्रह सबसे अधिक है । कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ ज्योतिष शास्त्र तथा तन्त्र की भी है । इन पाण्डुलिपियाँ की वर्णनात्मक सूची तैयार करना कठिन कार्य था । डॉ० फराह ने अत्यन्त परिश्रम से यह कार्य पूर्ण किया तथा संस्कृत विषय के शोधार्थियों के लिए अभिगम्य बनाया। इससे न केवल संस्कृत पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में जानकारी बढ़ी अपितु रामपुर रजा लाइब्रेरी के सम्बन्ध में भी जिज्ञासा बढ़ी । रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में संस्कृत ग्रन्थों के फारसी तथा अरबी में अनुदित ग्रन्थ भी हैं। जैसे सुमेरेचन्द कृत वाल्मीकि रामायण का फारसी अनुवाद । सचित्र होने के कारण इका महत्व बहुत अधिक है संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची में कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ आचारप्रदीप, भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा मल्लारिसहस्रनाम, भस्मगायत्री, प्रबोधचन्द्रव्याकरण उल्लेखनीय हैं स्तोत्र ग्रन्थें में हनुमत्स्तोत्र तथा शाक्त स्तोत्रों की संख्या अधिक है उत्सवों के वर्णन के सम्बन्धित होलिकोत्सव विधान इत्यादि, पाण्डुलिपियाँ भी हैं ज्योतिष ग्रन्थों में पद्मकोष, मयूरचित्रक, वसंतराज, ज्योतिषचन्द्रार्क समरसार महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं नरपतिजयचर्या ग्रन्थ में हस्तिचक्र तथा अश्वचक्र द्वारा युद्ध से सम्बन्धित शकुन विचार है।

मुझे विश्वास है कि इस वर्णनात्मक सूची का प्रकाशन हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रति रामपुर रजा लाइब्रेरी रामपुर द्वारा किया गया पुनीत प्रयास होगा । इस कार्य के लिए मैं डॉ० फराह को साधुवाद देता हूँ तथा डॉ० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी की लग्न, उत्साह, कर्मठता की प्रशंसा करता हूँ कि इन्होंने इस ओर ध्यान दिया तथा ये सूची तैयार कराई ।

डॉ० विद्यानिवास मिश्र
भूतपूर्व कुलपति
संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

दो शब्द

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में अपना कार्यभार ग्रहण करने के बाद इस लाइब्रेरी की समृद्धि तथा महत्व को जानकर एक ओर जहाँ मैं विस्मित हो गया वहीं दूसरी ओर अव्यवस्था देखकर दुःखी भी हुआ। साहित्य एवं कलाकृतियों के इस अनुपम भण्डार के संरक्षण, संवर्धन, तथा विद्वानो से परिचय कराने के लिए व्याकुल हो उठा।

रजा लाईब्रेरी के ग्रन्थों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को जानकर इनके संरक्षण एवं पाण्डुलिपियों के प्रकाशन की योजना बनाई। इसी योजना के अन्तर्गत भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा एक ऐसे प्रोजेक्ट को स्वीकृति दिलवाई जिसके अन्तर्गत फारसी लिपि में लिखे हुये हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का देवनागरी रूपान्तर प्रकाशित किया जाये। गुलामनबी 'रसलीन कृत' अंगदर्पण तथा रसप्रबोध (प्रेस में) का प्रकाशन इसी योजना का फल हैं।

भाषा विशेष के साहित्य की उसकी परिधि से निकालकर दूसरी भाषा तथा लिपि में प्रकाशित करने का मेरा उद्देश्य साहित्यिक समृद्धि का विस्तार तथा राष्ट्रीय एकता को बल देना है। मेरा सामना कुछ ऐसी नकारात्मक सोच वालों से हुआ जिनका विचार था कि रज़ा लाइब्रेरी केवल अरबी, फारसी का साहित्य से समृद्ध है। किन्तु यह सत्य नही था। सत्य की खोज करने पर ज्ञात हुआ कि रजा लाइब्रेरी में भारतीय भाषाओ की जननी देववाणी 'संस्कृत' की देवनागरी लिपि में लगभग 450 तमिल, तेलगु, कन्नड़ तथा ग्रन्थ लिपि में लगभग 204 पाण्डुलिपियाँ हैं। रज़ा लाइब्रेरी में संस्कृत भाषा का प्रकाशित साहित्य भी हैं। फेलोशिप योजना के द्वारा मैंने सर्वप्रथम संस्कृत की देवनागरी लिपि की पाण्डुलिपियों का कैटालाग तैयार करवाने का विचार किया। इस कार्य के लिए अत्यन्त लग्न, परिश्रम तथा धैर्य की आवश्यकता थी क्योंकि पाण्डुलिपियों की सूचि में हिन्दी तथा संस्कृत की पाण्डुलिपियाँ मिश्रित थी। पाण्डुलिपियो को देखने के पश्चात निश्चय हो सकता था कि पाण्डुलिपि किस भाषा की है। रज़ा लाइब्रेरी बॉर्ड ने छबबीसवीं मीटिंग में इन्स्टीट्यूट फेलोशिप को स्वीकृति दी। इस कार्य के लिए शोधार्थियो का चयन करना उत्तम समझा गया। डॉ० विद्यानिवास मिश्र के निर्देशन में डॉ० फ़राह ने यह केटोलाग तैयार किया। इस कैटालाग

के पश्चात् दक्षिण भारतीय लिपियों की पाण्डुलिपियों के प्रकाशन की योजना है। इस कार्य के पूर्ण होने पर मैं भूतपूर्व राज्यपाल उत्तर प्रदेश महामहिम श्री मोती लाल वोरा, श्री रोमेश भण्डारी, श्री सूरजभान एवं वर्तमान राज्यपाल महामहिम श्री विष्णुकान्त शास्त्री को धन्यवाद देता हूँ। रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड के समस्त सदस्य मेरे इस कार्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

यदि यह कैटालॉग विद्वानों में समादृत हो सका तो साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने का मेरा यह प्रयास सफल होगा।

डॉ० डब्लू० एच० सिद्दीक़ी
विशेष कार्याधिकारी,
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर ।

Introduction

Manuscripts constitute an important aspect of our National Heritage. Rampur Raza Library is the world famous repository of ancient manuscripts, miniatures, palm leaves and artistic rarities. The library has fifteen thousand manuscripts and sixty one thousand printed books of ancient and medieval period in Arabic, Persian, Sanskrit, Hindi, Urdu, Pushto and Turkish languages.

It was founded by the first Nawab of Rampur State, Faizullah Khan (1774-1794) whose enlightened successors continued to enrich and develop it. Nawab Kalbe Ali Khan & Nawab Hamid Ali Khan's literary and artistic taste further added to this priceless collection by purchasing manuscripts and artefacts of Mughal and Avadh libraries after the struggle of 1857. Further more the last Nawab Sir Raza Ali Khan (1930-1949) who was a great connoisseur of art and learning made remarkable additions to its holdings.

It is now an institution of National importance under the Dept. of Culture Ministry of Human Resource Development , Department of culture, it is managed by statutory board whose chairman is His Excellency Shri Suraj Bhan, Governor of Uttar Pradesh.

The library due to its rich and rare oriental collections attracts research scholars from India & abroad for consulting sources of History, Art Architecture, Culture, Unani medicine, Religion, Philosophy, Sufism, besides Arabic, Persian, Sanskrit, Turkish, Pushto, Hindi and Urdu literature.

The Nawab's library had not scientifically qualified staff, therefore Manuscripts, Printed Books & Journals were not classified and catalogued on modern lines. The work of listing and cataloguing the manuscripts, books , journals and art objects was not taken up inspite of repeated reminders of the department of culture, Government of India on the recommendations of Prof. S. Nurul Hasan and Department of Culture. Dr. W.H. Siddiqi former Director of Archaeological Survey of India, was appointed as O.S.D. on 16th August 1993. Dr. Siddiqi after taking over , introduced significant reforms and improved the administration. This descriptive catalogue is the result of Dr. W. H. Siddiqi's enthusiastic interest and encouragement.

I am very happy to present the Ist volume of the descriptive catalogue of Sanskrit manuscripts to the world of scholars.

The present volume of catalogue under reference deals with the following ten sections.

(1) Itihāsa evam Purana (2) Nyaya evam Vedanta (3) Kavya (4) Alankara sastra (5)Dharma sastra (6) Jyotisa (7) Vyakarana (8) Kosa (9) Stotra (10) Miscellaneous. It is quite an astonishing fact that no Ms. of Drama is in this collection.

The MSS. catalogue in this volume form a part of the Sanskrit MSS, collection of Raza Library. There is a good number of Manuscripts in Tamil, Telgu, Kannada and Grantha scripts also.

The manuscripts are written in black and red Indian ink. Yellow pigment is used for corrections, the paper is handmade. Some manuscripts are partly

Introduction

Manuscripts constitute an important aspect of our National Heritage. Rampur Raza Library is the world famous repository of ancient manuscripts, miniatures, palm leaves and artistic rarities. The library has fifteen thousand manuscripts and sixty one thousand printed books of ancient and medieval period in Arabic, Persian, Sanskrit, Hindi, Urdu, Pushto and Turkish languages.

It was founded by the first Nawab of Rampur State, Faizullah Khan (1774-1794) whose enlightened successors continued to enrich and develop it. Nawab Kalbe Ali Khan & Nawab Hamid Ali Khan's literary and artistic taste further added to this priceless collection by purchasing manuscripts and artefacts of Mughal and Avadh libraries after the struggle of 1857. Further more the last Nawab Sir Raza Ali Khan (1930-1949) who was a great connoisseur of art and learning made remarkable additions to its holdings.

It is now an institution of National importance under the Dept. of Culture Ministry of Human Resource Development , Department of culture, it is managed by statutory board whose chairman is His Excellency Shri Suraj Bhan, Governor of Uttar Pradesh.

The library due to its rich and rare oriental collections attracts research scholars from India & abroad for consulting sources of History, Art Architecture, Culture, Unani medicine, Religion, Philosophy, Sufism, besides Arabic, Persian, Sanskrit, Turkish, Pushto, Hindi and Urdu literature.

The Nawab's library had not scientifically qualified staff, therefore Manuscripts, Printed Books & Journals were not classified and catalogued on modern lines. The work of listing and cataloguing the manuscripts, books , journals and art objects was not taken up inspite of repeated reminders of the department of culture, Government of India on the recommendations of Prof. S. Nurul Hasan and Department of Culture. Dr. W.H. Siddiqi former Director of Archaeological Survey of India, was appointed as O.S.D. on 16th August 1993. Dr. Siddiqi after taking over , introduced significant reforms and improved the administration. This descriptive catalogue is the result of Dr. W. H. Siddiqi's enthusiastic interest and encouragement.

I am very happy to present the Ist volume of the descriptive catalogue of Sanskrit manuscripts to the world of scholars.

The present volume of catalogue under reference deals with the following ten sections.

(1) Itihāsa evam Purana (2) Nyaya evam Vedanta (3) Kavya (4) Alankara sastra (5)Dharma sastra (6) Jyotisa (7) Vyakarana (8) Kosa (9) Stotra (10) Miscellaneous. It is quite an astonishing fact that no Ms. of Drama is in this collection.

The MSS. catalogue in this volume form a part of the Sanskrit MSS, collection of Raza Library. There is a good number of Manuscripts in Tamil, Telgu, Kannada and Grantha scripts also.

The manuscripts are written in black and red Indian ink. Yellow pigment is used for corrections, the paper is handmade. Some manuscripts are partly

damaged due to insect and moisture. The manuscripts have been restored and preserved by National Archive. All the manuscripts are hardbound.

The manuscript numbers ST 2619-2631 Śrimad bhāgavat in 13 volumes is illustrated in folk Mughal style comprising 14 illustrations. Another manuscript 15163 Narpatijayacaryā is illustrated in line drawing with red and black Indian ink. Mostly manuscripts are very neatly copied. The scribes were also experts in noting down the year and date of script in figurative and metaphorical languages or in simple verses.

Ms. No. 15378-Sandhyā prayogaḥ

इति सन्ध्या प्रयोगः संवत् १९०८ मार्ग शुक्ल चतुर्थी बुधे शुभम्
एक चक्रो रथो यस्य दिव्यः कनक भूषितः ।
स मे भवतु सुप्रीतः यमहस्तो दिवाकरः ।।
श्री श्री श्री

Ms. No. 15447- Raghunātha pañcaka stotra

इति श्रीरघुनाथ पंचक स्तवं सम्पूर्णम्
मनोजवं मारुत तुल्यं वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजम् वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।
श्रीमते रामनुजाय नमः ।

Ramānatha wrote this book (Anubhavānanda No. 15194) on Wednesday the eight of the bright half of the month of Bhādra in the year 1858 V.s.

विक्रमस्य गते वर्षे वसु पन्चाष्ट भूमिति रचितो रामनाथेन भाद्राशुक्लाष्टमी बुधो इत्यानुभवानन्दः ।

Vasu- 8 pañca-5 Aṣta-8 Bhu-1 = 18581 by inverting the order of the digits from right to left it becomes 1858 V.s.

Ms. No. 15161- Śakuna Candrika

इति शकुनचन्द्रिका समाप्तिमगमत् शुभं भवतु ।
इलावसुनग कुसमिते द्वेमधो ।
नवभ्याम् सितो गुरोः दिने ।।
अनुपपुर्य्यां सुर दीर्घिका तटे ह्यलेलिख दशरथे ।

Some of the manuscripts containing many works. They can not be separated and some manuscripts are in Hindi and Sanskrit both. MS. No. 15433 Vivāha paddhatiḥ begins in Sanskrit Ends in Hindi.

। श्रीगणेशाय नमः ।

अथ विवाह पद्धितिः लिख्यते
आदौ कन्यापिता स्नानमं कुर्यात् धौतवस्त्र परिधानं कुर्यात्-
धुव से निश्चलताय गंगा जमुना से जल पवित्राय
चंद्रसूर्य से उद्योत करणाय गऊ ब्राह्मण से रक्षा करणाय।

I find no words to thank the Lord Almighty for his kindness and blessing to enable me to complete my work. I wish to place on record my sincere gratitude to the 'His Excellency' Shri Surja Bhan, Governor of Uttar Pradesh and honourable members of the Raza library board. It is my pleasant duty to offer my thanks Dr. W.H. Siddiqi, O.S.D., Rampur Raza Library, Rampur for his sincere co-operation and valuable suggestions.

I am grateful to Prof. S.R.Sarma (Former Chairman) Sanskrit Department University, A.M.U. Aligarh who gave me the benefit of his advice and opinion . I am also thankful to Shri Abusad Islahi, Assistant Librarian of Raza Library who supplied physical details of the materials and relevant information.

My thanks are also due to Shri. Dinesh Kumar Verma, Senior Tech. Asstt. (Preservation), Shri. Lalit Kumar Pathak, Senior Conservator, Shri. P.B. Saxena, Syed. Ahmad Mian (Library Asstt.), Miss. Mohini Rani (UDC), Miss. Bilqees Faruqui (Steno), Dr. Mrs. Sakaki, who helped me in various ways.

My acknowledgement of gratitude is also due to Dr. (Mrs.) Salma Mahfooz, Chairman, Sanskrit department, A.M.U. Aligarh.

Dr. Farha
M.Phil, Ph.D.(Sanskrit)

Index of Works

इतिहास एवं पुराण

अपोहवाद

Apohavāda

अष्टावक्र

Aṣṭāvakra

अष्टश्लोक वालप्रबोधव्याख्या

Aṣṭaślokabālaprabodhavyākhyā

ईशावास्यरहस्यम्

Īśāvāsyarahasyam

उपदेश सहस्री

Updeśa Sahasrī

गीताभावार्थदीपिका

Gitābhāvārtha dīpikā

चतु:श्लोकी भागवतम्

Catuḥślokī bhāgavatam̐

चतु:श्लोकी भागवतम्

Catuḥślokī bhāgavatam̐

तत्वबोध प्रकरणम्

Tatvabodha Prakaraṇam̐

नारायणोपनिषद्

Nārāyaṇopaniṣad

परमहंसोपनिषत्

Paramahaṃsopaniṣat

प्रश्नोपनिषद् भाष्य

Praśnopaniṣadbhāṣya

प्रश्नोत्तरमणिरत्नमाला

Praśnottaramaṇiratnamālā

श्रीभगवद्गीता

Śrībhagvadgītā

श्रीभगवद्गीता

Śrībhagvadgītā

भगवतलीलाचिन्तामणि

Bhagvatalālā Cintāmaṇi

भगवतलीलाचिन्तामणि

Bhagvatalālā Cintāmaṇi

श्रीमद्भागवद् दशम स्कन्ध

Śrimadbhāgavad daśamskandha

श्रीमद्भागवत् एकादश स्कंध

Śrīmadbhāgavat ekādaśaskandha

भागवतपद्यव्याख्या

Bhāgavatapadyavyākhyā

मननाख्यप्रकरण

Mananākhyaprakaraṇa

महावाक्य विवरण

Mahāvākyavivraṇa

वेदान्तसारः

Vedāntsārḥ

वेदान्तपरिभाषा

Vedāntaparibhāṣā

वेदान्त संज्ञाप्रकाश

Vedāntasanjñāprakāśa

वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली

Vedāntasiddhānta muktāvalī

सप्तश्लोकी गीता

Saptaśloki gitā

सप्तश्लोकी गीता

Saptaṣlokī gītā

सिद्धान्तबिन्दुः

Siddhānta binduḥ

सिद्धान्तमुक्तावली

Siddhāntmuktāvalī

हरितत्व मुक्तावली

Haritatva muktāvalī

अज्ञात

Ajñāta

काव्य

Kāvya 60-81

कुमारसम्भवम्
Kumārasambhavaṁ
कुमारसम्भवम्
Kumārsambhavaṁ
किरातार्जुनीयम्
Kirātārjunīyaṁ
गीतगोविन्दम्
Gītagovindaṁ
गीतगोविन्दम्
Gītagovindaṁ
घटकर्परकाव्यम्
Ghaṭakarparakāvyaṁ
नलोदय
Nalodaya
नीतिशतकम्
Nītiśatakaṁ
नैषधीय चरितम्
Naiṣadhīya Caritaṁ
महाभारत— सभापर्व
Mahābhārata- sabhāparva
महाभारत — भीष्मपर्व
Mahābhārata - Bhiṣhmaparva
मेघदूतम्
Meghadūtaṁ
मेघदूतम्
Meghdūtaṁ
मेघदूतम्
Meghadūtaṁ
रघुवंशम्
Raghuvaṃśaṁ

कार्तिक माहात्म्य

Kartikamāhātmaya

कार्तिकमाहात्म्य

Kartikamāhātmaya

कार्तिकव्रतोद्यापन सूत्रसार

Kārtikavratodyāpana sutrasāra

कुशकण्डिका

Kuśakaṇḍikā

कुशकण्डिका

Kuśakaṇḍikā

केदारकल्प

Kedārakalpa

गयामाहात्म्य

Gayāmahātmya

गर्गसंहिता गोलोकखण्ड

Gargasaṅhitā golokakhaṇṃa

गर्गसंहिता (वृन्दावनखण्ड)

Gargasaṅhitā Vṛndāvana Khaṇḍa

गर्गसंहिता — गिरिराज खण्ड

Gargasaṅhitā girirājakhanda

गर्गसंहिता गिरिराज खण्ड

Gargasaṅhitā girirāja khanda

गर्गसंहिता मथुराखण्ड

Gargasaṅhitā Mathurākhaṇḍa

गर्गसंहिता माधुर्यखण्ड

Gargasaṅhitā mādhuryakhaṇḍa

गर्गसंहिता (बलभद्रखण्ड)

Gargasaṅanhitā

गृधपद्धति:

Gṛahapaddhatiḥ

गोकर्णनिरूपण

Gokarṇanirūpaṇa

चतुर्थीकर्म:

Caturthīkarmaḥ

चाणक्यनीतिशास्त्र

Caṇakyanītiśāstra

चूड़ाकरण संस्कार

Cūḍākaraṇasaṃskāra

जन्माष्टमीपूजन

Janmāṣṭamī Pūjana

जलाशयपूजाप्रतिष्ठा

Jalāśayapūjāpratiṣḍhā

जैमिनी सूत्र

Jaiminī Sūtra

त्रिस्थलीसेतुसार संग्रह:

Tristhalī setusāra Saṃgrahah

तुलसीविवाह

Tulsīvivāhaḥ

दामोदरतुलस्यासह विवाह

Dāmodarrtulasyāsaha vivāhaḥ

द्विरागमन विधि:

Dvrāgamanavidhiḥ

देवालयप्रतिष्ठा

Devālayapratiṣṭhā

नवग्रहजप विधि:

Navagrahajāpa vidhiḥ

नामकरण पद्धति:

Nāmakaraṇapaddhatiḥ

नेत्रोपनिषद्

Netropaniṣad

नैमिषारण्यमाहात्म्य

Naimiṣāraṇyamāhātmya

प्रतिमावेष्ठनोपयोगिमन्त्रा:

Pratimāveṣṭhanopayogimantraḥ

प्रत्यङ्गिराविधानम्

Pratyaṅgirāvidhānam̐

प्रत्यंङि्गरामहाविद्या

Pratyangirāmahāvidyā

पार्थिवेश्वर पूजनम्
Pārthiveśsvara pūjanam
पार्थिवालिङ्गार्चनविधि:
Pārthivaliṅgārcanavidhiḥ
पाराशरस्मृति
Pārāśarasmrti
पूजापद्धिति:
Pūjāpaddhatiḥ
वटुकभैरवदान विधि:
Vaṭuka bhairavadīpadāna vidhiḥ
बद्रीमाहात्म्य
Badrimāhātmaya
ब्राह्मणसर्वस्व
Brāhmaṇasarvasva
भुवनेश्वरी पद्धति:
Bhuvneśvarī paddhatiḥ
भुवनेश्वरी विधानम्
Bhuvneśavarī vidhānam̐
भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा
Bhūtaśuddhiprāṇapritiṣṭhā
मन्त्रमहोदधि:
Mantramahodadhiḥ
मंत्रमहोदधि
Mantramahodadhiḥ
मन्त्रमुक्तावली
Mantramuktāvalī
महागणपति संलेपिन्यार्चन विधि:
Mahāganapati saṃlepinyārcana vidhiḥ
महामृत्युञ्जय विधि:
Mahāmṛtuñjaya vidhiḥ
महामृत्युञ्जय विधि:
Mahāmṛtuñjaya vidhiḥ
महारुद्रभिषेक विधि:
Mahārudrābhiṣeka vidhihḥ

महिषीदान—वृषभदान
Mahiṣidāna Vṛsabhadāna
मार्गशीर्षमाहात्म्य
Mārgarśīrṣamāhātmaya
मालासंस्कार
Mālāsaṅskāra
मालासंस्कार
Mālāsaṅskāra
मूलश्लेषा विधान
Mūlaśleṣāvidhāna
यज्ञोपवीत पद्धति:
Yajñopavītapaddhatiḥ
यज्ञोपवीतपद्धति:
Yajñopavītapaddhatiḥ
यज्ञोपवीतपद्धति:
Yajñopavītapaddhatiḥ
याज्ञवल्क्यस्मृति
Yājñavalkyasmrti
रामनामलेखन विधि:
Rāmanāmalekhana Vidhiḥ
वृहतकर्मकाण्ड पद्धति:
Vṛhatakarmakāṇḍā paddhatiḥ
व्रतोत्सवविधानम्
Vratotsavavidhānam
वास्तुपूजाशान्ति:
Vāstupūjāśāntiḥ
विवाहपद्धति:
Vivāhapaddhatiḥ
विवाहपद्धति:
Vivāhapaddhatiḥ
विवाहपद्धति:
Vivāhapaddhatiḥ
विवाहपद्धति:

Vivāhapaddhatiḥ
विष्णुनाम प्रकाश:
Viṣṇunāma prakāśaḥ
विष्णुप्रतिमादान
Viṣṇupratimādāna
विष्णुप्रतिमाविवाहविधि:
Viśṇupratimā vivāhavidhiḥ
वैधृतिव्यतीपातसंक्रान्तिशान्ति:
Vaidhṛtivyatīpātasaṃkrāntiśāntiḥ
वैशाखमाहात्म्य
Vaiśākhamāhātmya
वैशाखमाहात्म्य
Vaiśākhamāhātmya
शय्यादान प्रयोग:
Śayyādāna prayogaḥ
शय्यादान माहात्म्य
Śayyādānamāhātmya
शापविमोचनम्
Śāpavimocanam
शिवपूजनविधि:
Śivapūjanavidhiḥ
शिवपूजन विधि:
Śivapūjanavidhiḥ
शिवमन्त्र
Śivamantra
शिवरहस्य
Śivarahasya
शिवषडाक्षरमन्त्र पद्धति:
Śivaṣaḍākṣharamantra Paddhatiḥ
सत्योपाख्यान
Satyopākhyāna
सत्योपाख्यान रामचरित्र
Satyopākhyāna Rāmcaritra

कल्पवल्लीपद्धतिः
Kalpavallīpaddhatiḥ
कामधेनुपद्धतिः
Kāmadhenupaddhatiḥ
केशवी पद्धतिः
Keśavī paddhatiḥ
केशवीपद्धतिः
Kesavīpaddhitiḥ
केशवीउद्धरण
Keśavīuddharaṇa
गोलाध्याय सटीक
Golādhyāya saṭīka
ग्रहदशाफल
Grahadaśāphala
ग्रहलाघव
Grahalāghava
ग्रहलाघव
Grahalāghava
ग्रहसारिणी
Grahasāriṇī
ग्रह स्फुटीकरण
Graha sphuṭīkaraṇa
जनुः पत्रिका
Januḥpatrikā
जातकालंकार
Jātakālaṃkāra
जातकाभरणम्
Jātakābharaṇam̐
जातकाभरणम्
Jātakābhararam̐
जातकाभरणम्
Jātakābhararam̐
जातकाभरणम्

Jatakābharaṇam̐
ज्योतिषमन्त्र लघुसंग्रह:
Jyotiṣamantra laghusaṃgrahaḥ
ज्योतिषरत्नमाला
Jyotiṣaratnamālā
ज्योर्तिसार
Jyotihsāra
टोडरानन्द
Toḍarānanda
ताजिकनायकम्
Tājikanāyakam̐
ताजिकनीलकण्ठी
Tājikanīlakaṇṭhī
ताजिकनीलकण्ठी
Tājikanīlakaṇṭhī
ताजिकनीलकण्ठी
Tājikanīlakaṇṭhī
ताजिकभूषण
Tājikabhūṣaṇa
नरपतिजयचर्य्या
Narapatijayacaryā
नरपतिजयचर्या
Narapatijayacaryā
नष्टपत्रमानयन
Naṣṭapatramānayana
नक्षत्ररोगावली
Nakṣatrarogāvalī
निर्णयामृत
Nirṇayāmrta
पद्धतिवर्गादिफल संग्रह:
Paddhati vargādiphala saṃgraḥ
पद्मकोश
Padmakośa
पद्मकोश

Padma Kośa
पंचस्वराभिधान
Pañcasvarābhidhāna
पंचस्वरभिधानस्य उदाहरण
Pañcasvarabhidhānasyaudāharaṇa
पंचस्वरभिधानस्य उदाहरण
Pañcasvarabhidhānasyaudāharaṇa
प्रश्नदीपक तथा पार्थिवपूजापटलपद्धति:
Praśnadīpaka tathā pārthivapūjāpaṭalapaddhatiḥ
प्रश्नवैष्णव
Praśna Vaiśṇava
प्रश्न:
Praśnaḥ
प्रश्नसार
Praśnasāra
प्रसूतिकाध्याय
Prasūtikādhyāya
पाराशरीहोरा ।
Pāraśarī horā
पाराशरी होरा
Pāraśarī horā
पाशकावली
Pāśakāsvalī
मयूरचित्रकम्
Maūracitrakam̐
मुहूर्तगणपति
Muhūrtagaṇapati
मुहूर्तगणपति ।
Muhūrtagaṇapati
मुहूर्तचिन्तामणि
Muhūrtacintāmaṇi
मुहूर्तचिन्तामणि
Muhūrtacintāmaṇi
मुहूर्तमञ्जरी

Muhūrta mañjarī
मुहूर्तवल्ली
Muhūrtavallī
मूलविधानम्
Mūlavidhānam̐
मूलविचारकालविचार
Mūlavicāra kālavicāra
योगशतकम्
Yogaśatakam̐
योगिनीदशाफल
Yoginīdaśāphala
योगसार
Yogasāra
रमलोत्कर्ष
Ramalotkarṣa
रमलशकुनावाली
Ramalaśakunavalī
राजयोग
Rājayoga
लग्नचन्द्रिका
Lagnacandrikā
लग्नचन्द्रिका
Lagnacandrikā
लग्नवराही
Lagnavarāhi
लंपाकशास्त्र
Lampākaśāstra
लीलावती
Līlīvatī
वर्णमाला प्रश्न
Varṇamālā praśna
वृहज्जातकम्
Vṛhajjātakam̐

वसंतराज
Vasantarāja
वार्षिकगणितपद्धतिः
Vārṣikagaṇita paddhatiḥ
शकुनचन्द्रिका
Śakunacandrikā
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
श्रीज्योतिश्चन्द्रार्कः
Śrījyotiṣcandrārkaḥ
षट्पंचशिखा
Ṣaṭpancaśikhā
षडवर्गफल
Ṣaḍavargaphala
संकेतकौमुदी
Saṃketakaumudī
समरसार
Samarasāra
समरसार
Samarasāra
समयमयूख
Samaya mayūkha
सर्वार्थचिन्तामणि
Sarvārtha cintāmaghi
स्वप्नाध्याय
Svapnādhyāya
स्वरोदय
Svarodaya

वसंतराज
Vasantarāja
वार्षिकगणितपद्धति:
Vārṣikagaṇita paddhatiḥ
शकुनचन्द्रिका
Śakunacandrikā
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
शीघ्रबोध
Śīghrabodha
श्रीज्योतिश्चन्द्रार्क:
Śrījyotiṣcandrārkaḥ
षट्पंचशिखा
Ṣaṭpancaśikhā
षडवर्गफल
Ṣaḍavargaphala
संकेतकौमुदी
Saṃketakaumudī
समरसार
Samarasāra
समरसार
Samarasāra
समयमयूख
Samaya mayūkha
सर्वार्थचिन्तामणि
Sarvārtha cintāmaghi
स्वप्नाध्याय
Svapnādhyāya
स्वरोदय
Svarodaya

आदिभवानीपटलम्

Ādibhavānīpaṭalam̐

इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

Indrākṣī stotram̐

उड्डीश

Uḍḍīśa

कार्त्तावीर्याजुनमालामन्त्रकवचम्

Kārtāvīryārjunamālāmantrkavacam̐

कालभैरव स्तोत्रम्

Kālabhairavastotram̐

गङ्गाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

गङ्गाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

गङ्गाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

गङगाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

गंगासहस्रनाम

Gaṅgāsahasranāma

गङ्गामाहात्म्य

Gaṅgāmāhātmya

गङगालहरी

Gāṅgālahrī

गजेन्द्रोपाख्यान

Gajendropākhyāna

गणेश अष्टकम्

Gaṇeśa aṣṭakam̐

गायत्रीउत्कीलन

Gāyatrīutkīana

गायत्रीकल्प

Gayatrīkalpa

गायत्रीस्तवराज:

Gāyatrī Stavarājaḥ

गोपालसहस्रनाम
Gopālasahasranāma
जानकीसहस्रनाम
Jānakīsahasranāma
चण्डीकवचम्
Cṇdīkavacaṁ
चण्डीपटलम्
Caṇḍīpaṭalaṁ
चण्डीस्तोत्रम्
Caṇḍīstotraṁ
चण्डीस्तोत्रम्
Caṇḍīstotraṁ
चण्डीसहस्रनाम स्तोत्रम्
Caṇḍīsahasranāmastotraṁ
देवीकवचम्
Devīkavacaṁ
देवीकवचम्
Devīkavacaṁ
देवीपंचरत्नस्तोत्रम्
Devīpañcaratnastotraṁ
देवीमाहात्म्य
Devīmāhātmya
द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रम्
Dyādaśapañjarikāstotraṁ
दुर्गापाठ
Durgāpāṭha
दुर्गासप्तशती
Durgāsaptaśatī
दुर्गासप्तशती
Durgāsaptaśatī
दुर्गास्तुति कवचम्
Durgāstutikavacaṁ

नवग्रहस्तोत्रम्
Navagraghastotram̐
नवरत्नमाणिक्यस्तोत्रम्
Navaratnamāṇikyastotram̐
नारायणहृदयस्तोत्रम्
Nārāyaṇahṛdayastotram̐
निरञ्जनस्तोत्रम्
Nirañjanastotram̐
निर्वाणाष्टकम्
Nirvāṇāṣṭakam̐
प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्
Pratyaṅgirā stotram̐,
प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्
Pratyaṅgirā stotram̐,
बालग्रहस्तव:
Bālagrhastavaḥ
भजगोविन्दस्तोत्रम्
Bhajagovinda stotram̐
भजगोविन्दस्तोत्रम्
Bhajagovinda stotram
भस्मगायत्री
Bhasmagāyatrī
भीष्मस्तवराज:
Bhīṣmastavarājaḥ
भैरवाष्टकम्
Bhairavāṣṭakam̐
भैरवकवचम्
Bhairavakavacam̐
मङ्गलाष्टकम्
Maṅglāṣṭakam̐
मंगलस्तोत्रम्
Maṅgalastotram̐

मृत्युञ्जय मन्त्रभेद

Mṛtuñjayamantrabheda

मनोहरहनुमत्कवचम्

Manoharahanumatkavacam̐

मल्लारि सहस्रनाम

Mallāri sahasranāma

महाकालीसूक्त

Mahākālī sūkta

महामृत्युञ्जय कवचम्

Mahāmṛtuñjaya Kavacam̐

महामृत्युञ्जयसहस्रनाम स्तोत्रम्

Mahāmṛtuñjayasahasranāma Stotram̐

महास्तोत्रम्

Mahāstotram̐

महिम्नव्याख्या

Mahimnavyākhyā

महिम्नःसटीक

Mahimnaḥ saṭīka

महिम्नस्तोत्रम्

Mahimnastotram̐

Raghunātha pañcaka stotram̐

रामाष्टकम्

Rāmāṣṭakam̐

रामाष्टकम्

Rāmāṣṭakam̐

रामचन्द्र स्तवराजः

Rāmacandra stavarājaḥ

रामरक्षाकवचम्

Rāmarakṣākavacam̐

लक्ष्मीहृदय स्तोत्रम्

Lakṣmīhṛdayastotram̐

वाराह ध्यानम्

Vārāha dhyānam̐.

विष्णुपञ्जर स्तोत्रम्
Viṣṇupañjara Stotram̐
विष्णोरपमार्जन स्तोत्रम्
Viṣṇorapmārjanastotram̐
विष्णुमाहिम्न स्त्रोत्रम्
Viṣṇumahimnastotram̐
विज्ञाननवका
Vijñānanavakā
शतचण्डी विधि:
Śatacaṇḍī vidhiḥ
शनिस्तोत्रम्
Śanistotram̐
शाक्तस्तोत्रम्
Śāktastotram̐
शिवाष्टकम्
Śivāṣṭakam̐
शिवकवचम्
Śivakavacam̐
शिवकवचम्
Śivakavacam̐
शिवकवचम्
Śivakavacam̐
शिवताण्डवम्
Śivtāṇḍavam̐
शिवमहिम्न स्तोत्रम्
Śivamahimna Stotram̐
शिवमहिम्नस्तोत्रम्
Śivamahimnastotram̐
शिवसहस्रनाम
Śivasahasranāma
शीतलाष्टकम्
Śītalāṣṭakam̐

इतिहास एवं पुराण

Itihāsa Evaṁ Purāṇa

15312

अनन्तकथा

Anantakathā

Foll- 5, 11.5 x 16.5 Cms, 8-9 lines on a page , Devanāgarī Script , , Age - x , Scribe - x , Condition- good. Folio- 1 is missing .
Author : not mentioned.
The Work : Anantakathā from the bhaviṣyottarpurāṇa in the form of dialogue between Kṛṣṇa & Arjuna.
BEGINS :

....
त्रिकालं वंद्यते सन्ध्या षट्कर्मतिरत: सप्तकालेन भ्रियते भार्या
..............।। ५ ।।

ENDS :

अनन्तस्तूपविजयो जपश्च अनन्तरूपाय नमो नमस्ते ।
इति भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे
अनन्तकथा समाप्ता ।।

COLOPHON :

15307

अनन्तव्रत कथा

Anantavrata Kathā

From-Bhaviṣya purāṇa (भविष्य पुराण)

Foll- 8 , 10 x 19.5 Cms, paper, 8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1856 Samvat , Scribe- x , Condition - not good.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अनन्तव्रतं माहात्म्यम् यत्सर्वपापहरं शिवं सर्वकामप्रदतृणाम्—

स्त्रीणां चैव युधिष्ठिर शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां मासि भाद्रपदे भवेत् ।

युधिष्ठिर उवाच –

कृष्ण कोऽयं त्वयाख्यातो योऽनंतं व्रत विश्रुतः ।

किं शेषनाग अहोस्विदनंन्तमस्तकः स्मृतः ।।

ENDS :

एतत्ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतं यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ये च श्रृणुवंति सततं कथां पाप प्रणाशिनीं ते सर्वपापानिर्मुक्तितायास्यंति हरिमन्दिरम संसार सागर गुहां सुसुखं विहर्तुं वांछति ये कुरूकुलोद्वह शुद्धसत्वा संपूज्येत त्रिभुवने शमनं तद्रूपं वध्वंतु दक्षिणकरे वरदोरकं च इति भविष्यपुराणे अनन्तव्रत कथा समाप्तम् ।।

COLOPHON:

इति भविष्यपुराणे अनन्तव्रत कथा समाप्तम् ।। संवत् १८५६ भाद्रपदमासेशुक्लपक्षे नवम्यं रविवासरे शुभं भूयात् ।।

15340

अनन्तव्रत कथा

Anantavratakathā

From- Bhaviṣottarapurāṇa

Fill- 9, 10.2 x 23.5 Cms, paper , 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1792 samvat, Scribe-Gusaianiruddha giri , Condition- good, water stained. Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः।।

पातुवो पद्मनाभाय जलशायी सुखासने ।
चतुर्मासाय देवाय अनन्ताय नमो नमः ।। २ ।।

युधिष्ठिर उवाच— अनन्त व्रत विख्यातं किं पुण्यं ब्रूहि केशवः ।
किं फलं भवेत् तम् तेषां कश्च तुष्टो मम प्रभो ।। २ ।।

कृष्ण उवाच — श्रृणुपाण्डव यत्नेन अनादिव्रतमुत्तमम् ।
सप्तजन्मकृतं पापं दारिद्रयं दुःखनाशनम् ।।

ENDS :

एकं विप्रस्य विप्राय दातव्यं एक आत्मान् भोजनम् ।
मौनं च भोजनं कृत्वा कथां श्रृत्वा अनन्तकम् ।।
वर्षे चतुर्दशं कृत्वा ततोद्यापनं कारयेत् ।। ९३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे अनन्तव्रतकथा समाप्तम् । शुभं भूयात् ।। संवत् १७९२ वैशाख मासे शुक्लपक्षे अष्टाम्यां शनिवारे ।। लिखितमिदं पुस्तकं गुसाई अनिरूद्ध गिरिणा ।।

15303

ऋषिपञ्चमी माहात्मय कथा

Ṛṣi Pancamimahātmayakathā
From- Bhaviṣyottorpurāṇa (भविष्योत्तर पुराण)

Foll- 4 ,10.6 x 17.4 , Cms, paper , 8 to 12 , lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Condition -good, water stained.
The Work : The Ṛṣi Pancamimahātmayakathā from Kṛsna Yudhistara Samvāda .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

युधिष्ठिर उवाच—

कृतांजलिपुटो भूत्वा राजा पृच्छति केशवम् ।
ऋषीणां पंञ्चमीनाम् कथयस्व मम प्रभो ।।
येनाशुलभ्यते मोक्षं भुक्तिं मुक्तिं च लभ्यते ।। १ ।।

श्री कृष्ण उवाच—

अस्ति व्रतोत्तमं राजन् महादुस्तर कारणम् ।
येनैव जायते मोक्षं भुक्तिं मुक्तिं च जायते ।।२।।
ऋषीणां पञ्चमीनाम् मासे भाद्रपदे सिते ।
शाकमूलफलाहारं कृत्वा भक्ष्यं च भोजनम् ।। ३ ।।

ENDS :

य इदं श्रृणु यान्त्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
गंगास्नानं सपुण्यं गोसदृशफलं भवेत् ।। ३४ ।।
अचिरेण च पुत्रीणी मृतानांचत्युयान्नरः ।
सर्वसंपत्तिसंपन्नं ऋषिणां च व्रतं कृते ।।

COLOPHON :

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवादे ऋषिपञ्चमी कथा संपूर्णम् ।। श्री श्री श्री ।।

15326

ऋषिपञ्चमीव्रत कथा

Ṛṣi pañcamīvratakathā

From- Padmapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 3, 105 x 21 ,Cms, paper , 8 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe- x , Condition- bad, slightly worm eaten.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

मुच उवाच :

इन्द्रप्रस्थेषु शुभस्थाने पाण्डवेषु ।
वत्सु च जना गमनं नारदो वैधष्ता पाण्डवनन्दनम्।। १।।
नमस्कृतश्च तैः कुन्त्या चैव सुभद्रया ।
द्रौपदी राजपत्न्या च विशेषेण नमस्कृतः ।। २ ।।

ENDS :

सर्व पापविर्निमुक्तो ब्रह्मोऽस्माकम् ....

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे ऋषिपञ्चमी व्रत कथा सम्पूर्णम् समाप्तम् ।।

8201

एकादशीव्रतकथा

Ekādaśīvratakathā

From - Padmapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 6, 10 x 14.5 Cms, paper, 1010 lines on a page Devanāgarī Script, Age -1717 Śaka samvat , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
...........शुक्लाधिकं व्रतं...............
भगवन्श्रोतुमिछामि व्रतनानामुत्तमं व्रतम्।
चैव सर्वपापहरं फलंस्तु व्रतिनामपि ।। १ ।।

ENDS :

एकादशी समं नास्ति त्रैलोक्ये व्रतमुत्तमम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीकृष्ण—युधिष्ठर संवादे एकादशीव्रतकथा समाप्ता ।। शाके १७१७ ..... लिखितम् इदं पुस्तकम् ।।

15445

कर्कभद्राचतुर्थीव्रत कथा

Karkabhadrācaturthīvrata kathā

From- Vāmanapurāṇa (वामनपुराण कथा)

Foll- 2, 14 x 22 Cms, paper, 12 to 15 lines on a pages Devanāgarī Script, Age - 1870 Samvat, Scribe- Kṛasṇadatta, Condition- good.

AUTHOR : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ कार्तिककृष्ण चतुर्थ्यं कर्कभद्रा व्रतम अत्र स्त्रीणामेवाधिकारः ।

EDNS :

सुख सौभाग्य पुत्रादि सुस्थिरां लभते श्रियम् ।

COLOPHON :

इति श्रीवामनपुराणोक्त कर्कभद्राचतुर्थी व्रतकथा समाप्ता ।

पंचाग्नि सप्तभूशाके मासि मार्गे सितेतरे कुजे अलिखत्

कृष्णदत्त कर्काया कथां शुभाम संवत् १८७० ॥



2- Śrikrsna Saiyabhama, pārijātaharanaprasamiga Ms.No.ST 2619

15268

कायस्थोत्पत्ति कथा

Kāyasthotpattikathā

From- Padmapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 4 , 11.5 x 23. 7 Cms, paper , 11 to 12 lines on a page , Devanāgarī script, Age - 1866 Samvat, Scribe - Bhavāni prasāda tivāri , Condition- good.

The Work : Kāyasthotpattikathā - Origion & history of the Kayasthas ,cutra gupta was born out of the entire body (kaya) of Brahma and hence the name Kāyastha . The work professes to be an episode of the uttarkhanda of padma purāṇa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

दत्तात्रेय उवाच

त्रिकालज्ञं महाप्राज्ञं पुलस्त्यं मुनिपुंगवम् ।

प्रपच्छ मुनिं संगम्य भीष्मः शस्त्रभृतांवरः ।। १ ।।

भीष्म उवाच

चतुर्णामपि वर्णानामाश्रमाणं तथैव च ।

संभवः शंकरादीनां श्रुतो विस्तरतो मया ।। २ ।।

ENDS :

चित्रगुप्तकथां दिव्यां कायस्थोत्पत्तिसंज्ञिकां मनसा ।

भक्त्युर्युक्तेन श्रृणवंति च पठन्ति च ।। ८३ ।।

दीर्घायुषो भविष्यन्ति सर्वव्याधिविवर्जिता:

प्राणान्ते यत्पदं यान्ति तत्र गच्छन्ति तापसः।। ८४ ।।

COLOPHON:

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे कायस्थेत्पत्ति चित्रगुप्त कथा समाप्तम् संपूर्णम् संवत् १८६६ शके सालवाहन १७३१ कार्तिक शुक्ल १४ भृगुवासरे लिखितं तिवारीभवानीप्रसादेन शुभं भवतु गंगातीरे ।

15390

कायस्थोत्पत्ति कथा

Kāyasthotpatti kathā

From- Padamapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 8, 11 x 2.5 Cms, paper, 8 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition- good .

Auhtor : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः

दत्तात्रेय उवाच —त्रिकालज्ञं महाप्राज्ञं पुलस्त्यं मुनिपुंगवम्
पप्रच्छ उपसंगम्य भीष्मः शस्त्रभृतांवरः ।। १ ।।
भीष्म उवाच — चतुर्णामपि वर्णानानमाश्रमाणांत तथैव च
संभवः संकरादीनां श्रुतो विस्तरतो मया ।। २ ।।
भूय एव महाप्राज्ञ श्रोतुमिच्छामि तत्वतः
कायस्थ इति यल्लोके ख्यातश्चैव महामुने ।।३ ।।

ENDS :

चित्रगुप्त कथां दिव्यां कायस्थोत्पत्तिं संयुताम् ।।
भक्ति युक्तेन मनसा यं शृणवांति नरोत्तमाः ।। ८ ।।
दीर्घायुस्ते भविष्यन्ति सर्वव्याधि विवर्जिताः ।
अन्ते विष्णुपदं यांति तपोधनसमन्विताः ।। ८२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे चित्रगुप्त कायस्थोत्पत्ति कथा समाप्ता।। शुभमस्तु श्रीरस्तु दीर्घायुरस्तु श्री राम चन्द्रेभ्योजयति ।।

15427

महालक्ष्मीव्रत कथा

Mahālakṣmīvrata kathā

From Bhaviṣyottara purāṇa

Foll-- 6, 13 x 23-7 Cms., paper, 13 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe-x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ कथा युधिष्ठिर उवाच ।।
स्व स्थानलाभः पुत्रायुः सर्वेश्वर्यं सुखप्रदम् ।
ब्रह्मेकं समाचवद विचार्य्यं पुरुषोत्तम् ।।
कृष्ण उवाच –

ENDS :

व्रतमिदमथ चक्रे नारदेनोपदिष्टं ।
सुरपतिरपियस्माद्वान्छितार्थं सलेभे ।
त्वमपि कुरु तथैतद्वर्गसूनो यथास्यादभिमत
फलसिद्धिः पुत्रपौत्रादि वृद्धिः ।।
धनधान्यं धरां धर्मकीर्तिमायुर्यशः श्रियम् ।
तुरगान् दंन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मिप्रिय छमे ।।

COLOPHON :

इति भविष्योत्तरपुराणे महालक्ष्मीव्रत कथा ।
शुभमस्तु लेखकपाठकयोः।। श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः।।

15448

महालक्ष्मीव्रतकथा

Mahālakṣmīvaratakathā

From - Bhaviṣyottara purāṇa (भविष्योत्तर पुराण)

Foll- 10, 12.5 x 18 Cms, paper, 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī script, Age - 1847 Samvat, Scribe- Rāmjīmala miśra, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय ।।

युधिष्ठिर उवाच ।।

नारायण जगन्नाथ प्रसादं कुरु मे प्रभो

त्वं ब्रूहि मे देव विख्यातं व्रतमुत्तमम् ।। १ ।।

वर्षाया: ऋतुमध्ये विनोषा सहिता स्थिताम्।

कथयस्व कथां देव्या: येन पापै: प्रमुच्यते ।। २ ।।

तांबूलसर्वसंपूर्णं देव्या अग्ने निवेदयेत् ।

षोडशासनं पूज्येत वस्त्रै व परिधापयेत् ।। १८ ।।

......................भगवतीस्तथा ।। १९ ।।

COLOPHON :

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे महालक्ष्मीव्रतकथा समाप्तं संपूर्णम् । संवते् १८४७ मासोत्तमेमासे आषाढ़मासे शुक्लपक्षे तिथौ पूर्णिमायां सोमवासरे लिखितं मिश्ररामजीमल पठनार्थं कृष्णादास गृहे ।। शुभं भूयात् ऽस्तु ।। श्रीकृष्णाय नमः श्रीरामचन्द्राय नमः । श्री हनुमते नमः ।।

15347

शिवरात्रिकथा

Śivarātrikathā

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 18 , 14 x 22.2,Cms, paper 12 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x , Condition- good,

The Work : Śivarātrikathā - containing directions for worshipping Śiva said to from the Skandapurāṇa.

BEGINS :

।। श्रीकृष्णायनमः ।।

अथ अमांत मात मासेन माघ कृष्ण चतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतम् तच्चऽर्धरात्रिव्यापिन्यां कार्य्यं तदुक्तं नारदीयसंहितायां अर्धरात्रयुता यत्र माघ कृष्ण चतुर्दशी शिवरात्रिव्रतं तत्र सोऽश्वमेध फलं लभेत् । ईशानसंहितायामपि माघ कृष्ण चतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि शिवलिंगमभूत्तत्र कोटिसूर्य्य समप्रभं तत्कालं व्यापिनी ग्राह्यशिवरात्रिव्रते तिथिरिति माघकृष्णत्वं चाऽत्रामांतमास परत्वेन अतएव चतुर्दश्यां तु कृष्णायां फाल्गुने शिवपूजनं । तामुपोष्य प्रयत्नेन विषयान्परिवजर्ययेदिति ।

ENDS :

व्रतमेतत्कृतं यन्मेपूर्णं वा अपूर्णमेववा सर्व संपूर्णतां यातु प्रसादाद्भवतां मम इति संप्रार्थ्यतान्विप्रान्प्रणम्य च पुनः पुनः ततश्च स्वजनैः सार्धं स्वयं भुंजीत स व्रती ।।

COLOPHON :

इति स्कन्दपुराणेशिवरात्रिव्रतोद्यापनं ।। श्री रामार्य्यणं भवतु तराम ॐ नमो जानकी वल्लभाय ।

15464

सत्यनारायणकथा

Satyanārāyaṇakathā

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 8, 14.5 x 27.5 Cms, Paper , 13 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1916 Samvat, Scribe-Girdhārīlāla miśra, Condition-good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ सत्यनारायणकथायाः पूजनविधिर्लिख्यते । व्रती संक्रांतौ पौर्णमास्यां चैकादश्या यस्मिन् कस्मिन् दिवसि सायंकाले स्नानं कृत्वा पूजास्थानमागत्य चासने उपविश्याचम्य पवित्री धारणं कृत्वा गणेशगौरी वरुण देवतामण्डलं स्थापयित्वा गणपत्यादिपंचलोकपालं देवता सूर्य्यादिनवगृहाणां प्रतिष्ठावाहनादिं कृत्वा................।

ENDS :

य इदं पठेत् नित्यं शृणोति मुनिसत्तमः ।
तस्य नस्(श्)यंति पापानि सत्यदेवप्रसादतः ।। ६२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणकथा संपूर्णम् । सत्यनारायणाय नमः । सम्वत् १९१६ शाके १७८१ तत्र चैव कृष्णचतुर्थ्यां रवौ इदं पुस्तकं मिश्रगिरधारीलालेनालेखि शुभमस्तु । श्रीरामार्पणां भवतुतराम् ।। श्री कल्याणमस्तु श्री गोपालोजयतितराम् श्रीरामजी ।।

15331

संकष्टव्रत कथा

Saṃkaṣṭavratakathā

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 6 , 11 x 18.5 , Cms, paper , 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1799 Samvat, Scribe - Bhavānidāsa , Condition- bad.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ऋषय उवाच ।।

दग्दिद्रसौकं कष्टाद्यैर्पीडितानां च वैरिभिः ।

गजभ्रष्टैः नृपैसर्वै क्रियते किं शुभैर्लभः ।।

ENDS :

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी धनमाप्नुयात् ।

पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति हि रोगात रोगी प्रमुच्यते ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कन्दपुराणे संकष्ट व्रत कथा समाप्तम् ।।

शुभमस्तु सिद्धिरस्तु संवत् १७‌‌‌९९ वर्षे कार्तिक(श) सुदी

पंचमी भृगुवासरे लिखितं पुस्तकं भवानीदास स्वयं

पठनार्थम् शुभम् गम सत्य ।। शुभमस्तु ।।

15332

सूर्यमाहात्म्यकथा

Sūryamāhātmyakathā

From- Skandapurāṇa

Foll- 5 , 11.5 x 19.5 Cms, paper , 11 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1897 Samvat, Scribe -x , Condition- bad worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work : Sūryamāhātmyakathā.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। श्रीस्कन्दः उवाच ।।

देवदेव जगन्नाथ शूलपाणे वृषध्वजे ।

कथय स्वप्रसादेन भास्कर व्रतमुत्तमम् ।।

ईश्वर उवाच ।। श्रृणु वत्स ।

प्रवक्षामि भास्करं कामदं व्रतम् ।

यस्यानुष्ठानमात्रेण पुत्रोभवति निश्चितम् ।।

ENDS :

इति रविमहिमा ते कार्तिकेयः प्रणीतः । ६० ।

कलियमल विनाशो भाविलोक प्रदीपः

सकलहर्षयुक्तोऽपि कुर्यान्महात्मा च भवति

चरादीनां वांछितं प्राप्य सिद्धिम् ।

COLOPHON :

इति श्रीस्कंदपुराणे सूर्यमाहात्म्यकथा संपूर्णम्,

संवत् १८९७ मा.कृ.च.गु.

15263

कल्किपुराणम्

Kalkipurāṇam

Foll- 46; 15x 34 Cms; paper; lines on a page , 13 to 14 lines; Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

सेंद्रा देवगणा मुनीश्वरगणा लोकाः सपालास्सदा ।

स्वं स्वं कर्म सुसिद्धये प्रतिदिनं भक्त्या भजन्त्युत्तमाः ।।

तं विघ्नेशमनं तमच्च्युतमंजसर्वज्ञ सर्वाश्रयं वन्दे ।

वैदिकतान्त्रिकादिविविधैःशास्त्रैः पुरावन्दितम् ।। १ ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीं व्यास ततो जयमुदीरयेत् ।। २ ।।

ENDS :

नारद उवाच – नाहं जीवामि हे माये देहेऽस्मिन्जीवनाश्रये ।

मायो............अहमित्यन्यथा बुद्धिः ।

कथं देहं विना तव देह बन्धे तथा श्लिष्टा भूतोद्भूये यथा श्रुयात्

मायाधारं ....चेष्टाविशिष्टाते कुतो वद ....।

COLOPHON :

3344

भागवतमहापुराण भावार्थदीपिका

Bhāgavatamahāpurāṇa bhāvārthadīpikā

Foll- 13 , 18 x 3.2 Cms, paper , 8 -15 Lines on a page , Devanāgarī Script , Age-x , Scribe-x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :

BEGINS :

यया मया विरोगी सविरूजा विशिष्टयारुजा विमुच्यते ।। इन्द्रियैः सहितं कल्पं देहं च विंदोर्दति शेषः ।। पठत् यो वर्तेत तस्य पितृणां देवतानां च अनंततृप्ति र्भवतीत्यर्थः।। उपसंहॅरति ।। राजन्निति ।। महत्पुण्यं जन्ममहद्वृतम् ।

ENDS :

इति श्रीभागवते महापुराणां प्रथम स्कंधे अष्टादशदृश्य परमहंस्य शुकानुगमनं नाम ।।१९।।

COLOPHON :

इति भावार्थ दीपिकाया प्रथमे एकोनविंशतितमो ऽध्यासय समाप्ताः ।

8213-226

श्रीमद्भागवतपुराणम्

Srīmadbhāgavatapurāṇam̐

Foll- 1114 , 18 x 47 Cms; paper; Devanāgarī Script, Age-x, Scribe-x; Condition-good.

8213	एकादशस्कंध	*ff*	*102*
8214	तृतीयस्कंध	*ff*	*110*
8215	द्वादशः स्कंधः	*ff*	*37*
8216	दशम स्कन्धः	*ff*	*130*
8217	प्रथमस्कन्धः	*ff*	*101*
8218	नवम स्कन्धः	*ff*	*51*
8220	अष्टम स्कन्धः	*ff*	*58*
8221	सन्तम स्कन्ध	*ff*	*67*
8222	पंचम स्कन्धः	*ff*	*83*
8223	दशम स्कन्धः	*ff*	*149*
8224	चतुर्थ स्कन्ध	*ff*	*114*
8225	अष्टम स्कन्धः	*ff*	*55*
8226	द्वितीय स्कन्धः	*ff*	*57*

8182

हरिवंशपुराणम्

Harivaṃśapurāṇaṁ

Foll- 425,11 x 50-5 Cms, paper , 13 to 14 lines on a page Devanāgarī Script; Age-x; Scribe- Rāmdayāsuśarmā , Condition - good.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री व्यासाय नमः ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ।। १ ।।

ENDS :

यत्र विष्णुकथा दिव्याः श्रुतयश्च सनातनाः ।

तत्श्रोतव्यं मनुष्येण परमपदमच्छिन्ती ।।

एतत्पवित्रं परमेतद्धर्म्म निदर्शनम् ।

एतत्सर्वगुणोपेतं श्रोतव्यं भूतिमिच्छताय ।।

COLOPHON :

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां । वैयासिक्यां हरिवंशः सम्पूर्णानाम् षष्ठधिक द्विशततमोध्यायः ।। २६५ ।। शुभमस्तु ।। संहिते यं त्रिभिर्मासेर्लिखनेन समायिता ।। १ ।। व्यासोक्ता हितायेयं भारतस्य महाफल ।। लिखितिति यत्नेन रामदया सुशर्मा ।।

न्याय एवं वेदान्त

Nyāya Evam̐ Vedānta

15253

तर्कसंग्रहः दीपिका

Tarkasaṅgrahaḥ dīpikā

Foll- 16, 18.5 x 33; Cms, Paper, 12 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x, scribe- x, Condition -good, slightly worm eaten .
Author : Annaṃbhaṭṭa
The Work : Tarkasaṃ̐grahaḥ - a well known work on the Nyāya Vaiśeṣika philosophy with the commentary Dīpakā by the author himself.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। श्री गुरुभ्यो नमः ।।

विश्वेश्वरं साम्बमूर्तिं प्रणिपत्य गिरं गुरुम् ।

टीकां शिशुहितां कुर्वे तर्कसंग्रहदीपिकाम् ।। १ ।।

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य निर्विघ्न परिसमाप्तयर्थं शिष्टाचारानुमितं श्रुतिबोधितं कर्तव्यताकं इष्टदेवतानमस्कार– लक्षणं मंगलं शिष्यशिक्षार्थं निर्विघ्नं चिकीर्षितं प्रतिजानीते निधायेति ननु मंगलस्य समाप्ति साधनत्वं नास्ति ।

ENDS :

साक्षात् तस्मात्पदार्थज्ञानान्मोक्षः परमप्रयोजमिति सर्वं रमणीयम् ।

COLOPHON :

इति श्रीमदन्नंभट्टोपाध्याय कृत तर्कसंग्रह दीपिका समाप्ता ।

15254

तर्कसंग्रहः दीपिका

Tarkasaṅgrahaḥ dīpikā

Foll- 9, 10.6 x 28 Cms, paper , 7 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1855 samvat, Scribe - x, Condition - good.

Author : Annaṃbhaṭṭa

The Work :

BEGINS :

आशीर्नमस्क्रियावस्तु मंगलत्रिविधं स्मृतम् ।
।। श्री गणेशाय नमः ।।
निधायहृदिविश्वेशं विधाय गुरुवन्दनम् ।
वालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः ।
द्रव्यगुणकर्मविशेषसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः ।

ENDS :

सप्तैव ते पदार्थाः इति सिद्धम् ।
कणाद न्यायमतयो बालव्युत्पर्त्ति सिद्धये ।।

COLOPHON :

अन्नंभट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः समाप्तिमगमत् ।।
रामाय नमः मितिज्येष्ट सु(शु)दी सोमवार ।।
संवतै १८५५, १८१७ ।।



3- Śukadeva Kathāpravana Ms. No. ST. 2620

15255

तर्कसंग्रहः

Tarkasaṅgrahaḥ

Foll- 7 , 12 x 27 Cms, paper, 11 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x, Condition -good. Author : Annaṃbhaṭṭa

15256

तर्कसंग्रहः

Tarkasaṅgrahaḥ

Foll- 13, 13.5 x 2 2 Cms, paper, 9 to 12 lines on a page, Devanāgarī . Script, Age - 1831 Samvat, Scribe- x , Condition- Good.
Author : Annaṃbhaṭṭa
COLOPHON :

इति तर्कसंग्रहः समाप्तः संवत् १८३१ भाद्रपद कृष्ण १०बुधे ।।

15257

तर्कसुधाधारा

Tarkasudhādhāra

Foll- 28, 13.1 x 19.5 Cms, paper, 11 to 15 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1918 Samvat, Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.
Commentator : Tīkīrāmaśarmā
The Work : Tarkasudhādhāra - a work on Nyaya philosophy with the commentary of Tīkīrāmaśarmā.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

शंभोरहिं प्रणम्य निखिल............................

तर्कसुधायाः सिद्धयै तर्कान्संक्षेपतो ब्रूमः ।। १ ।।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्री पंडितेन्द्र शिरोमणि श्रीटीकारामशर्मणा कृता तर्कसुधाकारिका समाप्ता श्रीटीकाराम ....

इति श्रीकूर्म्मांचलीय विद्वज्ज्न मंडली मंडन पदवाक्य प्रमाणाय ....। श्री पंडितेन्द्र शिरोमणि श्री टीकारामर्शणा विरचिता तर्कसुधा व्याख्या तर्कधारा समाप्तिमगमत् संवत् १९१८ ।

15258

संगतिवाद

Saṁgativāda

Foll- 6 , 12 x 20 Cms, paper , 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1918 Samvat, Scribe- Candrasena , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : Saṁgativāda -a work on Nyāya philosophy

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। जायतेचेति ।। कार्येज्ञाते कारणात्वस्य ज्ञानात्कारण ज्ञानमिष्ट साधनमित्या कारक विषयक ज्ञानात्मिकमस्य कारणमिति प्रश्नप्रयोजिका कारणे च.............ज्ञाते कार्य्यत्वस्य ज्ञानात्कार्य ज्ञानमिष्टसाधनमिति ।। कार्यत्वविषयक ज्ञानात्मिकस्य कार्यामिति प्रश्नमूलीभूता जिज्ञासा जायते ।।

ENDS :

प्रत्यक्षानुमानपदार्थयो रूपजीव्योपजीवक भावसम्बन्ध ज्ञानादनुगान पदार्थत्व रूप प्रकृतलक्षण लक्ष्यतावच्छेदक प्रकारेणानुमान स्मरणादनुमानपदार्थः क इति विशेष जिज्ञासयानुमितिकरणमनुमान पदार्थ इति निरूपणादुपजीवकत्वे संगतित्वनिर्वाहात् ।। एवं च सर्वत्र पूर्वापरनिरूपण विषययोः संबन्ध एव संगतिः ।।

COLOPHON :

इति संगतिवादः समाप्तः चन्द्रसेनेन लिखितः स्वपठनार्थः संवत् १९१८ चैत्रशुक्ल द्वितीया भृगौ शुभमस्तु ।

8202

अथर्वणवेदोपनिषद्

Atharvaṇavedopaniṣad

Folio 4, 10 x 15.5 Cms, paper; 8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x, Scribe-x, Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :

BEGINS :

। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

ॐ नमस्ते गणपतये ।।

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि त्वमेव केवलंकर्तासि

त्वमेवकेवलं हर्तासि । त्वमेवसर्वखल्विदं ब्रह्मासि ।।

साक्षादात्माऽसिनित्यम् ।। १ ।।

ENDS :

अष्टौब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति ।

सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निद्धौ याजस्व सिद्ध मन्त्रों

भवति ।। महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते ससर्वविद्भवति ।

ससर्वविद्भवति य एवं वेद ।।१४।।

COLOPHON :

इत्यथर्वणवेदोपनिषत्सु गणेशाथर्वशीर्षं समाप्तम् ।।

15189

अथर्ववेदीय द्विपञ्चाशत उपनिषद्

Atharavadīyadvipañcāśataupniṣad

Foll- 133 ,10 x 21, Cms, paper,8 lines on a page, Devanāgarī script , Age -x , Scribe -x, Condition -good, slightly worm eaten .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐश्री गणेशाय नमः ।।

।ॐ नमः सरस्वत्यैः ।।

अथार्थर्वणीये उपनिषदस्तथा शाखांनरीयाश्चालिख्यते ।।

ॐ ब्रह्मा देवानां ....।।

ENDS :

एताः सर्वप्रथग्वाक्या जीवब्रह्मैक्य बोधिकाः ।

COLOPHON :

इत्थर्ववेदोपनिषद्ग्रन्थः समाप्ताः ।। शुभमस्तु सर्वजगतां परहित निरता भवंतु भूतगणा शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।।

15232

अध्यात्मरामायण

Adhyātma Rāmāyaṇa

Foll- , 262, 11.5 x 32, Cms, paper, 6 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition- good, water stained.

The Work :

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, आरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड ।।

1- बालकाण्ड		
2- अयोध्याकाण्ड	ff	37
3- आरण्यकाण्ड	ff	39
4- किष्किंधा काण्ड	ff	32
5- सुन्दरकाण्ड	ff	31
6- युद्धकाण्ड	ff	23
7- उत्तरकाण्ड	ff	44
	ff	56

COLOPHON :

इति श्रीमत्सकलराज विषयदुद्धरण समर्थेत्यादि विरूदावली विराजमानलस्य हिम्मतवर्मण: पुत्रस्य श्रीराम वर्मण: कृतावध्यात्मरामायणे सेतौ उत्तरकांडे नवमसर्ग: ।। ९ ।। समाप्तोयं ग्रन्थ: ।।

15194

अनुभवानन्द
Anubhavānanda

Foll- 2 ,10.5 x 23 Cms, paper, 7 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -x , 1858 Samvat , Scribe -x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
क्ष्वग्निपवनाकाशैः साहंकारैः सशक्तिभिः ।
संयुतं श्रीशिवं नत्वा तद्विविच्ये यथास्म्यहम् ।। १ ।।

ENDS :

धर्मो शिवो यस्य हि धर्मरूपा शक्तिस्तदन्तर्विधिविष्णुरूद्राः ।
कुर्वीति तच्छासितधर्मसंस्था सर्गादि विश्वस्य नमोऽस्तु तेभ्यः ।। ५९ ।।

COLOPHON :

विक्रमस्य गतेवर्षे वसुपञ्चाष्ट भूमिते रचितो रामनाथेन भाद्रशुक्लाष्टमी वुधौ ।। इत्यनुभवानन्दः ।।

8186

अपरोक्षात्मविज्ञा

Aprokṣātmavijñā

Foll- 2 ,11.5 x 26 , Cms, paper 9, lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x , Scribe - x , Condition-good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीपरमात्मने नमः ।।
कर्तारं कर्मवध्नाति खलु वेदविदांवगः ।।
ज्ञानिनो नैवकर्तृत्वंकर्तृत्वंवस्तु तु साक्षिणः ।। १ ।।
कायकं वाचकं चैव मानसं कर्म नान्यथा ।
अथ सति कथं कर्म भवेत्त्तत्साक्षिरूपिणः ।। २ ।।

ENDS :

महापात्यकं पूर्वाणां पातकानां मुनीश्वराः ।
रहस्यानां प्रसिद्धानां प्रायश्चित्त हि वेदनम् ।। ३५ ।।

COLOPHON :

अपरोक्ष आत्मविज्ञा ।।

8194

अपोहवाद

Apohavāda

Foll- 23; 11.5x30 Cms; 11-13 lines on a page, Devanāgrī Script, Age- x , Scribe- x, Condition- bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

अन्वयव्यतिरेकाभ्यामेव सर्व संसार विनिर्मुक्तात्मा वागमत्किं वाक्येनेत्याशंक्याह ।।

पदार्थस्या ऽन्वयव्रूतिरेको आत्मपदार्थो दृष्टा साक्षी न कदापि दृश्य: ....
........................।

ENDS :

अपोहवादे दोषांतरमाह । क्षणवाच्योपीति । अन्या भावो ऽक्षणिक भाव: क्षणिक इति तं प्रसज्यते ।। अत: स्थिरोपि ।। क्षणिकता विरोधित्वयाभ्युपगत: स्यादित्यर्थ: ।। १४६ ।। श्री निरंजनाय नम: ।। श्री परमब्रह्मने नम: ।। श्री सच्चिदानंदाय ।।

COLOPHON :

8196

अष्टावक्र

Aṣṭāvakra

Foll- 73, 11 x 28 Cms, paper, 7 to 9 lines on a page, Devanāgrī Script, Age - x, Scribe- x, Condition- good.
Author : Viśveśvara
The Work : Aṣṭāvakra with the Dīpikā commentary of Gopāla Caitanya

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

सच्चिदानन्दमद्वैतं सर्वाधिष्ठानमुत्तमम् ।
नत्वाष्टावक्रसूक्तस्य दीपिका तन्यते परा ।। १ ।।

श्रीमद्गोपाल चैतन्येन रचितेन मयादीपिका टीका विस्तार्य क्रियते ।
सकलविद्वज्जनकृपाकटाक्षसंतुष्टचेतसा मया विस्तार्य टीका क्रियते ।

ENDS :

कैरित्यर्थः श्लोकसंख्यामुपसंहरति । अवधूतेनिः अवधूतानुभूति रूपोयं ग्रन्थस्तस्य संख्या क्रमोविद्यते ....संख्या कमा ईदृशा श्लोका अमीकथिता इत्यर्थः ।। द ।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्विश्वेश्वर रचितायामष्टावक्र टीकायां सारं कमं दिव्याख्यानं समाप्तं ।। ग्रंथ संख्या १५०० संवत् २४ वर्षे माघमासे कृष्ण पक्षे ८ गुरूवासरे ग्रन्थ समाप्तम् ।

15193

अष्टश्लोक वालप्रबोधव्याख्या

Aṣṭaślokabālaprabodhavyākhyā

From : Skaṇdapurana(स्कन्दपुराण)

Foll- 6, 10.2 x 23.3 Cms, papers , 9 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

श्रीमद्रामानन्दाय नमः ।। श्रीपाराशरभट्टाचार्यः श्री रंगेशपुरोहितः श्रीवत्सांकसुतः श्रीमान् श्रेयसेऽस्तुभूयसे ।। १ ।।

ENDS :

इत्थं वालप्रबोधार्थमष्टश्लोक्या-यथा श्रुतम् वस्मृतोऽर्थो महात्मानः क्षन्तुमर्हथसादृशम् । यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न दीयताम् ।। १ ।।

श्रीमदामानन्दायनमः श्री मज्जानकीजानये नमः शुभमस्तु ।।

COLOPHON :

8185

ईशावास्यरहस्यम्

Īśāvāsyarahasyam̐

Foll- 7 , 12 x 27.5 Cms., paper ,10 to 12 ,lines on a page , Devanāgarī script , Age -1932 Samvat , cribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ॐ नमः ।।
ईशावास्यमिदं सर्वयंत्किञ्चजगत्यांजगत् ।
तेनत्यक्तेन भुंजीथामागृधः करम्येस्विद्धनम् ।।
इन्द्रियोपेक्षया मनसो ऽन्तस्थत्वात् तद्वासना रूपा प्रज्ञा यस्य अंतः
प्रज्ञः अतः सुखं वाह्य विषयजनित सुख शून्य सुखं य अंतर्वेदी
ब्रह्मानंदम् यं ज्ञात्वामुच्यते सर्वबन्धनात् ।
ईशावास्यरहस्यं च शुक्लतीर्थोत्तमे शुभे ।। २ ।।
रामानन्दसार ।

ENDS :

सत्यस्थ परमं सत्यं ब्रह्म सत्यं च यातु मां ।
ईशावास्य रहस्यं च ब्रह्मानन्देन विनिर्मितम् ।। १२ ।।
ब्रह्मानन्दमयं ज्ञात्वा मुच्यते सर्व बन्धनात् ।
ईशावास्यसरहस्यं च शुक्लतीर्थोत्तमे शुभे ।। १२ ।।
हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्या स्वत्या लिखितं स्वात्मलब्धये
ब्रह्मैव परमं सत्यं विशुद्धं सवांतरस्थं सद्सद्विहीनम् ।।
निरंजनं निष्फलमद्वितीयं तदेवाचाहं सततं विमुक्तः ।। ३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीब्रह्मानंदसरस्वती कृत ईशावास्यरहस्यं संपूर्णम् १९३२
भाद्रपद शुक्ल पंचम्यां ऽ रविवासरे लिखितम् समाप्तम् शुभं भूयात् ।।

8195

उपदेश सहस्री

Updeśa Sahasrī

Folio-77; 30x11 Cms; Paper 10 to 13 lines of a page; Devanāgarī Script, Age-x, 1829 samvat, Scribe- Ṛṣi Keśarī chandra, Condition- good.
Author : Śaṅkarācārya
Commentator : Rāmtīrtha
The Work : Updeśa Sahasrī with the commentary padyojanikā of Rāmatīrtha composed by Śaṁkarācārya.
BEGINS :

किंचेद्रियाणिआत्मान: करणत्वात्कुवारवदित्यनुमानान्तरं सूचयन कार्यवशादिंद्रियाणामेकादशत्वनियममाह ।। बुध्यर्थामिति ।। एतानि घ्राणादीनिबुध्यर्थानि ज्ञानकारणान्याहु: वाक्पाणिपादपायुपास्थाख्यानिं इंद्रियाणि कर्मणेकर्मार्थे वचनादानगमन विसर्गानंदार्थ तत्करणान्याहुरित्यर्थ: ।।

Text :

बुध्यर्थान्याहुरेतानि वाक्पाण्यादीनीकर्मणे ।
तद्विकल्पार्थमन्तस्थं मन एकादशं भवेत् ।। ३ ।।

ENDS :

विमथ्येवेदोदधित: समुद्धृतंसुरैर्महाध्वेस्तु यथामहात्मभि: ।।
तथाऽमृतं ज्ञानमिदं हियै: पुरानमों गुरूभ्य: परमीक्षिंतचयै:।। २८।।

COLOPHON :

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यश्रीगोन्दिभगवत्पाद पूज्य शिष्यस्य श्रीशंकरभगवत कृति: सकलवेदोपनिषत्सारोपदेशसहस्री समाप्ता ।।

इति श्री शङ्कराचार्य कृतो पदेशसहस्रया पदयोजनिकानाम टीका कृष्णतीर्थ शिष्य रामतीर्थ विरचिता समाप्ता ।।
लिखिता मदनात्मजेन ।। ३ ।।

संवत् १८२९ वर्षे आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी १३ रवो वासरान् अवंतिकायां दक्षिणी पुरामध्ये लिपीकृतं ऋषिकेशरीचंद यथा प्रति ।।

8190

गीताभावार्थदीपिका

Gitābhāvārtha dīpikā

Foll- 109 , 16.5 x 33 Cms, paper, 7 to 17 lines on a page , Devanāgarī Script ,Age -x , Scribe- x , Condition -good.

Author : not mentioned.

The Work : Gitābhāvārtha dīpikā - with the commentary Śubodhinī of Śrīdharasvāmī.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

शेषाशेषमुखव्याख्याचातुर्यंत्वेकवक्रतः ।

दधानमद्भुतं वेदे परमानन्द माधवम् ।। १ ।।

श्रीमाधवं प्रणम्योमाधवं विश्वेशमादरात्

तदद्भक्तियन्त्रितः कुर्वे गीताव्याख्यां सुबोधिनीम् ।। २ ।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णोयत्रपार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीविजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ।। ७८ ।।

ENDS :

इति श्रीभगवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन ।।

संवादे योगशस्त्रे निर्णयै सन्यासयोगो नामष्टादशोध्यायः ।।

COLOPHON :

इति श्री महाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायाम् । वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद् गीतासुपनिष्सत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रै श्रीकृष्णार्जुन संवादे योगशास्त्रेनिर्णय सन्यासादि तत्वनिर्णये श्रीधरस्वामी कृतौ मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय: समाप्त: ।।

15372

चतु:श्लोकी भागवतम्
Catuḥślokī bhāgavatam̐

Foll- 1 , 11 x 15 , Cms, paper, 7 to 9 lines on a page, Devanīgarī script , Age - x, Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीभगवानुवाच ।।

ॐ ज्ञानं परमगुह्यं यद्विज्ञानं समन्वितम् ।

सरहस्यं तदंगं च गृहाण गदितं मया ।। १ ।।

ENDS :

ऋतेर्थं यत्प्रतीये तन प्रतीये च चात्मनि ।।

COLOPHON :

इति श्रीचतु:श्लोकी भागवतं श्रीनारायण प्रोक्तं समाप्तम् ।।

15305

चतु:श्लोकी भागवतम्

Catuḥślokī bhāgavatam̐

Foll- 2 ,10.5 x 17.5 Cms, paper , 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1775 Samvat, Scribe- mālukadāsa vaiṣṇava, Condition -good. Foll- 2 is brittle from rightside.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री भगवानुवाच । ज्ञानं परमं गुह्यं ऐतद्विज्ञानसमन्वितम् ।
सरहस्यं तदंगं च गृहाण गदितं मया ।। १ ।।
यावनाहं यथाभावो यद्रूप गुण कर्मका ।
तथैवं तत्वं विज्ञानम अस्तु ते मदनुग्रहात् ।। २ ।।

ENDS :

एतन्मतं समातिष्ठ परमेणसमं समाधिनः ।
भवनकल्प विकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् । ७ ।।
शुक उवाच । संप्रदिश्यैवमजनोजनानांपरमेशिव।।
पश्यतस्तस्यतद्रूपमात्मनोन्य .... हरिः ।। ८।।

COLOPHON :

इति चतु:श्लोकी भागवतम् श्रीः संवत् १७७५ इष कृष्णदले चतुर्दश्यां लिखितमिदं वैष्णवमालूकदासाख्येन ।। ६ ।।



4- Viṣṇu darśana Kṛṣṇa Janma Ms. No. ST. 2621

8210

तत्वबोध प्रकरणम्

Tatvabodha Prakaraṇam̐

Foll- 12; 3.6 Cms ; 7 lines in a page; devanāgarī script; Age- x; Scribe-x; condition-good.

Author : Śaṅkara cāryah

The Work : Tatvabodha Prakaraṇam- a work of Vedānta philosophy.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्र नत्वा ज्ञानप्रदं गुरूम् ।

मुमुक्षुणां हितार्थाय तत्वबोधो विधीयते ।। १ ।।

साधनचतुष्टय सम्पन्नाधिकारिणां

मोक्ष साधन भूतं तत्व विवेचक प्रकारंवक्ष्यामः ।। २ ।।

ENDS :

COLOPHON : इति तत्वबोध प्रकरणं समाप्तम् ।।

15315

नारायणोपनिषद्

Nārāyaṇopaniṣad

Foll- 4, 12 x 15 Cms, paper, 15 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - X, Scribe -X , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Nārāyaṇopaniṣad- It forms the last i.e. the tenth prapāṣhāka of the Taittiriyāraṇyaka.

BEGINS :

ॐ गणेशो जयति
ॐ अथ पुरुषोहवै नारायणो कौ नयत: ।
प्रजा: सृजेति नारायणात्प्राणोजायते नम: सर्वेन्द्रियाणि च वायुर्ज्योतिरापश्च पृथ्वी विश्वस्य धारिणी नारायणात ब्रह्मा जायते नारायण.............. जायते नारायणात्प्रजापतिर्जायते ।

ENDS :

शनिवार समायुक्ता सा महावारूणी स्मृता शुभयोगे च संयुक्तामधौ कृष्णा त्रयोद(श)सी महामायैति विख्याता त्रिशतं कुलमुद्धरेत ॥

COLOPHON :

42

8209

परमहंसोपनिषत्

Paramahaṃsopaniṣat

Foll- 12,7.5 x 17.5 Cms, paper, 7-8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x, Scribe - x, Condition - good.
Author - not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ वज्रसूचिका प्रकरणम् । वज्रसूचिकां प्रवक्ष्याामि ।
शास्त्रमज्ञानभेदनम् दूषणं ज्ञानहीनानां,भूषणं ज्ञान चक्षुषाम् ।।१ ।।
ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राश्चत्वारो वर्णानां ब्राह्मणः प्रधान इति ।।

ENDS :

आत्मन्येव स्थीयते स एव योगी स एव त्यागी च स एव नित्यानन्द एव वोधस्तस्माद्ब्रह्माहं अस्मि ब्रह्माहमस्मीति ज्ञात्वा कृतकृत्यो भवतीति नान्यथा ।।

COLOPHON :

इति श्रीभगवत्गीतासु परमहंसोपनिषत्समाप्ता कृष्नाये नमः ।।

15188

प्रश्नोपनिषद् भाष्य

Praśnopaniṣadbhāṣya

Foll- 19, 12.5 x 22.5 Cms., paper, 14 to 17 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x, Scribe-x, Condition - good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work : Praśnopaniṣadbhāṣya - a bhāṣya on Praśnopaniṣad by Śaṅkarācārya

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मंत्रोक्तस्यार्थस्य विस्तारानुवादीदं ब्राह्मणमारभ्यते ।
सृष्टिप्रश्न प्रतिवचनाख्यायिकां तु विद्यास्तुतये ।। १ ।।

ENDS :

नमः परमर्षिभ्यो ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय
कर्तृभ्यांनमः परमर्षिभ्यां इति द्विर्वचनमादरार्थम् ।।

COLOPHON :

श्री इति श्रीगोविन्द भगवन्पूज्यपाद शिष्यस्य परमहंसप्राव्राजकाचार्य शङ्कर भगवतेः कृताथर्वणोपनिषद्प्रश्न भास(ष्य)यंसंपूर्णम् ।।

15428

प्रश्नोत्तरमणिरत्नमाला

Praśnottaramaṇiratnamālā

Foll- 5, 12.3 x 16.3 Cms. paper, 9-10 lines on a page, Devanāgarā Script, Age - x , Scribe- x , Condition -bad.

Author : not mentioned.

The Work : Praśnottaramaṇiratnamālā containing questions and answers usually ascribed to Śaṅkaracārya.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अपारसंसारसमुद्रमध्ये सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरोकृपालो कृपया वदैतद्विश्वेश च पादाम्वुजदीर्घनौका।।१ ।।
बन्धो हि को वा विषयानुरागः का वा विमुक्तिर्विषयेविरक्तिः ।
को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः तृष्णाक्षयः स्वर्गपदंकिमस्ति ।।२।।

ENDS :

अहर्निशं किं परिचिंतनीयं संसार मिथ्यात्व शिवात्मतत्वम् इति प्रश्नोत्तरी समाप्ता ।।

COLOPHON :

15184

श्रीभगवद्गीता

Śrībhagvadgītā

Foll- 113 ,16 x 33 Cms, paper , 11 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, Condition - good only Foll- 100 is torn from left side.
The Work :Śrībhagvadgītā with the commentary subodhinī.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः।।
शेषाशेष मुखव्याख्या चातुर्य्यत्वेक वक्रतः ।
दधानमद्भुतं वन्दे परमानंद माधवम् ।। १ ।।
श्री माधवं प्रणम्योमाधवं विश्वेशमादगत् ।।
तद्‌भक्ति यन्त्रितः कुर्वेगीताव्याख्यां सुबोधिनीम् ।। २ ।।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्ज्जुन संवादे योगशास्त्रे (मोक्षसन्यास) नृणुणासयोगोनामष्टादशोध्याय ।। १८ ।।

15192

श्रीभगवद्गीता

Śrībhagvadgītā

Foll- 65, 10 x 14, Cms, paper 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - Scribe- Giradhārīlāl miśra , Condition - good, slightly warm eaten.

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीभगवद्भगवद्गीतामाला मन्त्रस्य भगवान्वेदव्यास

ऋषिरनुष्टुपछंदः श्री कृष्णः परमात्मादेवता ।

ENDS :

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम् ।। ७८ ।।

COLOPHON :

इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे-मोक्षसन्यास योगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ।। १८ ।।

शुभमस्तु मंगलमस्तु पुनः प्रारम्भो भूयात् माधवे कृष्णपक्षे च अष्टम्यां रविवासरे गीतालिपिर्मया कृत्वा समाप्तिमगमत् शुभा एकोनविंशसहस्राख्यत्रिविंशेनाधिकायुतविक्रमादित्यराज्यस्य द्वैतगत वार्षिक इदं पुस्तकं मिश्र कालियानदासाय(कल्याणदासाय) पठनार्थं मिश्रगिरिधारी लालेन लेखि श्री रामचन्द्रार्पणमस्तु ।

15249

भगवतलीलाचिन्तामणि
Bhagvatalālā Cintāmaṇi

Foll-, 34, 20 x 37.5 , Cms, paper, 11 to 19 lines on a page, Devanāgarī script, Age -x , Scribe- x,Condition- good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री लीलाऽचलचन्द्रं चेतसि रुचिरं विचिन्तयामिचिरम् ।

यद्स्मरुचिता रचयति परिचयैर्मार्ग्यतमाऽपचयम् ।।

ENDS :

COLOPHON :

10264

भगवतलीलाचिन्तामणि

Bhagvatalālā Cintāmaṇi

Foll- 83,10.5x 14 Cms; Paper, 9 lines on a page; Devanāgarī script, Age-1855 Samvat; Scribe-Kesorāma; condition-good; Slightely warm eaten

Author : Not mentioned.
The Work :
BEGINS :

अथ श्रीभगवद्‌गीता प्रारभ्यते
श्रीगणेशाय नमः ।
ऊँअस्यश्रीभगवद्‌गीतामालामन्त्रस्य भगवान वेदव्यास ऋषिः
अनुष्टुप् छंदः ।। श्री कृष्णपरमात्मा देवता ।

ENDS:

तत्रयोगेश्वरः **कृष्नो** यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्रश्री विजयोभूति **ध्रुवानीतिर्मम** ।। ७८।।

COLOPHON :

इति श्रीमहाभारते शत साहस्त्रीसंहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्‌गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशस्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यासयोगोनामाष्टादशोऽध्यायः ।। १८ ।। संवत् १८५५ आश्विनमासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां चन्द्रवासरे लिखितं केशोरामब्राह्मण शुभमस्तु ।। कल्याणमस्तु, श्रीरस्तु ।

15240

श्रीमद्भागवद् दशम स्कन्ध

Śrimadbhāgavad daśamskandha

Foll- 147 , 32 x 15.5 Cms, paper, 12 to 16 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x, Scribe-x, Condition good .

The Work : Śrimadbhāgavad - with the commentary bhāvārthadīpikā

15241

श्रीमद्भागवत् एकादश स्कंध

Śrīmadbhāgavat ekādaśaskandha

Foll- 148,15.7 x25-5 Cms, paper, 13 to 14 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition- good.

2619-2631

श्रीमद्भागवत् भावार्थ दीपिका

Śrīmadbhāgavat Bhāvārtha dīpikā

Foll- 1649, 44 x 27.5 Cms, paper, 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition- good.

The MS is illustrated in folk Mughal style comprising 14 illustrations.

15244

भागवतपद्यव्याख्या

Bhāgavatapadyavyākhyā

Foll- 13, 15 x 37.5 Cms, paper, 12 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script ,Age- x , Scribe - x , Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीकृष्ण परमं तत्वंनत्वातत्प्रसादतः ।
श्रीभागवतंपद्यानां कश्चभाव प्रकाश्यते ।। १ ।।

सर्वदा असत्प्रसंगैर्बहुविध परितापैः क्षीयते व्यर्थमेव हरिचरण सुधाभिः सिच्यमानस्तेनेतत्क्षणमपि सफलं स्यादित्थं मे श्रमोत्र ।। २ ।।

ENDS :

रससशब्द तु गुणवाची न गुणि विपर्यवसायि रसः शर्करेत्यादि प्रयोग दर्शनान्मतुपलोपोनसामानाधिकरणया संभवात् माधुर्यत्वार्थ मतुपोऽप्राप्तिरेवेत्यर्थः ।

15187

मननाख्यप्रकरण
Mananākhyaprakaraṇa

Folio 65, 10.7 x 28.7 , Cms, paper 7 to 11 lines on a page, Devanāgarī script, Scibe- x , Age- x, Scribe- x, Condition- good.
Author : Vāsudevānandatīrtha.
The Work :
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।। हरिः ॐ ।।

योवतीर्ण इहाचार्यरूपेण यतिनां (पतिनां) मुदे

श्रीमन्नारायणं वन्दे तं हरिं करुणानिधिम् ।। १ ।।

मननाख्यं प्रकरणं वासुदेवयतीश्वरैः रचितम् ।

विस्तरेणाद्यं संग्रहेणं प्रकाशयते ।। २ ।।

वालानामुपकाराय ममापिज्ञानसिद्धयै

तत्र श्रीवालगोपालकृष्णः सन्निहितो भवेत् ।। ३ ।।

ENDS :

शिष्येण च श्रोतव्यं इतः परं वक्तव्यं श्रोतव्यं नास्तीति सिद्धम

इति ।।

COLOPHON :

इति मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री वासुदेवानन्दतीर्थ विरचिते

मननाख्येप्रकरणे द्वादशवर्णकं समाप्तम् ।।

समाप्तोयं ग्रन्थः श्री देवानां भूमि देवानां प्रसादतः ।

15190

महावाक्य विवरण

Mahāvākyavivraṇa

Foll- 46, 10x 23 Cms, paper, 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x, Scribe-x , Condition - good, water stained.

Author : not mentiond.

The Work : - Mahāvākyavivraṇa- a work of vedāṇta philosophy.

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। ॐ नमः

श्री सकलकल्याणभाजनाय पिनाकिने ॐ

समस्तविषयवासनााविनिमुक्तिः सपरमहंसः केवलं निर्विशेषो ब्रह्मचिंतनमात्रमवतिष्ठति । सपरमहंसो यत्रकुत्रचित्तिष्ठति । किं करोति । केवलं द्वादश महावाक्य विचारं करोति । तन्महावाक्यं कीदृक् ? तत्र उपनिषदादीनि वाक्यानि आदौ तावत् ऋग्वेदस्य प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म अहं ब्रह्मास्मीति यजुर्वेदस्य तत्त्वमसीति सामवेदस्य अहमात्माब्रह्मेति अथर्वणवेदस्य अहं ब्रह्मास्मि यत्परं ब्रह्मेति श्रुतेः इत्यादि द्वादश महावाक्यैरेव ब्रह्म विचारः।

ENDS :

ब्रह्मानन्दे क्षुद्रानन्दानाममद्भुतत्वादिति ।

COLOPHON :

इति महावाक्य विवरणं संपूर्णं शुभम्।

8204

वेदान्तसार:

Vedāntsārḥ

Foll- 17 , 11.5 x 25 Cms, paper, 9-10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1904 samvat, Scribe -x, Condition- bad. Occasionally notes on margin.
Author : Sadānanda
The Work : Vedāntasāraḥ - a famous work on Vedānta philosophy.
BEGINS :

गणेशाय नमः
अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम् ।
आत्मानमखिलधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ।।

ENDS :

COLOPHON :

इति परमहंसे परिव्राजकाचार्य ..... कृतो वेदान्तसार: समाप्त:
संवत् १९०४ श्रावण सिते । बुधे ।

15185

वेदान्तपरिभाषा

Vedāntaparibhāṣā

Foll- 44, 12.5 x 33 Cms, Paper , 8 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -1898 Samvat, Scribe - x, Condition - good.
Author : Dharmarāja dhīrendra.
The Work : Vedāntaparibhāṣā- a work on vedānta philosophy .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
यद्विद्या विलासेन भूतभौतिक सृष्टयः तं नौमि परमात्मानं ससच्चिदानन्दं विग्रहम् ।
पदान्तेवा सिप्तं वास्यैर्निरस्ताभेदिवारणाः तं प्रणौमि नृसिंहांख्यांमिदु परमं गुरुम् ।

ENDS :
देवं ब्रह्म ज्ञानेनमोक्ष मोक्षश्चानर्थनिवृत्ति निंरतिशय ब्रह्मानन्दवाप्तिश्चेति सिद्धंप्रयोजनम् । -

COLOPHON :
इति श्री वेदांतपरिभाषाया प्रयोजन निर्णयः ।
श्री संवत् १८९८ श्री राम—राम शुभं भूयात् ।।

15186

वेदान्त संज्ञाप्रकाश

Vedāntasanjñāprakāśa

Foll- 25, 10.3 x 26, Cms, paper, 9 lines on a page- Devanāgarī Script, Age - 1904 Samvat , Scribe - x, Condition - good ,water stained.

The Work : - Vedāntasanjñāprakāśa -a work on vedanta philosophy. The Vedāntasanjñāprakāśa explaining the technical terms like adhyāropa and Brahman for another.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ब्रह्मणे नमः ऊँ ।।
श्री मद्गुरोः पादयुगं नत्वा तस्यप्रसादतः ।
वेदान्त संज्ञा प्रत्येकं निरूप्यते यथामतिः।। १ ।।
अध्यारोपापवादाभ्यां निःप्रपंचं प्रपंच्यते
इति वृद्धवचनम् अत्राध्यारोपो नाम वस्तुन्यवस्त्वारोपः
वस्तुसच्चिदानन्दात्मकं ब्रह्म अवस्त्वज्ञानादि
सकल जडसमुदायमहात्वरूप प्रपंचः ।

ENDS :

तथा च अयमेव सः एवायमित्यन्योन्यमेदत्यावर्तक तथा
सोयं शब्दार्थयोः परस्परं विशेषणं विशेष्य भाव इत्यर्थः ।।

COLOPHON:

इति संज्ञाप्रकरणम् संवत् १९०४ श्रावण कृष्णाद्वितीया गुरौ शाके ।



5- Devi Stuti Ms. No. ST. 2622

15182

वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली

Vedāntasiddhānta muktāvalī

Foll- 48, 10.2 x 28.5 Cms, paper , 9 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -1792 Samvat, Scribe -Mahādāsa , Condition- good slightly worm eaten.

Author : Prakāśānanda

The Work : Siddhāntmuktāvalī with the commentary of Prakāśānanda pupil of Jñānānda.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।। नमः परमात्मने गुरवे नमः ।।
विश्वेशं ढुंढिराजं जगद्द्वय कृतं शारदां सूत्रकारम् ।
व्यासाचार्य्याविदं त्रिभुवनविदितं शंकरभाष्यकरम् ।
आनन्दात् प्रकाशानुभवपदप्रदं सद्गुरू श्रीनृसिंहं
वन्दे विद्यानिधानं शमदमनिरतं राघवेन्द्रं मुनीन्द्रम् ।। १ ।।

ENDS :

स्नानं तेन समस्ततीर्थ सलिले सर्वाणि दत्तान्यापि ।
यज्ञानां च कृतं सहस्रमखिला देवाश्च संपूजिताः ।।
संसाराच्च समुद्धता स्वपितरस्त्रैलोक्य पूज्योप्यसौ ।
यस्य ब्रह्मविचारणो क्षणमणि स्थैर्य्ये मम प्राप्नुयात् ।। ७४ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकायार्थ श्रीज्ञानानंद पूज्यपाद शिष्य श्री प्रकाशानंद विरचिता सिद्धान्तमुक्तावली समाप्ता संवत् १७९२ वर्षे मासे मार्गशिरपूर्णिमास्यां सोमवासरो लिखितं इदं सेवक महादासेन स्वपठनार्थम् च कश्चमुमुक्षु वे................ नमः ।।

15372

सप्तश्लोकी गीता

Saptaśloki gitā

Foll- 1, 11 x15 , Cms , Paper 7 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीभगवानुवाच ।। ॐ

ॐ मित्येकाक्षरं व्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।

यः प्रयातत्यजनन देहं सयाति परमां गतिम् ।। १ ।।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोक्षि शिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्यं तिष्ठति ।। २

अर्जुन उवाच..............

ENDS :

यो मां गीता समूहेन स्तोतमिच्छति पाण्डवः ।।

सोहवै सप्तभिः श्लोकैः स्तुतएव न सन्शयः ।।

COLOPHON :

इति श्रीसप्तश्लोकी गीता संपूर्ण समाप्तम् ।।

राम कृष्ण गोविन्द ।

8210

सप्तश्लोकी गीता

Saptaṣlokī gītā

Foll- 2; 3.6 x 6 Cms; paper 5 to 7 lines on a page ; devnāgarī script; Age-x; Scribe-x, Condition- good

Author : Śaṃkarācārya

The work :

BEGINS :

मित्येकाक्षर ब्रह्मन व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजं देहं सयाति परमां गतिम्।। १ ।।
सर्वतः पाणिपादा तत् सर्वतो सिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमं लोके सर्व माव्रत तिष्ठति ।। २।।

ENDS :

यो मां गीता समूहेन स्तोतुमच्छिन्ति पाण्डवा।
सो.....मे सप्तभि श्लोकै अस्तोति ये व न संशयः ।।

COLOPHON :

इति सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णम् ।।

8184

सिद्धान्तबिन्दुः

Siddhānta binduḥ

Foll- 11 , 11 x 27.2 , Cms , paper 9-10 lines ona page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition- good. Author : not mentioned.

The Work : Siddhānta binduḥ a famous work on Vedānta composed by Madhusūdan Saravastī.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीशंकराचार्यं नवावतारं विश्वेश्वरं विश्वगुरुम् प्रणम्य ।

वेदान्तशास्त्रश्रवणालसानां बोधाय कुर्वे कर्माय प्रपत्तम् ।।

ENDS :

नभातीति प्रतीति में न सामर्थ्यमावरण .... ।।

COLOPHON :

15183

सिद्धान्तमुक्तावली

Siddhāntmuktāvalī

Foll- 90 , 15 x 13.2 Cms., paper, 9 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : The Siddhāntamuktāvalī with the commentary Bhāṣāparicheda of Viṣvanātha tārkapaścānana.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः।।

लक्ष्मीपादयुगं प्रणम्य पितरं श्री बालकृष्णभिधम्।

भारद्वाजकुलाम्बुजौ विधुमिव श्री गौरवक्त्रांबुजात् ।।

ज्ञात्वाशेषमतमितेन वचसा सिद्धान्तमुक्तावली

गूढार्थास्तनुते यथामतिः महादेवः परेषां कृते ।। १ ।।

COMM.

तत्रतातभिाषापरिच्छेद व्याख्यानं चिकीर्षुः श्रीविश्वनाथ पंचाननो निर्विघ्नसमाप्ति सिद्धये ।

कृतस्येश्वरनिर्देश रूप मंगलस्य शिष्य अस्येवं कुर्युरिति शिष्य शिक्षार्थे निबन्धं कुर्वन्नीश्वरं प्रार्थयते ।।

चूड़ामणि कृतेन्ति.......................।

ENDS :

सर्वदैवेति ध्यानाद्यभावे प्रीत्यर्थः शुभमस्तु श्रीरस्तु श्रीः ।

8197

हरितत्व मुक्तावली

Haritatva muktāvalī

Foll- 36 , 11 x 27.5 Cms, paper , lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1932 Samvat , Scribe- x , Condition - good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

नित्यं निजानंद सद् द्वितीय शुद्धं विभुं सत्यमति स्वतंत्रम् ।
सूक्ष्मं निरस्ताखिल दृश्यमीशं प्रत्यंचमात्मानमहं भजामि ।। १ ।।
शङ्करं शङ्कराचार्य केशवं वादगयणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वंदे भगवंतौ पुनः पुनः ।। २ ।।

ENDS :

सत्य ज्ञानानंदात्मक द्वितीयं ब्रह्मैव शुद्धसत्वप्रधनगायोपाधिंकं सदीश्वर भावम् । मलिनसत्वमधानाविद्योपाथिकं सत्............असम्भ्वतु सतोऽप्नुपपत्तेरितिव्यायेन तस्याजन्यत्वमाह—अनादिमिति । ....

COLOPHON :

परमहंस परिव्राजकाचार्ये कैवल्यानंदयोगीद्रपादकमल भ्रंगायमानस्वयंप्रकाशाख्य विरचिता श्रीमच्छशङकर भगवत्पादकृत हरिस्तुति व्याख्या हरितत्वमुक्तावली संपूर्णम् श्रुभं सर्वलोकानाम् संवत् १९३२ श्रावण शुक्ल प्रतिपः शनि. ।

8186

अज्ञात

Ajñāta

Foll- 1, 11.5 x 26 Cms, paper , 9 -10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x , Scribe- x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : A Work of Vedānta philosophy. The name of work not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

कस्त्वमसि शोकस्य कुतोसि गतां किं नाम नेत्वं ....गोतासि ।
एतन्मयोक्ति वदार्भकत्व मत्प्रीत्ये प्रीति र्विवर्धनीसी ।।
आत्मा तु सर्वस्येव प्रकाशकः सर्वगतत्वात् ।।

ENDS :

COLOPHON :

काव्य

Kāvya

15065

कुमारसम्भवम्
Kumārasambhavaṁ

Foll- 19 , 15-8 x 32-1 Cms paper, 7 lines on a page , Devanāgrī Script, Age - x , Scribe - x, Condition- good.
Author : Kālidāsa
The Work :
The Kumārsambhavam - an epic composed by Kālidāsa.
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।
अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयोमामनगाधिराजः ।
पूर्वापरौवारिनिधीवगाह्यस्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।

ENDS :

नवपरिणयलज्जाभूषणंतित्रगौरीवदनमपहरंतीं तत्कृतेत्क्षेपमीशः ।
अपिशयन सखीभ्योदत्तवा च कथंचित्प्रथममुख विकारैर्हास्यामास गौरीं(गूढ़म) ।।

COLOPHON :

श्री सरस्वत्यैनमः इति श्री कुमारसंभवे महाकाव्ये सप्तमः सर्गः । श्रीरामजी सदा सहाय । संवत् १९०६ तत्र शकः । श्री सरस्वत्यैनमःयादृशं पुस्तकं दृष्टवा तादृ१शं लिखितं मया । यदिशुद्धमशुाद्धम वा ममदोषो न दीयते ।। १ ।।

पौषमासे शुक्लपक्षें प्रतिपदायां शनौ इदयं लिखितं हरिप्रसादमिश्रः ।

15066

कुमारसम्भवम्
Kumārsambhavam̐

Foll- 33, 12.4 x 30.3 Cms. paper, 7 lines on a page ,
Devanāgrī Script., Age -x, Scribe - x, Condition- good.
Author : Kālīdāsa
The Work :

BEGINS :

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अस्तयुत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयोमामनगाधिराजः ।
पूर्वापरौतोयनिधीविगाह्यस्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥ १ ॥

ENDS :

नवपरिणथलज्जाभूषणां तत्रगौरीवदनमपहरंतीं तत्कृतेत्क्षेपमीशः
अपिशयन सखीभ्योदत्तवाचं कथंचित्प्रथममुख विकारैहास्यामास गूढम् ॥

COLOPHON :

इति श्री कुमारसम्भवे महाकाव्ये कालिदासकृतौ गौरीपरिणयो
नाम सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

15077

किरातार्जुनीयम्

Kirātārjunīyam̐

Foll- 74, 13 x 28.6 Cms., Paper ., 8 to 12 lines on a page, Devanāgarā Script., Age - x ,Scribe - x, Condition - bad , water stained.

Author : Bhārvi

The Work :

Kirātārjunīyam - an epic in eighteen cantos describing the fight between Arjuna & Śiva in the garb of hunter .

BEGINS :

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ।। श्रियं

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासुवृत्तिं यममयुङ्क्त वेदितुम् ।

स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। १ ।।

ENDS :

मूर्च्छितः शरासन ज्यातलं वारण ध्वर्निः ।

असंभवन् भूधरराज कुक्षिः ।। २९ ।।

COLOPHON :

15085

गीतगोविन्दम्

Gītagovindam̐

Foll- 56, 8 x 162, paper, 4 to 6 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1888 Samvat, Scribe - Brijagopalā, Condition- good. slightly worm eaten.
Author : Jayadeva
The Work : Gītagovindam- a lyric in praise of lord Kṛṣṇa Comprising twelve cantos composed by Jayadeva, son of Bhojadeva and Vāmadevi and patronised by Lakṣmana sena.

BEGINS :

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैः
नर्तकं भीरूरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय
इत्थं नन्दनिदेशतश्चालितयोः प्रत्यध्वकुञ्जब्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः ।। १ ।।

ENDS :

इत्थं केलिततीर्वितत्य यमुनाकूले समं राधया—
द्रोमावलि मौक्तिकावलियुगे वेणीभ्रमं विभ्रती
तत्राहलादि कुचप्रयाणफलयोर्लिप्सावतोर्हस्तयो—
र्व्यापाराः पुरुषोत्तमस्य ददतु स्फीतां मुदं सम्पदम् ।।

COLOPHON :

गीतगोविन्द काव्ये जयदेव कृतौ स्वाधीनभर्त्तृका वर्णने सुप्रीतपीतांवरो नामं द्वादशः सर्गः । मिति फागुन सुद २ संवत् १८८८ लिखितं श्री वृन्दावनजी मध्ये ब्रजगोपाल ब्राह्मण चीरघाट स्थाने शुभमस्तु ।

15087

गीतगोविन्दम्

Gītagovindaṁ

Foll- 56, 9.4 x 15, paper, 8 lines on a page,Devanāgarī Script, Age-1915 Samvat, Scribe-x,Condition- good.

Author : Jayadeva

The Work :

BEGINS :

श्री गीतगोविन्द लिख्यते ।

As-15085

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीजयदेव विरचिते गीतगोविन्द महाकाव्ये श्री प्रीतपीतांवरो नाम द्वादस(श) सर्गः ।। १२ ।। संवत् १९१५ आषाढ़ शुक्ल श्रीरस्तु ।

15080

घटकर्परकाव्यम्

Ghaṭakarparakāvyam̐

Foll- 9, 11.6 x 22.5 Cms, paper , 6 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script .Age - x , Scribe-x , Condition - good

Author : Ghaṭakarpara

Commentator : Tārācanda

The Work : Ghatakarparakāvyam̐- a text of the love poem, in 22 verses, composed by Ghaṭakarpara.

BEGINS :

COLOPHON :



6- Brahmā Stuti Ms. No. ST. 2623

15068

नलोदय

Nalodaya

Foll- 32, 14 x 29.9 Cms, paper, 14 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x, Scribe-x, Condition-good, water stained.

Author : Kālidāsa

The Work : Nalodaya - a poem giving the story of Nala. Attributed to Kalidāsa. with Commentary Sāragrāhiṇī of Suvarṇa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
सादरलम्बोदरं नत्वा हृदि कृत्वा गुरोः पदम् ।
सुवर्णः कुरुते सारग्राहिणीं वै नलोदये ।। ४ ।।

ENDS :

अरिसिंहतिरस्थे । अ दं स्थानं आपदं आपत्तिं प्रायत् प्राप । रमालक्ष्मीयतं नियतं नलं आयत ।। आयतमाय अतिशयलाभाये जनाय सुखदकं यथैव हरिमिवं अयत आय ।। ४७ ।।

COLOPHON :

श्री नलोदयटीकायां सारसंग्रहिण्यां चतुर्थस्य उल्लासस्य टीका समाप्ता ।। ४ ।।

15083

नीतिशतकम्

Nītiśatakam̐

Foll- 15, 12.4 x 24.1 Cms., Paper 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x, Scribe - x , Condition- bad , water stained.

Author : Bhartṛhari

The Work : Nītiśatakam - one hundred seven miscellaneous stanzas on morality by Bharṛrhari .

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
यां चिंतयामि सिततं मयि सानुरक्ताः
साप्यनयमिच्छति जनं स जनोन्यसक्तः ।।
अस्मत्कृते च परिखिद्यति काचिदन्या
धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च ।। १ ।।
अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि च तं नरं न रञ्जयति ।। २ ।।

ENDS :

त्यजदुर्जनसंसर्गं भजसाधुसमागमम् ।
कुरुपुरापमहो रात्रं स्मरं नित्यम् नित्यताम् ।। १०७ ।।

COLOPHON :

इति भर्तृहरि विरचितं नीतिशतकं समाप्तम् ।। श्री रामाय नमो नमः ।।

15069

नैषधीय चरितम्

Naiṣadhīya Caritam̐

Foll- 27] ,12.3 x 27.4 Cms, paper , 8 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -x, Scribe-x , Condition- good.

Author : Sri Harṣa

The Work : Naisadhīya Caritam of Śri Haṣa lived in second half of the 12th century. A.D. Occasionally notes on margin.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नंमः ।।

निपीय यस्यक्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियंते न वुधा सुधामपि ।
नलः सितच्छत्रित कीर्तिमण्डलः सराशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः।।

ENDS :

COLOPHON :

श्रीहर्षकविराजराजिमुकटालंकार हीरः सुतं ।
श्रीहीरः सुरवेजितेंन्द्रिय च यं मामल्ल देवी च यम् ।
तार्त्तीयीक तथामितोयमगमत्तरस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गोनिसर्गाज्ज्वलः ।।

15225

महाभारत— सभापर्व

Mahābhārata- sabhāparva

Foll- 109 , 13 x 31.5 Cms, paper, 10, lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition- bad in brittling condition & water stained.

15224

महाभारत — भीष्मपर्व

Mahābhārata - Bhiṣhmaparva

Foll- 59, 15 x 33.1 Cms, paper, 12 to 13 lines on a page Devanāgarī Script, Age- x , Scribe -x , Condition- good, water stained.

Author : Veda vyāsa.

15223

महाभारत — कर्णपर्व

Mahābhārata- Karṇa Parva

Foll- 154 , 14.7 x 33.5 Cms, paper, 12 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script , Age 1890 Samvat, Scribe- Mahābhāva ,Condtion -good, water stained.

15070

मेघदूतम्

Meghadūtam̐

Foll- 49, 26.5 x 13.5 Cms, paper 8 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1906 Samvat, Scribe-Gridhārilāla Sarma, Condition-good.

Author : Kālidāsa

The Work : Meghadūtam- a very famous poem with the Commentary Bālabodhini of Samaya Sundara .

BEGINS :

Comm.

।। श्री गणेशाय नमः ।।
श्रेयसे सर्वतं जिनं नुनत्वाग्रणि समयसुंदरः ।
करोति मेघदूतस्य विवृतिं वालबोधिनीम् ।।

Text :

कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकाराप्रमत्तः ।
शापेनास्तंगमितमाहिमावर्षभोग्येन भर्त्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकः तनया स्नानपुण्योदकेषु ।
स्निग्धच्छायां तरुपु वसतिं रामगियश्रियेणु ।। १ ।।

COMM :

कश्चिदिति कश्चिदनिर्दिष्ट नामा यक्षो रामागिर्याश्रमेषु वसतिं चक्रे निवासं कृतवान् रामोदशरथात्मजः ....।

ENDS :

मंदाकृांता छंदः ।। १२६ ।।

COLOPHON :

इति श्री कवि कुल शिरोमणि श्री कालिदासकृते मेघदूताख्ये महाकाव्ये विप्रलंभश्रृंगारवर्णने वृत्तिः संवत् १९०६ शक १७७१ फाल्गुने शुक्ल १५ पूर्णिमासै..... इदं लिखितं गिरिधारीलाल शर्म्मणा श्री सरस्व्त्यै नमः ।। श्री रामजी सहाय । ।

15074

मेघदूतम्

Meghdūtam̐

Foll- 21, 15 x 27 Cms, paper, 8 to 12 lines on a page
Devanāgrī Script, Age - x , Scribe - Bhavānanda ,
Condition- good.
Author : Kālidāsa
The Work :
BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कश्चित्कांता विरहगरूणा स्वधिकारात्प्रमत्तः *etc.......*

ENDS :

श्रुत्वावार्ता जलद कथितां तं धनेशोपि सद्यः ।

COLOPHON :

इति श्रीकालिदास कृतं मेघदूतं समाप्तम् । शंभुभूयात् भवतु शके अंककर्तु कुमितै चैत्रमास्य सितेकुजे धर्मराज तिथौ ताष्टे भवनंदो व्यलीलिखत् श्री ॥

3440

मेघदूतम्

Meghadūtam̐

Foll- 21, 10 x 2.3 Cms, paper, 8 lines on a page,
Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - Ghāsīrama
Condition - bad - ff 1 to 10 are damaged.
Author : Kālīdāsa
The Work :
BEGINS :

................गुरुणा स्वधिकारात्प्रमत्तः
................गमितमहिमावर्षभोग्येनभर्त्तुः । *etc.*

ENDS :

इत्थं भूतं सुचिरतफलं मेघदूतं च नाम्ना ।
कामक्रीड़ा विरहित जने विप्रयोगे विनोदः ।
मेघाश्चास्मिन्नति निपुणता बुद्धि भावे कवीनां ।
नत्वार्यायाश्चरणकमलं कालिदासश्चकार ।। २७ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमेघदूतंकाव्ये कालिदास कृतौ यक्षविरहवर्णनं परिपूर्णः लिखितं घासीरामेण आत्मनः पठनार्थ गुरुचरण प्रसादात शुभ–शुभ ।।

15071

रघुवंशम
Raghuvaṃśaṁ

Foll- 20, 12.5 x 29 Cms. paper, 8-13 lines on a page Devanāgarī Script, , Age -x , Scribe-x, Condition -good , ink stained.

Author : Kālidāsa

Commentator : not mentioned.

The Work : Raghuvaṃśam - an epic. Composed by Kālidāsa with commentary . Ms. Contains only 5 sargas

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीगंङ्गायैनमः ।।
सजयतुसिंधुर्वदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम् ।
वासर मणिरिव तमसां......नास(श) यति विघ्नानाम् ।

TEXT:

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

Comm. :

अहं पार्वतीपरमेश्वरौ वन्दे कस्यै सिद्धये वागर्थप्रतिपत्तये कौ इव वागर्थो इव किं भूतौ पार्वतीसंयुक्तौ पुनः किं भूतौ पार्वतीपरमेश्वरौ जगतः पितरौ ।

ENDS :

अथविधिम वशाय शास्त्रदृष्टिं दिवसमुखो चितम चिताक्षिपक्ष्मा कुशल विरचितानुरूप वेष क्षितिप समाजमगात् स्वंयवरस्था ।। ७६ ।।

COLOPHON :

श्री रघुवंशे महाकाव्ये कालिदास कृतौ स्वयंवराभिमगनो नाम पंचमः सर्ग : ।।

15072

रघुवंशम्

Raghuvaṃśam̐

Foll- 113, 12.8 x 29-3 Cms, paper, lines per page 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition- good.

Author : Kālidāsa

The Work : Raghuvaṃśam - an epic with the śiśuprabodhanṭ commentary of Janārdana bhatta.

BEGINS :

।। ॐ नमः श्री सारदाभ्यो ।।

पदे वाक्ये प्रमाणे चनाहंम सम्यगधीतिमान् ।

तथापि स्वल्पबुद्धिनां मया हितो प्रयस्यते ।। १ ।।

Taxt :

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।। १।।

Comm. :

इदं शास्त्रारंभे शिष्टाचारप्रतिपालनाय निर्विघ्नंग्रन्थसमाप्तये वाभीष्टदेवतानमस्कार इष्ट वस्तुनिर्द्दिशानामन्यस्मिन ...... कविः श्रीकालिदासः सृष्टिः स्थिति प्रलयाद ......विश्वपितरौ श्री शिवाशिवौ नमस्कारः ।।

ENDS :

अपरस्मिन्लंकृतोऽपि

COLOPHON :

इति श्री रघुवंशे महाकाव्ये श्रीकालिदास कृतौ जनार्दनभट्ट कृत टीकायांष्टः सर्गः ।।

15086

रघुवंशम
Raghuvaṅśam̆

Foll- 86, 10-7 x 31-5 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1850 Samvat , Scribe-x , Condition -good.
Author : Kālidīsa
Commentator : Mallinātha
The Work : Raghuvaṅśaṃ - an epic with the commentary Dīpikā of Mallinātha
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मातापितृभ्यां जगतो नमो वामार्ध जानये ।
सद्योदक्षिणदृक्पात संकुचद्वाम दृष्टये । ।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्री पदवाक्य प्रमाण परावारपारीण श्री महोपाध्याय कोलाचलमल्लिनाथ सूरि विरचितायां रघुवंशंदीपिकायां द्वादशः सर्गः ।। श्री ।।

15075

रामकृष्ण काव्यम्

Rāmakṛ.ṇa Kāvyam̐

Foll- 20,15 x 33 Cms. paper, 8-12 lines on a page Devanāgarī Script., Age -1904 Samvat , Scribe-x , Condition- good.

Author : Sūryadaivajña

The Work : Rāmakṛṣṇa viloma kavyā an extremely artificial poem which reads alike when read from left to right in first half and from right to left in the second half and contains the stories of Rāma & Kṛṣṇa respectively. It is commented upon by the author himself.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीमन्मंगलमूर्तिमूर्तिसमनं नत्वा विदित्वा ततः ।
शब्दब्रह्ममनोरमं सुगणकज्ञानाधिराजात्मजः ।
यद्ग्रन्थाध्ययनैर्विनायनिवहोप्याचार्यचर्यागमात्
सोहं सूर्यकविर्विलोमरचना काव्यं करोम्यद्भुतम् ।। १ ।।

ENDS :

गोदावरीब्रह्म गिरेस्सकाशात्सं..............................
दैवज्ञसूर्य्यमिसंप्रावेष्टाम् ।। ३८१ ।।

COLOPHON :

इति श्रीदैवज्ञपंडितसूर्य विरचितं रामकृष्णकाव्य सटीकं संपूर्णम् ।। संवत् १९०४ ।।

8177

रामायण

Rāmāyaṇa

Foll- 637,15 x 36 , Cms, paper ,13 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition - good.
Author - Vālmīki
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
जयतिभृगुवंशतिलकः प्रथमः कविः द्विजवरः स बाल्मीकिः ।।
मृदुललितपदनिबद्धं कृतमिह रामायणं येन ।।
जयतिरघुवंशतिलकः कौसल्या हृदय नन्दनो रामः ।।
दशवदनं निधनकारी दास(श)रथिः पुण्डरीकाक्षः ।। १ ।।

ENDS :

श्रुत्वा रामायणं पुण्यं पूजयेद्यस्तु भक्तितः । हरिब्रह्माश्चरुद्रश्च विश्वदेव च सर्वस्तथा । पूजिता ऋषयः सर्वोपितरश्च महर्षिभिः । तेन लोकश्च देवाश्च त्रैलोक्यं स चराचरां पूजितं येनह श्रुतं रामायणं शुभम् । इति श्री रामचरितं श्रुतं सर्वार्थ सिद्धिदं ।

COLOPHON :

इत्यार्ष रामायणे बाल्मीकीये उत्तरकांडे श्री रामचरितं सम्पूर्ण समाप्तम् ।। ९७ ।। शुभं भूयात्।।

3226

रामायण — किष्किंधाकाण्ड

Rāmāyaṇa (Kiṣkindhākāṇḍa)

Foll- 110, 12.5 x 28 Cms., paper 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x, Scribe-x , Condition- good, water stained.

Author : Vālmīki

15228

रामायण—लंकाकाण्ड

Rāmāyaṇa- Lankākāṇḍa

Foll- 194, 14 x 33, Cms, paper , 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition - good., water stained.

15229

रामायण — उत्तरकाण्ड

Rāmāyaṇa - Uttarakāṇḍa

Foll- 164, 14 x 34 Cms, paper , 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , 1898 samvat, Scribe - Yamunā dāsa , Condition- good, water stained.

15227

रामायण—सुन्दर काण्ड

Rāmāyaṇa Sundarakāṇḍa

Foll- 234 ,13. 5 x 32 Cms, paper , 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -x ,Scribe- x, Condition- good , water -stained.

8188

राक्षसकाव्यम्

Rākṣa kāvyaṃ

Foll- 6, 12.5 x 32 cms, paper , 8 to 11 lines on a page , Devanāgarī script, Age- x , Scribe- x , Gangā prasāda pāndita, Condition- good,.

Author : Kalidāsa.

The Work : - Rākṣakāvyam - a small poem comprising 20 stanzas in which a forester describes various pastoral objects for the gratification of his mistress . Attributed to one of kālidāsa. with comm. of anonymous.

BEGINS-Comm. -

कश्चिदित्यनिर्दष्टना पुरुषः इमां वक्ष्यमाणं गां वाचं वनितां वभाषे उक्तवान् । किं कुर्वन् वनं विरचन् भ्रमन् किं भूतं वनं वहुवनम् ।

TEXT -

कश्चिद् बहुवनं विरचन् वयस्थो ।
वस्यां वनात्म वदनां वनितां वनाद्रमि ।।
तर्वप्परिप्रदमदीक्ष्य समुत्थितं रवे।
नगामिमां मदकलः सकलां वभाषे ।। १ ।।

ENDS :

अत्यन्त संयोगे द्वितीया रंत्वा क्रीडित्वा
किं विधः सुमनाः सुष्ठुशोभनो मनो यस्य सः
सुभाना पुनः किं विधः अहिनः सुन्दर इत्यर्थः ।।२०।।

COLOPHON :

इति श्रीमत्कालिदास विरचितं राक्षसकाव्यस्य टीका समाप्तम् २० शुभमस्त लिखितं गंगाप्रसादपण्डित ।।

15081

वैराग्यशतकम्

Vair āgyaśatakam̐

Foll- NO 9, 13.2 x 21, Cms., Paper , 13 to 16 lines on a page Devanāgarī Script, Age - 1910 Samvat, Scribe - Hariprasāda miśra, Condition-good , only Foll- 1 is slightly worm eaten from upper side.

Aauthor : Bhartṛhari

The Work :

श्रीमतेरामचन्द्राय नमः ।

BEGINS :

दिक्कालाद्यनवछिन्नानन्त चिन्मात्रमूर्त्तये ।
स्वानुभूत्येकमानायनमःशान्ताय तेजसे ।।
यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरकता
साप्यन्यमिच्छति च परितुष्यति काचिदन्यां
धिक्ता च तं च मदनं च इमां च मां च ।। २।।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीवैराग्यशतकम् इदं लिपिरियं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मजगिरधारीलाल स्वयं पाठार्थ परार्थ वा सम्वत् १९१० श्रावण शुक्ल चतुर्थी भौमवार श्री सीतारामजी सदा सहाय श्री रामः ।।

15082

वैराग्यशतकम्

Vairāgyaśatakm̐

Foll- 16, 12.1 x 24.1 Cms, paper,9-10 lines on a page, Devanāgarī Script., , Age - 1886 Samvat , Scribe- x , Condition- good.

Author : Bhartṛhari

BEGINS :

ॐ श्रीमहामंगलमूर्त्तये नमः ।।

दिक्कालाद्यनवछिन्नानन्त चिन्मात्रमूर्त्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शांन्ताय तेजसे ।।

ENDS :

जातः कूर्मः स एकः पृथुतरभुवनायार्पितम् ।
येन पृष्टं श्लाघ्यं जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमितम् ।
यत्र तेजस्वि चक्रं संजातव्यर्थ पक्षाः परहित करेणनोपसृष्टा
नाचाधो ब्रह्माण्डो दुर्वरांतर्मशक वद परे प्राणिनो जात नष्टाः ।। १०२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीभर्तृहरि विरचित वैराग्यशतकं समाप्तम् ।। संवत १८८६ ।।

15067

शिशुपालवधम्

Śiśupālavadhaṃ

Foll- 53, 14 x 30.4 Cms., Paper, 12 Lines on a page , Devanāgarī Script , Age 1857 samvat , Scribe-x, Condition- bad.

Author : Māgha

The Work : Śiśupālavadham - Magha's epic with Sarvaṅkaṣā- a commentary thereon by mallinatha.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
इन्दीवरदलश्याममिन्दरानन्दकन्दलम् ।
वन्दारुजनमन्दारं वन्देहं यदुनन्दनम् ।। १ ।।

ENDS :

ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैरिति लक्षणात् ।

COLOPHON :

इति श्रीपदवाक्य प्रमाण पारावारीण श्रीमहामहोपाध्याय कोलाचलमल्लिनाथ सूरिः विरचिते माघकाव्य व्याख्याने संपर्कषाख्ये द्वितीयः सर्गः ।। १ ।।

अलङ्कार शास्त्र

Alaṅkāra śāstra

15079

अर्थालंकारमञ्जरी

Arthālaṅkāramañjarī

Foll- 10, 9.5 x 16.2 Cms., paper ,8 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1795 Samvat .Scribe- x , Condition-good , water stained.

Author : Niramala bhaṭṭa son of Vallabhabhaṭṭa

The Work :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
कपोलालंविरोलवं बिवं कोलाहलाकुलम् ।
अंवालंबा नुरागाछिव वन्दे लम्बोदराननम् ।।
ज्ञातुमिछन्त्यलंकारानल्पेन श्रवणे नये
कुर्वतुकर्णयोरुच्चरैर्थालंकार मञ्जरीम् ।। २ ।।

ENDS :

अन्येवैकल्पिकाः सर्वैविज्ञेयाः किलतद्भवाः तस्य बल्लभभट्टस्य पुत्रेण निरमाय्यसौ निर्मलानिर्मलाख्येन रम्यालंकार मञ्जरी ।। ४२ ।।

COLOPHON :

इति श्री निर्मलभट्टविरचितार्थालंकारमञ्जरी संपूर्णा शुभमास्तु सं. १७९५ पौषकृष्ण १० ।।

15076

अलंकारकुलप्रदीप

Alaṅkārakulapradīpa

Foll- 26, 14 x 29 Cms, paper, 10 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x , Scribe -x , Condition - good.

Author : Utpala

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ नमः ।।
सकलगोपवधूनां स्वात्मनि प्रवणित प्रणयाय ।
धर्मवासरगमावसरोद्य द्वारिवाहः रुचिराय—चिराय ।। १ ।।

विधाय वाचस्य तपोधरायालक्ष्मी धगयाभिमतं प्रमाणम्।
विश्वेश्वरो पार्श्वदं वितन्वत्करोत्पल कारककुलप्रदीपम्।। २ ।।

ENDS :

अत्र तृतीय चरणोक्त काव्यलिंगमुपजीव्य कुन्दमुकुलेषु वाष्पविन्दून्प्रेक्षासिद्धिः साधकवाधक प्रमाणाभावादन्यतरमलंकार निर्णयामो वे सं ...... रूपःसंकरो द्वितीयः यथा भ्रामयंतीभिरनंतरं मधुकरश्रेणीभिरंभोरूहं रंभोरूप्रणायात्प्रियेण हृदये हस्तेन संभाज्येते तत्संवंधभूतां परस्य रविभागाय प्रयासस्पृशां पत्राणवलोकेन न विगत प्रायानि शालायतां २०० अत्र किं भा................................।

8191

कुवलयानन्द

Kuvalyānanda

Foll- 61 , 11 x 33 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1814 Samvat , Scribe - x , Condition - good.

Author : Appyadīkṣita

The Work : Kuvalyānanda -a famous commentary on Jayadeva's candraloka, but really a work by itself.

।। श्रीगणपतये नमः ।।

अमरीक ....भारभ्रमरी मुखरीकृतम् ।
दूरीकरोतु दुरितद्गौरीचरणपंकजम् ।। *etc.-*

ENDS :

अमुं कुवलयानंदमकरोदप्यदीक्षितः ।।
नियोगाद्वेंकटपतेर्निउपाधिकोपानिधेः चंद्रालोको
विज्ञायते शारदागमसंभवः ...कुवलयानंदोयत्प्रसादादभूदयं ।

COLOPHON

इति श्रीमद्द्वैत विद्याचार्य श्रीभरद्वाजकुलजलनिधिकौस्तुभ श्रीरंगराजाध्वरींद्रवनद सूनोऽप्यदीक्षितस्य कृतिः कुवलयानन्दः समाप्तः ।। श्रीरामः श्रीरामः ।। श्री संवत् १८१४ चैत्र शुक्ल प्रतिपदिं १ समाप्तिमगमत् ।। श्रीगणपतिजयति ।।

15078

रसमञ्जरी

Rasamañjarī

Foll- 18, 14 x 28.2 , paper , 11 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1911 samvat, Scribe -x , Condition - good.

Author : Bhānudatta miśra

The Work : Rasamaśjarī a work in prose by Bhānudatta son of Gaṇeśvara, describing the characteristics of lovers and their mistress in erotic poetry.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
आत्मीयं चरणं दधाति पुरतो निम्नोन्नताया भुवि
स्वीयेनैव करेण कर्षति तरोः पुष्पं श्रृंगारशंकया ।
तल्पे किंच मृगत्वचयाभिरचिते निद्राति भागैर्निजैर
अन्तः प्रेमरसालसः प्रियतमामङ्गे दधानो हरः ।।

ENDS :

ततो यस्य गणेश्वरः कवि कु कलासंचार चूड़ामणिर—
देशोयस्य विदेहभूः सुरसरित्कल्लोलं किमीरिता ।
पद्येन स्वकृतेन तेन कविना श्री भानुना योजिता ।
वाग्देवी श्रुति पारिजात कुसुमस्य स्पर्धा करी मञ्जरी ।।

COLOPHON :

इति श्रीभानुदत्त मिश्र रचिता रसमञ्जरी समाप्ताः । संवत् १९११ शाके ....भाद्रपदे कृष्ण .. गुरूवासरे शुभमस्तु ।।

8787

विदग्धमुखमण्डन

Vidagdhamukha maṇḍana

Foll- 25, 12.4 x 27 Cms, paper , 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī script, Age- 1791 , samvat , Scribe- x , Condition- good, useful notes on margin.

Author : Dharmadāsa

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

सिद्धौषधानि भवदुःखमहागदानां ।। पुण्यात्मनां परगकर्णरसायनानि ।।
प्रक्षालनैकं सलिलानि मनोमलानां शौद्धोदनैः प्रवचानि चिरंजयन्ति।। १ ।।
जयन्ति सन्तः सुकृतैक भाजनं परार्थसम्पादन सद्धतास्थितो ।
करस्थनीरोपमाविश्वदार्शिनो जयन्ति वैदग्ध्यभुवः कवेर्गिरः ।। २ ।।

ENDS :

सदा प्रविहतो छायास्तमसोवशतांगतः ।

अस्तमेष्यति दीनो यं विधुरे कश्चित् स्थितः ।। ७२ ।।

पूर्णचन्द्रमुखी रम्या कामिनी निर्म्मलाम्वरा ।।

करोति कस्य न स्वान्तमेंकान्तमदनोत्सव ।। ७३ ।।

च्युतादाता अक्षर जातिः ।।

COLOPHON :
इति धर्मदास विरचिते विदग्धमुखमुण्डने चतुर्थः परिच्छेद् सम्वत्—१७९१ ।

8189

विदग्धमुख मण्डन

Vidagdhamukhamaṇḍna

Folio 22, 12.5 x 33 Cms, paper , 8 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1886 Samvat, Scribe , Gangadatta Pāndeya, Condition-good, with useful notes on margin .
Author : Dharmadāsa.
The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीगोकलेश पद पद्म ध्रुवन्तेन ताराभिधेन कविना शिवराज्य धान्यम् ।
विद्वत्कलोपकृत्तये क्रियते स्फुटार्था टीका विदग्धमुखमण्डन संज्ञकस्य ।।
सिद्धौषधानि भवदुःख महागदानां पुण्यात्मनां परमकर्ण रसायनानि ।
प्रक्षालनैकं सलिलानि मनोमलानां शौद्धोदनेः प्रवचानि चिरंजयन्ति ।।

ENDS :

सदागतिहत्तोक्षाया क्षायस्तमसोवसत्तां गत्तः ।
अस्तमेष्यति दीनोऽयं विधुरेकः शिवं स्थितः ।। ७१ ।।
पूर्ण चन्द्रमुखी रम्या कामिनी निर्मलम्बिरा
करोति कस्य न स्वांतमेकान्तमदनातुरम् ।। ७२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीधर्मदासकृते विदग्धमुख मण्डने च्युतदाता अक्षर जातिः चतुर्थ परिछेद समाप्तं शुभमस्तु श्लोकमल ४०५ संवत् १८८६ पौषशुक्ल एकादश्यां लिखितं गंगादत्त पाण्डे शुभ ८ ।।

15073

वृत्तरत्नाकर

Vrattaratnākara

Folio 8, 13.8 x 29 Cms, paper, 11 to12 lines on a page Devanāgarī Script , Age - x , Scribe- Durgādatta miśra, Condition -good, water stained.

Author : Kedārabhatta

The Work : Vrattaratnākara- a metrical treatise on prosody divided in to six chapters called adhyayas composed by Kedārabhaṭṭa.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

सुख संतान सिद्धयर्थ नत्वा ब्रह्माच्युतार्चितम् ।
गौरीविनायकोपेतं शंकर लोकशङ्करम् ।। १ ।।

वेदार्थशैवशास्त्रज्ञः पदेको भूद्विजोत्तमः ।
तस्य पुत्रोस्ति केदारः शिवपादार्चने रतः ।
तेनेदं क्रियते छन्दो लक्षालक्षणं संयुतम् ।
वृत्तरत्नाकरं बालानां सुखबोधये ।। ३ ।।

ENDS :

वंशे भूत्कश्यपस्य प्रकटगुणः शैवसिद्धान्तवेत्ता ।
विप्रः पव्वैकनामा विमलमतिर्म्मौवेदतत्वार्थबोधे ।।
केदारस्तस्य सुनुः शिवचरणयुगागधनैकाग्रचित्तः
छन्दस्तेनाभिरामं प्रविरचितमिदं वृत्तरत्नाकराख्यम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीभट्टकेदारविरचिते वृत्तरत्नाकरे षट्प्रत्ययाध्यायः षष्ठः समाप्तिमजीगमत् ।।
श्रीरस्तुतराम ।। दुर्गादत्तमिश्रेणं लेखि श्री रामार्य्यणम्भवतु राम श्री कृष्णपरमात्मने नमः ।।

15259

श्रुतवोध
Śrutabodha

Folio 5, 13 x 24.5 Cms., paper , 8 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1921 Samvata. Scribe - Badridāsa, Condition- good.,
Author : Kālidāsa
The Work : Śrutabodha - an elementary work on prosody. The work is attributed to one Kālidāsa who is mentioned in the colophon.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

छन्दसां लक्षणं येन श्रुतमात्रेण वुध्यते ।
तदहं संप्रवक्ष्यामि श्रुतिवोधम विस्तरात् ।। १ ।।

संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गमिश्रम् ।

विज्ञेयमक्षरं गुरु पादान्तस्थं विकल्पेन ।। २ ।।

ENDS :

चत्वारोयत्रवर्णाः प्रधममलघवः षष्ठकः सप्तमापि द्वैताद्वैत् ।

षोडशाद्यौ मृगमद मृदिते षोडशां सौ तथन्त्यौ रंभास्तम्भोरू

कांते मुनिमुनि मुनिर्भिदृश्यते चेद्विरामो वालेवंद्यै कवींद्रैः

सुदति सुगदिता स्रग्धरा साप्रसिद्धा ।। ४१ ।।

COLOPHON :

इति श्रीकालिदास विरचितः श्रुतबोधाख्यश्छंदोग्रंथः समाप्तः संवत् १९२१ पौषमासे कृष्णपक्षे सोमपर्ववासरे लिखित बद्रीदासादेन स्वपठनार्थ श्रुभम शिवम् ।

धर्मशास्त्र

Dharmaśāstra

15342

आकाशे दीपदानविधिः

Ākāśe dīpadānavidhiḥ

Folio 3 , 12 x 25 Cms, paper ,9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x, Scribe- x , Condition- bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथाकाशे दीपदान मन्त्रः ।। अद्येहः अमुकराशि अमुक शर्माहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये अद्यारभ्यं वोधनीपर्य्यन्त आकाश दीपदानं करिष्ये ।।

दामोदराय न भसितलाभां लोलया धृतम् ।
तस्मै दीपं प्रपद्यामि नमोनन्ताय वेधसे।। १ ।।

ENDS :

या रात्रिः सर्वभूतानां देवानां सृष्टि सम्भवा । आख्यातं भूतले देविसुखरात्रिं नमोस्तुते ।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिया । यस्यां प्रतिपदि षड्मुहूर्तव्यापिनी द्वितीया भवति तत्र चन्द्रदर्शनं दोषात् पूर्व प्रतिपदि एतत्कर्मकार्यम् ।। गवां क्रीडा दिने यत्र रात्रौ दृश्येत् चंद्रमाः सोमराजा•पशून् हन्ति सुरभि पूजकॉस्तथा ।। इति ।

COLOPHON :

15350

आदित्यव्रतविधिः

Ādityavratavidhiḥ

Foll- 4 , 15.5 x 24.2 , Cms, paper 14 to 16 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good, water stained.
Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

तत्र रविवारव्रतं मदन रत्नोसौरधर्मे ।। यस्योदयः स्याज्जगतावोधो यः कर्मसाक्षी भुवनस्य गोप्ता । कुष्ठादिक व्याधि विनाशनो यः सभास्करो वो दुरितं निहन्यात् ।। १ ।।

मान्धाता उवाच ।।
भगवन् तानिनां श्रेष्ठं कथयस्वप्रसादतः ।
तद्वक्त्रा श्रोतुमिच्छामि व्रतं पापप्रणाशनम् ।। २ ।।

ENDS :

एतत्च्छुत्वा वचः साम्बः पित्रा कृष्णेन भाषितम् ।
व्रतं चरित्वा संप्राप्तः सर्व सिद्धं सुदुहर्त्रमा ।।
इदं यः श्रृणुयाद्भक्तया श्रावयेद्वापि मानवः ।।
तावुभौ पुण्यकर्मा त्रिलोकमवाप्नुयात् ।। इति रविवार व्रतं ।।

COLOPHON :

15252

आचारप्रदीप

Ācārapradīpa

Foll- 49, 15.5 x 29.5 Cms, paper, 11 to 15 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1755 Śaka Samvat, Scribe - Parmānanda, Condition-good.
Author : Nāgadeva Upādhyāya.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः।।

चंचन्नासपुटं स्फुटाभिनयन व्यग्राग्रपादाहति क्षुम्यन्नूपुरमंजुल ध्वनि मिलत्कालेस्वरवलत्कंकणं, सुंडादंड विघट्टितोडुकुसमै र्व्योमाङ्गणंमंडयन्सन्ध्या तांडव डंबरं विरचयन्भूत्यै गणेशोस्तु वः ।। १ ।। उक्तो वाजसनेयेन याज्ञवल्केन धीमता आचार्यो द्विजवर्य्याणं सुवोधः

कथ्यते धुना ।।२।। तत्र सुदक्षः प्रातरुत्थाय कर्तव्यं यत् द्विजेन दिने दिने तत्सर्वं संप्रवक्षामि द्विजानामुपकारकं ।। ३ ।। उदयास्तमयं यावन्न विप्रयस्यणिको भेवेत् नित्य नैमित्तिकैर्यक्तः काम्यैश्चान्यैरगर्हितैः ।।४।। मनुः नामुत्रेह सहायार्थ पिता माता च तिष्ठतः न पुत्रदार न ज्ञाति र्धर्मस्तिष्ठति केवलं ।।५।। तस्या धर्म सहायार्थ नित्यं संचिनुयाच्छनैः धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्तरं ।।६।। आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च तस्मादस्मिं सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान् द्विजः ।।७।। आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः आचारात् धनम् (आचारदन्म्) अक्षक्षय्यं आचारो हन्त्यलक्षणं ।।८।। दुराचारो हि पुरुषो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः— दुःखभागी च सततं व्याधितोल्पायु रेव च ।।९।।

ENDS :

............पावनपंचगव्यं । वृहस्पतिः वापी कूप तडागेषु दूषितेषु विशोधनं घटानां शतमुद्धत्य पंच गव्यं ततः क्षियेत् । देवलः उपानत् श्लेष विरामूत्रं स्त्री रजोमघमेव वा एभि र्विदूषिते कूपे कुंभानां षष्टिमाहरेत् । एतदगाधविषयं अत्रिः मूत्रादिना तु संस्पृष्टं महद्वैजलभाजनमुद्धृत्य सकलं वारि कुशाग्रै...धमर्षयेत अभि (अद्भिः) आपूरयेत पश्चात्प्लावनात् शुद्धिरिष्यते। शातातपः अपानोच्छिष्ट दोषोस्ति मधुनो न च सर्पिष । न फलानां न बालानां नाकाराणां च योषितां यावत्काले तु विप्रस्य शौचाचारं न चिन्तयेत् स्व वंश उद्धरेत्पश्चात्तस्माद्धर्मं समाचरेत् शास्त्राद्धर्म्य शुचित्वं तु न प्रत्यक्षादिसाधनम् । शास्त्रातः कृतशौचानां भापदौ नैव विद्यते ।

COLOPHON :

इति श्री उपाध्याय नागदेव विरचिते आचार प्रदीपे आन्हिके द्रव्यशुद्धि प्रकरणं समाप्तं । समाप्तो यं ग्रन्थः श्री शाके १७५५ वैशाख शुक्ल पौर्णमास्यां लिखितमिदं परमानन्देन स्वार्थं परार्थं च । वृत्त्यर्थ नातिचेष्टेत सा हि धात्रोपनिर्मिता गर्भान्निपततो जन्तो । मातुः प्रस्रवते स्तनौ । १। आयुष्मान् भव पुत्रवान् भव भवः श्रीमान्यशस्त्री भव प्रज्ञावान् भव भूरि सत्वकरणादानैकनिष्ठो भवः तेजस्वी भव वैरिदर्पदलेन व्यापार दक्षो भव श्री शम्भोर्भव पाद पूजनपरः सर्वोपकारी भवः ।।२।। लक्ष्मीस्ते हृदि भारती च वदने भौलौ सदा केशव २ चंडी ते भुजदण्डयो र्गुणनिधे देहे कुबेर स्थितः वित्तं धर्मरतं तवासंसंत दान प्रसंगे करस्तवास्ते विपदं प्रयाति विलयं त्वं दीर्घजीवी भवः ।।३।। श्री

15302

कथाप्रदोषकी पत्र

Kathāpradoskīpatra

From- Skanda purāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 10, 10 x 20 , Cms . paper, 5 to 9 lines on a page , Devanāgarī script; Age - 1863 Samvat , Scribe-x , Condition- good , water stained.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ कार्तिकादि मासेषु शनियुक्तां त्रयोदश्यां शनि प्रदोष व्रतं

स्कन्दो लोमेशं उवाच ।।

ENDS :

दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यः ब्रततो मौनं विसर्जयेत् ।
एवं संवत्सरं कुर्य्यात् त्रयोदश्यामिदं व्रतम् ।
अथ शनिवारेण युक्तायत्र त्रयोदशी ।
चतुर्विंशति कुर्वंति यथोक्त फलमाप्नुयात् ।। १४ ।।

COLOPHON :

इदमपि स्कन्दोक्तमेव संपूर्ण समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।। संवत् १८६३ ।। शाकः १७२८ वैशाख मासे कृष्णपक्षेतिथि '' प्रतिपदाया भृगुवासरे शुभं भूयात् । यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदिशुद्धं अशुद्ध वा मम दोषो न दीयताम् ।। ६ ।। ६ ६



7- Rāma Sitā, Rājyaabhiseka of Sri Rāma Ms. No. ST. 2624

15250

कर्मविपाक

Karmavipāka

Foll- 79, 12.5 x 31.3 Cms, paper,10 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x , Scribe- x, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
दिवाकर पद द्वंद्वं फलं द्वंद्वं द्वप्रदायकम् ।
त्रैलोक्यतमोनाशकं कर्तृ तत्प्रणमांम्यहम्।। १ ।।
यतः सर्व विश्वं भजति जनिसत्रालयमिदम् ।
यत्रात्मा सर्वेषां स्थिर चर जडानामापि विभुः ।। २ ।।
तमेनं भास्वन्तं विधिं हरिं महेशानं वपुषम्। । ३ ।।
नमस्यामः कायं परम कमनीयं सुकृतिनाम्।। ४ ।।

ENDS :

इति सर्वज्वर हरं कुंभदानं अथर्सज्व ।

COLOPHON :

15270

कर्मविपाक संहिता

Karmavipāka saṃhitā

Foll- 16 , 16 x 24.7 Cms, paper, 10 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1909 Samvat, Scribe - x , Buddhasena, Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ कर्मविपाक संहिताया प्रछक विधिः ।
रविवारे च सक्रांतौ शुभयोगे तथा विधौ ।
वैधृतौ च व्यंतपातो विप्राणां च गृहाश्रमे ।। १ ।।
देवतायतने चैव नद्यां वै संगमोत्तमे ।
अथवा स्वगृहे चैव शुभस्थाने विशेषतः ।। २ ।।

ENDS :

एवं कृते वरारोहे शीघ्रं पुत्रः प्रजायते
काक वंध्या लभेत्पुत्रं मृतपुत्रिणीस्यात्सा सपुत्रिणी ।। २२ ।।

COLOPHON :

इतिश्रीकर्मविपाकसंहितायां पार्वतीहरसंवादे रेवती चतुर्थपाद प्रायश्चिताध्यायः ब्रह्माण्डपुराणे पितृकयोत्तरे सनत्कुमारमार्कण्डेयप्रश्ने कर्मविपाक संहितायां पार्वतीहरसंवादे सर्व प्रायश्चित कथने नारदांबरीष प्रत्युत्तरे अश्विन्यादि नक्षत्रे प्रतिचरणे प्रायश्चिताध्यायः ।। ११ ।। संवत् १९०९ तत्र शकः १७७४ ।। द्वितीया भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां रविवासरे इदंपुस्तकम् लिपिरियं बुद्धसेनस्य शुभम् भूयात् ।।

3443

कार्तावीयदीप

Kārtāvīryadīpa

Foll- 12, 11 x .22 Cms, paper , 10 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -x , Scribe -x , Condition -

bad, worm eaten & water stained. Ms begins from Foll- 3

Author : not mentioned.

The WorK :

BEGINS :

सद्योअवाप्नोति पुत्रान्पौत्रान् धनञ्जयः यथाकथंचित् गेहे नित्यं दीपं समाचरेत् ।
कार्त्तवीर्याजुन प्रीत्यै सोभीष्टं लभते नरः दीपप्रियः कार्तवीर्यो मार्त्तण्डो नातिवल्लभः ।। १ ।।
स्तुतिप्रियो महाविष्णुर्गणेशरस्तर्पणाप्रियः ।
दुर्गार्चन प्रिया नूनमभिषेक प्रियः शिवः ।।

ENDS :

ततः पुन राज्यमादय सोमाय स्वाहेति ब्रूहि र्वामनेत्रे हुत्वा पुन राज्यमादायाग्नी षोमाभ्यां स्वा.........................।

COLOPHON :

15393

कार्तावीर्य विधिः

Kārtavīrya vidhiḥ

Foll- 3, 13.2 x 20.5 Cms. paper , 11 to 14 lines on a page , Devanāgarī script , Age - 1961 samvat , Scribe- Girdhārīlala miśra, condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ कार्तवीर्य विधिः ।। ॐ क्रौं चॄ˘ क्लीं भ्रूॅं ऑ, ह्रीं क्रौं श्री˘ हॅं फट् कार्तवीर्य्याजुनाय नमः । ॐ अस्य श्री कार्त्तवीर्याजुनस्य मन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिरनुष्टुप छंदः श्री कार्तवीर्याजुर्नो देवता ह्रीं वीजं फट् शक्ति नमः कीलकं .... *etc.*

ENDS :

स्तुतिप्रियोमहाविष्णुः गणेशस्तर्पणः प्रियः ।
दुर्गार्चनप्रिया नूनं अभिषेकप्रिय शिवः ।।
तस्मात्तेषां प्रयतो देवसमाचरेत् श्री सरस्वत्यै नमः ।

COLOPHON :

सम्वत् १९६१ शक १७७१ पौष शुक्ल षष्टयां बुधौ ।
इदं लिखितं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मज गिरिधारीलालेन ।।

15392

कार्तवीर्यदीपदान विधिः

Kārtavīrya dīpadāna vidhiḥ

Foll- 5 , 14 x 11.7 Cms, paper 11 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script Age- x , Scribe -x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः

अथ कार्तवीर्य दीपदानविधिः। तत्र कार्यपरत्वेन दीपान्कृत्वा ।।

कार्यसिद्धयै सौवर्ण । वश्येरौप्यम् । विद्वेषिणो कांस्यं । मारणे

लौहं । उच्चाटने मृण्मयं । विवादविजय गोधूम चूर्णजम् ।

ENDS :

प्रायशं स्व सुलोकतां अनेक दीप विसर्जनं । मूलमन्त्रः औं क्रौं वृीं क्ल्रीं भृं औ ह्रीं कौं श्री हॅं फट् इति कार्तवीर्याजुनाय नमः ।

COLOPHON :

इति कार्तवीर्यदीपविधिः संपूर्णम्।।

15394

कार्तवीर्यदीपदान विधिः
Kārtaviryadīpadāna vidhiḥ

Foll- 8, 14.5 x 21.5 Cms, paper, 14 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1911 Samvat, Scribe- Hariprasāda misra, Condition- good , slightly worm eaten.

Auhtor : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। देव्युवाच ।।
देव–देव महादेव भक्तानामभयंकरः ।
प्रसन्नोयदि देवेश ममाभीष्टं वद् प्रभो ।। १ ।।
ईश्वर उवाच ।।
या च स्व गिरिजे देवि वरं च मनसेप्स्तिम् ।
गोप्यात् गोप्यतरं किं मेतवाग्रे विद्यते मम् ।। २ ।।

ENDS :

अनेन दीपवर्येणं पश्चिमाभिमुखेन अमुकं रक्ष, अमुकं वर प्रदाय ह्रीं ह्रीं ॐ क्लीं च्रीं स्वाहा तं थं दं धं नं पं फं वं भं मं ॐ स्वाहा ।

COLOPHON :

सम्वत् १९११ अश्विने कृष्ण पक्षै च द्वादशां भौमवासरे हरिप्रसाद मिश्रेण समाप्तिमगमत्शुभां १ श्रीरामजीसदा सहाय श्रीसरस्वत्यै नमः ।।

15432

कार्तिक माहात्म्य

Kartikamāhātmaya

From- Sanatakumāra Saṃhitā **(सनत्कुमारसंहिता)**

Foll- 52, 13.5 x 27 Cms, Paper, 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1885 Samvat, Scribe -Kulmaṇi pāṇḍey , Condition -bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।
ऋषय ऊचुः मुनिश्रेष्ठा वालखिल्या सर्वलोका हितेरताः ।
कलौकलुषचित्तानां लोकानां दीनभाषिणाम् ।। १ ।।
ज्ञान–विज्ञान हीनानां शी......... दर सुखैषिणाम् ।
क्षणभंगुरवृत्तीनां स्वार्थतत्वमानसाम् ।। २ ।।
कथं प्रसन्नो भगवान्भविष्यति जनार्दनः ।
श्रुतं चेद्भास्करमुखात्तद्व्रतव्रतमुत्तमम् ।। ३ ।।

ENDS :

व्यवहार तथा प्रीत्या नित्यं संभाषणादपि दश्गेशम् ।
पुरा य पापानां लभते न तत्र संशयः ।। १९ ।।

COLOPHON :

इति श्रीसनत्कुमार संहितायां कार्त्तिकमाहात्म्यं संपूर्णम् । राधादामोदराय नमः रामाय नमः कुलमणि पाण्डेलिखितमिदम् संवत् १८८५ शाके १७५० आषाढ़ शुक्ल ९ भृगु ।

15269

कार्तिकमाहात्म्य

Kartikamāhātmaya

Foll- 53, 12.7 x 26 Cms, paper , 7 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -x , Scribe- x , Condition - good , water stained.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगंगायै नमः ।।
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।। १ ।।
जयती पाराशरसुनुः सत्यवती हृदयेनन्दनो व्यासः ।
यस्यास्य कमलगलितं वाङ्यममृत जगत्पिबति ।।
वन्दे वृन्दावनासीनं गोकुलानन्दवर्धनम् ।
उपेन्द्र सांद्रकारूण्यं परानन्दं परं विभुम् ।। ३।।

ENDS :

.... पुरा प्राप्ता सप्तद्वीपास्ता धरा ।

श्रूकरक्षेत्र माहात्म्यं सत्योक्तगजगामिनी ।। १४।।

मार्गशीर्षस्य श्रुक्लपक्षां द्वादश्यां व्रजपुत्रकाः ।

शालिग्रामार्यनं .... तपो धनाः ।। १५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्ण सत्यभामा संवादो नाम त्रयविंशोध्यायः ।।
ॐ तत्सत् ।।

15323

कार्तिकव्रतोद्यापन सूत्रसार

Kārtikavratodyāpana sutrasāra

Foll- 19, 10 x 28 Cms, paper, 8 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ कार्तिकोद्यापनोपयोगी सूत्रसारो लिख्यते ।

सतोरणं चतुर्द्वारं पुष्प चामरशोभितम्

सवितानस्तु शोभाढ्यं मंडपं कारयेद्व्रती ।। १ ।।

द्वारेषु द्वारपालाँश्च स्थापयेत् चतुरः शुभान् ।

शुभान् पुण्यशीलस्तु शीलं च जयं विजयमेव च ।। २ ।।

ENDS :

गावो मे अश्रुतः सन्तुष्टतः गावो मे संतुष्टतः ।

गावो मे पार्श्वयोः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।।

इति गो ब्राह्मणं प्रदक्षिणीकृत्य भूयसीं दक्षिणां अभिषेकं ।

तिलकं रक्षान्मन्त्रपाठान्कुर्यात् आचम्य—अच्युताय नमः ।

ब्राह्मणान्सन्तर्प्य सुहृद्युतो भुञ्जीत इति कार्तिकव्रतोद्यापन विधिः ।।

COLOPHON :

15282

कुशकण्डिका

Kuśakaṇḍikā

Foll- 10 , 10 x 20 Cms, paper , 6 to 8 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1855 Samvat , Scribe - x , Condition- bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐगणेशायनमः ।।

अथ कुशकण्डिका लिख्यते ।

ENDS :

ॐ अन्नात्परि ।। ॐ स्रन्नो (शन्नो) देवी ।।

COLOPHON :

रामभद्राय मकरे कृष्ने पंचम्यां रवे संवत् १८५५ ।।

15282

कुशकण्डिका

Kuśakaṇḍikā

Foll- 7 , 9.5 x 16 Cms, paper , 8 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1855 Samvat , Scribe - x , Condition- good, Ink stained. .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ कुशकण्डिका तन्त्र परिसमुह्य ।

ENDS :

इदं सुवर्णं अग्निदैवतं यथा शं आचार्य । ब्रह्मभ्यां विभज्यदास्ये यस्यस्मृत्या च ।।

COLOPHON :

इति कुशकण्डिका सम्पूर्णम् ।

15245

केदारकल्प

Kedārakalpa

Foll- 38,12 x 33.5, Cms, paper, 11 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -1257 Śaka samvat, Scribe -x, Condition- bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

.....इति श्रीकेदारकल्पे ईश्वर–देवी संवादे द्वितीय पटलः ।

ईश्वर उवाच–

अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारस्य तु यत्फलम् ।

मम वीर्ये स्थितो देवि केदारं तीर्थमुत्तमम् ।। १ ।।

ENDS :

स्वर्गमार्गरता ये च कल्पं पठन्ति नित्यशः ।
हरते कर्म दुःखं च ते भक्ता नात्र संशयः ।।
इदं कल्प महापुराणं ये पठन्ति श्रुण्वन्ति च ।
सर्वपापविर्निमुक्तो शिवमायुष्यमाप्नुयायुः ।।

COLOPHON :

इति केदारकल्पे कार्त्तिकेय संवादे महापंथ वर्णनं नाम त्रियोविंशः पटलं सम्पूर्णम् । सप्त वाण शैल भू शाके चैत्रमास्यासिते त्रयोदश्यां धनिष्टाभे लिखितं पुस्तकं शुभम् ।। ॐ श्री केदारवासिने शंभवे नमः ।।

15265

गयामाहात्म्य

Gayāmahātmya

From- Vāyupurāṇa (वायुपुराण)

Foll- 25, 12.5 x 33 Cms, paper , 10 to 11 lines on a page , Devanāgarā Script , Age - 1899, Scribe - Mādhava, Condition - good.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
श्री गदाधराय नमः सूत उवाच
सो(शौ)निकाद्यैर्महाभागैः दैंवर्षिः सह नारदः ।
सनत्कुमारं पप्रच्छ प्रणम्य विधिपूर्वकम् ।। १ ।।
नारद उवाच —
सनत्कुमार मे ब्रूहि तीर्थं तीर्थोत्तमोत्तमम् ।
तारकं सर्वभूतानां पठतां....श्रृण्वतां तथा।। २।।
सनत्कुमार उवाच—
वक्ष्ये तीर्थवरंपुण्यं श्राद्धादौ सर्वतारकम् ।
गया तीर्थं सर्वदेशो तीर्थेभ्योऽप्यधिकम ।।

ENDS :

सूत उवाच सनत्कुमारो मुनि पुङ्गवाय पुग यां कथां यत्र निवेदयामास स्वमाश्रमं पुरा पवनैरूपेतं ।।

COLOPHON :

इति श्री वायुपुराणो श्वेतवाराहकल्पे गयामहात्मये ऽष्टमोध्याय: सम्पूर्णम् लिखितमिदं पुस्तकं श्रावण सिते चतुर्दश्यां भृगुवासरे शाके १७६४ संवत् १८९९ लिखितमिदम् माधवेन ।

15247

गर्गसंहिता गोलोकखण्ड

Gargasaṃhitā golokakhaṇṃa

Foll- 30 , 14 x 34 Cms, paper ,11 to 14 lines on a page , Devanāgarī Scripts, ,Age - 1892 samvat , Scribe -Hari prasāda miśra, condition- good.

Author : Ṛṣi Garga.

The Work : Gargasaṃhitā- a pauranic work giving the life story of lord Kṛṣṇa and his brother Balarāma in a parts called khandas.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नम: ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीसरस्वर्तीं। व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।। १ ।।
शरद्विकच पंकजाश्रियमतीवि विद्वेषकं मति.....मुनिलेहितं
कुलशकं जा चिन्हावृतं स्फुरत्कनक नुपुरम् ।।२ ।।

ENDS :

पत्रं यं चलद्युतिं पदद्वयं हृदि दधामि राधायते
यो नित्यं पठेत् कृष्णचन्द्रस्य गोलोकं प्रकृते: परम् ।। ४० ।।

COLOPHON :

इति श्री मद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीगोलोकखण्डे श्रीनारद—बहुलाश्व संवादेभगवद्वैभववर्णनं दुर्वाससोगयादर्शनं श्रीनन्द नन्दन स्तोत्रं वर्णनं नाम विंशोध्याय: ।। २० ।।
संवत् १८९२ श्रावण शुक्ल द्वादश्यां बुधे लिखितमिदं पुस्तकं मिश्र दुर्गादत्तस्यात्मज मिश्र हरिप्रसादेन शुभम भूयात् । श्री राम:।।

15233

गर्गसंहिता (वृन्दावनखण्ड)

Gargasanhitā Vṛndāvana Khaṇḍa

Foll- 35, 13.5 x 28.5 Cms, paper 11 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1891 Samvat, Scribe - x, Condition- good, water stained.
Author : rsi Garg
BEGAINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
कृष्णातीरे कोकिला केलिकीरे गुंजापुंजे देव पुष्पादि कुंजे ।
कंबुग्रीवाक्षिप्र वाहु चलन्तौ राधाकृष्णौ मंगलं मे भवन्तौ ।।
श्री नारदोवाच —
एकदोपद्रवं वीक्ष्य नन्दोनन्दान्सहायकान् ।
वृषभानूपनंदाश्च वृषभानु वरं तथा ।। १ ।।

ENDS :

इदं मया ते कथितं मनोहरं वैदेहं वृन्दावनखण्डमकृत:।
श्रृणोति चैतच्चरितं नरोवर: परं पदं पुण्यतमं प्रयाति स:।। ४५।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्गर्गाचार्य्यसंहितायां श्रीवृन्दावनखण्डे नारद—बहुलाश्व—संवादे शंखचूड़ोपाख्याने विरचानदि समुद्रोत्पत्ति श्रीदामा सापवर प्रस्तावो नाम त्रिविंशो अध्याय: सम्वत् १८९१ तत्र माघ कृ. पंचम्यां चन्द्रे ।।

5238

गर्गसंहिता – गिरिराज खण्ड

Gargasaṃhitā girirājakhanda

Foll- 15, 13.8 x 29 Cms, paper , 12 to 14 lines on a page , Devanāgrī Script , Age - 1892 Samvat , Scribe- x , Condition - good.

BEGINS :

।। श्रीगणपतये नमः ।।

श्री वहुलाश्व उवाच ।

कथं दधार भगवन् गिरिगोवर्धनं उच्छिलींध्रं यथा बालो हस्तेन केन लीलया ।
परिपूर्णतमस्यास्य श्रीकृष्णस्य महात्मनः वन्दैतच्चरितं दिव्यमद्‌भुतम् मुनिसत्तमः।।

श्री नारद उवाच ।

ENDS :

इदं मया ते कथितं प्रचण्ड सुमुक्तिदं श्रीं गिरिराजखण्डम् ।
श्रुत्वा जनः पापपरोविचण्डं स्वप्ने पश्यद्यमुग्र दण्डम्।। २४ ।।
य श्रुणोति गिरिराज यशस्यं गोपराजनवकेलिरहस्यम् ।
देवराज इव सोत्र समेति नन्दराज इव वशाति ममुच् ।। २५ ।।

COLOPHON

इति श्री मद्‌गर्गाचार्यसंहितायां श्रीगिरिराजखण्डे नारदबहुलाश्व संवादे गिरिराज प्रभाव प्रस्ताव वर्णने।। सिद्धमोक्षं नामैकादशोध्यायः।। १ ।। सम्वत् १८९२ भाद्रपदकृष्णचतुर्थ्यां बुधे श्रीरामार्य्यणां भवतुतराम् ।

15273

गर्गसंहिता गिरिराज खण्ड

Gargasaṃhitā girirāja khanda

Foll- 20, 14.32.7 Cms, paper, 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1883 samvat , Scribe - Hara kṛsṇa panta, Condition- good.

The Work :

BEGINS :

श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीबहुलाश्व उवाच

कथंदधार भगवान् गिरि गोवर्धनपरम् ।
उच्छित्तीध्रं या बालोहस्तेनैकेन लीलया ।। १ ।।
परिपूर्णतमस्यास्य श्रीकृष्णस्य महात्मनः ।
वदैतच्चरितं दिव्यमद्भुतं मुनिसत्तम् ।। २ ।।

ENDS :

यः श्रृणोति गिरिराजय रास्यं गोपरासजनचंद्रकेलि रहस्यं देवराजस्य सोत्रशमेति ...... नन्दराजश्व शांति भूभूत्र ।। २५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्गर्गाचार्य्य संहितायां श्री गिरिराजखंडे नारद बहुलाश्व संवादे श्री गिरिराज प्रभाव प्रस्ताव वर्णने सिद्ध मोक्षं नामैकादशोध्यायः ।। समाप्तिमिदं गिरिराजखंडं शुभमस्तु संवत् १८८३ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ शुक्रवासरे प्रतिलिखितं हरकृष्णपतंस्य पठनार्थम् ।।

15234

गर्गसंहिता मथुराखण्ड

Gargasaṃhitā Mathurākhaṇḍa

Foll- 36 , 14 x 3304 Cms, Paper , 12 to 14 lines on a page , Devanāgarā Script , Age - 1889 Samvat , Scribe - Hariprāsad miśra , Condition -good, water stained.

BEGINS :

श्रीगणेशाय नमः ।

वसुदेवसुतं देवंकंसचाणूर मर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।
बहुलाश्व उवाच मथुरायां..............चरित्रं कृतवान् भगवान्मुने
कथं जघान्यं कंसाख्यमेतन्मेव्रूहितत्वतः ।। २ ।।

ENDS :

निष्कारणोभक्तियुतो महीतले शृणोति चेदं हरिलग्न मानसः ।
विजिहत्याविघ्नात्प्रपुविजिहत्यनाकपान गोलोक मानसः ।
विजित्यविघ्नात्प्रविजित्यनाकपान गोलोक धाम प्रवरं प्रयातिसः।।३९।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्री मथुराखंडे श्री नारदबहुलाश्व संवादे श्री मथुरामहात्म्यं नाम अण्ध्यायः २५ संवत् १८८९ कार्तिकशुक्ल द्वितीयायां गुरौ हरिप्रसादमिश्रेणलेखि श्री कृष्णाचार्य्याणां भवतुतराम् । वास्तव्यस्य न्यौधना नगरे शुभम् ।



8- Śukadeva Kathā Pravana Ms. No. ST. 2625

15236

गर्गसंहिता माधुर्यखण्ड

Gargasaṃhitā mādhuryakhaṇḍa

Foll- 32,13.5 x 27.2, paper , 10 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script .Age - 1889 Samvat , Scribe- Hari Prasāda miśra , Condition - good, water stained. 3

।। श्रीगणेशाय नमः।।

अतसीकुसमोपमेय कीर्तीर्यगुनाकूलं कदम्बमध्यवर्ती ।
नवगोपवधुदुकुलशालीवनमाली वितनोति मंगलानि ।।
परिकरी कृतपीतपटंहरिंशिखि किरीटनती कृत कंधरम्।
लकुटवेणुकरंचलकुण्डलं पटुतरं नटवेशधरं भजे ।। २ ।।

ENDS:

श्रीकृष्णाय नमस्तुभ्यं वासुदेवायते नमः ।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।। २७ ।।

नारद उवाच—

इत्युक्ता श्री हरिनत्वा साक्षाच्छिष्यो वृहस्पतेः ।

द्योतयन् भुवनं राजन् विमानेनं दिवंययौ ।।

इदं मया ते कथितं खण्डं माधुर्य्यं संज्ञितं सर्वपापहरं पुण्यम् ।

कृष्णप्राप्तिकरं परं कामदं पठितंशश्वत्किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्री माधुर्यखंडे नारद बहुलाश्व संवादे व्योमाश्रुरारिष्टासुरवधो नाम चतुर्विंशोध्यायः ।। २४ ।। संवत् १५५९ भाद्रपद कृष्णा नवभ्यां सोमे इदं माधुर्य्य खण्डं हरिप्रसाद मिश्रेण लेखि श्री कृष्णाचार्य्याणां भवतुतराम् ।।

15235

गर्गसंहिता (बलभद्रखण्ड)

Gargasamanhitā

Foll- 17 , 17 x 33.5 Cms., paper, 14 to 18 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1911 Samvat , Scribe- Hari prasād miśra Condition . good, slightly warm eaten.

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

बहलाश्व उवाच ।।

श्रुतं तवसुदेवाद्वृह्मनमंगलं परमाद्भुतम् ।
सुधाखण्डात्पारमिष्टं खण्ड विश्वजितं परम् ।। १ ।।
परिपूर्णतमस्यापि श्रीकृष्णस्य महात्मनः ।
षोडशस्त्री सहस्त्राणां पुत्रदशादशाभवन् ।। २ ।।

ENDS :

भगवतो नं तस्य बलभद्रस्य पर ब्रह्मणः कथां यः श्रृणुते श्रावयते तथा नन्दते प्रेमातुररो गायति हसति रुदति नन्दति वदति निर्वृतः कृतार्थो ब्रह्मानन्दमयो भवति ।। ४३

इदं याते कथितं नृपेन्द्र स्वार्थदं श्रीबलभद्रखण्डम् ।
श्रृणोति यो धाम हरेः स याति विशोकमानंदमखण्डरूपम् ।।४४।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीबलभद्रखण्डे प्राङ्विपाक्दुर्योधन संवादे द्वादशोध्यायेः १२ ।। श्रीकृष्नाय वासुदेवाय संकर्षणायते नमः संवत् १९११ माघ ।।

15426

गृधपद्धतिः

Grahapaddhatiḥ

Foll- , 9.5 x 16 Cms, paper, 8-9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition -good.

Author : not mentioned

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ यजुः शाखिनां गृहपद्धतिः लिख्यते ।

तत्रादौ स्वस्तिवाचनम् ।।

ENDS :

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निगमै यथा संग्रामे संकटे चैव चिह्नस्तस्य न जायते इति स्वस्ति वाचनम् ।।

COLOPHON :

15297

गोकर्णनिरूपण

Gokarṇanirūpaṇa

From- Padmpurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 8, 10.7 x 208 Cms, paper,7 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition-good.

Foll- 3 is missing .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

यं प्राव्रजं तमनुपेतये तत्कृत्ये द्वैपायनो विरहकातरआजुहाव ।

पुत्रेति तन्मपतया तरवोधिने दुस्त सर्वभूत हृदयं मुनिमानतोस्मि् ।। १ ।।

ENDS :

आख्यानं एततपरमं पवित्रं श्रुतं सुकृत्ताद्दहे दधौधम् ।

श्राद्धे प्रयुक्तं पितृतर्पणे च नित्यं सुपाठाहं पुनर्भवं भवेत् ।। १० ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखंडे भागवत माहात्म्ये निरूपणो

गोर्कणनिरूपण नाम पंचमो अध्यायः ।। ५ ।।

15426

चतुर्थीकर्मः

Caturthīkarmaḥ

Foll- 9.5 x 16 Cms , paper, 8-9 lines on a page,
Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। अथ चतुर्थीकर्म्म ।।

चतुर्य्यांमेषररात्रौ अभ्यन्तरवेदीकृत्वाऽग्निमुपसमाधाय ।

ENDS :

इति चतुर्थीकर्म्मः ।

COLOPHON :

15262

चाणक्यनीतिशास्त्र

Canakyanitiśāstra

Foll- 35 , 10x20 Cms, paper, 7 to 9 lines on page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x, Condition - good. Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

नीतिशास्त्र प्रवक्ष्यामि
चाणक्येन सुभाषितं ।
येन विज्ञान मात्रेण बुद्धिर्विकसति नृणां ।।१ ।।
नाहि कश्चित कृते कार्य्ये कर्त्तारं समुपेक्षते ।
तस्मकात्सर्वाणि कार्याणि सावशेषाणि कारयेत् ।।२ ।।

ENDS :

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च हिंसादयालु परिचार्थ
परावदान्या ।
भूरिव्यया प्रचुर नित्यधनागमा च वारांगनेव
नृपानीर्तिरनेकरूपा ।। ८५।।

COLOPHON :

15311

चूड़ाकरण संस्कार

Cūḍākaraṇasaṃskāra

Foll- 5, 10 x 19 Cms, paper 7, lines on a page ,
Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x , condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :

Cūḍākaraṇasaṃskāra- a manual of domesticrites.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। अथ चूड़ाकरणं ।।

संवत्सरपूर्णे तृतीयवर्षे उपनीत्य सहैव वा चूड़ाकर्म्मः ।। गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे उपनयनः वेदारंभसमावर्त्तनं कुर्य्यात् ।। तत्र प्रथमं विंशतिहस्तां शालां विधाय ।। शुभे दिन चूड़ाकरणोपनयन वेदारंभ समावर्तन कर्मसु निर्विघ्नतया कार्य्यसिद्धये गणेशपूजनं विधाय ।।

ENDS :

इति मन्त्रेण यक्षुरेणेति वामदेव ऋषिः यजु छंदः क्षुरो देवता पाशपरिहरणो विनियोग यत्क्षुरेण मज्जयतासु केशसावत्धावाव पतिकेशां छिंदिशिरोमास्पायुः प्रमोषीः अनेन शिरसः समन्तात् क्षुरं प्रदक्षिणां भ्रामयेत् ततो नापिताय क्षुरन् प्रयछन्ति अक्षुणमिति वामदेव ।।

COLOPHON :

15367

जन्माष्टमीपूजन

Janmāṣṭamī Pūjana

Foll- 11,12.5 x 2.5 , Cms, paper, 6 to 4 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1784 śamvat, Scribe- Jīvānanda, Condition- bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ जन्माष्टमी पूजा लिख्यते । यथा शक्तिः विधि शोभिनं देवकी सूतिका गृह विधाय तन्मध्ये देवकीसहितं संपूज्ये देवता वा प्रतिमां संस्थाप्य हेमाद्रि प्रतिमां संस्थाप्य ।

ENDS :

सौभाग्यं आरोग्यम् .... सिद्धिं देहि प्रजायाश्चिरंजीवितं च अथ बान्धवाजन ....णां वर्धनी कुल सम्पदा इति चतुः षड्द्रिभूसंवत शाके ..... भू मद .... चतुर्थ दुर्गावारे जन्माष्टमी पूजां जीवानन्दो लिखन्सुधीः यद्योगीभिर्ध्यायते तं सदाहं प्रभोः पाद पंकेरूहं संनमामि ।।

COLOPHON :

15329

जलाशयपूजाप्रतिष्ठा

Jalāśayapūjāpratiṣḍhā

Foll- 16, 13.5 x 17Cms, paper , 14 to 18 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1914 Samvat, Scribe- Girdhārilāla misra , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

ॐ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ जलाश्यपूजाप्रतिष्ठा लिख्यते । सा च द्विविधा विप्रशाक रूपा साधारण्यक करण रूपा च तत्र प्रथमायामल्पकर्तव्यं तथा यं द्वितीयैवं लिख्यते । *etc.*

ENDS :

प्रशात्कारण रूपायां वृक्षदान विधिः सुगमः ।

COLOPHON :

इति श्री वनोत्सर्ग प्रयोग समाप्तम् श्रावण कृष्ण तृतीयायां भृगौ सम्वत् १९१४ लिखितं इदं पुस्तकं मिश्रगिरधारी लालेन स्वयं पठनार्थम् शुभमस्तु ।

यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया यद्शुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न दीयते कल्याणमस्तु श्री रामार्य्याणां भवतुतराम् ।

15109

जैमिनी सूत्र

Jaiminī Sūtra

Foll- 4, 29 x 15 Cms, paper, 13 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe- x, Condition-good.
Author : Jaimini
The Work : The Jaimini Sūtra - an astronomical aphorsims of Jaimini.
BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
पार्क्विवराशौ पितृलाभयोः ।।
स्वकर्मभेदेन मूर्त्तित्वे परिपाताभ्याम् ।।

ENDS :

शुभ वर्गीश्रुभदृष्टियुतः ।। अंशोमित्रभेदात् ।। स्वानन्दतुल्येवा ।। वर्ग निवांशश्च ।। तत्र ज्ञातेषु ।। पुत्रमणीरमणी वुध केतुर्वा शुभचन्द्राभ्यां ।। स्वलग्नंनाश्च ।।

COLOPHON :

इति जैमिनीये उपदेशसूत्रे वियोनिभेदो नाम चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादः ।। ४ ।।

श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्री रामजी सदा सहाय । श्री गंगादैव्यै नमः रामः ।।

15430

त्रिस्थलीसेतुसार संग्रहः

Tristhalī setusāra Saṃgrahah

Foll- 35, 12.6 x 25 Cms, paper, 8 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition - good, water stained.

Author : Bhaṭṭojī dīkṣita

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

साधारणतीर्थ विधिः प्रथमं सम्यगुच्यते प्रयांगादि त्रयविधिः पश्चादित्यत्र संग्रहः तत्र यायाः कृा काश्चितीर्थयात्रा मुनीन्द्राः कृताः प्रयुक्तयः अनुमोदिताश्च ता ब्रह्मचारी विधिवत्करोतिस्म् संयतौ गुरूणा संनियुक्त इति ब्रह्मपुराणवचनाद्गुरु नियुक्तस्यैव ब्रह्मचारिणोधिकारः गृहस्थस्य तु सपत्नीकस्यैवाधिकारः ।

ENDS :

यथा—यथं फलं काशीमरणादिना मुक्ते तु तस्मिन् कर्मगतः प्रत्यवायाभाव एव फलं भवतीति सिद्धं । इति गया प्रकरण ।

COLOPHON :

इति भट्टोजीदीक्षित कृत त्रिस्थली सेतुसार संग्रहः सम्पूर्णम् ।।

15335

तुलसीविवाह

Tulsīvivāhaḥ

From- Nāradapāñcarātra (नारदपंचरात्र)

Foll- 8 ,13.5 x 15 Cms . Paper , 6 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1918 samvat , Scribe- x , Condition- good .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ तुलसीविवाह वशिष्ठ उवाच ।।

अथो विवाहवक्ष्यामि तुलस्यास्तु यथाविधिः ।।

यथोक्तं पंचरात्रेण ब्रह्मणा भाषितं पुरा ।।

आदौ तु रोपणं कार्यं तुलस्या स्वगृहेपि वा ।

वर्ष त्रये तु सम्पूर्णे तुलस्योद्वाहं समाचरेत् ।।

ENDS :

ज्योतिषे स्वाहा ।। निर्मलाय स्वाहा ।। विमलाय स्वाहा । इति वैष्णवहोमः । यजमान सपत्नीकः ।। अन्ये च गोत्रबांधवा प्रदक्षिणा कर्तव्या सप्तपद्यः प्रदक्षिणाः वामांगे आसनेतव्या अभिषेकः आपः शिवाः प्रदक्षिणांगे कृत्वा ।। अक्षतः चंदनं आचार्याय गोदानं वस्त्रदानं भोजनं ब्राह्मण भोजनं संकल्पं तुलसीविष्णोःपूजनं ।। भूयसी दक्षिणा इह लोके सुखं भुक्त्वा विष्णु लोकं सगच्छतु ।।

COLOPHON :

इति नारदपंचरात्रोक्त तुलसीविवाहः सम्पूर्णम् ।।

15335

दामोदरतुलस्यासह विवाह

Dāmodarrtulasyāsaha vivāhaḥ

From- Padmapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 8, 13.5 x 15 cms , paper , 6 lines on a page,Devanāgarī Script , Age- 1918 Samvat , Scribe-x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रणम्यशिरसा देवं माधवं राधया सह विवाहस्य विधिं वक्ष्ये वृन्दा माधवयोरपि विलोक्य पद्धतिः सर्वाः संप्राप्यसतांस्तथा करोति पद्धतीं सर्वां विष्णुनिष्ठः प्रकृष्टधीः तत्र यजमानः स्वस्नातः प्रक्षालित पाणिर्पादः केशोग्रह कृताचमनः . ...।

ENDS :

स्वस्ति वाचनकैः मन्त्रैः कर्तव्यमियतं शुभैः शान्तिरस्तु शिवं चास्तु दुष्टमस्य प्रणश्यतु यदस्य दुरितं किंचित्तदवलुंपतु एवं स प्रोक्ष अक्षताः यजमानादिपतनं ततो राधा सख्यया तु तुलस्याः सह विसर्जनं कृष्णस्य स्वालयं प्रतिगच्छताम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे दामोदरतुलस्या सह विवाह कथनं द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२ सं. १९१८ पौष शुक्ल ७ भौमवार।

15426

द्विरागमन विधिः

Dvirāgamanavidhiḥ

Foll-1; 9.5 x 16 cms. paper, 8-9 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -1911 Samvat , Scribe - x, Condition - good, Ink. Stained.

Author : Not mentioned

The Work :

BEGINS :

अथ द्विरागमन विधिः शुक्ल शुद्धां चन्द्र तारानुकूले ।

ENDS :

COLOPHON :

इति द्विरागमन विधिः सम्वत् १९११ चैत्र सिते वा ।

15462

देवालयप्रतिष्ठा

Devālayapratiṣṭhā

Foll- 44, 9.5 x 16.5 Cms paper, 8 lines on page, Devanāgarī Script, Age - 1881 Samvat, Scribe -x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ बौधायनोक्त मूर्तिः लिंगप्रतिष्ठा विधिः । दैवज्ञ बोधिते शुभ दिवसे प्रतिष्ठां चिकीर्षुः यजमानः पूर्वेद्युः कर्मज्ञान् ब्राह्मणानाहूय आज्ञां

गृहीत्वा प्रतिष्ठोपयोगी संभारान्संपाद्य अधिकारी सिद्धयर्थ कच्छ्रम् प्रत्याम्नायं कुय्यति् ।

ENDS :

कुरन्दकंया माणविशेषरसं इत्यगन्ध सामग्रया शुभमस्तु ।

COLOPHON :

संवत् १८८१ शा. १७४६ का.श्रु.प.भौ. हरिद्वारे लिखि ।।

15398

नवग्रहजप विधि:

Navagrahajapa vidhiḥ

Foll- 6, 14 x 21 Cms. , paper 10 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1908 samvat , Scribe -x , Condition- good, worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work : Navagrahajāpa vidhiḥ containing direction for worshipping navagraha.

BEGINS :

ॐ श्रीगणपतेय नम: ।।

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्य च ।
हिरण्येन सवितारथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्।

उँ आकृष्णेनेति हिरण्यस्तूप ऋषि: त्रिष्टुप छंद: सविता देवता सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विंनियोग: ।। ॐ भूभुर्व: स्व: आकृष्णेन अंगुष्टाभ्यां नम: ।।

ENDS :

अथ ध्यानं—धूम्रोद्विवाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थे विकृताननश्च ।।
किरीटकेयूर विभूषितो य: स चास्तु मे केतु गण: प्रशान्तये ।।१।।

COLOPHON :

इति नवग्रहजप विधिः समाप्तम् ।। स्वस्ति श्री संवत् १९०८ शाक १७७३ मार्ग सिर (शिर) कृष्णाष्टम्यां रविवासरे लिखितं गिरधारीलाल शर्म्मणा श्रीरामजी सदा सहाय ।।

15339

नामकरण पद्धिति:

Nāmakaraṇapaddhatiḥ

Foll- 5, 10 x 20.7 Cms, paper ,7 to 8 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Nāmakaraṇapaddhatiḥ - a manual of domestic rites.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। अथ नामकर्म्मा ।।

दशम्यामुत्थाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा पिता नाम करोति । तत्र सूतकांते नाम कुर्यादिति शंखः तच्च सूतकं ब्राह्मणस्य दशाहं क्षत्रियस्य द्वादशाहं वैश्यस्य पंचदशाहं शूद्रस्य मासं सर्ववर्णानां दशाहमेव वा देशाचारात्तस्माद्वर्णानुपूर्व्येण एकादशे त्रयोदशे षोडशे एकत्रिंशत्तमे सर्वेषां एकादशो वा नामकरणं भवति ।।

ENDS :

ततो गोमयोपलिप्तेदेशे पृथिव्यै नमः वाराहायनमः कुलदेवतायै नमः इति भूमौ पृथिवीं वाराहं कुलदेवतां उपचारैः सम्पूज्य भूमावुपवेशयेत् तन्मन्त्रः ईक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शिशुं ।। आयुः प्रमाणं सकलं निःक्षिपस्व हरि प्रिये इति ।। आचाराहू मेपि पाद स्थापनं ततः प्रदक्षिणामार्गेण तं बालं देवतालये नीत्वा देवपूजनं विधाय तं वालंदेवब्राह्मणेभ्यः प्रणम्यय्यतैराशीर्वादादिभिरभिनंदितं गृहांतर्नयेत् ततो महानीराजनादि आचारात् ।

COLOPHON :

इति नाम कर्मः ।

15334

नेत्रोपनिषद्

Netropaniṣad

Foll- 4, 10 x 17 ,Cms paper , 6 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1966 Samvat , Scribe -x , Condition- good.
Author : Baladeva
The Work : Netropanisad -a minor upnisada.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथातश्चाक्षुषीं विद्यां पठति सिद्धां चक्षुरोगहरां व्याख्यामो । ययाचक्षुरोगास्सर्वतो नश्यन्ति ।। चक्षुषोर्दीप्तिभवति ।। तस्या चाक्षुषी विद्याया अर्हिवुध्य ऋषिः सूर्यो देवता चक्षुरोग निकृत्यर्थे जपे विनियोगः ।। ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेज स्थिरोभव ।।

ENDS :

ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवर्हिनिवर्हिनि स्वाहा ।।

COLOPHON :

इति श्रीनेत्रोपनिषद् समाप्तम् ।। शुभं ।। संवत् १९६६ मा. श्र. वलदेव ।

15266

नैमिषारण्यमाहात्म्य

Naimiṣāraṇyamāhātmya

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 35, 13 x 26 Cms, paper 9 to 10 lines on a page, Devanāgarā Script ,Age - 1921 Samvat , Scribe- x, Condition -good, water stained.
Author : not mentioned.
The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अत्यन्त ध्यानासक्तैरमरबुधगणैः मेवितोत्यन्तभाग्यैः
—रत्यन्तोत्यन्त भक्तया निजखिल कूलदोन्त्यत दुःखायनेता ।। १ ।।

पुराकृत युगे रम्ये ऋषयः शौनकादयः ।
नैमिषारण्यमागत्य तप उग्रं चक्रुम्ते ।। २ ।।

ENDS :

एवं यःकुरूते यात्रा प्रतिवर्ष नगेत्तमः ।
सर्वपापविर्निर्मुक्तो ब्रह्मलोकं स गच्छति ।। ४८ ।।
तीर्थयात्राविधिं श्रुत्वा पार्वती स्वैरमब्रवीत् ।
य श्रृणोति कथां पुण्यां स्वर्गलोकं स गच्छति ।। ४९ ।।

COLOPHON:

इति श्रीस्कन्दपुराणे नैमिषारण्ये माहात्म्ये उमामहेश्वरसंवादे
सावित्री माहात्म्यं पुनस्मि............ माहात्म्यं पञ्चदशो अध्यायः ।।
संवत् १९२१ शाके १७८६ फाल्गुन कृष्ण पंचम्यां ।।

15426

प्रतिमावेष्ठनोपयोगिमन्त्राः

Pratimāveṣṭhanopayogimantrāḥ

Foll- 3, 9-5 x 16 Cms, paper 8 to 9 lines on a page, Devanāgarā Script ,Age -x , Scribe- x, Condition -good, Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

अथ प्रतिमावेष्ठनोपयोगिमन्त्राः ऊ

ENDS :

धृतं धृतयोनेपिवप्रयज्ञं पतिन्तिर स्वाहा ।।

COLOPHON :

इति विष्णुप्रतिमावेष्ठटनोपयोगि मन्त्राः ।।



9- Vārāhaavtāra Ms. No. ST. 2626

15386

प्रत्यङ्गिराविधानम्

Pratyaṅgirāvidhānaṁ

Foll- 12, 7 x 13 Cms , paper, lines on a page- Devanāgarī Script, Age -x , Scribe- x , Condition -good. Folio. 9 is missing :

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

नमश्चामुंडे नरकरंकमालाधरे गृधोलक करंककरेवाश्स्य शमशानां प्रियभोजनि सिद्धिविद्याधर वन्दित चरणो ब्रह्म सूर्यशशियमशिववरुणकुवेर विष्णु पूजितरूद्रकोत्र.......... ।

ENDS :

सहस्र तिलराजिका १००० सतां सिंह सिंहमुखी सुरवी भगवतः प्रोतफुल्ल नेत्रोज्वलां श्रूलं स्थूल कपाल दुष्टा पा........... मरू.......... .... व्यआग्रहस्तावुजं द्रष्टा कोटि चित्रां कटास्य कुर्ह ।। ४१ ।। रामास्क्नेत्र त्रयी वालेन्दुज्वलर्मो लि ऽ कां भगवतीं प्रत्यंङ्गिरां भावयेत् इतिः ।।

COLOPHON :

15362

प्रत्यंडि्गरामहाविद्या

Pratyangirāmahāvidyā

From- Vāmakeśvaratantra (वामकेश्वरतन्त्र)

Foll- 6, 14.5 x 2 Cms, paper, 14 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1914 samvat , Scribe- Hariprasādamiśra, Condition - good, slightly worm eaten.

Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ महाविद्यामतेन । ऊँ हाँ हीं हूँ हैं हों हौं हें हा स्वाहा ।।
ऊँ क्रां क्री कूँ कँ कैं को ॅ कँ कं स्वाहा ।। २ ।।

ENDS :

कूटस्थादेवता दिशविदिक्षु बीज पञ्चकम्
फटकारेण समोपेतं रक्षमां साधकोत्तमम् ।। ९५ ।।

COLOPHON :

इति वामकेश्वरतन्त्रे चरादोना शूलपाणि वक्त्रनिर्गते प्रत्यंङ्गिरामहाविद्या सम्पूर्णम् लिपिरियं हरिप्रसाद शर्म्मर्णाः सं० १९१२ चैत्र कृष्णाष्टम्यां शनौ श्री रामर्य्यणां भवतुतराम् कल्याणमस्तु शुभमस्तु ।

15355

पार्थिवेश्वर पूजनम्

Pārthiveśsvara pūjanaṃ

Foll- 8, 11 to 18.8, Cms paper, 6 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-1886 Samvat , Scribe - x , Condition- good.

Author- not mentioned.

The Work : The Pārthiveśsvara pūjanam - an extract from one of the tantras , containing directions for warshipping Siva in the form of a liṅgam made of earth . Anonymous.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

विष्णु ३ अद्यो नमः परमात्मनेनमः श्री पुराणपुरुषोत्तमाय वाराह कल्पेवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जंबूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे विष्णुप्रजापतिः क्षेत्रे

बौद्धाऽवतारे दक्षिणायने गते रवौ महामांगल्य प्रति मासोत्तममासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुकनामन: (यज) जिजमानस्य मनोवान्छित फलप्राप्तिकामना सिद्धयर्थं अमुक नामदेवता प्रीत्यर्थमहंकरिष्ये अथ पार्थिवेश्वरपूजनविधि: लिख्यते ।।

ENDS :

इदं कुमनलं पूरित वंशयात्रसोपस्कर: सहितं गन्धपुष्पाद्य चितंवद सा(शा)स्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थ उमा माहेश्वर प्रीत्यं गौरी सौभाग्यवतीस्मं प्रदस्ये तने पुण्येन उमा माहेश्वर प्रियताय सं १८८६ ।।

COLOPHON :

15429

पार्थिवालिङगार्चनविधि:
Pārthivaliṅgārcanavidhiḥ

Foll- 5, 14.5 x 25 Cms, paper , 12 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- Kāśināth miśra, Condition- bad.

Author : not mentioned.

The work : Pārthivaliṅgārcanavidhiḥ -an extract from one of tantras, containing directions for worshipping Siva in the form of liṅgam made of earth. anonymous.

BEGINS :

ॐ।। श्रीगणेशाय नम: ।।

एकादश प्रकारेण पार्थिवलिंङ्गार्चन विधि: कथ्यते पुरुषोवास्त्री वा कुर्यात् । तत्र विधानं प्रतिदिनमेकं कृत्वा षोड्शोपचार पूजा रिगिणी पुष्पं घृतं नैवैद्यं एवं शतदिनं पूजयेत् ऋणमुक्तो भवति । प्रतिदिनं लिंगद्वयं कृत्वा षोडशोपचारपूजां कृत्वा मल्लिकापुष्पं गुडनैवेद्यं शत्तत्रयदिनं कुर्यात्

पुत्रो भवति । प्रतिदिनं लिंगत्रयं कृत्वा षोडशोपचार पूजा करवीरपुष्पं शर्करा नैवेद्यं पंचाशतदिन पूजां कृत्वा कन्या भवति ।

ENDS :

एवं स्तुत्वा नमस्कृत्य विसृज्य परमेश्वरं नैवेद्यादिभिः तत्सर्वं भस्मांगाय निवेदयेत् । ब्राह्मणान्भोजयित्वा तथा दद्यात्तेभ्यश्चदक्षिणां यथा शक्त्या धेनुंवस्त्रं हिरण्यं व्रतदक्षिणाम् ।

COLOPHON :

मिश्रकाशीनाथस्य लिखितं कुलोमणिशर्मणः ।।

15251

पाराशरस्मृति

Pārāśarasmrti

Foll- 20, 13.5 x 3.5 Cms., Paper , 11 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script ,Age - x, Scribe - Durgādatta miśra , Condition - good.

Author : Ṛṣi Pārāsara

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ पाराशर स्मृतिर्लिख्यते ।
अथातो हिमशैलाग्ने देवदारू वनालये ।
व्यासमेकाग्रमासीनमपृच्छन्नृषयः पुरः ।। १ ।।
मानुषाणां हितं धर्मं वर्तमाने कलौयुगे ।
शौचाचारं यथावच्चवद् सत्यवतीसुतः ।। २ ।।

ENDS :

अशनाच्छादनात्संभाषात्सहभोजनात् ।
संक्रामांति पापानि तैलविंदुरिवांभसि ।। ७८ ।।
चांद्रायणं पावकं च तुला पुरुषमेव च
गवां चैवानुगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ।। ७९ ।।

COLOPHON :

इति श्री पाराशरस्मृतौ त्रयोदशोध्यायः ।

पौषशुक्लाष्टम्यां विधौ दुगदित्तमिश्रेण लेखि । श्रीकृष्णार्पणं भवतुतराम श्रीकृष्णपरमात्मने नमः ।।

15338

पूजापद्धितिः

Pūjāpaddhatiḥ

Foll- 11 , 8 x 15.2 Cms, paper , lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x, Scribe - x , Condition- good, slightly worm eaten .
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS:

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। ॐ गणेशाय नमः ।।

ॐ अथ पूजा पद्धतिः ॐ ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थायमुक्तस्वापो वद्ध पद्मासनः शुचिरायत्ता सुरज्ञानमुद्रयोत्तानौ, करौ कृत्वा स्वशिरसि शुक्लवर्णाधोमुखसहस्रदल कमलकर्णिकांतर्गत चंद्रमण्डलस्थ त्रिकोणांतर्गत हंसपीडोपरिनिजगुरुं ध्यायेत् ।

ENDS :

वमिति चंद्रबीजेललाटे विचिन्त्य तस्य षोडशवारं जपेन् पूरयेत् वाम नासया वमिति वरुण वीजंभु ।।

COLOPHON :

Vaṭuka bhairavadīpadāna vidhiḥ

Foll- 14 , 10 x 15 ,Cms, paper , 6 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe- x , Condition good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

ॐ श्रीगणेशाय नमः
श्री भैरवाय नमः श्री देव्युवाच ।
देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारकः
दीपदानविधिं ब्रूहि वटुकस्य महात्मनः ।।
ईश्वर उवाच—

ENDS :

अयं दीपविधिः प्रोक्तो बटुकस्य वरानने गोपनीयः प्रयत्नेन सत्यं संत्यं वचो मम इति मन्त्रान भैरवे बटुकभैरवदीपदानविधिः समाप्तः। मन्त्र स्वरूपस्तु ॐ क्लीं श्रीं क्लीं श्री वं सर्वज्ञाय प्रचण्ड पराक्रमाय वटुक य इमं दीपं गृहाण सर्वे ।

COLOPHON :

15298

बद्रीमाहात्म्य

Badrimāhātmaya

From- Sanatkumāra saṃhitā (सनत्कुमार संहिता)

Foll- 6, 13.5 x 21 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1955 Samvat , Scribe- x, Condition - good .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।
दुर्गा गणेशां घण्टांकरणे उद्धवः

ENDS :

नैवेद्यं स्वर्णवस्त्रादिभिश्चश्रद्धया कारयेत् च ।

COLOPHON :

15248

ब्राह्मणसर्वस्व

Brāhmaṇasarvasva

Foll- 137, 15 x 31.7 ,Cms, paper, 10 to 17 lines on a page, Devanīgarī script,Age -1744 Saka samvat, Scribe- Talfīrāmayamunādāsa, Condition - good.
Author : Halāyudha
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
दीपवद्यो—पयति यो भूर्भुवः स्वर्जगत्त्रयम् ।
सवितुस्तं वयं भर्ग्गमयं वर्ग्गकरं नमामः ।। १ ।।
दधानं चतुराम्नाय यूत्तां मुखं चतुष्टयीम् ।। २ ।।
मुनिमाद्यं नमामस्तं पंकजोदरवासिनम् ।। २७१ ।।

ENDS :

भव तन्न समने सो सचेत साचरे यसौ ।।

COLOPHON :

इत्यवसार्थक महाधर्माधिकृत हलायुधकृतौ ब्राह्मणसर्वस्वं समाप्तम् ।। शाके वेद वेदाचलावनि.....च्छ शके १७४४ सप्तो माधवे शुक्रवारे हि सोर्थे धरदेवसर्वस्व ग्रन्थः समाप्तिंगतो वर्णान्यासन्।। लेखक नाम तलफीराम यमुनादासनामिते ।। शुभस्तु ।।

15285

भुवनेश्वरी पद्धतिः

Bhuvneśvarī paddhatiḥ

Foll- 43,14x10 Cms, paper , 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.

The Work :
BEGINS :

स्वस्ति श्री भगवत्यै नमो नमः ।
गुरुं गणपतिं दुर्गां वाणीं महेश्वरम् ।
भास्करं षटकं विष्णुं महाकालीं जगन्मयीं ।। १ ।।
महासिद्धिप्रदां नित्यां महानन्दमयीं परम् ।
वक्ष्ये संक्षेपतश्चाहं श्री भुवनेश्वरीपद्धतिम् ।

ENDS :

इति निर्माल्य पुष्पेण सहतेजा ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा सुषुम्ना मार्गेण हृदयमानीय नैवेद्य शेषं तांबूलादिकं भक्तार्थ पात्राणि विसृज्य द्रिम स्व ।

COLOPHON :

इति भुवनेश्वरीपद्धतिः संपूर्णम् ।।

15456

भुवनेश्वरी विधानम्

Bhuvneśavarī vidhānaṁ

Foll- 32, 9.5 x 18 ,Cms, paper, 9 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script -x , Age- x, Scribe - x , Condition - bad.

Author : not mentioned.

BEGINS :

श्रीमंगलमूर्त्तये गणेशाय निर्विघ्नकर्त्रे नमः ।

ॐ नमो गोपालाय ।
ग्रंथानालोच्यसुधिया पूजितं भुवनेश्वरीम् ।
माधवेन मुनीन्द्रेण पद्धतिः क्रियते मया ।। १ ।।

ENDS :

शिविकायै देवतायै नमति तन्नैवेद्य शेषं मण्डले प्रक्षिप्त हस्तं प्रक्षाल्य भगवत्या निर्माल्यं तीर्थं नैवेद्य शेषं च तद्भुक्तेभ्यो विभिज्य हत्वा स्व एकल कर्म समाप्तौ स्वयं निर्माल्य धारांतीर्थग्रहणं नैवेद्य शेष भक्षणं कृत्वा सर्वदातारं स्मरन् सुखं विहरेत् ।

15292

भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा

Bhūtaśuddhiprāṇapritiṣṭhā

Foll- 6, 10 x 16, Cms, paper , 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1918 Samvat ,Scribe - x , Condition- good,water stained & slightly worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ गणेशाय नमः ।।
आचमनं प्राणायामं कृत्वा भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च ।।
तदुक्तम्
भूतशुद्धिं बिना कर्म्म क्रियते यज्जपादिकम् ।
तत्सर्वं निष्फलं यस्मात्तस्मात्तां पूर्वमाचरेत् ।।

ENDS :

सोहं मम वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत जिह्वा
घ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

COLOPHON :

इतिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।।
शुभम् मिति श्रा. कृ. १२ शनौ संवत् १९१८ ।।

15261

मन्त्रमहोदधिः

Mantramahodadhiḥ

Foll- 63, 15 x 34 Cms, paper , 12 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age 1775 Śaka samvat , Scribe - x , Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

। श्रीगणेशाय नमः ।।

नत्वा लक्ष्मीपतिं देवीं स्वीये मन्त्रमहोदधौ नावं विरचये रम्यां तरणाय गुणैर्युतां तत्रभावन्मन्त्रमहोदधि नामकं तन्त्र चिकीर्षुराचार्य शिष्टाचारं परिपालनाय वाऽविघ्नग्रन्थसमाप्तये स्वेष्टदेवता नमस्कारपूर्वकं ग्रन्थकरणं प्रतिजानीते प्रणम्येति लक्ष्म्यायुतो नृहर्ग्लिक्ष्मी नृहरिः मध्यमपदलोपी समासः ।

ENDS :

श्री विश्वनाथो गिरिजागणेशः श्री माधवो भैरव दण्डपाणि ।

लक्ष्मीनृसिंहो मणिकर्णिकार्कः काशी सदुर्गा ददतां शिवं मे।। ४१ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमन्महीधरविरचितायां मन्त्रमहोदधिनौकायां षट्कर्म निरूपणं नाम पञ्चविंशस्तरंगः २५ समाप्त शाकेवारा महीधगद्रिशशभृत्यसंख्ये सहस्रे मिते श्रीमन्मन्त्रमहोदधेस्तीरेरियं नंदे दिनेऽर्कात्मजे लक्ष्मीरामधरा सुतस्य लिपिताः ..... विदोचलद्विजवरस्यार्थे शुभा सम्मता ।। १ शाके १७७५ शुभम् ।।

15278

मंत्रमहोदधि

Mantramahodadhiḥ

Foll- 79 , 16 x 32 Cms, paper, 11 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1812 Samvat , Scribe - Dayārāma tivārī, Condition-good.

Author : Mahīdhara

The Work :

BEGINS :

नत्वा लक्ष्मीपतिं देवं स्वीये मन्त्रमहौदधौ ।

नावं विरचये रम्यां तरणाय गुणैर्युताम् ।। १ ।।

Comm.

यन्मंत्रमहोदधि नामकं तंत्र चिकीर्षुराचार्याः शिष्टाचारपालनाय निर्विघ्न ग्रन्थ समाप्तये चैवं देवतानमनपूर्वकः ग्रन्थकरणं प्रतिजानीते प्रणम्येति ।। लक्ष्म्या युक्तो नृहरिः मध्यमपदलोपी समासः । गुरू श्रीनृसिंहाश्रममन्त्रा एवं महांत्युदकानिधीयतें......मन्त्रमहोदधिग्रन्थः ।। ७।।

ENDS :

ग्रन्थनिष्पत्ति स्थानं काशीस्थल देवान्स्मरति ।। १३ ।।
ग्रन्थनिष्पत्तिकालमाह विक्रमार्क्कादिति ।। वाणवेदनृपैर्मिते पंच चत्वारिशत षडुत्तर षोडश शत तमे विक्रम नृपाहते सति शिवस्य रामेश्वरस्याग्रे मन्त्रमहोदधिः समाप्तिमंगमत् ।।

COLOPHON :

इति श्रीमनमहीधर विरचितायां मन्त्रमहोदधिनौकायां षट् कर्मादि निरूपणं नामपंचविशंस्तरंगः ।। समाप्तिमगमत् ।। शुभमस्तु वैशाखे ासे सिते पक्षे तृतीयां चन्द्रवासरे लिखितं इदं दयारामतिवारी सं. १८१२ ।। पाठनार्थ श्री अग्निहोत्री समाधातजू ।।

15402

मन्त्रमुक्तावली

Mantramuktāvalī

Foll- 7, 10 x 21.5 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x, Scribe - x , Condition-good. Author : not mentioned.

BEGINS :

।। घटिका चतुर्थः ।।

कलियुगे दीक्षा घटिका एक ।। इतियुगकारणं च ।। अर्कावर्गभवद्विप्रंवत् रक्तवर्णब्राह्मणं दद्यात् । वडवर्गे च क्षत्रिया वडवर्ण च क्षत्रियो दद्यात् ।। तपवर्गे भवे वैश्येपीतवर्ण मन्त्र वैश्यं दद्यात् ।। तस्य सू(शू)द्र उच्यते शूद्रस्य भगवर्ण मन्त्रदद्यात् ।। तदन्तरं श्रीकृष्णः नारदं प्रत्याह ।। ब्राह्मणो क्षत्रियंदद्यात् कुष्ठव्याधिप्रवर्तते: ।।

ENDS :

बन्धनं वन्धनैश्चकाले कालं कण्टकं प्राणघातकम् ।
अमृतं अमृते सर्वे सर्वदा मान संस्थितम् ।।

COLOPHON :

इति मन्त्रमुक्तावली सम्पूर्णम् इति कृष्णपरमात्मने नमः ।।

15383

महागणपति संलेपिन्यार्चन विधिः

Mahāganapati saṃlepinyārcana vidhiḥ

Foll- 37, 8 x 11 Cms, paper 7 to 10 lines on a page- Devanāgarī script, Age - x , Scribe- x , Cndition -good, slightly worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ब्रह्मे मुहूर्ते उत्थाय मुक्तस्वापः सहस्रर्दलकमलावस्थितं श्वेत वर्णं वराभयंकरं श्वेतमाल्यानुलेपनं स्व प्रकाशस्वरूपं स्ववामावस्थितं सुरक्तं प्रशान्तया स्वप्रकाशस्वरूपया सहितं विभाव्यमानं..................... *etc.*

ENDS :

ततो मूले आष्टोत्तरशताभि मन्त्रितं पुष्पं चंदनं वा धृत्यत्रैलोक्यं वश्येदिति ।।

COLOPHON :

इति श्रीमहागणपति संलेपनिल्यार्चन विधिः समाप्तः ।।

15288

महामृत्युञ्जय विधिः

Mahāmṛtuñjaya vidhiḥ

Foll- 8 , 9 x 14 ,Cms, paper, 6 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1886 Samvat, Scribe - x, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिरनुष्टुप छंदः । श्रीत्रयंबकरूद्रो देवता श्री बीजं हैं शक्ति मम यजमानस्य वा आत्मशरीरस्य सर्वारिष्ट निवारणार्थं सकल मनोरथ सिद्धये जपे विनियोगः ।

ENDS :

ॐ उर्वारुकमिव वन्थनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृताद् ॐ भू र्भुवः स्वः सः ।

COLOPHON :

इति सादरोक्त महामृत्युञ्जय मन्त्रविधि संपूर्णम् संवत् १८८६ ।।
अथ पुराणोक्त मन्त्रमृत्युञ्जय ।।

15397

महामृत्युञ्जय विधिः
Mahāmṛtuñjaya vidhiḥ

Foll- 1, 13.5 x 28 Cms, paper , 16 lines on a page, Devanāgarī Script , Scribe -x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : The Mahāmṛtuñjaya vidhiḥ vidhih with the introductory information about ṛṣi etc.
BEGINS :

।। ॐश्री गणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य मैत्रावरुणवसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छंदः । श्रीमृत्युञ्जयो महारूद्रो देवता हौं वीजं जूं शक्तिः ॐ कीलकं श्री महामृत्युञ्जय जपे विनियोगः ।।

ENDS :

उँ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिं वर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

COLOPHON :

इति महामृत्युञ्जयविधिः सम्पूर्णम् ।
शारदोक्त मतेनाह ।

15443

महारूद्रभिषेक विधि:

Mahārudrābhiṣeka vidhihḥ

Foll- 12, 12 x 29.5 Cms, paper, 10 to 12 lines on page Devanāgarī Script , Age - 1888 Samvat, Scribe - x, Conditio- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। स्वस्ति श्री महामंगलमूर्त्तये नमो गणेशाय ।।

अथ महारुद्राभिषेक विधि: आदौ तीर्थे रुद्रविधानोक्तप्रकारेण स्नानं कृत्वा शुचि: प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा महारूद्रस्य नैर्ऋत्यांदिशि महारूद्रस्याभिमुख उपविश्याचम्य प्राणाना यम्यै कालज्ञानानि कृत्वा अमुककामनयामहारूद्रोभिषेकमहं करिष्ये इति संकल्पं कृत्वा आत्मनि न्यासान्कृत्वा ....ॐ गौतमभारद्वाजाभ्यां नम: ।

ENDS :

ब्रह्मपुराणीयमष्टोत्तरशतं पलं सकलदेव प्रतिमाविषयं प्रतिमामधिकृत्योक्तं तथा च ब्राह्मादि देवानां प्रतिमाया वृतावधृताभ्यंग क्षमा भवेत् पलानि तत्र देवानिश्रद्धयापंचविंशति: अष्टोत्तरंपलशतं स्नानेदेय तु सर्वदा द्वेसहस्त्रेपलानां तु महास्नानेतु संख्ययाा दातव्यं येन सर्वासु द्विस्रुत्रि जातितं घृतं पलपरिमाणं तुढपूक २ यद्वा उदेवांगलग्नघृतादे: प्रतिपत्तिमाह देवार्लेग्नंविप्रेभ्यो दद्यात् ।

COLOPHON :

इति पंचामृतविधि: सम्वत् १८८८ पौष कृष्ण १४

15420

महिषीदान—वृषभदान

Mahiṣidāna Vṛsabhadāna

Foll- 6, 93 x 15, Cms Paper, 5-7 lines on a page-Devanāgarī Script, Age -x, Scribe-x, Condition-good, water stained.
Author : not mentioned.

The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

महिषीदान विधिः

गणेशं नत्वा प्रधान संकल्पः अद्येह सकलपापक्षय । द्वारायुष्य प्राप्तिकामः यथोक्तफलावाप्तये श्रीदेवता प्रीतये अहं महिषी दान करिष्ये तदंगतत्वेन प्रतिगृहीत् ब्राह्मणस्यवरणं पूजनं करिष्ये ।। ब्राह्मणं गन्धादिभिः संपूज्य पादार्चन कृतम् ।

ENDS :

दानवाक्यम् धर्मस्तवं वृषरूपेण जगदानन्दकारकं अष्टमूर्तेरधिष्ठान

मतः यादिसनात इति । वृषभदान प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इदं सुवर्ण निष्क्रयी

भूतं द्रव्यं च दास्ये इति ।

COLOPHON :

इति वृषभदान प्रयोगः रामः ।।

15431

मार्गशीर्षमाहात्म्य

Mārgarśīrṣamāhātmaya

From - Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 43, 13 x28 Cms, paper, 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1909 Samvat , Scribe- x , Condition -bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत ।। १ ।।
देवकीनन्दनं कृष्णं जगदानन्दकारकम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं वन्देमाधवं भक्तवत्सलम् ।। २ ।।

ENDS :

स वै संप्राप्यते पुत्रहोमासे न संशय मम् ।
प्रीतिकरं मासं सर्वदा मम वल्लभम् ।। ७१ ।।
सर्व संप्राप्यते युष्मन्तत्प्रसादाच्चतुर्मुखः ।। ७२ ।।

COLOPHONE :

इति श्रीस्कंदपुराणे मार्गशीर्ष माहात्म्ये षोडशोऽध्यायः । संवत् १९०९ शाके १७७४ ।।

15395

मालासंस्कार

Mālāsanskāra

Foll- 1, 12.5 x 25.5 paper, 13 to 16 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x , Scribe-x , Condition - good , water stained.

Author : not mentioned.



10- Nrsimaavtāra Ms. No. ST. 2627

The Work : Mālāsaṃskāra a pamphlet on the mode of consecrating a mālā for the use of various tāntric rites.
BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

मणिमादाय सूत्रेण ग्रंथयेन्मध्यमध्यतः ब्रह्मग्रंथिविधायेत्थं मेरुं च ग्रथिसंयुतम् ग्रंथयित्वापूर्णमालां ततः संस्कारमाचरेत् । गौतमीये मुखे मुखं तु संयोज्य पुच्छे पुच्छन्तु योजयेत् गोपुच्छसदृशी माला यद्वासर्पाकृतिभवेत् एवं निर्मायमालां च शोधयेन्मुनिसत्तमः अश्वत्थपत्रनवकैः पद्माकारं तु कल्पयेत् तन्मध्य स्थापयेन्माला मातृकामूलमुच्चरेत् क्षालयेत्थं च गाव्यैश्च सद्यो जातेन सज्जलैः सद्योजातं मन्त्रः सद्योजातं प्रयद्यामि सद्यो जातायवैनमः भवे भवे नादि भवे भज स्यं मां भवोद्भवाय नमः चन्दनागुरूगन्धाद्यैर्वामदेवेनद्यर्पयेत् वामदेवाय नमः ॐ वामदेवाय नमोवलप्रमथनायं नमः ।।

ENDS :

रूद्राक्षमालायां तु सद्योजातेनायं च गव्यैः श्रुद्धोदकैर्मणीः प्रक्षाल्यं वामदेवेति गंध पुष्पाक्षतैरम्यर्च्य अघोरेभ्य इति धूपदीपौ, तत्पुरुषायेति नैवेद्यं ईशानोतिशक्याभिमन्त्र्य प्रसादेन तत्र शिवम् सम्पूज्य पञ्चमन्त्रै र्मेरु संपूज्याभिः सूत्रं प्रणवेन संप्रक्षाल्य मुखं मुखेन पुँछं पुछेन संयोज्य प्रणवेन ग्रँथिं विधाय माला संस्थापयेत् तत्रमातृकाया संपूज्य जपप्रासाद वीजान हुत्वा माला रहस्यं स्थापयेत् इति संपूर्णमस्तु ।

COLOPHON :

15416

मालासंस्कार

Mālāsanskāra

Foll- 2, 11 x 19, cms, Paper, 9 lines on a page- Devanāgarī Script, Age- x ,Scribe- x, Condition - good.
Author : not mentioned.
BEGINS :

श्रीगणेशाय नमः
अथ मालासंस्कारः

अश्वत्थ पत्र नवकैः पद्माकारं प्रकल्पयेत् ।
तन्मध्येन्स्थापयेन्मालां मातृका मूलगुश्चग्न् छालयेत् ।
पंचगव्यैस्तुस्तः सद्यो जातेन सज्जलैः ।
मन्त्रस्तु सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमः ।।

ENDS :

नान्यं मन्त्रं जपेत् न कंपयेत् न विघ्नयेत जपन् पतितायां छिन्नसूत्रायां चाष्टोत्तरं शतं जपत्वं माले सर्व देवानां सर्वा सिद्धिं स्व रूपिणि तेन सत्येन मे सिद्धिदी मातर्नमोस्तुते ।

COLOPHON :

इति मालासन्स्कार ।।

15330

मूलश्लेषा विधान

Mūlaśleṣāvidhāna

Foll- 16, 15 x 21.5 Cms, paper , 9 to11 lines on the page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe -x , Condition - bad, worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGAINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ मूलशांतिर्लिख्यते ।।

अथ मूले जातस्य विधिर्लिख्यते ।।

मन्दिरस्थं सुखासीनं सर्वलोकपितामहम्।।

प्रणम्य परमा भक्तया नारदः पर्यपृच्छत् ।। १ ।।

ENDS :

हंसपदी ७१ कंडा ७२ , वटु ७३

COLOPHON :

15325

यज्ञोपवीत पद्धतिः

Yajñopavītapaddhatiḥ

Foll- 24, 9.5 x 21.5 Cms, paper, 6 Lines on a page , Devnāgarī Script, Age- 1827 Samvat , Scribe- Prāṇasukharāma, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ यज्ञोपवीत लिख्यते ।। अष्टवर्ष ब्राह्मणमुपनयेत गर्भगष्टमेवा । एकादशवर्षेवा राजन्यं द्वादशवर्षे वैश्यं । तत्रपुण्ऽयेहनि कुमारस्य पितामाता पूजापूर्वकमाभ्युदयकं श्राद्धं विधाय । कुमारस्य वपनं कारयित्वा कर्मांगत्वेन त्रिब्राह्मणसहितं भोजयित्वा...*etc*....

ENDS :

विकृतं वासोनाच्छादयतीयीत । दृढ़व्रतोवंधः अत्र स्यात् । सर्वेषां मित्रमिव ....चरेत् ।।

COLOPHON

इति व्रतवंधः समाप्तम् । कार्तिक(शुदी) सुदी शुक्लपक्षे गुरुवासरे सप्तम्यां संवत् १८२७ । राम राम राम राम राम ।

जदसं (श) पुस्तिकं (पुस्तकम्) दृष्टवा तदृसं लिख्यते मया जदि सुद्धं असुद्धं वा मम दोषो न दीयते । शुभमस्तु । पुस्तकं लिखितं प्राणसुखराम ।

15344

यज्ञोपवीतपद्धतिः

Yajñopavītapaddhatiḥ

Foll- 19, 12 x 20.3 Cms, paper, 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age 1869 Samvat , Scribe - Tīkārāma, Condition- good.

Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अष्टवर्षे ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भाष्टमे वा एकादशवर्षे राजन्यं द्वादशवर्षेवैश्यं। अथोपनयनमुच्यते। तत्रपुण्येहनि कुमारस्यपिता मातृपूजापूर्वकमाभ्युदयिकं श्राद्धं विधाय ।

ENDS :

उर्वरायांनंतर्हितायां भूमावुत्सर्प्यन्तिष्टनमूत्रपुरीषेन कुर्यात् । स्वयं प्रशीर्णेन काष्ठेन गुदं प्रमंजीत विषकृतं वासो ना छादयीतः दृढ़व्रतोवधंत्रः' स्यात् सर्वेषां मित्रमिवतिस्त्रारात्रीं व्रतं चरेत् ।।

COLOPHON :

इति व्रतवन्धः समाप्तम् सं. १८६९ माघकृष्ण ।। गुरुः लिखितमिदं पुस्तकं टीकाराम स्वयं पठनार्थं शुभं भूयात् श्रीरस्तु शुभमस्तु श्री ।

15346

यज्ञोपवीतपद्धतिः

Yajñopavītapaddhatiḥ

Foll- 12, 11 x 21.5 Cms, paper , lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe -x , Condition- bad, slightly worm eaten . ff-1 , 13,14, 15, are missing .
Author : not mentioned.
The work :
BEGINS :
COLOPHON :

15246

याज्ञवल्क्यस्मृति

Yājñavalkyasmṛti

Foll- 45, 15 x 31 Cms, paper, 10 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1877 Samvat, Scribe - Talfīrāma, Condition - good, water stained.
Author : Ṛśi Yājñavalkya
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं संपूज्योमुनयो ब्रूवन् ।
वर्णाश्रमे नराणां नो ब्रूहि धर्मान् शेषतः ।। १ ।।
मिथिलास्थः सयोग्रीन्द्र क्षणं ध्यात्वाब्रवीन्मुनीन् ।
यस्मिन्देशे मृगः कृष्णस्तस्मिन्धर्मान्निबोधत ।। २ ।।

ENDS :

श्रुत्वैतद्याज्ञवल्क्योपि प्रीतात्मा मुनिभाषितम् ।
एवमा .... होवाच नमस्कृत्य स्वयंभुवे ।। ७२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीयाज्ञवल्क्योक्त धर्मशास्त्रे तृतीयोध्यायः । समाप्तं चैव धर्मशास्त्रम् संवत् १८७७ शाके .... सप्तेन्दु मिते फाल्गुनमासि हि कृष्णपक्षे शनावग्नि तिथौ तलफीव्यलीलिखत् । शुभमस्तु ।

15437

रामनामलेखन विधिः

Rāmanāmalekhana Vidhiḥ

From- Rudrayāmala tantra (रूद्रयामलतन्त्र)

Foll--6 , 9x17 , Cms, paper, 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1917 Samvat , Scribe - x, Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन्सकलविद्या श्रुताश्चाधिगतामया ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि यत्त्वं लेखसि वै रह: ।। १ ।।

श्री महादेव उवाच

ब्रह्मादिविबुधै सर्वै पृष्टो न कथितोमया ।।
तवाग्रे कथयाम्यद्य यतस्त्वं प्राणवल्लभा ।। २ ।।

ENDS :

उच्चाटनैपिशितोदेन मारणे रूधिरेण तु राज्यप्राप्तै चन्दनेन पुत्रार्थं घृतेन एतन्मन्त्रस्य च सर्वस्वं यदुक्तं वल्लभे ।। ४१ ।। न वै गोपनीयं स्वयोनिवत् ।। इति रामनाम लेखन विधि: रूद्रयामलप्रोक्त: संवत् १९१७ ।।

15463

वृहतकर्मकाण्ड पद्धति:

Vṛhatakarmakāṇḍā paddhatiḥ

Foll- 123, 16 x 20.5 Cms.paper, 16-17 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition - bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नम: ।।

अथ यजुशाखिनं गृ—तत्रादौ स्वस्तिवाचनम् ।
ॐ स्वस्ति ....।।

ENDS :

वर्ण रजतं राज्ञवर्त प्रपालकः इति ।

COLOPHON :

15260

व्रतोत्सवविधानम्

Vratotsavavidhānam̐

Foll- 78, 15 x 29 Cms, paper, 13 to 15 lines on a page,
Devanāgarī Script, Age - x ,Scribe- x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS : --

तत्र संकल्पमन्त्रः ।। उपोष्ये नवमीं त्वद्ययामेष्वष्ट सुराघव ।
तेन प्रीतो भवत्वं भोः संसारात् त्राहि मां : इति
ततः कोमलांगं विशालाक्षमिंद्रनील सम्प्रभम्
दक्षिणांगे दशरथं पुत्रावेष्टन तत्परम् ।।

ENDS :

स्नानोत्तरं नित्यनैमित्तिकेष्वधिकाराविघातात् ।।
काम्यानि तु ग्रहणात्पूर्वग्रहणोत्तरं चकिंचिदनपर्यन्तन भवंत्येव ।।
तथा ज्योतिर्ग्रन्थे त्रयोदश्यादितोवर्ज्यं दिनानां नवकं शुभम् ।
मांगल्येषु समस्तेषु ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
द्वादश्यादिस्तृतीयांतो वेध इन्दु गृहे स्मृतः ।
एकादश्यादिकः सौरे चतुर्थ्यं ।।

15360

वास्तुपूजाशान्तिः

Vāstupūjāśāntiḥ

From- Vaśiṣṭhasaṃhitā **(वशिष्ठ संहिता)**

Foll- 5, 10.2 x 16-5 Cms, paper, 5 to 6 lines on a page,
Devanāgarī Script , Age -x, Scribe - x , Condition- good.

Auhtor : Ṛṣi Vaśiṣṭha
The Work : Vāstupūjāśāntiḥ - direction for worshipping (the presiding divinity of a dwelling when a new is about to be accupied. The sage Vaśiṣṭha is said to be the author of the work .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

वास्तुपूजा प्रकारमाह वासिष्ठः निर्माणे मन्दिराणां च प्रवेशे त्रिविधेपि च वास्तुपूजा प्रकर्तव्या यामत्र कथयाम्यतः गृहमध्ये हस्तमात्रं समतां ताण्डलोपरि एकाशीति पदं कार्यं पलै स्तुत्यं, सुशोमनं .... etc...........

ENDS :

आरोग्यं पुत्र पौत्रादि धनं धान्यं लभेन्नरः ।
वास्तुपूजाम् कृत्वा यः प्रविशेन्नैव मन्दिरम् ।
रोगान्नानाविधा क्लेशान श्रुते बहु संकटम् ।

COLOPHON :

इति वशिष्ठ संहितायां वास्तुशान्तिः ....।

15328

विवाहपद्धतिः

Vivāhapaddhatiḥ

Foll- 21 , 16.5 x 19 Cms, Paper , 15 to 17 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -x , Scribe -x , Condtiion - good , slighjtly worm eaten.
The Work : Vivāhapaddhatiḥ - a manual of domestic rites.
BEGINS :

रामसिद्धिः श्रीगणेशाय नमः ।

अथ विवाह पद्धिति (पद्धतिः) लिख्यते कन्याहस्तेन षोडश हस्त मण्डपं तद्दक्षिणा दिशि पश्चिमा दिशमात्रेङ...................

ENDS :

गमागमे तीर्थयात्रास्तथैव चय व्यवहारे कृषि वाणिज्य मम आज्ञा (प्रज्ञा) प्रवर्तते साक्षी पूर्ववत् ।

COLOPHON :

15345

विवाहपद्धतिः

Vivāhapaddhatiḥ

Foll- 15 , 11.4 x 23 Cms, papers, 8 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe -x , Condition- good

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

पादत्राण विमोचनं च वर्णावाचार्चणं विष्टरं पाद्यं विष्टरमर्ध्यमाचमनं कृतं मधुपर्कन्यासं तथा गोग्निमोडि च हस्तपीडनं करं शाखा विभेदं तथा कन्यादान सुवस्त्रग्रंथि पूजा चांतर्पटमंगली स्वस्तिवाचनम् ।। १ ।।

ENDS :

अथ तिलकं युंजति वधूपुरुषचरंत परितस्तेषांरोचंते रोचनादिभिः तरणिः विश्वदार्शितो निष्क्रन्दति सूर्ये विश्वमाभासि रोचनं अथाशीः ॐ दीर्घायुस्त ओषधेषनिता यस्मै च त्वाष नाम्यहं अथोत्वं दीर्घायुर्भूत्वा श्तवर्षा विरोहृतात् ततोऽभ्यन्तर गमनं द्यौ शांतिरिति पठेत् ।

COLOPHON :

इति विवाहपद्धति सम्पूर्णम् ।

15426

विवाहपद्धतिः

Vivāhapaddhatiḥ

Foll- 9.5 x 16 Cms, paper , 8-9 lines on a page, Devanāgarī script, Age - x , Scribe - x , Condition - good. Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ विवाहपद्धतिः तत्र प्रथमस्तु शुभमुहूर्ते कन्यापिता वाग्दानं करोति ।

ENDS :

ततो दधि गुड़ प्राशनादि कृत्वा यथास्तु खं विहरेत् ।

Colophon :

इति विवाहपद्धतिः ।

15433

विवाहपद्धतिः

Vivāhapaddhatiḥ

Foll- 27, 14.5 x 17 Cms, Paper, 9 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x, Condition - good. Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ विवाहपद्धति लिख्यते ।। आदौकन्यापिता स्नानं कुर्यात् । धौतवस्त्रपरिधानं तिलकं कुर्यात् । अथाचम्य । ॐ आकाशवाहिनी गंगा करमध्ये अमृतं पिबेत् । ततो जाह्नवी पुण्य तोयं सर्वपापप्रणाशनं । इत्याचम्य अथ यज्ञोपवीतम् । ॐ यज्ञोपवीतमिति परमेष्टी *ऋषि* लिंगोक्तादेवता त्रिष्टुपछंदः ।।

ENDS :

ध्रुवसे निश्चलताय गंगातजमुना से जलपवित्राय ।
चंद्रसूर्या से उद्योत करणाय गऊ ब्राह्मणसे रक्षाकरणाय ।
वरंकन्या नंदनीकाय छोनो कुलकौदीर्घा ।।
ॐ स्वास्ति श्री ।।

COLOPHON :

15296

विष्णुनाम प्रकाश:
Viṣṇunāma prakāśaḥ

Foll- 29, 12.5 x 28 Cms, paper, 9 lines on a page, Devanāgarī, Age- 1910 Samvat , Scribe - Deva datta ṭripāṭhī , Condition -bad, Foll- 4 is missing.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

न विनश्यति यस्तस्मादक्षर: कथितो हि स: ।
जीवेश्वरैक्यविज्ञानं योगस्तद्रूप एव हि ।।
स्मृतो योगविदां नेता योगिनामपि नायक: ।
यो मायाजीवयोरीश: प्रधान पुरुषेश्वर: ।। १ ।।

ENDS :

छात्रकृतग्रन्थोयं गुरुभि: संशोध्य वितत्तयानीत: ।
अरूणाविकाशीतमाशामुखमिवदोषायुतं रविणाम् ।। २१ ।।

COLOPHON :

इति श्री परमहंसपरिव्राजकाचार्य विवृते विष्णुनाम प्रकाश:

समाप्तम: । सम्वत् १९१० शके १७७५ पौषमासे कृष्णपक्षे शनौ

लिखितं देवदत्तत्रि पाठिना शुभमस्तु ।।

15426

विष्णुप्रतिमादान

Viṣṇupratimādāna

Foll- 3, 9.5 x 16 Cms, paper, 8 to 9 lines on a page, Devanāgarī, Age- -x, Scribe -x, Condition-good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

विष्णुप्रतिमादानं अत्र कन्या स्नान शुभवस्त्र परिधानं आचमनं कृत्वा शुचौ देशे शुभासने उपविश्य शुक्लांवरमिति पठित्वा.......

COLOPHON :

इति विष्णुप्रतिमा दान प्रयोगः

15348

विष्णुप्रतिमाविवाहविधिः

Viśṇupratimā vivāhavidhiḥ

Foll- 3, 22 x 14.5 Cms, paper, 22 to 24 lines on a page, Devanāgarī script, Age - x, Scribe - x, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Viśṇupratimā vivāhavidhiḥ - a mannual of domestic rites.

BEGINS :

। श्रीरामाय नमः ।

अथ विष्णुप्रतिमाविवाह विधिः कन्यां स्नापयित्वा शुभवस्त्राणि परिधाययित्वा स्वयमावांतः गणेशपूजनं अद्येह अमुकोहं कन्यायाः सौभाग्यप्राप्त्यर्थंकरिष्यमाण विष्णुप्रतिमाविवाह कर्मणः पूर्वांगत्वेन यथामिलितोपचारैः श्री भगवतोगणेश्वरस्यपूजनं करिष्ये संपूज्यः ततो मातृपूजनं प्रधान संकल्पः अमुकोहं मम कन्याया जन्म समयवर्ती लग्नादेर्वैधव्यसंभावनासूचयकैर्ग्रहादिभिः सूचितस्यारिष्टस्य निवृत्तये सौभाग्यप्राप्तये महाविष्णुप्रतिमयाः सह विवाहं करिष्ये ।

ENDS :

ॐ तत्सत् ब्रह्मश्च द्यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वां प्रतिगृहणातु स्वस्ति कोददाति च काम स्तुतिं पठित्वा अनघाभाव त्रिर्वन्देत इतिविष्णुप्रतिमादानविधिः अथार्कविवाह विधिः ।

COLOPHON :

15343

वैधृतिव्यतीपातसंक्रान्तिशान्तिः

Vaidhṛtivyatīpātasaṃkrāntiśāntiḥ

Foll- 5 , 11.5 x 24.5 Cms, paper 10 to 11 lines on a page , Devanagārī Script, Age - 1907 Samvat, Scribe- x, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणपतये नमः ।।
अथ वैधृतिव्यतीपात संक्रांति शाँतिः ।। शौनकः ।।
कुमारजन्म कालेतु व्यतीपातश्च वैधृतौ ।
संक्रमणरवेस्तत्रजातो दारिद्रयंकारकः ।।
दरिद्राणां महादुःखं व्यधिपीड़ासमुद्भवम् ।।
आश्रितोमृत्युमाप्नोति नात्र कार्याविचारणा ।।
स्त्रीणां च शोकं दुःखं च सर्वनाशं भवेत् ।।

ENDS :

कर्मोतरपूजां कृत्वा विसृज्य प्रतिमादिकम् गवादिकं चाचार्याय दत्वा ऋत्विग्भ्यश्च सौवर्णं माषत्रयात्मकं यथा शक्त्या दक्षिणां दत्वा । विभर्वैयान शय्यासनादीनि च दत्वा ब्राह्मणानभोजयित्वा स्वयं भुञ्जीत् ।।

COLOPHON :

इत्येकनक्षत्र शांतिः ।। मि.मा.कृ. १३ बु.सं. १९०७

15264

वैशाखमाहात्म्य

Vaiśākhamāhātmya

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 83, 15 x 30 Cms, paper, 10 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1888 Samvat, Scribe - Kulamaṇipāghdey , Condition- bad.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।।

सूत उवाच—

ENDS :

सूत उवाच—

य इदं परमाख्यानं पापघ्नं पुण्यवर्धनम् ।
शृणुयाद्वापठेद्वापि स याति परमं गतिम् ।। ६५।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कन्दपुराणे वैशाखमाहात्म्ये चतुर्विंशोध्यायः समाप्तः ।। २४ ।। संवत् १८८८ शाके १७५३ वैशाखाधिक कृष्णापक्षे ? लिखितमिदं कुलमणि पाण्डयेन ।।

15465

वैशाखमाहात्म्य

Vaiśākhamāhātmya

From- Padmapurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 63, 13 x 27 Cms, paper 11 to 14 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- 1858 samvat, Scribe - x , Condition- bad.

Author - not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अम्बरीष उवाच— यदेतत्परमंब्रह्म वेदवादिभिरुच्यते ।
स देवः पुडरीकाक्षः स्वयंनारायणः परः ।। १ ।।
योऽमूर्त्तो मूर्त्तिमानीशो व्यक्तोऽव्यक्तः सनातनः ।
सर्वभूतमयो चिन्त्यो ध्यातव्यः स हरिः कथम् ।।२।।

ENDS :

वैशाखमासे मधूसूदनस्य ... तान् सर्वे सुखिनो भवन्ति।। ८२।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे .... शुभं भूयात् । सं १८५८ शाके १७२३ । अथम ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्थ्यां शनिवासरे लिखितं इदं जयचन्दपठनार्थम् । श्रीरामाय नमः ।।

15300

शय्यादान प्रयोगः

Śayyādāna prayogaḥ

Foll- 3 ,10.2 x 25 , Cms, paper 9 lines on a page ,
Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ शय्यादान प्रयोगः । महाभारते शय्यामास्तरणोपेतां सु प्रच्छादन संवृतां प्रदद्याद्यस्तु विप्राय श्रृणु तस्यापि यत्फलं सुरूपः सुभगः श्रीमान् स्त्रीसहस्त्रभि संवृतः ।। दशवर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ।

ENDS :

शय्यां परिस्थित्वा प्रति गृह्णीयात् कृतस्य शय्यादानस्य सांगता सिद्ध्यर्थं इदं सुवर्णं अग्नि दैवतम् ब्राह्मणाय तुभ्यं संप्रददे ततो भूयसा संकल्पः तथा ब्राह्मणं भोजन संकल्प ब्राह्मणो प्रणिपत्ये विसर्जयेत् ।

COLOPHON :

इति शय्यादान प्रयोगः ।

15299

शय्यादान माहात्म्य

Śayyādānamāhātmya

Foll- 2, 10x 26.5 Cms, paper, 11 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x , Scribe -x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The work :

BEGINS :

।। श्रीराम: ।।

अथ शय्यादानमाहात्म्य ।

अथ शय्यादानं महाभारते शय्यामास्तरणोपेतां सुप्रछादन संवृतां प्रदद्यास्तु विप्राय श्रृणु यत्फल सुरुपय: सुभग: श्रीमान् स्त्रीसहस्त्राभि: संवृत: दशवर्ष सहस्त्राणि स्वर्गलोके महीयते ।। २ ।।

ENDS :

सर्वकरणोपेतं शिवे शय्यां निवेदयेत् शिवदेवी समायुक्तम् ।
प्रेष्टकृत्वा नि निवेदयेदिति शिवधर्मे शिवशय्यादानम् ।।

COLOPHON :

15467

शापविमोचनम्

Śāpavimocanam

Foll- 4, 10 x 16.5, Cms, paper 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1899 Samvat , Scribe- x, Condition- good.

Author- not mentioned.

BEGINS :



11- Samudra ManthanaMs. No. ST. 2628

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुकर्ता प्रजापतिः ऋषिः कामदुधा गायत्रीछंदः । ब्रह्मशापविमोचनीगायत्री शक्तिः देवताब्रह्म शापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ।।

ENDS :

आत्मज्योतिरहं शुक्ल, शुक्ल ज्योतिरहंसमाविष्णवे नमोऽस्तु ते ।
वशिष्ठशापाद्विमुक्ता भव वेदमात्रे नमः ।

COLOPHON :

इति शापविमोचनं समाप्तम् १८९९ शुभम् ।।

15327

शिवपूजनविधिः

Śivapūjanavidhiḥ

Foll- 9 , 11.5 x 23.5, Cms, paper, 10 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -x , Scribe -x , Condition - bad, worm eaten .

Author : not mentioned.

The Work : Śivapūjanavidhiḥ - Containing directions for the worshipping of Śiva.

BEGINS :

।। सिद्धिं श्रीगणेशाय नमः ।।

ENDS :

विषपानं संधाय ये कुर्वन्ति शिवे निविषये ।
नाभिभूयंते भुञ्जानास्ते फलेनापि येनकेनापि ।।

COLOPHON :

15442

शिवपूजन विधि:

Śivapūjanavidhiḥ

Foll- 7, 12.5 x 30.5 Cms, paper , 16-17 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1872 Samvat, Scribe -x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ शिवपूजनं लिख्यते ।

तत्र प्रारंभपूर्वदिने भूम्यादि शुद्धिं विधाय ब्राह्मणानां निमंत्रणं, अथानन्तरं मातृपूजापूर्वकर्माभ्युदायिकं आहुं कृत्वा तत्र स्व डिलोपरिद्वादशज्योतिर्लिंगान्विरचयेत् ।

ENDS :

अथ विसर्जनं गच्छगच्छेति तदनंतरं संकल्पः एतत्पूजनं यन्मया कृतं तेन पार्थिवेश्वररचितां मणिप्रसन्न हेत्वर्थमस्तु ।

COLOPHON :

इति शिवपूजनं समाप्तं डुढौकत् शाकेनग......पद्रिधरामिते भाद्रपदे सिते व्यलीलिख शिवपूजनमादितः संवत् १८७२ तृतीयां बुधे इति शेषः शुभमस्तु ।

3442

शिवमन्त्र

Śivamantra

Foll- 31, 12.5 x 2 Cms, paper , 10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x, Scribe -x , Condition ------- bad. The ms begins from Folio- 6.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

अस्य भारद्वाज ऋषि:इन्द्रे देवता अनुष्टुप् छंदो ब्रह्मवर्चसा विधया धनेन यशसा वा यस्मादधिको भवितुमिच्छति तस्यैव नाग गृहीत्वा ऽयुतं जपेदधिको भवति ।।।

ENDS :

पंचनद्य: अस्यगृत्समद ऋषि: सरस्वती देवता देवता अनुष्टुप् छंद: पद्मपुष्पाणां रक्तचन्दनानां । घृतपूर्णानां चतुष्पदे शून्या पत्तने ऽग्निमुपसमाधाय शतसहस्त्रं जुहूयात् साक्षाद् भगवतीं पद्ममालिनीं पश्यति । यावज्जीवं धनं प्रयंच्छती कामसमृद्धो भवति ।। अथातोष्यायं ऋषिं छंदो देवतां विज्ञाय यथा कामं जपेत् ।

COLOPHON :

15242

शिवरहस्य

Śivarahasya

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 80 , 15.7 x 25.5 Cms, paper , 14 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1907 samvat , Scribe- Girdhārīlāla śisra, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

Śivarahasya - a hymn in 128 stanzas said to from the brahmottara khaṇḍa of the skandapurāṇa.

BEGINS :

ज्योतिमात्रस्वरूपाय निर्मलतायारूपिणे
नम: शिवाय नित्याय समस्त गुण वृत्तये ।। १ ।।
ऋषय: आख्यातं भवता सूतविष्णोर्महात्म्यमुत्तमम् ।
समस्ताघहरं पुण्यं समासेन श्रुतं वच: ।। २ ।।

ENDS :

विविधगुणविभ्रेदैर्नित्यम् स्पृष्टरूपं जगति च
बहिरन्तर्भासमानं महिम्न: ।
मनसि च विहरन्तं व्याघ्रनां वृत्तिरूपं
परमशिवमनन्तानन्दसान्द्रं प्रपद्ये ।।२८।।

COLOPHON :

इति स्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तर खण्डे श्रवण महिमावर्णनो नाम द्वाविंशतिमोध्याय: ।। २२ ।।
संवत् १९०७ तत्र शक: १७७२ मासानांमासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षसे द्वितीयायां चंद्रवासरे इदं पुस्तकं लिखितं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मजगिरिधारीलालशर्म्मणा श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नम: ।। श्रीरामाजी सदा सहाय ।।

15444

शिवषडाक्षरमन्त्र पद्धति:

Śivaṣaḍākṣharamantra Paddhatiḥ

Foll- 4, 13x 30.3 Cms , paper, 9 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Sribe - x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

अथ शिवषड्क्षर मन्त्र जप पद्धति: ।

प्रथमं शुद्धासनं उपविश्य प्रात: कृत्यं विधाय संकल्पं कृत्वा मातृकान् सन्चरेत् तद्यथा अस्य मातृका मन्त्रस्य ब्रह्मऋषि गायत्री छंदो मातृका सरस्वती देवता हलोबीजानि स्वरा शक्तयो लिपि न्यासे विनियोग: शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नम: ।। मुखेगायत्री छंदसे हृदिमातृका सरस्वत्यै देवतायै नम: ।।

ENDS :

वामकरे संश्रुकात्मभृंगीशं सहजाभ्यां नमो दक्षपादे हं प्राणात्मन कुलीशलक्ष्मीभ्यां मुख नमो वाम पादे लं जीवात्म शिवव्यापिनीभ्यां नमो जठरे क्षं क्रोधात्मकं संवर्त्तकमायाभ्यां मुखे इति श्रीकंठमातृकान्यास: ।। श्री ।।

COLOPHON :

15230

सत्योपाख्यान

Satyopākhyāna

Foll- 136 , 15 x 32.7 Cms, paper, 9lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीरामचन्द्राय नमः ।।
दशरथसुतं रामं योगिध्येयांघ्रि द्वंद्वमज़शिवसनकाद्यैः पूज्यमानं सदैव ।।
हृदि हृदि कृतवासं रामनामाख्यदेवं तमहमखिलसत्यं सर्वकरणैर्नतोस्मि।। १

ENDS :

व्यास प्रसादाज्जानामि श्रीराम कृपया तथा ।
इतः परं महारम्यं विवाहचरितं शुभम् ।।
वर्णयामि महापुण्यं श्रोतृणामघमोचनम् ।। ८५।।

COLOPHON :

इति श्रीसत्योपाख्याने भूत—शौनक संवादे एकोनपंचाशात्रमोध्यायः
।। ४९।।

15231

सत्योपाख्यान रामचरित्र

Satyopākhyāna Rāmcaritra

Foll- 61, 16 x 32, Cms, paper , 9 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x, Condition- good, waterstained. Folio- 59 & 60 are damaged.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
श्री शौनक उवाच
सूतसुत महाबुद्धि श्री रामचरितं वद् ।
यस्य श्रवणमात्रेण भवेन्मुक्तिर्न संशयः ।। १ ।।
उत्पन्ना च कथं सीता साक्षाल्लक्ष्मी क्षितेस्तलात् ।

कारणं च मे विघ्न रामेणोद्वाहितां पुन: ।। २ ।।

ENDS :

COLOPHON :

15308

सन्ध्योपासना

Sandhyopāsanā

Foll- 17, 9.6 x 14..5 CMs, paper, 6 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1903 Samvat Scribe-Lālajīmala, Condition- good, water stained.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

श्रीसामवेदाय नम: ।।

हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य: ।। ॐ विष्णु: १ वाक् २ प्राण चक्षुरश्रोत्रनाभिहृदयकंठेशिर:शिखाबाहुभ्यां यशोबलं सप्रणवगायत्र्यांसि(शा) —खां वध्ये ईशान्यसि मुखमाचम्या: अमुक मासे पक्षे तिथौ वासरे मम उपपातक दुरतक्षयार्थे ब्रह्मवाक्यौ प्रातर्मध्यान्ह सायं सन्ध्योपासनमहं करिष्ये ॐ नमो भगवते ति मंत्रस्य प्रजापति: ऋषि: जगतिछंद: विष्णु: देवता वासुदेवस्मरणे विनियोग: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ENDS :

शशपत ऋषि: वातोदेवताविराट् छंद: अनेन श्री परमेश्वर: प्रीत्यर्थे अनेन अष्टोत्तरतया य त्रिनयनि वेदे निर्मय: अनेन प्रातर्मध्यान्ह सायं सन्ध्या संपूर्णम् ।

COLOPHON :

इति संध्यासमाप्तं संवत् १९०२ आश्वनवदि त्रयोदस्यां (श्यां) १३ चन्द्रवासरे लिखितं लालजीमल मंगलसैन पंठनार्थं शुभम् श्रीराम श्रीराम ।।

15466

सन्ध्याप्रयोग:

Sandhyāprayogaḥ

Foll- 8, 9 x 12.7 , Cms, paper, 7 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - X , Scribe- x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

शिखावन्धनं आचम्य संकल्पः सद्योपातक सकल दुरितक्षया ।
य ब्रह्मलोकावाप्तये प्रातः सन्ध्योपासनमहं करिष्ये ।।
अथ ध्यानं..।।

ENDS :

इति सन्ध्या यदक्षर पद भ्रष्टामत्रा..... च यद भवेत् रामा ।

COLOPHON :

15378

संध्याप्रयोग:

Sandhyāprayogaḥ

Follo- 7, 6x16.2 Cms, paper, 4 lines on a page , Devnāgarī script, Age - 1908 Samvat, scribe- x , Condition - good , water stained
The Work :
Author : not mentioned.
BEGINS :

।। ॐश्रीगणेशाय नमः ।।

अथर्वस्य संध्या ॐ ब्रह्मणे नमः । इति नमस्कृत्य ॐ रामाय नमः ।। इति शिखां वध्वा पूर्वोत्तर ईशान्यभिमुख । आचम्य अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वायत्स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः इति मन्त्रेणात्मानं जलेन प्रोक्ष्य शिखां च जलेन संस्पृश्य ॐ अनिरुद्धाय नमः इत्याचम्येत ।

ENDS :

नमो विवस्वते ब्रह्मन्भास्वते विष्णुतेजसे जगत्पवित्रे शुचये: नमस्ते कर्म योगिने इत्थं नाभि सूर्य्याय पुनरर्ध्यं दद्यात् विसर्जनं कुर्यात् अच्युताय नमः ।।

COLOPHON :

इति संध्याप्रयोगः संवत् १९०८ मार्गशुक्ल चतुर्थी वुधे शुभम् एक चक्रो रथी यस्य दिव्यः कनक भूषितः स मे भवतु सुप्रीतः यमहस्तो दिवाकरः ।। श्री श्री श्री श्री श्री ।।

15451

सन्ध्याविधिः

SandhyāVidhiḥ

Follo- 30, 9x14.2 Cms, paper, 7 to 8 lines on a page , Devnāgarī script, Age - 1908 Samvat, scribe- x , Condition - good , water stained

The Work :

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ संध्या प्रयोगः वामे वाः कुशान् दक्षिणे पाणौ सपवित्री कुशंत्रयं धृत्वा सप्रणवः गायत्र्या शिखां बध्वा ईशान्यभिमुखं आचम्य ऋग्वेदाय स्वाहा सामवेदायस्वाहा अथर्वणे नमः ।

ENDS :

गायत्री जपेत् ।

COLOPHON :

इति सन्ध्या समाप्तम् ।

8193

सरोजकालिका

Sarojakalikā

Foll- 8, 14.5 x 31 Cms, paper , 19-21 lines on a page, Devanāgarī Script , Age- 1892 Samvat , Scribe - x , Condition - good, written in very small letters.

Author : Kavi Ratna

BEGINS :

अथ सरोजकलिका लिख्यते ।।
भास्वता कवि रत्नेन प्रयत्नेनस्तुतिः कृता ।।
सरोजकलिकां भाति श्रुति स्त्रीकर्णभूषणे ।। १ ।।
अथ व्यवस्था ।। तत्र हारितः न तत्रविराञ्जायन्ते न रोगा न शतायुषः ।। न च त्रयोऽधिगच्छन्ति यत्र श्राद्धं व्यवस्थितम् ।।

ENDS :

दिनद्वयं न भूञ्जीत............ विनिर्दिशेत याज्ञवल्क्यो ।

COLOPHON :

इति श्री कविरत्नविरचिता सरोजकलिका समाप्ता ।। शुभं भूयात् माघमासे कृष्णपक्षे तृतीया रविवासरे । संवत् १८९२ ।।

15317

स्वप्नाध्यायः

Svapnādhyāyāḥ

Foll- 7, 12.14.5 Cms, paper , 12 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1840 samvat , Scribe -x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं गुरु भाषितम्।
फलं विज्ञायतेयेन नित्यमेव श्रुभ शुभम् ।। २ ।।

ENDS :

गुरुक्तं प्रातरुत्थाय यः श्रृणोति पठति च ।
दुःस्वपनं दृश्यातो तेषां सुः स्वप्नं च भविष्यति ।। ८० ।।

COLOPHON :

इति श्री पुराणोक्त स्वप्नाध्यायः समाप्तः ।।
१८४० लिखितं मिश्र गंगा विष्णुधना ग्राम मध्ये ।।

15351

हरतालिकाव्रत विधानम्

Haratālikāvrata vidhānam̐

Foll- 2, 16 x 29 Cms, paper, 12 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

मन्दारमाला कुलितालकायै कपालमालांकितं शेखराय ।
दिव्यांवरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमःशिवाय ।। १ ।।
कैलाशशिखरासीनं गौरी पृच्छति शंकरम् ।
गुह्यात् गुह्यतरं गुह्यं कथयस्व महेश्वरः ।। २ ।।

ENDS :

अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च ।
कथा श्रवण मात्रेण तत्फलं लभते नरः ।। ६९ ।।
एतत्तेकथितं देवि तवाग्रे तु वरानने ।। ७० ।।

COLOPHON :

इति श्रीहरत्तालिका समाप्ता ।।

15352

हरतालिकाव्रत विधानम्

Haratālikāvrata vidhanam̐

Foll- 4 , 12.2 x 30 Cms, paper , 10to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1853, Samvat, Condition- good.

Author : notmentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ हरतालिका कथा लिख्यते ।।

मन्दारमाला कुलितालाकायै कपालमालाकितशेखराय ।

दिव्यांवरायै च दिगंवराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ।। १ ।।

कैलाशशिखरे रम्ये गौरी प्रच्छति शंकरम् ।

गुप्त्वात गुह्यतरं गुह्यं कथयस्व महेश्वरः ।। २ ।।

ENDS :

अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयेशतानि च ।

कथां श्रवण मात्रेण तत्फलं लभते नरः ।। ६९ ।।

एतत्ते कथितं देवि तवाग्रे वरानने ।। ७० ।।

COLOPHON :

इति श्री हरतालिका समाप्ता ।।

अद्येहेत्यादि पति राज्य चिरंजीवित्वा वैधव्यं पूर्वकं पुत्रशोक कर्कशा दुर्भगत्व निवृत्ति पूर्वकवे पुत्र पौत्रादि संतति परिवृतत्व परम धार्मिकत्व प्राप्ति कामनया हरत्तालिका व्रतांग भूतः कर्माहं करिष्ये ।। सं. १८५३ कार्तिक कृष्ण १ भौमवासरे ।। शुभमस्तु ।।

15336

होमपद्धतिः

Homapaddhatiḥ

Foll- 33, 10 x 14.3 Cms, paper ,8 to 10 lines on a page , Devanāgarī script ,Age -x , Scribe -x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ होमपद्धतिर्लिख्यते प्रतिज्ञावरणं चैव स्वस्ति पुण्याहवाचनं आचार्यादिश्चवरणं रक्षाकंकन बन्धनं ईशाने मण्डलं कृत्वा ग्रहाणां स्थापनं ततः गङ्गा विष्णु इत्याचम्य ततः संकल्पः ।

ENDS :

अद्येहेत्यादिं देशकालौ स्मृत्वा अमुक गोत्रोहं अमुकनामशर्माहं सकलकामनापरिपूर्णार्थं ॐ ईषो हि देवाः प्रतिसेन सर्वा सर्वो हि जातः स चरू गर्भः स एव जातः । ....प्तं जनाः तिष्ठन्ति सर्वतो सुखाय स्वाहा ॐ सूर्यचन्द्रमसौ चंद्रस्य तां तपन् यज्ञस्य यज्ञार्थं यजमान ।

15341

होलिका माहात्म्य

Holikāmāhātmay

Foll- 3, 10.2 x 24.5 Cms, paper, 7 lines on a page , Devanāgarī script,Age x , Scribe -x ,Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

फाल्गण (फाल्गुण) पौर्णिमास्यां होलिकोत्सवः ।।

नृपं प्रति नारद वाचो भविष्यति अद्यं पञ्चदर्शी शुक्ल फाल्गुनस्य नराधिप । अभयं चैव लोकानां दीयतां परमेश्वरः । यथा स्वाशंकिता लोकाः रमन्ति च हसन्ति च ।

ENDS :

होलिका पूजा मन्त्रस्तु " अष्टकूपाभ्यां त्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिकातिशैः ।

अंत .... पूजयिष्यामि भूतेभूर्तिप्रदो भवेति दिक् इति पूर्णिमा निर्णयः ।। संपूर्णम् राम राम राम ।

COLOPHON :

15324

होलिकोत्सव विधानम्

Holikotsavavidhānaṁ

From- Bhaviṣvottarapurāṇa (भविष्योत्तरपुराण)

Foll- 8 , 9.2 x 27, Cms, paper, 6 to 8lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1878 Samvat , Scribe - Talfī rāma, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

युधिष्ठिर उवाच—

होलिकायाः विधिं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि केशव ।
किं दानं कस्य पूजा च किं फलं प्राप्तुयान्नरः ।। १ ।।

श्री कृष्ण उवाच—

फाल्गुने मासि संप्राप्ते शुक्लपक्षे च पूर्णिमा।
संध्यायां सिंहगे चन्द्रेपूजयेच्च हुताशनम् ।।२।।

ENDS :

वृक्षेषु तार समपेसित पंचदश्या प्रातर्वसन्त समये समवस्थिते च संप्राश्ये चूतकुसुमं सह चन्दनेन सत्यं हि पार्त्थ पुरुषोथ समाः सुखीस्यात् ।। ५९।।

COLOPHON :

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे होलिकोत्सवं समाप्तम् संवत् १८७८ वैशाख कृष्ण सप्तम्याम् भौमवारान्भवतां शुभं भूयात् ।

किं बहुनात्र लिखितं तलफी रामेन रामः ।

ज्योतिष

Jyotiṣa

15104

कल्पवल्ली पद्धतिः

Kalpavallī Paddhatiḥ

Foll- 5, 12.3 x 27.3 Cms, paper, 10 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x ,
Condition - good,
water stained.
Author : Viṭṭhaladīkṣita
The Work : Kalpavallī paddhatiḥ- This is one of the reputed works on Jyotiṣaśāstra.

BEGINS :

मध्यान्हात्समयः नतुअर्धरात्र्यांदुन्नतः
ॐ श्रीगणेशाय नमः
गौरींपतिमादरेण गौरीसुतं च प्रणिधाय चित्ते ।
तोषाय होराविदुषां करोमि श्रीविठ्ठल कल्पवल्लीम् । । १ ।।

ENDS :

कृष्णात्रिगोत्रे सुतरां पवित्रे पवित्र कर्माज्जनिवुवूशर्मा ।
तत्सुनुना विठ्ठलदीक्षितेन चक्रे लघुपद्धतिंकल्पवल्लीम् ।। ६५ ।।
होरापथे हौरिकपांथ वृंदश्रमच्छिदो विठ्ठलरोपितायाम् ।
समुल्लसत्पद्धतिं कल्पवल्यां दशासुमेतत्कुसुम ।। ६६ ।।

COLOPHON :

15126

कल्पवल्ली

Kalpavallī

Foll- 18, 17.5 x 25.5 Cms, paper , 13 to 19 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1750 Śaka samvat , Scribe- Hariprasāda miśra, Condition -good.
The Work : The Kalpavallī a commentary on the Sūryasiddhānta anonymous.

BEGINS :

यथा श्रीशाके ।। १५७२ ।। संवत् १७०७ मास १० ।। तिथौ । ६घटी ।। ४६ ।। चषा ५४ ।। वारे ।। ४ ।। नक्षत्रे ।। २८ घटी ।। २६ चषा ।। ७ ।। राशौ ११८ ।। अंशों ५१ ।।

ENDS :

अथा दशा प्रवी

COLOPHON :

रूद्रज्योर्तिविदाक्लृप्ते देशाद्यं पंचमं शुभम् शाके १७५० श्रावण शुक्लैकादश्यां गुरौ हरिप्रसाद मिश्रेणा लेखि। शुभंभवतुराम ।

15128

कल्पवल्ली

Kalpa valli

Foll- 4, 25.5 x 17 Cms, paper, 16 to17 on a page,
Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x, Condtion - bad.
Author - not mentioned.
Commentator- Viṭṭhaladikṣita
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
गौरीं च गौरीपतिमादरेण गौरीसुतं च प्रणिधाय चित्ते ।
तोषायहोराविदुषां करोमि श्रीविट्टलः पद्धतिकल्पवल्लीम् ।। १ ।।

ENDS :

स्वाकाश भक्त फलयुक्त दा ....मीषः
खेचरीदिशस्मात् ....
ग्रहो दशायां गुरू संयुजतायां ।। १ ।।

COLOPHON :

कृष्णात्रिगोत्रे सुतरां पवित्रे पावन कर्माज्जनिवुवुशर्मा तत्सुनुना विट्ठलदीक्षितेन श्रमछिदे विट्ठलरोपितायां समुल्लसत्पद्धति कल्पवल्यां दशाद्यमेतत्कुसमं समाप्तं शुभम् ।

15143

कल्पवल्लीपद्धतिः

Kalpavallīpaddhatiḥ

Foll- 7, 13 x 19 Cms, paper, 10 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x , Condition- good.
Author : Viṭṭhaladīkṣita.
BEGINS :

।। श्रीगणेशायनमः ।।

गौरीं च गौरीपतिमादरेण गौरीसुतं च प्रणिधाय चित्ते ।
चित्तेतोषाय होराविदुषां करोमि श्रीविठ्ठलः पद्धतिकल्पवल्लीम्।। १।।

ENDS :
ततः षट् ३६ त्रिभिर्लधवर्षाटिका ....सदा खेट विद्धि विधेया कार्यार्थम् ।।
COLOPHON :
कृष्णात्रिगोत्रे सुतरां पवित्रे पवित्रकर्माज्जनिवूवुशर्मा तत्सुनुना विठ्ठलदीक्षितेन चक्रेः लघुः पद्धतिकल्पवल्ली होरापथे हौरिकपांथ वृदं श्रमछिदो विठ्ठलरोपितायां समुल्लसत्पद्धति कल्पवल्यां दशाद्यमेतत्कुसुमं समाप्तं १३ शुभम ।

15114

कामधेनुपद्धतिः

Kāmadhenupaddhatiḥ

Foll- 7, 22.2 x 12 .4 Cms., paper, 9 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x, Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्री ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

विधि हरीश दिनेश गजानन द्रुहिणजा गुरुपाद सरोरूहम् ।
सकलशास्त्र विबोधनकरणं परमकारणिकान्तुलाजां भजे ।। १ ।।

ENDS :

अथो .... ब्रह्मसिंद्धातोक्त युक्तया ऊदयिकाहर्गणोत्पन्ना मध्यम: देशांतरमातभुजांतरकर्मभि: ।। संस्कृता स्वदेशोद्भवा मंदफल शीघ्रफलै: असत्कृत्कर्मभि: संस्कृताग्रहा लिख्यते ।।

15090

केशवी पद्धति:

Keśavī paddhatiḥ

Foll- 5, 12.5 x 31 Cms, Paper, 12 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1906 Samvat , Scribe - Girdharilīla śarmā, Condition - good.

The Work :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

नत्वा विघ्नये शारदाच्युत शिवब्रह्मार्क मुख्याग्रहान्कुर्वे जातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये । यन्त्रै: स्पष्टतरोत्रजन्मसमयो वेद्योत्रखेटा: स्फुटायत्पक्षे हि घटतं उद्गमइहास्तर्क्षसषद्भसच ।। १ ।

ENDS :

गोनंदिग्रामे केशवो विप्र वर्य्योयोभू होराशास्त्र संघं विलोक्य तेनोक्तेयं पद्धति जातकीया चत्वारिंशधृत्तवोधा सुवोधा ।

COLOPHON :

इति श्रीकेशवाचार्य विरचिते अंर्तदशाध्याय: ।। ४ ।। संवत् १९०६ मार्गकृष्ण ६ षष्टी भौमदिने ।।

लिपिरियं श्रीहरिप्रसाद तस्यात्मज गिरधारीलाल शर्मणा: ।। श्रीरामचंद्राय नम: । श्री सरस्वत्यै नम: ।।

15095

केशवीपद्धति:

Kesavīpaddhitiḥ

Foll- 27, 12.5 x 31.5 Cms, paper, 9 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe- x , Condition - good.

Author : Lakṣmaṇa Daivajña

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
नत्वेति जातक पद्धतिं कुर्वे इत्यन्वयः ।
किं कृत्वा विघ्न्यादीन् नत्वा विघ्नयो गणेशः ।।
सारसा सरस्वती अच्युतो विष्णुः शिवो ब्रह्माः ।
अर्काद्या ग्रहास्ताम् नत्वा नमस्कृत्यः ।
कीदृशीं जातक पद्धति .... *etc.*

ENDS :

भारद्वाज कुलोत्पन्न लक्ष्मणाख्यद्विजन्मना केशवी पद्धतेर्व्याख्या कृतासोदाहृति शुभा यद्विश्वेशं प्रखरं विधिमुखैः सर्वैबुधैः संस्कृतं ।स्मिन्भैरवसंनिधौ निवसते यो लक्ष्मणाख्यः सुधीः तस्मात्केशवपद्धति ... .लीलावती वीजयक श्री विद्यापति मुकुदसदितेनास्मि हिः सन्मान ।। २ ।।

COLOPHON :

श्री दैवज्ञ भारद्वाज नृहरि दीक्षित सुतं भरद्वाज लक्ष्मणदैवज्ञ विरचितायां केशवीपद्धत्युदाहरणो समाप्तम्।

15169

केशवीउद्धरण

Keśavīuddharaṇa

Foll- 30, 14 x 36 Cms, paper 10 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1833 Samvat, Scribe - x, Condition -good.

Author : Viśvanātha daivajña.

The Work : Keśavīuddharaṇa- a commentary on Jātakapaddhatiḥ of Keśava by Viśvanātha.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
श्री गणेशं नमस्कृत्य केशवानामपद्धतेः ।
गणितं विश्वनाथेन क्रियते बालवुद्धये ।। १ ।।

ENDS :

मामान्या जातकपद्धतिं होरावित्पदवीं याति लोके मानं
यशश्चेत् ।। १
स्पष्टार्थमिदं इति ग्रन्थपाठस्य फलश्रुति ....।

COLOPHON :

इति श्रीदिवाकरदैवज्ञात्मज विश्वनाथदैवज्ञ विरचिते श्री केशवदैवज्ञ विरचिते पद्धत्युदाहरणे अंतर्दशाध्याय: सम्पूर्णम् ।

संवत् १८८३ माघ शुक्ल द्वादश्यां गुरौ ।। शुभं भूयात् गम: इदं पुस्तकं हरिप्रसादमिश्रेणलेखि शुभं भवतुतराम वास्तवव्यस्य न्यौंधनानगरे श्री गोपालजयतितराम । श्री कृष्णाय नम: ।।

15181

गोलाध्याय सटीक

Golādhyāya saṭīka

Foll- 16 , 14 x 30 Cms, paper, 7 to 10 lines on a page , DevanKHgarŪ Script, Age - x , Scribe - x , Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work : Golādhyāya which is the fourth part of the Siddhāntna śiromaṇi of Bhāskarācārya. A well known and widely used astronomical work with commentary by the author himself.

BEGINS :

।। ऊँश्रीगणेशाय नम: ।।
अथ गोलाध्यायोव्याख्यायते ।।
गोलाध्याय निर्जयाया अपूर्वा विषमोक्तय
तास्ताबालावबोधाय संक्षेपाद्विवृणोम्यहं ।। १ ।।

ENDS :

गोलाग्रंथेहि विस्तरया प्रांजल: किं त्वत्र याया अपूर्वा....... वनमहेरात्रं
त ..... होरात्रं चलं .... प्रतिमासं.............

COLOPHON :

17326

ग्रहदशाफल

Grahadaśāphala

Foll- 9 , 10.5 x 21 Cms, paper, 8 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x , Scribe - x , Condition- good, slightly worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work : Grhadaśāphala- a manual of Jyotiṣaśāstra.

BEGINS :

अथ रवि दशाफलानि ।। मनोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्नुमानवानां ।। भूपद्विजवर्थशस्त्र भेषेज्येअती —वधनागमः स्यात् ।। १ ।। मंत्राभि, चारोभिरूचिर्विचित्राधात्रीपेतः सख्यपतिर्विशेषात् । विख्यात कर्माभिरतिर्गतिः स्यादनल्पजल्पे चरणेन चिन्ताः।। २।।

ENDS :

दशाप्रवेशेपिस्वर्गाः संलग्नाः कार्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत् । लग्नत्रिलामारिगतोथ लग्ने तन्मित्रवर्गः शुभदादशास्यात्।।२६।। श्रेष्ठाप्रतिष्ठेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशाकदायदास्या प्रतिकूल वर्ति स्वांगेस्वदोषेण करोति पीडां इदं तु पूर्वे प्रविचार्य सर्वप्रश्न प्रसूत्यादिषु कल्पनीयम्।। ६।।

COLOPHON :

इति श्रीविज्जाष्टककाध्यायः ।

आचाररहीनः कुटिलप्रतापी पण्यानुजीवी कलह प्रियश्च स्यान्मातृशत्रुर्मनुजोरूजार्त्तः शीत द्युतौ भूत संयुतैवे ।। ७ ।।

15175

ग्रहलाघव

Grahalāghava

Foll- 48, 12.2 x 26.7 Cms, paper, 12 to 27 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x , Scribe - x , Condition -good.

The Work : Grahalāghava - Grahalāghava of Gaṇeśa with udāharaṇa a commentary composed by Viśvanātha son of Divākara of Golāgrāma on the Godāvarī his elder

brother mallārī also has composed a commentary on Grahalāghava.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ ग्रहलाघव करणस्य व्याख्या यत्र कल्पादेर्ग्रहनयनं ससिद्धान्तः । यत्र युगादेर्ग्रहानयनं तन्त्र । यत्र शकादेग्रहानयनं तत्करणं । तत्र तावदहर्गणानयनं श्लोकद्वयेनाह ।।

ENDS :

अत्रकलासु किंचिद्वैसादृश्यं दृश्यते स्वल्पांतरत्वाद् दोषः ।।
अनेन चन्द्रकांतिरेकादित्कालयुक्ताजाताः स्पष्टाः ।।

COLOPHON :

इति ग्रहलाघवे पातधिरोहणं पूर्णम् ।

15094

ग्रहलाघव

Grahalāghava

Foll- 58, 13.5 x 32.5 Cms, Paper , 9-16 lines on a page . Devanāgarī Script, Age -1793 samvat , Scribe -x , Condition - bad.

Author : Viśvanātha

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ज्योतिर्विद्गरूणां गणेशगुरुणा निर्मथ्य शास्त्राम्।
बुधि य चक्रे ग्रहलाघवं विवरणं कुर्वेयत्न ।।
प्रीतये स्मृत्वा शुभं कृतम दिवाकरस्कृतस्तद्विश्वनाथः ।
कृतिजाग्रज्योति स्वर्ग गोकुलपरित्राणाय नारायणः ।।

ENDS :

COLOPHON :

दिवाकरात्मजविश्वनाथ विरचितं ग्रहलाघवस्योदाहरणं समाप्तम् ।।. ....ग्रामनिवासिनो गुरु यदंहं ण्ण्ण्ण्ण भक्तेतरः स्यात्मी तत्र दिवाकरस्र्य तनयः श्री विश्वनाथ आहूयः तेनेदं ग्रहलाघवस्य गणितं स्पष्टीकृतं तद्बुधै शोध्यं शुद्धमिदं तदा तु गणकैः स्वते सदा

धार्य्यताम् । श्री शाके १७९३ आश्विन कृष्ण १४ शुक्रवासरे लिखितमिदं स्वार्थ परार्थ शुभलेखकपाठकयोः शुभं भूयात् ।

15160

ग्रहसारिणी

Grahasāriṇī

Foll- 11, 19.5 x 29.2 Cms, paper , Scribe x , Condition -good.
Author : not mentioned .
The Work : - Grahasāriṇī is a small metrical pamphlet dealing with the calculation of the moments of the heavenly bodies (Grahas).

15171

ग्रह स्फुटीकरण

Graha sphuṭīkaraṇa

Foll- 2, 13.2 x 29.5 Cms, paper , 11 lines on a page
Devanāgarī Script, Age -x , Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : - Graha sphuṭīkaraṇa - based on Sryasiddhānta.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथग्रहणां स्फुटीकरणम् ।।
आदौ कौष्ठत्रयं कृत्वा तत्रादौ मध्यं लिखेत ....।

ENDS :

सूर्यसिद्धान्त प्रकारेण चर संस्कारेनोक्तः सर्वदेशे अर्धरात्रेरेकत्वात् ।

COLOPHON :

3347

जनु: पत्रिका

Januḥpatrikā

Foll- 92, 20.5 x 16, Cms, paper, 13 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe -x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। ॐ श्री गणेशाय नम: ।।
सन्मंगलाशीर्वचनाम् वितानि पद्यानि चाग्रे समुदाहृयंते ।।
तान्येव पत्रीकरण प्रवीणा श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखन्ति ।। १ ।।
अथ मंगलाचरणम् ।।
सजयति सिन्धुरवदनो देवोयत्पादपंकज स्मरणम् ।
वासरमणिरिवतमसांराशिन्नाश्यति विघ्नानाम् ।। २ ।।

ENDS :

अथ जनुपत्रिका पूर्वो जातुस्य पुष्टमस्य दीर्घायुसूचनार्थमाशीर्वादय पद्यमाह ।।

COLOPHON :

8211

जातकालंकार

Jātakālaṅkāra

Foll- 8, 18 x 26 Cms, paper , lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1750, śaka samvat , Scribe - Hari prasāda miśra, Condition - good.
Auhtor : Gaṇeśa
The Work :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
सानन्दं प्रणिपत्य सिद्धिंसदनं लंवोदरं भारतीम् ।
सूर्य्यादिग्रहमण्डलं निजगुरुं भक्त्या हृदब्जेस्थितम् ।।
येषामंघ्रसरोरूहस्मरणतो नानाविधा: सिद्धय: ।
सिद्धिं यांति लघु प्रयांति विलयं प्रत्यूह शैल वज्रा: ।। १ ।।

ENDS :

पुष्करालयवसा गुण सारा जातकोक्ति रमलेवमराला ।
संस्कृता विहरतां भवतां मे मानसे व सदृशीतिकवीनाम्।।८।।

COLOPHON :

इति श्री गणेशकविविरचितां जातकालंकारं समाप्तोयम् ।
शाकः १७५० मार्गशिर असि त्रयोदश्यां भृगौ हरिप्रसादमिश्रेणालेखि ।।
शुभंभवतुतराम् ।।

15132

जातकाभरणम्

Jātakābharaṇaṁ

Foll- 40, 11.5 x 28 Cms. paper ,11 to 40 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x, Condition - not good.
Author : not mentioned.
The Work : The Jātakabharaṇaṁ -a manual of nativity. Composed by Ḍhuṇḍhirāja, s/o Nṛsimhā and Pupil of Jñanrājā.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
श्रीदं सदाहं हृदयारविन्दे पादारविन्दे वरदस्य वन्दे ।
मन्दोपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणबन्द्योपमतां समेति ।। १ ।।

ENDS :

सूरस्त्यांगी (शूरस्त्यागी) साहसीभूरिकर्ता को पार्वोग्निस्याद्दिरान्तोति दक्षते धूर्तः कृरोत्यं ।

COLOPHON :

15170

जातकाभरणम्

Jātakābhararaṁ

Foll- 10, 14 x 27 Cms, paper, 11 to 15 lines on page , Devanāgarī Script , Age-1828 Samvat , Scribe - Nidhirāma, Condition- bad,

Author : Śriḍhunḍhirāja

BEGINS :

....

भवेदायु भंवति ध्रुवं क्षिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ।। ५ ।।

ENDS :

नाना ग्रंथ सविलोक्य .... ।। ३३ ।।

COLOPHON :

संवत् १८२८ मार्गशीर्ष सप्तम्यां भृगौलिखितमिदं पुस्तकं निधिराम स्वपठनार्थम् शुभं भूयात् ।।

15133

जातकाभरणम्

Jātakābhararaṁ

Foll- 64, 11.5 x 29 Cms, paper , 9 to 12 lines on a page, Devanāgarī script, Age - x , Scribe - x , Condition- bad, ink stained.

Author : Śriḍhunḍhirāja

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीदं सदाहं हृदयारविन्दे पादारविन्दं वरदस्य वन्दे ।

मन्दोपि यस्य स्मरणेन नित्य गीर्वाणवन्द्योपमतांसमेति ।। १ ।।

ENDS :

संक्रांति विचारः ।।

COLOPHON :

इति श्री दैवज्ञढुंढिराज विरचिते जातकाभरणं ग्रहादि फलानि अथ सूर्यादिनां राशिफलानि ।

15101

जातकाभरणम्

Jatakābharaṇaṁ

Foll- 111, 15 x 27 Cms., paper, 9 tp15 lines on a page, Devagāgarī Script , Age- 1910 Samvat. Scribe - x , Condition - good, water stained.

Author : Śriḍhunḍhirāja

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्रीदंसदाहंहृदयारविन्दोपादारविन्दंवरदस्यवन्दे ।

मन्दोपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणावन्द्योपमतां समेति ।। १ ।।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीदैवज्ञ ढुंढिराज विरचिते स्त्रीजातकाभरणे स्त्रीजातकाध्यायः ।। समाप्तम् संवत् १९१० मकरसंक्रान्तौ शुभम् ।।

3445

ज्योतिषमन्त्र लघुसंग्रहः

Jyotiṣamantra laghusaṃgrahaḥ

Foll- 25 , 8.5 x 23.5 Cms, paper 9 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, , Age - 1825 Samvat , Scribe- Sadānanda , Condition- bad, ms begins from Folio- 6 .

Author : Lakṣmīdhara

The Work :

BEGINS :

....

इत्यर्द्धयागराहु: ।

प्राचीकुबेर शिखराज सवधर्मगजतो यायाधिपानिल ।

महेशदिशाक्रमेण । यामार्द्धके: प्रतिपदादि तिथौ

महेशविदृजस्थिता शुभ करी खलु पृष्ठ भागे ।। ३३२ ।।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीलक्ष्मीनारायण कृते लघुसंग्रह वक्रप्रकरणं ।। समाप्तोऽयम ग्रन्थः संवत् १८२५ समापनम् चैत्र शुदि द्वादशी वुधवासरे सदानन्देनालेखि ।। श्रीराम ।।

15145

ज्योतिषरत्नमाला

Jyotiṣaratnamālā

Foll- 33,13.2 x 24.7 Cms. Paper , 9lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe -x , Condition - good.
Author : Śrīpati
The Work : The jyotiṣaratnamālā - a exhaustive treatise on astrology . Composed by śrṭpati of the Kaśyapa gotra son of Nāgadeva, grandson of Keśava and pupil of Lalla (Au. of Ratnakosa).
BEGINS :

दर्णश्री गुरुभ्यो नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः ।।
।। श्री गणेशाय नमः ।।
प्रभ (भा)ववित मध्य ज्ञान विंध्या नितान्तः ।।
विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोपि ।। २ ।।
मशुमितममिवन्देम ग्रहैः कालमींशं ।। १ ।।

Comm.

अथरत्नमाला कौ अर्थ स वही को समाकवेकेहेति....
विलोक्य गर्गादिमुनिप्रणीतं वराहलल्लादिकृतञ्च शास्त्रम् ।
देवज्ञकण्ठारणार्थमेषा विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ।। २ ।।

ENDS :

अश्विनी उत्तरात्रीणि पुनर्वसुपुष्परेवती ।। घनिष्टा ।। इ ।। १७ ।।

COLOPHON :

8205

ज्योर्तिसार

Jyotihsāra

Foll- 6, 10 x 23 Cms, paper , 6 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script , Age- x , Scribe-x , Condition -bad , worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री देव्युवाच ।।

BEGINS : अस्तंधको..

ENDS :

लोकानां कार्य सिध्यै सुरमुनिकरः प्रार्थ्यमाने न पुर्वं ।।
सारसारुचिमर्थ्या क्षितिधरतनया प्रोक्तमेत ....
शिवलिखितं मित्येतत् शिवेन इति भाषितम् ।।
तस्य संदर्शना दैवज्ञायत्ते वै शुभोशुभम् ।

COLOPHON :

इति ज्योतिशास्त्रसारे शिवप्रोक्तं सम्पूर्णम् ।।

15146

टोडरानन्द

Toḍarānanda

Foll- 78, 13 x 32.5 Cms, paper, 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - X , Scribe - x, Condition- good.

Author : Toḍarānanda

The Work : Toḍarānanda - an astrological tretise on proper moments for the performance or commencement of certain acts by Toḍara Bhūpati.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
नमस्कृत्य गणेशानां गौरी हृत्पद्मभास्कराम् ।
विवाह सौख्यं निर्णीय ब्रूते टोडरभूपतिं ।। १ ।।

ENDS :

अत्रान्यदभिषेकविधानं गोपांगं राजनीति सौख्ये द्रष्टव्यम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीटोडरानन्द ज्योतिषशास्त्रे राजाभिषेंक प्रकरणं समाप्तम्।। संवत् १८६३ ।। शाके १७२८ । भाद्रपदेमासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्या तिथौ सोमवासरे ।। श्रीदुर्गाय नमः ।।

15117

ताजिकनायकम्

Tājikanāyakam̐

Foll- 10, 26.5 x11 cms. , Paper ,8 to 15 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1908 Samvat , Scribe- Giradhārīlāla, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Tājikanāyakam - a tretise on Jyotiṣasāstra.

BEGINS :

।। श्रीगणपतये नमः ।।

विज्ञायते ज्ञानिभिरत्रपुंसां शुभाशुभं जन्मफलं विलग्नात् ।।

तदुच्यते ताजिकनायिकोक्तं निषेककालादिहजन्म शुद्धिः ।। २ ।।

ENDS :

षड्भक्तमंशदित आप्तकालं नियोजयेत ।

जन्मघटी पलेषु तु स्वस्ति श्री, संवत् १९०८ ।। शक: १७७३ ।।

COLOPHON :

संवत् १९०८ ।। शक १७७३ आश्विनशुक्लं प्रतिपदाभृगुवासरे लिखितं इदंपुस्तकं मिश्रहरिप्रसादतस्यात्मज गिरधारीलाल स्वयं पठनार्थं वा शुभं भूयात् । श्रीरामजी सदा सहाय श्रीसरस्वत्यै नमः श्रीगंगादेव्यै नमः श्रीरामः ।।



12- Brahmā stuti tathā Daksa Yajña Vidhvamisa Ms. No. ST.2629

15102

ताजिकनीलकण्ठी

Tājikanīlakaṇṭhī

Foll- 138, 13.3 x 30.7 Cms, paper , 11 to 15 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1908 Samvat , scribe - Yamunādāsa gurjar, Condition- not good, different types stains :

Author : Nilakantha

The Work : Tājikanīlakaṇṭhī- a very famous work of Jyotisaṣāstra.

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
हेरम्वं भुवनस्य शीर्ष धुलिट संसक्त पादांवुजम्।
गौरी हृत्कमलप्रकाशतरणि विघ्नाटवी पावकम् ।।
हृष्यत् द्वैरिकुलांन्तकं सुमनसां श्रीसिद्धिबुद्धिप्रदम् ।
सिंदूरारुणगंडयुग्ममनिशं मानौषधीशं भजे ।। १ ।।

ENDS :

श्री मत्पितामहे कृतस्य सुताजिकस्य सच्छिष्यः संघविहितार्थं तथा प्रस्वल्पामुदाहृति युतां शिशुबोधिनीं तां श्रीवर्षतन्त्रं विवृती सुगमामकार्षित। सुजन गणक वर्य्या अत्र चेद्दोषलस्तमखिलमपनीय प्रामुदध्वगुणेषु यदि नव वसनं स्यान्नीलिका सूत्रमार्यैस्तदपसरणं त्रासे हि ग्राह्यं मे वास्तिवस्त्र ८ अक्षवाण शरभूमित शाके १५५५ शुक्लपक्षकश्चु चौशि ? वपुयो ग्रंथपूर्ति सुकृतार्पणस्तान्मध्यमिष्टंफलदांगण नाथः ? इति भासफल साधनाध्यायः ।

COLOPHON :

इति शिशुबोधिन्यां मासादिफलं साधनाध्यायः समाप्तो ग्रन्थः लिखित यमुनादासगुजरेण ।

15131

ताजिकनीलकण्ठी

Tājikanīlakaṇṭhī

Foll- 48, 13.5 x 28.5 Cms, paper,10 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition -bad.

Author : not mentioned.

Work :

BEGNS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

चण्डीकुण्डलमाकालय्य कुतुकाः दन्डाभसुंडाग्रगंकृत्वातांऽवरेपश्रुपतेः खेलन्...... ६ खतं ॥ १ ॥

ENDS :

फलं क्रमं निगद्यंवक्तव्यं = ...॥ ७० ॥

COLOPHON :

15173

तािजकनीलकण्ठी

Tājikanīlakaṇṭhī

Foll- 52, 15 x 29-5 Cms, paper, 11 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script , Age x ,Scribe x , Condition ------bad.

Author : Nīlakaṇṭhī

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

चण्डीकुण्डल.................।

ENDS :

COLOPHON :

15120

ताजिकभूषण

Tājikabhūṣaṇa

Foll- 21 ,21 x 12.8 Cms, paper, 21 to 26 lines on a page, Devanīgarī Script., Age - x , Scribe- x, Condition not good.

Author : Ḍhunḍhirāja

The Work : Tājikabhūṣaṇa-a astrological dissertation founded on the tajika, on the effects of particular astral conjunctions at the natal hour.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

भक्तिर्भक्तजनस्य यस्य भवति प्रीतिप्रतीति प्रदा ।
स्नेहो वंशपरंपरा परिगतः सर्वाभिलाषप्रदः ।।
सोयं सर्वसुरासुरेंद्रंनिकराराध्योस्तु लम्बोदरो ।
धीराह धीरो दुर्ज्जन विघ्नतर्जनतरः श्रेयः करो नः सदा ।। १ ।।

ENDS :

निधनतनुमदारि प्रात्यगः शीत रश्मिर्नहि गुरू युतद्व्रष्ठोरिककत्संप्रदिष्ठां ।। .... ।।

COLOPHON :

15097

नरपतिजयचर्य्या

Narapatijayacaryā

Foll- 77, 12.2 x 30.5 Cms., paper , 10 to 14 lines on a page , DevanāgarīScript , Age - 1909 samvat, Scribe - Hariprasāda miśra . Condition - good.

Author : *Narapati*

The Work :

BEGINS :

मोहान्धकारमग्नानां जनानां ज्ञानरश्मिभिः ।
कृतमुद्धरणं येन तन्नौमि शिवभास्करम् ।।
अव्यक्तमव्ययं शान्तं नितान्तं योगिनां प्रियम् ।
सर्वानन्दस्वरूपं यद्वन्दे ब्रह्म सर्वगम् ।। १ ।।

ENDS :

रूपं द्रेष्काणं तश्चैव तस्करस्य प्रजायते
क्रमाद्व्रष्काणतो तेया कृशामध्यावलाधिका

COLOPHON :

संवत् १९०९ ।। चैत्रशुक्ल पंचम्या गुरौ इदं पुस्तकं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मज गिरधारीलालेन लिपिकृतेन श्रीरामः ।।

15163

नरपतिजयचर्या

Narapatijayacaryā

Foll- 52,14.3 x 31 Cms, paper ,13 to 17 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, Condition- good.
Author : Narapati
The Work : Narapatijayacaryā - the tretise details about śubhāśubha Vicāra particularly of conquering , explained with the help of illustrated diagrams called cakara and yantra.
BEGINS :

ज्योर्तिरंगमिदं सर्व य जानंति मनीषिण: ।
दीपवत्तान्विजानीयानूमोहाँन्धकारनाशने ।। ७५ ।।

ENDS :

ग्रीवावाहु: गिर: कं ....।

15177

नष्टपत्रमानयन

Naṣṭapatramānayana

Foll- 2, 13 x 16 , Cms, paper 11 t o 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -x , Scribe - x, Condition - good.
The Work : - Naṣṭapatramānayana- a manual of Jyotiṣasāstra dealing with the formation of lost horoscope.
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नम: ।।
अ १ इस २ इ ३ ई ४ उ ५ ऊ ६...................

ENDS :

मिथुनराशि एतादृशसमये इति ।

COLOPHON :

15153

नक्षत्ररोगावली

Nakṣatrarogāvalī

Foll- 8, 10.5 x 14.5 Cms, paper, 5 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x , Scirbe- x , Condition- good , slightly worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work : Nakṣatrarogāvalī - an extract from on of the tantras, containing influence of nakṣatras one the health of man and directions for cure.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

रोगावली १ अश्विन्यां श्रूलपीडा च शिरोवर्तिविशूचिका ।
दिशिपूर्वा च दातव्यं ककूलीपुष्पधूपकम् ।। १ ।।

ENDS :

पिण्डदानं च दातव्यांभोजय ब्राह्मणस्तथा मुच्यते दशरात्रेण अतः ॐ ऊर्द्ध विनस्य(श्य)ति ,

COLOPHON :

श्रीपार्वतीश्वर संवादे नक्षत्रकष्टावली संपूर्ण शुभं भूयात् ।

15243

निर्णयामृत

Nirṇayāmrta

Foll- 113, 12 x 28.8 Cms, Paper , 12 to 17 lines on a page, Devanāgarī Script , Age-1911 Samvat, Scribe - Giradhārīlāla miśra, Condition -good , slightly worm eaten.

Author : Sūrya Sena

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

कारणमेकं जगतां वारणमास्येन वारणां विपदाम् ।
किमपि महोमहनीयं प्रत्यूहव्यूंह दारणं वन्दे ।। १ ।।

ENDS :

आवश्यक विवाहादिमंगलं कुर्यादिति मंगलंबुधानामुपकाराय ।
कालव्यामूढ़चेतसी गोपीनारायणेनेदं निर्म्मितं निर्णीयामृतम् ।।

COLOPHON :

इति सूर्यसेन महीमहेन्द्र विरचिते निर्णयामृते आशौच प्रकरणं सम्पूर्णम् । श्री सूर्यसेन भूभृद्विमलयशः ऽस्मिन्नाशोचस्यापि निर्णयो जातः ।। श्रीमत्पंडित सिद्धलक्ष्मण सुतः श्री सिद्धलक्ष्मी यद्वदन्द्वाराधन सुप्रसिद्धं महिमायः सिद्ध सारस्वतः आदेशात् कृतैष सूर्यमस(श)दृशः श्री सूर्यसेन प्रभावर्धे कर्म्मणिकाल निर्णयामृत पुस्तकं संपूर्णम् । संवत् १९११ ।। आषाढ़कृष्ण श्री ग्रन्थ संख्या ५४९० श्लोकाः सन्ति । श्रीरामजी सदासहाय श्रीरामचन्द्राय नमो नमः रामः इयं ग्रन्थालिपिरियं मिश्रहरिप्रसादास्यात्मज गिरधारीलाल स्वयं पाठार्थम् परार्थम् वा ।

15142

पद्धतिवर्गादिफल संग्रहः

Paddhati vargādiphala saṅgrahḥ

Foll- 7, 12.7 x 19 Cms, paper, 10 to 121 lines on a page,Devanāgarī Script, Age - x Scribe - x Condition-good slighty worm eaten.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथवर्णफलम्

स्वधर्मकर्म निरतः शास्त्राध्ययनतत्परः ।
विनीतः सर्वकार्येषु ब्रह्मवर्ण भवेन्नरः ।
विज्ञः साहस तत्तवज्ञः शुचिः शौर्यकथाप्रियः ।
दाताविवेकशीलश्च क्षात्रवर्णभवेन्नरः ।। २ ।।

ENDS :

आरंभ संद्येर्द्यु चरो यदो नः फलं ददात्यादिमभावजातं ।
विराम संधेरधिकस्तदानीमागामिभावोत्थ फलप्रदः स्यात् ।।
शुभं भूयात् ।

COLOPHON :

15129

पद्मकोश

Padmakośa

Foll- 14, 14.5 x 26.3 Cms, paper , 9 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1888 Samvat Scribe - x , Condition-good.

Author : Govaradhana.

The Work : The padmakośa - a small work on horoscope showing the influence of the planets etc. on human destiny.

BEGINS :

श्रीगणेशाय नमः ।। अथ सूर्यफलम् ।।
खेलग्निगो वातपित्तं करोति कलत्रांऽगपीडाशिरोत्याक्षरोगम्।।
विवादं जनानां भवेद्गुप्तचिन्ता दशाष्टकारीभवेद्वायनेऽस्मिन्।। १ ।।

ENDS :

अस्तेनीचेबलेहीने व्येषष्टाष्टमे तथा ।
छिद्रेशोष यदि लग्नेश वर्षेशो नैवं कारयेत् ।। संवत् १८८८ ।। शाके ।।

15130

पद्मकोश

Padma Kośa

Foll- 7, 14.5 x 26.3 Cms, paper, 15 to 18 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1906 Samvat Scribe- x , Condition-good, water stained.

Author : Govardhana

The Work : The padmakośa - a Small work on horoscopy showing the influence of the planets etc. on humn destiny.

BEGINS :

।। श्रीगणेशायनमः ।।
खेलग्निगौ वातपित्तं करोति कलत्रांऽगपीडा शिरोत्पत्तिरोगम् ।
विवादं जनानां भवेद्गुप्तचिंता दशाऽनिष्टकारी भवेद्वायनेऽस्मिन्।। १ ।।

ENDS :

स्वजन्मलग्नं रविष्टपात: शंरधतं संवत् १९०६ तत्र शक: मार्गषिवदि द्वितीया भृगुवासरे मध्यान्ह समये समाप्ता: श्री सरस्वत्यै नम: ।। श्री गणेशाय नम: । श्री रामचंद्रायै नम: ।। राम ।।

15089

पंचस्वराभिधान

Pañcasvarābhidhāna

Foll- 5, 13-2 x 30-8 Cms, paper, 10 to 15 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1906 Samvat Scribe- x , Condition-good.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नम: ।।

श्रीगणेशं नमस्कृत्य सिद्धि—बुद्धि प्रदायकम् ।
पंचस्वराभिधानस्य क्रियते ग्रन्थ संगतिं ।। १ ।।
परमादिसुखेनापि ग्रन्थ दृष्ट्वा सुविस्तारं ।
असमंजसे समालोक्य क्रियते ग्रन्थ संगतिं ।।२।।
श्रीगुरोश्चरणौ नत्वा परमाद्यसुखीभिध: ।
पंचस्वराभिधानस्यकृतग्रन्थस्य संगति ।। ३।।

ENDS :

दशशून्यं भवेद्यत्र वर्ष च गुरु शुक्रयो:
क्लेशमात्र भवेत्तस्यजीवते नात्र संशय: ।। ४२ ।।
छिद्रे बुध द्वये शून्ये जन्मनि बुध द्वये कुजे।
शुक्रे शून्य द्वय प्राप्ते मृत्युर्भवते नान्यथा ।। ४३ ।।
समादाय यथारिष्टं यदुक्तं लग्नसंग्रहे
पापयोगे भवद्रिष्टं शुभयोगे भवेच्छुभम् ।। ४४।।

COLOPHON :

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंश परमसुखोपाध्याय ग्रन्थ: श्रीराम संवत् १९०६ श्रावण शुक्ल सप्तम्यां गुरौ मिश्रहरिप्रसाद तत्पुत्र गिरधारीलालस्येयं लिपि श्री सरस्वत्यै नम: ।

15111

पंचस्वरभिधानस्य उदाहरण

Pañcasvarabhidhānasyaudāharaṇa

Foll-. 2, 30.5 x 13.5 Cms, paper , 10 lines on a page , Devanāgarā Script , Age - 1937 Samvat, Scribe - x , Condition - good.

Author : Parmasukhaupādhyāya

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगुरुं च नमस्कृत्य सर्वाभीष्टप्रदायकम् ।

पंचस्वराभिधे ग्रन्थे कठिनविषयं द्वयं ।। २ ॥

ENDS :

इति छिद्रास्वरसाधनम् एवं रीत्या पंचस्वराणां गणितं तस्मादस्मिन्वर्षे सप्तशून्याभावाद्विशेषंषोगादिकं व्याख्यान्रीत्याज्ञैयं ॥

ENDS :

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंशपरमसुखोपाध्याय कृते पंचस्वरभिधानस्योदाहरणं समाप्तम् ॥ १९३७ आषाढ़ शुक्ल १५ चन्द्रवार ॥

15140

पंचस्वरभिधानस्य उदाहरण

Pañcasvarabhidhānasyaudāharaṇa

Foll- 1, 15.5 x 26 Cms, 19 to 22, lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1906 Samvat , Scribe -x , Condition - not good.

Author : Paramasukha upādhyāya

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री गुरुं च नमस्कृत्य सर्वाभीष्टप्रदायकम् ।

पंचस्वराभिधे ग्रन्थे कठिनविषयं द्वयं ॥ १ ॥

ENDS :

इति छिद्रस्वरसाधनं एवं रीत्या पंचस्वराणां गणितम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंश परमसुखोपाध्याय कृते पंचस्वराभिधानस्योदाहरणां समाप्तम् ।।

इति सरस्वत्यै नमः ।। संवत् १९०६, १७७१ मि फा श्रु १० वृहस्पतिवार श्रीरामचन्द्राय नमः ।।

15162

प्रश्नदीपक तथा पार्थिवपूजापटलपद्धतिः

Praśnadīpaka tathā pārthivapūjāpaṭalapaddhatiḥ

Foll- 8 , 15 x 20.5 Cms, paper 15 to 19 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -1913 Samvat , Scribe- Giradhārī lāla miśra., Condition- good.

Author : not mentioned

The Work :

BEGINS :

।। अथ प्रश्नदीपक लिख्यते ।।
केरल शास्त्रमतेन ।।
भूतंभविष्यति प्रश्नश्च विज्ञेयं ।
ज्योतिषं कृतं आयुप्रश्नमिदं ग्रन्थम् ।
चमत्कृतिकरं परम् ।। १ ।।

ENDS :

एतेदशप्रकारेषु विधिमंत्राश्चमुच्यंते ।।

COLOPHON :

इति श्रीकेत्कारिणीतन्त्रै शिवगौरीनारद संवादे पार्थिवपूजापटलपद्धतिः सम्पूर्णम् सम्वत् १९१३ पौष कृष्ण १४ शुक्रे मिश्र गिरिधारीलालेन लेखि शुभं ।।

15096

प्रश्नवैष्णव

Praśna Vaiśṇava

Foll- 23, 14 x 29 , paper, 11 to 19 lines on a page Devanāgarī Script , Age 1793 Samvat , Scribe - Gaṇesīlāla Condition -good.

Author : Nārāyaṇadāsasiddha

The Work : The Praśna Vaiśṇava also called praśṇārnava or vaiṣṇavaśāstra is a metrical treatise. Composed by Nārāyaṇadāsa siddha- son of Brhmadāsa belonging to kāyastha caste. The work is based on vāraha tājika and the mukunda mata.

BEGINS :

।। ॐ स्वस्ति श्रीगणपतये नम: ।।

नारायणं परम पौरुषमादिदेवं ज्योतिर्म्मय शुभकरं चराचरे शंसम् ।
प्रणम्य शिरसा द्विजपुंगवानां प्रश्नार्णविप्लवमहं प्रकरोमि शास्त्रम् ।। १ ।।
श्रीब्रह्मदास तनय: सुनय: सुविद्वान श्रीमन्गुसाँयिनृपतिर्यदुनाथ भक्त: ।
वाराह ताजिक मुकंदमतं समीक्ष्य नारायण: परमशास्त्रमिदं चकार:।।२।।

ENDS :

महाकष्टेन संसिद्धं दिव्यं तानं जगद्धितं ।
विष्णुदास कृतं शास्त्रं पठेद्यत्नेन पालयेत् ।। ५६ ।।

COLOPHON :

इति ब्रह्मदासपुत्र नारायणदास विरचिते प्रश्नवैष्णवनामा ग्रन्थ: स्वस्ति श्री संवत् शक: १७९३ ।। भाद्रपद कृष्णषष्टयां चन्द्रवासरे इदं लिखितं मिश्र.......... तस्यात्मज गणेशीलाल स्वयं पठनार्थं परार्थ वा । श्रीरामजी सदा सहाय श्री सरस्वत्यै नम: ।। श्री गंगादेव्यै नम: ।। राम—राम ।।

15157

प्रश्नः

Praśnaḥ

Foll- 1,11 x 30 Cms , paper, 7 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition- good , slightly worm eaten.
Author : not mentioned.
Work :
BEGINS :

।। अथ प्रश्नः ।।
तिथि प्रहरसंयुक्तं तारकावारमिश्रितम्।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं मार्गस्यलक्षणम्।। १ ।।

ENDS :

वेश्या स्त्रीमद्यमांसप्रतिवचनप्रतीतो यं शुभं करोति मंगलम् ।

COLOPHON :

15091

प्रश्नसार

Praśnasāra

Foll- 3, 12.7 x 31 Cms., paper , 13 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- 1906 Samvat, Scribe - Hariprsāda sarmā, Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

बुधधनुश्रीपतिपादयुग्मं नारायणं स्याद्गणनाथ सिद्धिः ।
रात्रौतु कासौ हरिश्रून्यकासौ गोविन्दगौरीपतिशून्य सिद्धिः ।।

ENDS :

वस्तुद्वयं च फलश्च क च नाथ वुधेऽस्तु ।
सूत्रये चया माध्या चतुयष्के चोत्तरात्मिका ।।

COLOPHON :

इति प्रश्नसार समाप्ता ।। मार्गकृष्णा सप्तमी । बुधदिने ।। संवत् १८०६ तत्र शकः १७७१ लिपिरियं श्रीहरिप्रसाद शर्मणाः ।। श्रीरामचन्द्रदायै नमः ।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।।

15178

प्रसूतिकाध्याय

Prasūtikādhyāya

Foll- 19, 7-5 x 13.4 Cms, paper, 6 to 10 lines on a page Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

नैक सदृशः पिंगलः कुवेरश्च (कर्पूरश्च) शम्भुः स्वक्षः भवनांधेषुः वर्णाप्तुवन्तं स्वाभ्या साख्यं दिनकरयुतायां द्वितीयं च वेत्सि ।। ४।।

ENDS :

COLOPHON :

15115

पाराशरीहोरा ।

Pārāśarī horā

Foll- 7, 28.5 x 13 Cms , paper , 11 to 17 lines on a page, Devanāgarī script , Age - 1926 Samvat, Scribe - Gaṇeśīlāla miśra. Condtion- bad , water stained.

Author Ṛṣi Pārāśara

The Work : Pārāśarī horā- a Jyhotiṣa work with the commentary of Viṣṇudāsa.

BEGINS :

॥ पाराशरीहोरा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री गजास्यं नमस्कृत्य सिद्धि—बुद्धि प्रदायकम् । । १ ॥
पराशरीजातकस्यटीका च क्रियते मया । ।
क्षेत्रान्वये विष्णुदासस्तेनाहं प्रार्थितः किलः ।
पाराश (री) जातकस्य टीका च लिख्यते मया ॥ २ ॥
गूढार्थान्प्रकटीकृत्य शेषं च सुख बोध कृत्
कृत्सपाराशरी जातकस्य टीका च लिख्यते मया ॥ ३ ॥

ENDS :

धर्मलग्ननेतारौ लग्नेशधर्माधिपौ अन्योन्याश्रय संस्थितौ धर्म्मेशोलग्ने लग्नेशो धर्म्म भावे चेद्राजयोगः मानवो विख्यतो विजयीभवेदिति ॥ १३ ॥

COLOPHON :

पराशरीजातकस्य व्याख्यानंतु मया कृतं श्री विष्णुदासस्य मुदेपरमायसुखेन च ॥ समाप्तोयं ग्रंथः लिखितं मिश्र गणेशीलालेन आत्मपठनार्थम्, सम्वत् १९२६ ॥

15093

पाराशरी होरा

Pārāśarī horā

Foll- 12, 12 x 31.5 Cms, paper, 9 to 14 lines on a page , Devanāgarī , Script , Age - 1930 Samvat, Scribe - Gaṇeśīlāla miśra., Condition- good.

Author : Ṛṣi Pārāśara

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीरामानुजाय नमः ॥

व्यास उवाच—

भगवन् सर्वमाख्यातं जातकं विस्तरेण मे ।
यं सहस्रायुतग्रंथैरशीत्यध्याये संयुतैः ॥ १ ॥
सकलानां फलानां तु ग्रहाणां गति संकरात् ।
नान्येयमीदृगस्येयमितिवक्तुमलंनराः ॥ २ ॥

ENDS :

रश्मिधं च वलाप्तं च चनिष्टमवादकान ।।

COLOPHON :

इतिश्रीपाराशरीय होरायामुपरिभागे त्रयोदशोध्याय: ।। १३ ।।
लिखितं मिश्रगणेशीलालस्येदम् संवत् १९३० भाद्रपद शुक्ल ७ शनि रामजी ।

15149

पाशकावली

Pāśakāsvalī

Foll- 14, 8.5 x 25 Cms, paper, 7 to 9 lines on a p[age , Devanāgarī script, Age -x , scibe - x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work : The Pāṣkīvalī- a small manual on divination with the help of dice. This work is similar to makṣikā praśna .
BEGINS :

तत: सिद्धि शुभं ब्रूयान्नात्रकार्यविचारणात् अथ मन्त्र: ॐ नमो भगवते १११

ENDS :

एकेनैव तु यामेन तथैववदिवसेनतुयेनमासीज्जराद्वंद्यो गर्गनाममहामुनि ।

COLOPHON :

शुभंभवतु । इति पाशकेवल्या(पाशकावली)समाप्तम् शुभं भवतु ।

15167

मयूरचित्रकम्

Maūracitrakam̐

Foll- 19, 15 x 18.2 Cms, 12 to 16 lines on a page,Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - good.

Folio- 17 missing.

Author : Nārada

The Work : Maūracitrakam - a manual on Jyotiṣaśāstra by Nārada

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।। श्री गुरुचरणकमलाभ्यां नमः ।।

अथ मयूरचित्रकं लिख्यते ।। उदयास्तमनं केतोर्गणितेन प्रकाश्यते । ज्ञातुं रवेदिव्यं भौमाश्च यतस्ते त्रिविधमताः ।। १ ।। एकोत्तरशतंत्वेकेसहस्रमपरेविदुः एकश्च बहुधा भांति प्राहवैनारदो मुनिः ।।

ENDS :

प्रचुरवृष्टिः समीके स्वल्पिका भवेत् ।

COLOPHON :

इति श्रीनारदविरचितं मयूरचित्रकं ग्रन्थं समाप्तम् ।।

15172

मुहूर्तगणपति

Muhūrtagaṇapati

Foll- 8684, 13 x30 Cms, paper , lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition - good.

Author : Rāvalagaṇapati

The Work : Muhūrtagaṇapati - an astrological calender . Composed by Rāvalagaṇapati son of Rāvala Hari śaṃkarasuri for determining auspicious days for the



13- Gajendra uddhāra Ms. No. ST. 2630

performance of domestic rites , and also for coronations, and other civil and religious ceremonies.

BEGINS :

।। स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।।

श्रीमत्या कल्पवल्येव हैमवत्या......................।

जयत्यालिंगितः कल्पद्रुमः सत्फलदः शिवः ।

ENDS :

आयुः प्रज्ञां यशः सौख्यं सौभाग्य फल क्षयं ।।

COLOPHON :

दैवज्ञवर्य रावलहरिशंकरसूरि सुनु रावलगणपति कृते मूहूर्त गणपतौ शीघ्रज्योतिषं समाप्तम्।। समाप्तम् मुहूर्त्तगणपति ग्रन्थोयं ।। लेखक पाठकयोशुभं भवतु ।।

15174

।। मुहूर्तगणपति ।

Muhūrtagaṇapati

Foll- 44,16 x 28.5 Cms., 9 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x , Condition -good, water stained.

Author : Rāvala gaṇapati.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री मत्याकर्ल्पवल्येव हैमवत्या निरत्ययः

जयत्यालिंगितः कल्पद्रुमः सत्फलदः शिवः ।। १ ।।

प्रर्वत्तयंति सालीकं लोकं यज्ञादि कर्मसु ।

यन्मुहूर्त्ताः करौ धास्तंवंदेऽर्कं कालमीश्वरम् ।। २ ।।

ENDS :

अथ सूपाद्यन्नादि पाकक्रिया मूलाचित्रानुराधासु

विशाखा कृत्रिका मृगे उत्तरा रोहिणी ज्येष्टा ।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्दैवज्ञरावलहरिशंकरसूरि सुनु रावलगणपति विरचिते मुहूर्त्तगणपतौ नक्षत्रप्रकरणम् ।।

15134

मुहूर्तचिन्तामणि
Muhūrtacintāmaṇi

Foll- 61, 11.5 x 27.4 Cms, paper 8 to 12 lines on page , Devanāgarī Script -x , Age- x, Scribe- prāṇasukha gauṇa, Condtion- good.
Author : Rāma daivajña.
The Work :

The Muhūrtacintāmaṇi - an astrological tretise on proper moments for the performance or commencement of certain acts. Composed by Rāma daivajña.son of Ananta, Son of Cintāmaṇi and younger brother of Nālakaṇtha.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
गौरीश्रवः केतकपत्रभंगमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्त प्ररोहो हरतु द्विपास्यः ।। १ ।।
क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थ विलासगर्भम् ।
अनंतदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिन्तामणिमातनोति ।। २ ।।

ENDS :

तदात्मजोदारधीर्विवुधनीलकण्ठानुजे गणेशपादपंकजं हृदिनिधाय रामभिद्यः । गिरीश नगरे वरे भुजभुर्जषु चंदैः ।। १५२२ ।।

COLOPHON :

इति श्री दैवज्ञानन्तसुत दैवज्ञराम विरचिते मुहूर्त वंशवर्णनावप्त प्रकरणे नवमंसमाप्त ।। जदृशं पुस्तकं दृष्टा तदृशं लिखितं मया जदिसुध (शुद्ध) अशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ।

इदं पुस्तकं लिखितं प्रान्सुखब्राह्मणगौड़ मनौने ग्राम मध्ये गुशांइ बालपुरी जी स्थान समीपे ।।

15099

मुहूर्तचिन्तामणि

Muhūrtacintāmaṇi

Foll- 230, 12.5 x 20.5 Cms., paper , 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1907 Samvat, Scribe- Yamunādāsa, Condition- good, all folios are slightly worm eaten in margin.

Author : Rāma daivajña.

The Work : Muhūrtacintāmaṇi - an astrological tretise on proper moments for the performance of certain acts by Rāma daivajña.

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कैलाशे पूर्णराकाहिमकररुचिरे वीक्ष्य बिंबं स्वकीयं ।
भूयो भूयोपि धावन्प्रतिभटकरटि स्पर्शया ॥
गुंड्शंड मा धाव त्वं त्वदंघ्रि प्रहतिभिरर्गर्भूतो धूयते सौ धरित्रीयम् ।
वाग्भिनिरुद्धाः कपटकरटिनः केलयो नःपुनंतु ॥ १ ॥
मूहूर्तचिन्तामणिवसंज्ञकस्य स्वयं कृतस्य प्रमिताक्षराख्याम् ।
रामो विधत्ते विवृति प्रणम्य विश्वार्करूद्रान पितरौ गुरुञ्च ॥ १ ॥

ENDS :

खलु मूहूर्त्तचिन्तामणिं .... त्यानं तस्यात्मजो रामाभिधो गिरीशनगरे वाराणस्यां मूहूर्त्तचिन्तामणि संज्ञकं ग्रन्थं भुजभजेषु चंदैर्मितो शके द्वाविंशत्यधिक पंचदश शतीमिते शके विनिरमादकार्षीत शेषंस्फुटं ॥ १ ॥

COLOPHON :

इति श्री दैवज्ञानंदसुत दैवज्ञराम विरचित मुहूर्त्तचिन्तामणौ गृहप्रवेश प्रकरणं द्वादश ॥ १२ ॥

समाप्तोयं ग्रंथः लिखितो यमुनादास गुर्जरेण श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थम् समर्पितम् सं. १९०७ शा. १७७२ पौषसित नवमी भृगौ समाप्तिं गतो ग्रन्थः ॥

15107

मुहूर्तमञ्जरी

Muhūrta mañjarī

Foll- 7, 14.4 x 29.6 Cms, paper, 11 to 17 lines on a page Devanāgarī Script, Age - 1910 Samvat, Scribe - Giridhārīlāla , Condition- good.

Author : Yadunandana

The Work : Muhūrta mañjarī - an astrological treatise on proper moments for the performance of certain acts.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

कारुण्य पूर्णौ चरणौ—शरण्यौ वंदे गुरुणां तद्गुरुणांबुजाभौ ।
यथोस्मृते ज्ञानं तु इव प्रदायाः प्रत्यूहपुन्जा प्रलयं प्रयान्ति।। १ ।।

ENDS :

गुछेश्चतुर्भिसहिताशुभं जलाश्लोकै र्धरादिकमितैः समन्विता ।।
विनिर्मितेयं यदुनन्देन प्रक्षेसितायाशु मुहूर्तमञ्जरी ।। १०६ ।।

COLOPHON :

इति श्री मत्पण्डित यदुनन्दन विरचितायां मुहूर्तमज्र्यां चतुर्थगुच्छ सम्वत् १९१० ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे नवभ्यां भृगुवासरे हरिप्रसादस्यात्मजगिरिधारी लिपिकृताः ।।

15108

मुहूर्तवल्ली

Muhūrtavallī

Foll- 4 , 14.4 x 28.6 Cms, paper, 14 to 18 lines on a page , Devanāgarī script , Age-1910 Samvat , Scribe- Giradhārīlāla , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work : The Muhūrtavallī - an astrological treatise .

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ गर्भाधानं पुष्प पुंह मू श्र ध वारमं सु वृ ल १२३४७८ ।। मास ४६८९ प्रथम गर्भ स्त्रीपुरुषयो चंद्र व विवाह नक्षत्रे ।। रो ।। ३ ।। ।।३।। ।।३।। रे ।।भू ।। स्वा ।। भृ ।। स्वा ।। भृ ।। म ।। ऽनु ।। ह मास माघ ।। फा ।। वै ।। ज्ये ।। आ ।। मार्ग ।। शुभ तिथि शुभवासर ।। १ ।।

ENDS :

द्रव्यपरीक्षणमुहूर्तः श्रज्येपुन शद्विस्वभावे चरे लग्ने वलिष्टेज्वेसतारके ।। ४ ।।

COLOPHON :

ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षैकादश्यां गुरूवासरे हरिप्रसादस्यात्मजगिरधारी लिपिकृताः ।। संवत् १९१० तत्र शकः १७७५ ।। श्री सरस्वत्यै नमः श्री रामजी सदा सहाय श्री गंगायै नमः ।।

15333

मूलविधानम्

Mūlavidhānam̐

Foll- 3 , 11 x 19.5 Cms, paper , 10 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x , Scribe -x, Condition- good, water stained.

Author : not mentioned.

Work :

BEGINS :

।। अथ मूलविधानम्।।

स्नानं सन्ध्यां देवार्चनादिनित्यं विधाय मातृकाभ्यो दायिकं कुर्यात् ।। मूलजातापत्यदोषोपशान्त्यर्थं नवग्रह मखपूर्वकं मूलविधानकर्मणि ब्रह्माचार्यं ऋत्विजं वरुणमहंकरिष्ये स्वस्ति वाचनम् ।।

ENDS :

प्रधानाहुतयः सर्प्प (सूर्य्य) दैवत स्थापनं इति विशेषः ।

COLOPHON :

15158

मूलविचारकालविचार

Mūlavicāra kālavicāra

Foll- 2, 11.5 x 28 Cms, paper , 9 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x, Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

The Work : Mulavicārakīlavicāra - a work on Jyotiṣa

BEGINS :

।। ग्रन्थान्तरे मूलविचार: ।।

कृष्णे तृतीया दशमी शुक्ले लक्षा भूता मही जार्कि बुधै: ।
समेत: चेज्ज्मकाले तत्र मूलमुन्मूलनंतत्कुरूतें कुलस्य.......।।

ENDS :

कालदंष्ट्रास्य गणना यस्य तस्य महद्भयम् इति कालविचार: ।।

COLOPHON :

15119

योगशतकम्

Yogaśatakaṁ

Foll- 11, 30.2 x 10.7 Cms., paper 9 to 11 lines on a page., Devanāgarī Script. , Age- 1847 Samvat, Scribe- Durgādatta miśra, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Yogaśatakam- a manual of Jyotiṣa śāstra.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

अथ योगशतकं लिप्यते । तत्ररिष्टं त्रिविधं सुनिश्चितानिश्चिचतयोगजातंरिष्टं तथा निश्चितमायुषोंत: अनिश्चतं क्रूरदशादियोगोद्भवंजन्मनि खेटगत्या ।। १ ।।

ENDS :

प्रसवकाले केंद्रेवामरपूज्य: प्राणीजीवेद्वर्षशतम्।। ८२ ।।

COLOPHON :

इति योगशतकं संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८४७ लिखितं मिश्रदुर्गादत्तेन श्री रामार्थम् भूयात् ।। श्री श्रीकृष्णं शरणं मम् श्री कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्णं ।।

15159

योगिनीदशाफल

Yoginīdaśāphala

Foll- 7, 13.5 x 28 Cms, paper , 11 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x ,Scribe- x , Condition -good.
Author : not mentioned.
The Work : Yoginīdaśāphala- The influence of certain fairies called yoginīs on the destiny of man according to ' tantirc astrological works ' There are such fairles whose names are viz. Mañglā, Piñglā Dhānyā, Bhrāmari, Bhadrikā, Ulkā, Siddhā, Saṃkatā, their ordinary occupation to serve as mids of honour to the great godess Durgā but they also excercise by turns ,controll on the destiny of man on certain hours of every day.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अमूमंगला पिंगला धन्यकांचत्वथभ्रामरी भद्रिका चोल्ककां च तथा सिद्धिका । संकटाष्टौ शिवरक्तशिवायाः पुरोयोगिनी उक्तवांश्च ।। १ ।।

ENDS :

दशाद्वियं समीचीनमेकमेवान्ययाभवेत् तदमिश्रफलं विद्यादन्यथापि य मिश्रकं ।। ९७ ।। मयालिखितं मिश्रिकाध्याय संज्ञंफलं सर्वमति शुभंभवतुतराम् ।।

COLOPHON :

15105

योगसार

Yogasāra

Foll- 16, 12.5 x 26 Cms, paper , 14 to 15 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1886 Samvat, Scribe- x, Condition- good.

Author : Bhṛgu.

The Work : Yogasāra- a work on Jyotiṣaśāstra , belongs to the Bhṛgu Sanhitā.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ज्ञानिनां च हितार्थायकं विप्रष्टे भृगुगदितम् येनयोगप्रभावे न जायते पूर्वजन्मकृत् जपु ....( ) किंशुक् (शुक्र) मध्ये तु षष्टी योगाः प्रकीर्तिताः ग्रहयोग प्रभावेन कर्तव्यं पुण्यसंग्रहम् ....।

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीयोगसारं समाप्तम् , सं १८८६ आषाढ़शुक्ल एकादशी ।। पुस्तकवालकरामका ।।

15092

रमलोत्कर्ष

Ramalotkarṣa

Foll- 15, 13 x 33 Cms., paper, 10 to 17 lines on a page., Devanāgarī, Script- x, Age-x , Scribe-x, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

ENDS :

COLOPOHON :

15127

रमलशकुनावाली

Ramalaśakunavalī

Foll- 2, 16 x 29-5 Cms, Paper 11 to 18 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition -not good.

The Work : Ramalaśakunāvalī- A work of Jyotiṣa śāstra.

BEGINS :

ॐ नमोबिस्मल्लारहमानरहीम् । सत्यं कुरू २ स्वाहा: ....

ENDS :

COLOPHON :

इति श्रीशकुनावली संपूर्णम् ।

15113

राजयोग

Rājayoga

Foll- 8, 27.8 x 12.5 Cms, Paper, 11 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe -x, Condition- not good.

Author : Ḍhunḍhirāja

The Work : Rājayoga - It is a part of Jātakābharaṇa. Jātakābharaṇa is a mannual of nativity composed by Ḍhunḍhirāja son of Nṛsimhā and pupil of Jñānarṛja.

BEGINS :

मेतेमर्हातेर्जनमहौजस: महीस्तुते मेषगते तनुस्थे वृहस्पतौ ।
वातनुगेस्वतुंगे योगद्वेयस्मिन्नृपतीमेवताजितारिपक्षौनृपनीतिदक्षौ ।। १० ।।

ENDS :

केन्द्रिस्थित गुरुविलग्न यजन्मनाया मध्ये वयस्यति तरां वितरंति भाग्यं शीर्षोदयांध्युमयमेषु गता भवेषुरारंभ मध्यम विराम फल प्रदास्ते (रते) ।। २० ।।

COLOPHON :

इति श्रीजातकाभरणे कारक योगध्याय: ।।

15147

लग्नचन्द्रिका

Lagnacandrikā

Foll- 53, 14.5 x 28 Cms, paper, 8 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-1861Samvat, Scribe - Heturāmamisra , Condition - good.

Author : Śrī Kāśīnātha

The Work : The Lagnacandrikā - an astrological treatise describing the influence of pleanetary conjunctions on the destiny of man and most auspicious moment of marriages, By Kāśīnātha.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेत्मंत्री त्रिभिरुच्चैनराधिपः ।

त्रिभिर्नीचैभवेद्दासः त्रिभिरस्तं गतेः जदुः ।। २ ।।

ENDS :

सप्तविंसां सकेशुक्रोविसंरसेसनै............निगद्यते ।। ७३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीसर्वशास्त्रविशारद श्री कासि(काशि)नाथ कृतौ लग्नचन्द्रिकायांपरमोच पंचमो परिच्छेदः । अश्विनमासे कृष्णपक्षे नवभ्यां गुरूवासरे लिखितं मिश्रः हेतुरामः आत्मानं च हेतवः संवत् १८६१ शिवाय नमः दुर्गायै नमः श्री गुरुचरणाभ्यां नमः ।।

15148

लग्नचन्द्रिका

Lagnacandrikā

Foll- 10, 13.4 x 29.4 Cms, paper, 7 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition- bad.

Author : kāsīnātha

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

तमिस्रया जगत् ग्रस्तं यो जीवयति भूतलम् ।

तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ।। १ ।।

ENDS :

राहुवर्षत्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये
दृष्टे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं स जीवति ।। ७० ।।
चंद्रेणमंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तुल....................।

COLOPHON :

15180

लग्नवराही

Lagnavarāhi

Foll- 16, 8 x 26.7 , Paper , 4 lines on a page , Devnāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

जीवति ८ बुधवारेष्टमे मासिपीडा वर्षे तथाष्टमे पूर्णो चतु: षष्टिवर्षेति .....।

ENDS:

सेवका नृपहीनं कथं राज्यं मन्त्रिहीनं कृतोबलम् ।

15118

लंपाकशास्त्र

Lampākaśāstra

Foll- 39, 27 x 10 cms, paper, 11 to 13 lines on a page,Devanāgarī Script, Age -1927 Samvat , Scribe- Gaṇeśīlala. Condition- good.
Author : Padmanābha
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
गणनायं रविमुख्यखेचरान्कुलदेवीं विधि विष्णु शंकरान् ।।
प्रणिपत्यसदाशिव: स्वमूर्ध्निलंपाके तिलकं करोति सम्यक ।। १ ।।

TEXT :

अध्यासीनं महादेवं महापद्मेद्विषट्दलो ।
विघ्नराजं नमस्कृत्य वक्ष्ये लंपाकमुत्तमम्।। १।।

ENDS :

अथशास्त्र कर्तृनामशास्त्रज्ञ फलं ग्रन्थं संख्यां च निरूपयन् ग्रन्थमुपसंहरति । नागष्टि श्लोक संबंधे धीमतां भुभुजां मुदेपद्मनाभकृतं शास्त्रंलंपाकम् ।। ६८ ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मनाभकृत लंपाकशास्त्रे नष्टादि चिन्तांप्रकरणं नाम सप्तमोध्याय: ७ समाप्तोयं ग्रन्थ: ।। संवत् १९२७ तत्रशक: १७९२ आश्वनवदी अमावस शनिवार इदं लिखितं परमेश्वरीदास जी तस्यात्मज गणेशीमल लिपिरियम् श्री रामजी सदा सहाय श्रीसरस्वत्यै नम: श्रीगंगादेव्यैनम: राम ।

15144

लीलावती

Līlāvatī

Foll- 36, 10 x 24.5 Cms, paper , 7 to 11 lines on a page , Devanāgarī script, Age- x, Scribe- x , Condition - good.

Author : Bhāskaracārya

The Work : Līlāvatī - a well known work on arithmetic and geometry.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
प्रीतिं भक्तजनस्य यो जनयते विघ्नं विनिघ्नम् ।
स्मृतस्तं वृन्दारक वृन्दवन्दितपदं नत्वा मतङ्गाननम् ।।
पाटीं सद्गणितस्य वच्मि चतुरप्रीतिप्रदां प्रस्फुटाम् ।
संक्षिप्ताक्षर कोमलामलपदैर्लालित्यलीलावतीम् ।।

ENDS:

सूत्रं वृत्तं भुजाद्वर्गिताकोटिकर्णा ।।

COLOPHON :

15150

वर्णमाला प्रश्न

Varṇamālā praśna

Foll- 6, 9.3 x 23 Cms., paper , 7 to 8 lines on a page, Devansgarī Script , Age - 1936 Samvat, Scribe - x , Condition- good.

Author : Sahdeva

The Work : Varṇamālā praśna or Sahadeva prśana - a manual of prognostication . A portion of prśnabhairava.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ऊँकारः पूजितं सर्वैः त्रैलोक्यं सचराचरे ।

चरा धनधान्यं सदा नित्यं ऊँकारे दृश्यते सदा ।। १ ।।

ENDS :

इति मन्त्रेण सप्तवार पठित्वा पुनःविचारयेत् ।।

COLOPHON :

इति सहदेव विरचितः पंचाशत प्रश्नः समाप्तः संवत् १९३६ मार्गशिर कृ. रविवार ।

15100

वृहज्जातकम्

Vṛhajjātakaṃ

Foll- 29, 13 x 29 Cms, paper , 8 to 14 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -1870 Samvat , Scribe - x , Condition - bad.

Author : Varāhamihira

The Work : The vṛhjjātakam- Jātakavivarṇa an elaborate treatise on horoscopy .It is primary an astrological work .

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशिभृतो वर्त्मा ब्रह्मा पुनर्जन्मास्मिन्नात्मविदां क्रतुश्च्यजतां भृतोसरः ज्योतिषां ।

लोकानां प्रलयोद्भवस्थितं विमृश्चानेकधा यः क्रतौ वाचं वः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्य दीपो रविः । २॥

ENDS :

दिनकर मुनि चरण प्रणिपात कृत प्रसादमतिमेदम् ।
शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोस्तु पूर्व प्रणेतृभ्यः ॥

COLOPHON :

श्रीवराहमिहिरकृतौ वृहज्जातके उपसंहाराध्यायः समाप्तम् तामत्य शुभ तरोस्तु ॥ संवत् १८९० शके मधुसूदनमासे धवले लिखदष्टमीतिथौ वृहदादिम..॥

15166

वसंतराज

Vasantarāja

Foll- 59, 11.5 x 32.7 Cms., paper, 9 to 12 lines on a page, Devanāgarī Scripts , Age - x, Scribe -x , Condition-good, water stained.

Author : Bhānu candra gaṇi

The Work : Vasantarāja - a work on omens and portents by Bhānu candra gaṇi.

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः स्वस्ति ॥

श्री सदनं यदीयवदनं वेधा विधायाद्भुतम्।
वीक्ष्याश्चर्य्यमवाप सस्पृहतया सम्मार्ज्जयन्वाससा ॥
क्षिप्तं तच्च तथा विधैरनुगुणौ वैषम्यमायादि तिमन्ये—
सम्प्रति लक्ष्यते घनपथे शीतद्युतेर्मण्डलम् ॥ १ ॥

ENDS :

स एव आश्र... ...स्याः तथा पश्चात् कर्मधारयः ॥

COLOPHON :

15139

।। वार्षिकगणितपद्धतिः ।।

Vārṣikagaṇita paddhatiḥ

Foll- 12. 15.2 x 14 cms, paper , 10 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- 1888 Samvat., Condition- bad, worm eaten

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मोहांधकारौधहरं सुवृत्तं
गुरोरधोपि स्थिति भाजमुद्यैः ।।

ENDS :

धनादिभावो गगने चारा वापा साधने यो निरूक्तः तत्रपि योज्यः त।। ७५ ।।

COLOPHON :

नृसिंहेति संवत् १८८८ आश्विन कृष्ण षष्ठयां भौमे ।

15161

शकुनचन्द्रिका

Śakunacandrikā

Foll- 3 , 14 x 22.5 Cms, paper , 23 lines on a page , Devanāgarī Script . , Age - 1781 śaka samvat , Scribe- Daśaratha prasāda, Condition - good.

Author · not mentioned .

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। अथ शकुनचन्द्रिकामाह ।।

ENDS :

राहुधाम्भिगतेयं गौभक्ष्यं भोग समाचरेत् ।
निखातं वस्तुलाभं च विरोधो मित्रता भवेत् ।। ७३ ।।

COLOPHON :

इति शकुनचन्द्रिका ममाप्तिमगमत् । शुभंभवतु ।
इला वसु नग कुसंमिते द्वेमधो नवभ्याम सितो गुगे: दिने ।।
अनूपपुर्य्यां सुर दीर्घिका तटे हयलेल्खि दाशग्थे:
प्रसाद: शकुनचन्द्रिकेति स्पष्टार्थ: .... ।। १ ।।

15135

शीघ्रबोध

Śighrabodha

Foll- 46, 12.4 x 21 Cms, Paper,10, lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1900 Samvat , Scribe- x , Condition - good.
Author : Sri Kāśinātha bhaṭṭācārya.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
भासयन्त जगद्मासा नत्वा भास्वन्तमव्ययम् ।
क्रियते काशीनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रह: ।। १ ।।

ENDS :

सफलं मस्तके कुक्षौनिष्फलं पादपृष्टयो: ।। ७५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीकाशीनाथ भट्टाचार्य कृते शीघ्रबोधे अर्घ प्रकरणं चतुर्थ , संवत् १९०० ज्येष्ठशुक्ल रविवासरे लिखितम् ।

15136

शीघ्रबोध

Śighrabodha

Foll- 33, 13.2 x 26 cms, paper,8 to 10 lines on a page, Devanāgarī script , Age - 1877 Samvat -x, Condition - good.
Author : Sri Kāśinātha bhaṭṭācārya.
The Work :
BEGINS :

दैत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्टश्च निन्दत: ।



14- Srikṛṣṇa Jaya Ms. No. ST. 2631

प्रहरार्धेशुभेकार्ये वारवेला च कथ्यते ।। ८ ।।
इति वारवेला ।

ENDS :

पौषेतु धनहानिं स्यान्माघे धान्येविवर्धनं फाल्गुने—सर्व सौभाग्यं आचार्यैः परिकीर्तितः ।।

COLOPHON :

इति श्रीकाश्निनाथकृतौ शीघ्रबोधे चतुर्थ प्रकरणम् शीघ्रबोधः समाप्तः ४ संवत् १८७७ भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे तृतीयं रविवासरे श्री—श्री श्री श्री श्री ।

15137

शीघ्रबोध

Śīghrabodha

Foll- 52, 11.4 x 24.2 Cms, paper, 6 to 7 lines on a page, Devanāgarī script - , Age - 1885 Samvat, Scribe - Hulāsarāya, Condition - good.
Author : Sri Kāśinātha bhaṭṭācārya.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
भासयन्तं जगद्भासा नत्वा भास्वन्तमव्ययम् ।
क्रियते काशिनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रहः ।। १ ।।

ENDS :

दशमी द्वादशी चैव त्रयोदशी प्रशस्यते इति मंत्रारम्भ ।।

COLOPHON :

इति श्रीकाशिनाथ भट्टाचार्य विरंचितं शीघ्रवोधः समाप्तम् । मासोत्तममासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे शुभतिथ्यौ दशम्यां गु
रौत्तद्यवसौ लिखितम् श्रीमत्पांडे हुलाश राइ मिश्र देवीदत्त स्वपाठार्थ सम्वत् १८८५ शा. १७५०

15138

शीघ्रबोध

Śighrabodha

Foll- 36 , 11.5 x 19.4 Cms, paper, 10 to 11 lines on a page, Devanāgarī script , Age-1890 Samvat, Scribe - Vṛṣabhāna, Condition- good.

Author : Śri kāśīnātha

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
भासयंतं जगद्भासानत्वा भास्वन्तमव्ययम् ।
क्रियते काशिनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रहः ।। २१ ।।

ENDS :

वर्तमान तिथिवारयोगवासर मुक्त षष्टी दलमिश्राणि
जनित संख्यावृत्तत भागः तिथियो वीरवारसयोगा ।।

COLOPHON :

इति शीघ्रबोध समाप्तम् शुभमस्तु संवत् १८९० अश्विने कृष्णपक्षे तु चतुर्थ्यां बुधवासरे लेखकं वृषभानस्य (ष) सुखरमस्य पाठकः ।। श्री भागवतायनमः श्री गोपालाय नमः श्री राम राम ।।

15168

।। श्रीज्योतिश्चन्द्रार्कः ।।

Śrījyotiṣcandrārkaḥ

Foll- 84, 12 x 31 , Cms, paper , 7 to 10 lines on a page , Devanāgarī Scripts, Age- 1751 Samvat, Scribe - x , Condition - not good, ff- 1 to 5 are missing.

Author : Rudradeva.

The Work : Srijyotiscandrārkah - a manual of Jyotiśasāstra . The ms begins from the Folio 6.

BEGINS :

ननु....भास्करः सातिथि सकलाज्ञेयादानाध्ययने कर्मसु ।।६६।।

ENDS :

संज्ञाहेयोन्मिश्र संस्कारकांतो द्वाहेया वावास्तु खेट प्रचारोः ।
अष्टोषद्मिश्रिचर्चिता ज्योतिषांगैरध्यनयास्तैः श्रीरदेवद्विजेष्टिः।। ५७।।

COLOPHON :

इति श्रीरुद्रीय ज्योतिश्चंद्रार्के ग्रहवारफलाध्यायः कुवाणशैल भूशाके भाद्रे मासि सिते कुजे दशम्यां तोयनक्षत्रेका लिखत् ।।

15112

षट्पंचशिखा

Ṣaṭpancaśikhā

Foll- 17 , 13x28 Cms, paper 10 to 17 lines on a page, Devnāgarī script, Age -x , Scribe - Gaṇeṣilāla , Condiion - good, slightly worm eaten .

Author : Pṛathuyasah

Commentator : Bhaṭṭautpala

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।।

Comm. सतांयमाचारोयच्छास्त्रारंभे अभिमता नमस्कारं कुर्वंति...... ....।

TEXT : प्रणिपत्य रविं मूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथुयशसा ।
प्रश्ने कृतार्थगहना परार्थमुद्दिश्य संघशसा ।।

ENDS :

जीवसितौ विप्राणां क्षत्रस्या रोष्णागू विशांचन्द्रः ।
शूद्राधिपः शशिसुतः ज्ञानेश्वरेः संकरभवानामिति ।।
जाति निस्सर्यः कार्य्य इति ।

COLOPHON :

इति श्री भट्टोत्पलविरचितायां षटपंचाशिका विवृत्तौ मिश्रकाध्यायः सम्पूर्णः शुभम् ।। मासोत्तम मासे मार्गसि(शि) रमासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ अष्टम्यां गुरौ इदं पुस्तकं लिखितं मिश्र परमेश्वरी दास तस्यात्मज गणेशीलाल स्वयं पठनार्थं श्रीराम जी ।।

15110

षडवर्गफल

Ṣaḍavargaphala

Foll- 14 , 30 x 14 Cms, paper , 11 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- bad.
Author : not mentioned.
The Work : Ṣaḍavargaphala - the ms. elucidates the planetary effects on person born under different esterisms.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ वृहज्जामले षट्वर्ग लिख्यते ।।
लग्नान्नूनं चिंतयेद्देहभाव् होरायां वै संपदाद्यं सुखं च द्रेष्काणे स्यात् भ्रातृजंभावरूपं स्यात्सप्तांशे सन्ततिः पुत्र पौत्री ।। २ ।।

ENDS :
शिशूनगंनानलाभेजानुथुग्मेषु रोगदा ।। पृष्ठेपराज्य पराजयप्राप्ति तालुकेराजतछनात् ।। ५।। इति अंगफरकै ताको विचार ।।

15106

संकेतकौमुदी

Saṃketakaumudī

Foll- 10, 15 x 23.3 Cms, paper, 14 to 16 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition -good.
Author : Harinātha acārya.
The Work : Saṃketakaumudī- an elementary treatise on horoscopy .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ विशेषफलज्ञानार्थं शुभं कृते ।
संकेतकौमुदीः प्रोक्तो ग्रहभावचेष्टा विचारोलिख्यते ।।

ENDS :

इति राहुभाव फलम्।

COLOPHON :

इति श्रीसंकेतकौमुदी समाप्तिमगमत् ।
अवस्थी रामप्रसादस्येयं कौमुदी ।।

15164

समरसार

Samarasāra

Foll- 24, 11 x 20.5 Cms, paper, 13 to 18 lines on a page Devanāgarī Script ,Age - 1859 samvat , Scribe - x , Condition - good,

Author : Rāmacandra

BEGINS :

।। स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ।।
नत्वागुरुन्समालोक्यस्वरशास्त्राणि भूरिशः ।
वक्ष्ये युद्धोपायं धार्मिकाणां महीक्षिताम् ।। १ ।।

ENDS :

ग्रन्थकृतो रामचन्द्रस्य गुरोः भरतो लघुविद्वान्......................... .... रहस्यस्य प्रकाशिनी सरला।।

COLOPHON :

इति श्रीरामचन्द्र विरचिते समरसार सटीकायां श्रीभरतकृत समाप्तं शुभं भवतु लेखक— पाठकयोः ।। सं. १८५९ शाके १७२४ आषाढ़ शुक्ल दशमीशनौ प्रातकाले ।

पुस्तकं ठाकुरदासेन रामपुरमध्ये स्वार्थ—परार्थे वाः ।।
श्रीरामचन्द्राय नमः ।।

15098

समरसार

Samarasāra

Foll- 21, 13.9 x 28.5 Cms., 8 to 22 lines on a page, Devanāgarī Script., Age - 1928 Samvat, Scribe - Gaṇeśīlāla, Condition- good.

Author : Śrī Rāma

The Work : The samarsārs is a work in 86 stanzas on prognostics derived from particular stellar conjunctions turn of breath etc. Composed by Rāmacandra son of Sūryadāsa and grandson of Śivadāsa with commentary sarlā by Bharata.

BEGINS :

अभिवंद्य रामचन्द्रं गुरूं तदुक्तं स्वरग्रन्थम् ।
विवृणोमि यथाप्रज्ञं तदभिहितार्थानुसारेण ।। १ ।।

ENDS :

वंशेवत्समुनीश्चरस्यशिवदासाख्याद्गुरुख्यातित:
संम्नाऽग्नि चिराय यस्य जनक: श्री सूर्यदासोजनि: ।
यश्न्मातुर्यशसादिशोदशविशालाक्ष्यावलक्ष्या ।
व्यधात्सप्राज्य स्वरशास्त्रसार रचितं रामो वसन्नैमिषे ।। ८६ ।।

COLOPHON :

इति रामकृत समरसार नाम ग्रंथ: समाप्त: । स्वस्ति श्री संवत् १९२८ तत्र शक: १७८३ भाद्रपद कृष्ण करोदग्रंथार्थ प्रकाशिका सरलाम् ।। ८६ ।। इति भरतकृता ग्रंथार्थ प्रकाशिकाख्या समरसार टीका समाप्तं शुभं भूयात् भाद्रपद कृष्ण १ प्रतिपदा भौमवासरे स्वस्ति श्री परमेश्वरी दासजस्यात्मज गणेशीलाल लिखितमिदं शुभं लिखित् । श्रीराम जी सदा सहाय ।

15165

समयमयूख

Samaya mayūkha

Foll- 69, 12 x 28, Cms, paper, 9 to 10 lines on page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - badly warm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।। श्री सरस्वत्यै नम: ।।
यो लीलावासं तनुते अत्र विश्वं तत्पालयन्तिआत्मनि विश्वरूपे ।
विलयं नयतिसा शुद्धपूर्णरूपे शिव: तनोत्वाशुरविभासौ ।

ENDS :

प्रतिष्ठायां यदि वेष्टि: सभाय्यते पुन: प्रशोय.................

COLOPHON :

15103

सर्वार्थचिन्तामणि

Sarvārtha cintāmaṇi

Foll- 122, 1.2 x 28.5 Cms, paper, 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1888 Samvat , Scribe- Hariprasādamiśra, Condition - good , water stained.

Author : Venkaṭeśācārya

The Work : Sarvārtha cintāmani - a treatise on Jyotiṣa śāstra , dealing with horoscopy by Venkaṭeśācārya . The ms contains eight chapters.

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नम: ।।

श्री मच्छेषगिरेस्तटानिधिलयं श्री वेंकटेशं गुरुम् ।
नत्वा वेंकटनाथकत्वामनुदिनं जातोथ ययातसुधी: ।।
ज्योति:शास्त्रमहाध्वपारगमने वक्ष्यामि योगात्मकम् ।
ज्योति:शास्त्रविवेकपाकविदुषां सर्वार्थचिन्तामणिम् ।। १ ।।

ENDS :

आचार्य्यो निगमांगशास्त्रे विनिश्चितार्थ: सुमति: सुशील:
श्रीवेंकटेशो भुवि मानवानां चकारयोगार्णवमत्र भूत्यै ।। ३५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीसर्वार्थचिंतामणौ योगार्णवे अष्टमोध्याय: ।। ८ ।। इदं पुस्तकं मिश्र दुर्गादत्तस्यात्मज हरिप्रसादमिश्रेण लेखि श्रीकृष्णार्पणां भवतुतराम संवत् १८८८ वास्तव्यस्य न्यौधनान गृहे शुभं भवतु ।

15178

स्वप्नाध्याय

Svapnādhyāya

Foll- 19,7.5 x 13.4 Cms, paper, 6 to 10 lines on a page
Devanāgarī Script, Age -x , Scribe -x, Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work : a small Ms. dealing with dreams and their implications.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
स्वप्नाध्यायं प्रवक्षामि यथा शास्त्रेण भाषितम् ।
स्वप्नस्तु प्रथमे जाने वर्षे च फलदो भवेत् ।। २ ।।

ENDS :
COLOPHON :

15141

स्वरोदय

Svarodaya

Foll- 8, 13.7 x 23.4 Cms, paper, 22 to 28 lines on a page.,
Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x , condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ स्वरोदय सटीक लिख्यते कवित ।।

ENDS :

क्रीडामिर्लोलो यद्दंदेवानान्धीराः सर्वैरयामिः क्रीडयाभिः ।। १९ ।।

COLOPHON :

15156

सारिणी

Sāriṇī

Foll- 1, 12.5 x 28 Cms, Condition - bad.
The Work : an anonymous astrological work containing tables.

15125

सारिणीकल्पवल्ली

Sāriṇikalpavallī

Foll- 24, 13.5 x 13 Cms, paper, Condition- good.
The Work : Sāriṇikalpavallī - an astronomical work containing tables basedon Kalpavalli, a commentary on the Suryasiddhānta.
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।
अथ पद्धतिकल्पवल्ली सारिणी तत्रादौ दृष्टिसारिणी ।।

ENDS :

सारिणी ।

15121

सारिणीखण्डखादिर

Sāriṇikhaṇḍakhādira

Foll- 14, 14 x 28 Cms, Condition - not good.
Author : Brahmagupta
The WorK : Sāriṇikhaṇḍakhādira- a famous astronomical work of Brahmagupta containing tables.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
देशांतरलिप्तादि ।। ० ।। २४ ।। ऋजं ।। ख्वेर्युगस्यमगणः ४३२०००
।। मुक्तिः ।। ५९८ ।।

ENDS :

सारिणी

15151

सारिणीखण्डखादिर

Sārinị Khanda Khādira

Foll- 10, 14.5 x 23 Cms, paper, Devanāgarī script, Age-x, Scribe-x, Condition- good.

The Work : an astronomical work containing tables.

15152

सारिणीग्रहलाघव

Sāriṇigrahalāghava

Foll- 16, 16 x 25 cms, Paper , Devnāgarī Script, Age-x, Scribe-x, Condtion- good.

The Work : Sāriṇigrahalāghava - an anonymous astronomical work Containing tables.

15123

सारिणीग्रहलाघव

Sāriṇigrahlāghava

Foll-, 24, 12.3x 28.5 cms , paper , Scribe- Prema, Condtion- good.

Author : Gaṇeśadaivajña

The Work - Sāriṇigrahlāghava-- an strological treatise composed by Gaṇeśadaivajña son of Keśava of Nandigrāma containing tables.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

नत्वा गणेशस्यपादारविन्दं हरिं च सूर्यप्रमुखान्ग्रहांश्च ।
प्रेमोग्रहार्थं ग्रहलाघवस्य लघुकियां सारणिकां करोति ।। १ ।।

ENDS :

सारिणीः ।

COLOPHON :

नगर्य्यामिंधौ श्रीगणेशप्रसादत्सुधीः प्रेमनामाकरोत्सारिणींहि ।।

15124

सारिणीसिद्धखेटी

Sāriṇisiddhakheṭī

Foll- 50, 15.7 x 28.5 Cms, paper, Condition- good.
The Work : Sāriṇisiddhakheṭī - an anonymous astronomical work containing tables.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
शकः सप्तयमेषु चंद्रः ।। १५२६ विपुतः ।

ENDS :

सिद्ध खेटी की सारिणी शुभम् ।

15122

सारिणी सूर्यसिद्धान्तः

Sāriṇīsūryasiddhāntaḥ

Foll- 13, 13.5 x 30.5 Cms, paper, Condition - good.
The work: Sāriṇīsūryasiddhāntaḥ - an anonymous astronomical work containing Sārini surya Sidhanta-tables based on sūryasiddhānta .
The Work : Sāriṇīsūryasiddhāntaḥ - a standard treatise widely accepted and followed in India, and one of the earliest of the Hindu scientific astronomical works, which begin to take shape from about the fourth or the fifth century A. D. at a time when old astronomical ideas and calculations came to be revised and placed on a scientific and mathematical basis.
BEGINS :

रविघटिका वंशवल्यां देशांतरं २३ विकलादि ऋणं सूर्यस्य शनि .... १०८ — सारिणी

ENDS :

वर्तमान ग्रहात्पुस्तको नं यदास्यात्रमध्यगत्रे ऋणं पादचारे सचेत्पुस्तकाधिगम्यतायां क्रमत् स्यात्वैपगीत्या विहीनो विचार्य: मय विभागाधिकहीनखेटाकली कृतांत स्वयजने भक्त्या ।

COLOPHON :

इति श्रीसूर्यसिद्धान्त मतेव ।

15179

हायनरत्नम्

Hāyanaratnam̐

Foll- 109 ,13 x23 , Cms , paper , 11 to 12 lines on a page Devanāgarī Script , Age-x , Scribe- x , Condition- bad, Folio- 71 &72 are missing.

The Work : - Hāyanaratnam - a treatise on Jyotisasastra By Balbhadra son of Dāmodāra.

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नम: ।।
गणाधिपं रामगुरो: पदाब्जं दामोदराख्यं पितरञ्च नत्वा
प्राचीन पद्यैर्बलभद्रनामा करोति सिद्ध हायनरत्नसंज्ञं ।।
भागीरथीतीर विराजमाने श्रीकान्यकुब्जे नगरेतिरम्ये
अभूद्भरद्वाजमहर्षिवंशे श्री लालनामा गणको स्मधामा
तस्यात्मजा: पंचवभुवुरेषां देविदास: प्रथमं वभूवं ।

ENDS :

धनस्थे कवौ धान्य लाभौ

COLOPHON :

इति श्रीदैवज्ञवर्य्य पंडित दामोदरात्मजं बलभद्ररचिते हायनरत्ने सहमानानिरूपणं नामाध्यायश्चतुर्थ: ।।

17327

होरासेतु

Horāsetu

Foll- 21 , 11.5 x 23.5 Cms, paper,10 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x , Scribe -x , Condition - bad slightly worm eaten.

The Work : Horāsetu a wrok of jyotiaṣāśāstra

BEGINS :

ॐ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

कणस्फालैः यश्चालिता नाम .... ताकर्ण घोष प्रमोदः
मोदायास्ताः मोदकोद्यत्करो वः सिंहो घोषः सिंकरास्यो गणेशः।।१ ।।

ENDS :

अन्य क्रमाद् गणनीयंस्तु संग्रह तत्परः सुमाय्यं च भवेद्वक्ता । सुमुखी सुमति शुचिः स्थूल दंताधर ग्रीवका ।।

COLOPHON :

15176

चन्द्रावस्थानयनम्

Candrāvasthānayanam̐

Foll- 3,15.3 x 14 Cms, paper, 13 to 15 Lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe -x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ चन्द्रस्यद्वादशअवस्थानयनं वष्ठिध्नगतनक्षत्रं तत्कालघटिकान्वितं वेदध्नमिषुवेदाप्तमवस्थामनुभाजितम्। प्रवासनष्टारव्यमृताजया च हास्यारतिः क्रीडिसुप्तमुक्ताः ज्वराख्यं कंपितासुस्थिता च द्विषङ्कसंख्याहि भगोरवस्था ।

ENDS :

भक्ष्यंस्तुमधुरोपेन्तं कर्ता मनसि सौख्यदम्
ज्वग्नकृपाते चन्द्रे उत्तमान्नमधिकं प्रियम् ।। ५० ।।
सुस्थिते हिम गौ प्राप्ते चेत्कुर्यात्प्राप्ति भोजनम् ।
इत्युक्तं द्वादशावस्थाफलं भोजनकर्मणि एव
चन्द्रकियायां द्विघरिकादिफलं भवेत् ।

COLOPHON :

इति चन्द्रावस्था फलम् ।

व्याकरण

Vyākaraṇa



15- Hasticakra, Asva Cakra Narapati JayacaryāMs. No. ST. 15163

1·5206

कारकखण्डनमण्डन

Kārakakhaṇḍanamaṇḍana

Foll- 11, 11.5x27 Cms, paper 11 to 12 lines a page, Devanāgarī Script , Age -x, Scribe - Candrakānta ,Condition - good.

Author : Maṇi kaṇṭhamiśramuni.

The Work : Kārakakhaṇḍanamaṇḍana a- A work of grammar on Kāraka prakarana by Maṇi kaṇṭhamiśramuni.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

क्रीड़ाकृष्यमाणत्रिपुरहन कृच्चचंडकोदण्ड भंग—
स्फूर्जद्ब्रह्माण्ड भाण्डस्फुटनदरकरध्वान निष्णात् बाहुः ।।
लज्जान्वयं च दृगन्तैः सरभसमनिशं सीतया पीयमानः
पायाद्वेदान्त गीतः परिषदि विदुषां जानकी जनिरेकः ।। १ ।।
तेन श्रीमुनिना कृतं च कृतिनातर्कोहनैः खण्डनम्।
वेदान्तागमपाणिनीय विदुषां यत्तच्छिरोमुंडनम् ।।
कर्मादिरिह तर्कताण्डवधियां गम्यं विशेषादहो ।
विश्वेषामुपकारकारणतया विद्यावतां प्रीतयो ।। २ ।।

ENDS :

अवयवसंस्थानि संस्थानि भेदविवक्षाया भोक्ते भोगायतन विवक्षा च षष्ठी ।।

COLOPHON :

इति श्रीमुनिकृते कारकखण्डनम् शुभमस्तु रुद्र प्रसादादिति संवत् १९१५ मि. माघ कृ. संकट चतुर्थ्यां लिखितं स्वपठनार्थम् ।। श्री महाराजाधिराजविधि चन्द्र ।। श्री सरस्वत्यै भगवत्यै नमः ।।

15199

चन्द्रिकाउत्तरार्द्ध

Candrikāuttarāddh

Foll- 45, 15 x 29.5 Cms., paper ,9 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age -x , Scribe -Durgādatta miśra, Condition -good , slightly worm eaten.
Author : not mentioned.
The Work : - Candrikāuttarāddh - a grammatical work .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः।।

धातोः इदमधिक्रियते भ्वादिः क्रियावाचिनो भ्वादिर्धातुसंज्ञो भवति ।।

ENDS :

इत्याख्यात प्रक्रिया

अष्टाब्धिनामेन्दु युते समे मासे च फाल्गुने दुर्गादत्तेन मिश्रेण समाप्तिमगमत् । शुभाश्रीकृष्णार्च्यौं रामभवतुतराम् शुभम् ।।

15204

परिभाषाभाष्य

Paribhaṣābhāṣya

Foll- 4, 13.3 x 26.7 , Cms, paper , 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe - x, Condition - good.
Author : not mentioned
The Work : Paribhāsābhāsya - a work of grammar.
BEGINS :

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि संदेहादलक्षणम् ।
यथोद्देशं संज्ञापरिभाषं कार्यकालं संज्ञापरिभाषम् ।। १ ।।
अनेकान्ता अनुवन्धाः एकान्ता अनुवन्धाः ।
नानुबन्धे कृतमनेकालत्वम् ।

ENDS :

अर्द्धमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यंते वैयाकरणाः ।
परिभाषा भाष्यमताः संग्रहीता सतामुद्वे भट्टविद्वभिः ।
शतमेकोनविंशति ।

COLOPHON :

इति परिभाषा ।

15200

प्रक्रियाकौमुदी

Prakriyākaumudī

Foll- 106 , 13 x 28 , Cms, paper, 9 to 12 lines on a page Devanāgarī script, Age - 1634 Samvat, Scribe- x , Mohana, Condition- bad, in brittiling condition.

Author : Rāmacandracāraya

The Work : Prakriyākaumudī - a grammatical work of the school of pāṇini composed by Rāmacndra son of Darśnācārya a disciple of Gopālācārya.

BEGINS :

।। श्रीगणपतयेनमः ।।
श्रीमद्विठ्ठलमानम्य पाणिन्यादि मुनीन्गुरुन् ।
प्रक्रियाकौमुदीं कुर्म्मः पाणिनीयानुसारिणीम् ।। १ ।।

ENDS :

पक्षेविनियोज्यमित्यादि ।।

COLOPHON :

इति श्रीरामचन्द्राचार्य विरचितायां प्रक्रिया कौमुद्यां सुर्षववं समाप्तम् ।। संवत् १६३४ वर्षे अग्रहन शुदि रवौ मोहनेनालेखि ।।

15208

प्रौढ़मनोरमा

Prauḍhamanoramā

Foll- 73 , 13 x 30 Cms, paper , 10 to 13 lines on a page , Devanāgarā Script, Age - x, Scribe - x ,
Condition - good , Ink stained.

Author : Bhaṭṭojī dīkṣita

The Work : Prauḍhamanoramā- commentary on the siddhānta Kaumudi by the author himself.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ध्यायंध्यायं परं ब्रह्म स्मारं स्मारं गुरोर्गिरः ।

सिद्धान्तकौमुदीव्याख्यां कुर्मः प्रौढ़मनोग्मामम् ।।
हयवरट् हकारोपदेशः ....।

ENDS :

ब्राह्मणस्य पुत्रं पन्थानं पृच्छतीति इहहि ब्राह्मणपुत्रः विशेषणं न तु क्रियान्वयि यद्वा कारक शब्दः क्रियापरः करोति कतृ कर्मादिव्यपदेशा ....।

COLOPHON :

15203

लिङ्गानुशासन

Liṅgānuśāsana

Foll- 9, 12.5 x 25.2, Cms, kpaper, 10 to 13 lines on a page, Devanagari Script, Age 1906 Samvat Scribe x , Condition - good.

Author : not mentioned.

Work : - Liṅgānuśāsana - a grammatical work of the school of pāṇini

BEGINS:

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अधिकारोऽय ।। स्त्री ।। अधिकारोऽयं ।।

ऋकारांता मातृदुहित स्वसृयातृननादर । ऋकारांता एते पंचैवरस्त्रीलिंगाः ।।

ENDS :

गुणवचनं च शुक्लः पटः ।। शुक्लापटी । शुक्लंवस्त्रम्
कृत्याश्चकृतः ।। प्राज्यत्रः करणाधिकरणयोर्ल्युट् सर्वादीनि सर्वनामानि ।।

COLOPHON :

समाप्तोयम् लिंगानुशासनः शुभम् संवत् १९०६, १७७१ फाल्गुनवदि ४ गुरूवार श्री रामजी सदा सहाय ।।

15201

वैयाकरणप्रबोध चन्द्रिका

Vaiyākaraṇaprabodhacandrikā

Foll- 26, 11 x 26.3 Cms, paper, 8 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script, Age 1907 Samvat . Scribe - Hari prasāda , Condition - good.

Author : Vaijalabhūpāla

The Work : Vaiyākaraṇaprabodhacandrikā - a work on grammar composed by Vaijalabhupāla. King of patna. Very neatly copied by Hari prasāda.

BEGINS :

।। श्रीमहागणाधिपतये नमः ।।
हरिहर गुरुभक्तः सर्वलोकानुरक्तस्त्रिभुवनागतकीर्तिः
कान्ति कन्दर्प मूर्त्तिः ।
रणरिपुगण कालो वैजलक्षोणिपालो जगति जयति
दाता सर्वकर्मविधाता ।। १ ।।

ENDS :

एषा विशेषतः सुष्ठु समाप्त सन्धिचन्द्रिका ।
फलदा बालकानां हि भूयाद्विद्यावतां शुभा ।। ४५४ ।।

COLOPHON :

इति श्री पटनाधिनाथ भूपतिशिरोमणि वैजलभूपाल विरचिता वैयाकरणप्रवोधचन्द्रिका समाप्तम् । स्वस्ति श्री संवत् १९०७ तत्र शकः १७७२ पौष शुक्ल प्रतिपदा भृगुवासरे शुभं भूयात् श्रीराम जी सदा सहाय श्री सरस्वत्यै नमः श्रीगणपतये नमः इदं पुस्तकं लिखितं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मजः गिरधारीलाल स्वयं पठनार्थम् ।।

15205

सरस्वतीप्रक्रिया

Sarasvatīprakriyā

Foll- 10, 12.5 x 27-5 Cms, paper , 10 to 12 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, Condition - good.

Author : Anubhūti svarūpācārya.

The Work : The sarasvatīprakriyā- a grammatical work based on the Sārasvata Sūtras which are said to have been composed by some ancient āchārya . It is composed by Anubhūti svarūpācārya. The founder of Sārasvata School, who must have flourished between 1250 A.D. and 1450 A.D.

BEGINS :

धिश्चलतया चलतया वा विक्षितस्तत्रापादाने पञ्चमी ।
धावतो: ऽश्वाद् पततं, भूभृतोवतरति गंगासंवधे षष्ठी ।।

ENDS :

इति तद्धित् प्रक्रिया

COLOPHON :

इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्य विरचितया सरस्वती प्रक्रियाया तद्धित: समाप्ता ॐ श्रीगणेशाय नम: । श्रीसरस्वत्यै नम: ।।

15198

सारस्वतपूर्वार्द्ध

Sāraśvatapūrvārddh

Foll- 33, 14.5 x 27.7 , paper , 11 to 13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x , Condition- good , water stained.

Author : not mentioned.

The Work : Sārasvatapūrvārddh - a grammatical work based on the Sārasvatasutras which are said to have been composed by some ancient ācārya.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रणम्य परमात्मानं वालधीवृद्धिसिद्धये ।।
सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियामतिविस्तराम् ।। १ ।।
इन्दादयो ऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः ।
प्रक्रिया तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुंनरः कथम् ।। २ ।।

ENDS :

इति कारकप्रक्रिया समाप्ता ।।

COLOPHON :

15211

सारस्वतभाष्य

Sārasvatabhāṣya

Foll- 33,11 x 27.5 Cms, paper 8 to 13 lines on a page Devanāgarī Script, Age - x , Scribe- x , Condition -good, slightly worm eaten .

Author : Anubhūtisvarūpaācārya

The Work : The sārasvatbhāṣya - a grammatical work composed by, Anubhūtisvarūpācārya the founder of the Sārasvata school, who must have flourished between 1250 A.D. and 1450 A.D.

BEGINS :

।। ॐ नमः परमात्मने ।।
।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।।

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धि सिद्धये ।
सारस्वतीं ऋजुं कुर्वे प्रक्रियां नाति विस्तराम्।।

ENDS :

द्वितीयं त्रितयं द्वयं त्रयं शेषानिपात्या कत्यादयः ।।
इति तद्धित् प्रक्रिया ।।

COLOPHON :

15196

सिद्धान्तकौमुदी

Siddhāntakaumudī

Foll- 81, 12.5 x 20.3 Cms., paper 10-11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x , Condition - bad.

Author : Bhattojidiksta

The Work : Siddhāntakaumudī - a well known and widely used grammatical work .

BEGINS :

एष जामातृभ्रात्रादयः ना नरैः नरः हेनः ।।
नृ च ।। नृ् इत्यस्य नामिवादीर्घः नृणंनृणाम्।।

ENDS :

इति चेति दीर्घे प्राप्ते ।। नभ कुर्द्दगं ।। मस्त्व कुर्द्दगे श्चोपधायादीर्घो न स्यात् ।।

15197

सिद्धान्तकौमुदी

Siddhāntakaumudī

Foll- 81 , 12.2 x 25.7 Cms, paper 10 to 11 lines on a page Devanāgarī Script, Age -x , Scribe -x , Condition -good.

Author : Bhaṭṭojīdīkṣta

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिमाष्य च ।
वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीयं विरच्यते ।।

ENDS :

स्तुतिनिन्दाफलकमर्थवादवचनमधिकार्थवचनं तत्र कर्त्तरिकरणयोस्तृतीया कृत्यैः ।।

COLOPHON :

15207

सिद्धान्तकौमुदी

Siddhāntakaumudī

Foll- 151, 13.7 x 29.6 Cms, paper, 10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , condition good.

Author : Bhaṭṭojidīkṣta

The Work : Siddhāntakaumudī - a grammatical work of the school of pāṇini composed by Bhaṭṭojidīkṣta. our ms. contains only pūrvārdha.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाष्य च ।
वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीयं विरच्यते ।। १ ।।

ENDS :

अभिव्यक्तौ साहचर्येणेत्यर्थ योगविभागादन्यत्रापि द्वं द्वं इष्यते ।। इति द्विरुक्त प्रक्रिया ।।

CLOLOPHN :

इति श्री भट्टोजी दीक्षित विरचितायां सिद्धान्त कौमुद्यां पूर्वार्द्ध समाप्तमिति ।।

150209

सिद्धान्तकौमुदी

Siddhāntakaumudī

Foll- 174, 11 x 30 Cms, paper , 10 lines on a page , Devanāgarī script, Age - x , Scribe - x , Condition - good , water stained.

Author : Bhaṭṭojidīkṣta

The Work : Siddhāntakaumudī - a well known work on grammar.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
श्रौत्रार्हती चरणे गुण्यैर्महर्पिभिग्हर्द्दिवम् ।
तोष्ट्यमानोप्यगुणो विभुर्विजयतेतगं ।। १ ।।
पूर्वार्धे कथितास्तुर्यपञ्चमाध्यायवर्तिनः ।
प्रत्यया अथ कथ्यन्ते तृतीयाध्यायगोचरः ।। १ ।।

ENDS:

शुक्लः पटः शुक्लापटी शुक्लं वस्त्रम् । कृत्याश्च । करणाधिकरणयोर्ल्युट् । सर्वादीनिसर्वनामानि । स्पष्टार्थे यंत्रिसूवी ।।

15202

सूत्रपाठ

Sūtrapāṭha

Foll- 10, 11 x 31,Cms, paper, 5 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe-x , Condition -good.
Author : not mentioned.
The Work : Sutrapāth a work on grammer.
BEGINS :

।। श्रीसरस्वत्यैनमः ।।
संज्ञा च परिभाषा च विधिन्नियम एव च ।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विध सूत्र लक्षणम् ।। १ ।।
सूर्यसप्तशतं यस्मै ददौ साक्षात्सरस्वती ।
अनुभूतिस्वरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः ।। २ ।।
प्रणम्यपरमत्माने बालधीवृद्धि सिद्धये ।
सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नाति विस्तराम्।। ३ ।।
इन्द्रादयोपियस्यांतं न ययुः शब्दवारिधेः ।
प्रक्रियांतस्यकृत्स्नम य क्षमो वक्तुंनरः कथम् ।। ४ ।।

ENDS :

प्लुतः लोकाच्छेषस्य ।

COLOPHON :

इति सूत्रपाठ समाप्तः । श्रीरामानुजाय नमः । ॐ नमः ॐ नमो भगवते नमः ।।

15210

षट्कारकप्रबोधनी

Ṣaṭkārakaprobodhanī

Foll- 27, 11 x 27.5, Cms , paper , 6 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1928 samvat, Scribe- x , Condition- good.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।
हिमचन्दनकुन्देंदुकुमुदाम्भोजसंन्निभाम् ।
सरस्वतीं नमस्कृत्य क्रियते वालबोधनी ।।

COMM.

अस्यार्थः मया ग्रन्थकारेण बालवोधनी प्रक्रिया क्रियते । किं कृत्वा सरस्वतीं नमस्कृत्य सरस्वतीं किं भूतां हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमदांभोजसन्निभां हिम तुषारं चन्दनं मलयं (इ) कुन्दश्चन्द्रमा कुमुदहल्लकं अम्भोजं पद्म एतत्समानवर्णां सरस्वतीं नमस्कृत्येत्यर्थः ।

ENDS :

इति सर्वत्र चतुर्थी वा शिष्या पुष्पमत्र कुशलं सखार्था हितै रिति चतुर्थी षष्ठी भवतः ।

COLOPHON :

इति षट्कारक प्रक्रिया समाप्तम् शुभमस्तु सम्वत् १९२८ ।

कोश
Kośa

15221

अनेकार्थ ध्वनिमञ्जरी

Anekārtha dhvanimañjarī

Foll- 16, 10x26 , Cms, paper 9 to 12 Lines on a page, Devanāgarī Script , Age -x , Scribe - x , Condition - bad.

Author- Amarasiṃha

The Work :

BEGINS :

श्री गणेशाय नमः ।।
शद्वांभोधिर्पतोऽनन्तो कुतोप्यागम अव्ययात्
स्वानुबोधैकमानाय तस्मै वागात्मने नमः ।। १ ।।
सरस्वत्याः प्रसादेन कविर्वध्नाति यत्पदम् ।
प्रसिद्ध वा तात्प्रमाणं हि साधुषु ।। २ ।।

ENDS :

मासौ यौ चैत्रवैशाखौ तावेव मधुमाधवौ ।
ज्येष्ठाषाढ़ावुभौपक्षो तौ च शुकशुचीबुधै।। ५४ ।।

COLOPHON :

इत्यमरसिंह कृतौ अनेकार्थ ध्वनिमंजर्य्यां चतुर्थ काण्डः ।।

15212

अमरकोश

Amara kośa

Foll- 21, 15.2 x 29Cms, paper , 8 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1907 Samvat , Scribe- Giridhārīlāl , Condition - bad ,

warm eaten .

Author : Amar Siṃgh

The Work :

The Work : Amara kośa - a well known lexicone containing synonyms and homonyms in three kānds by Amar Siṃha each kand is divided in to different vargas. Thefirst kānd contains 12 vargas, The second 10 vargas

and the third 5 vargas. The whole work consists of about 1550 verses . The author states in the preamble that he has summarized several lexicons in this work . The exact date of Amara Siṃgh still remains uncertain but most of scholars fix him in the fifteen A.D. as acontemporary of Kālidāsa

BEGAINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

यस्य ज्ञानदया सिन्धोरगाधस्यां ।

ENDS:

COLOPHON :

15218

अमरकोश–प्रथम काण्ड

Amarkośa-Pratham kāṇḍa

Foll- 20, 10 x 26 Cms, paper, 8- 14 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good , Ink stained.

15217

अमरकोश

Amarkośa

Foll- 83 , 11 x 31 Cms, paper , 9 to 11, lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe- x , Condition - bad.

BEGINS :

16- Decorated page of Bhāgvat purāna Ms. No. ST. 20176

15216

अमरकोश

Amarkośa

Foll- 39, 12 x 23.2 Cms, paper, 8 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1614 śaka samvat . Scribe-Rāmakṛṣṇa, Condition -bad .

BEGINS :

।। ॐ श्री गणेशाय नमः ।।
विशेष्यनिहनै संकीर्णनाथा ....

ENDS :

COLOPHON :

15213

अमरकोश द्वितीय काण्ड

Amara kośa (dvitīya Kāṇḍa)

Foll-46, 13 x 25.5, Cms , paper 9 to 11 lines on a page , Devanāgarī Scripts , Age - 1899, Scribe- Lālajīmala, Condition- bad

Aurhor : Amara Siṅha

15214

अमरकोश —द्वितीय काण्ड

Amara kośa - dvitīya kāṇdya

Foll- 39, 14 x 29 Cms, paper ,11 to 12 lines on a page, Devanāgarā Script , Age- 1873 Samvat, Scribe - Sivadatta, Condition- good, slightly- worm eaten.

Author : Amar siṅha

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः । श्रीसग्म्वत्यैनमः ।।

ENDS :

तद्वन्यदन्यतोव्रतावृत्वद्या लिंगातगेपिते ।। ४७ ।।

COLOPHON :

इश्नुर्गा ।। ३मसि कृतालि तु स भृ वि ड ती सा ए स र्धि ३१ भू दिती का सप्तम् संवत् १८७३ ।। लिखितं शिवदत्त खेडापतिः श्री ।। गा ।। स ।। य । ॐ नमः शिवायै ।। नमोनारायणाय ।। गिरधारीलाल शिवपार्वती सहाय ।

15219

अमरकोश—तृतीय काण्ड

Amarkośa -Tṛtīya Kāṇḍa

Foll- 103, 17.5 x 38.5 Cms , Paper , 10 to 15 lines on a page , Devanāgaī Script, Age- x , Scribe -x , Condition - bad.

Author : Amar siṅha

Commentator : Brhaspati or Rāyamukta

The Work : Amarkosapadacandrikā - this is one of the valuable commentory on the Amarakośa by Brhaspati who is popularly name Rāyamukta which is only his title awarded by his patron. The commentary is called padacandrikā

15220

अमरकोश — तृतीयकाण्ड

Amarkośa -Tṛtīya Kāṇḍa

Foll- 24, 11 x 26 , Cms, paper , 10to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x , Scribe - x , condition- good.

15215

अमरकोश — तृतीय काण्ड

Amarkośa -Tṛtīya Kāṇḍa

Foll- 17 , 13 x29.4 Cms,. paper, 14 to 16 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1907 Samvat , Scribe-Girdhārīlāla miśra Condition - good.

Author : Amar Siṅha

स्तोत्र

Stotra

8210

अठाईस नामा

Aṭhaisanāmā

Foll- 2 , 3-6x 6 Cms,. paper, 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

किं तु नाम सहस्त्राणि जपन्ते च पुनः पुनः ।
यानि नामानि दिव्यानि वक्ष्यामि केशव ।।

ENDS :

अमावस्या पूर्णमसी गंगाएकादशी तथा सन्ध्याकाले स्मरे नित्यं प्रातकाले तथैव च मध्याह्ने जपते नित्यं सर्वपापै प्रमुच्यते ।।

COLOPHON :

इति श्रीकृष्णार्जुने संवादे अठाईसनामा सम्पूर्णम् हरिम् ।

15377

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

Annapunāstotraṁ

Foll- 5 ,8 x 11.7 Cms, paper, 6 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1910 Samvat , Scribe - x , Condition- good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work :

BEGINS :

।। उँ श्रीगणेशाय नमः ।।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी ।
निर्धूता खिलघोरपावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ।।
प्रालेयाचलुवंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां देहि कृपा बलं वनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।। १ ।।

ENDS :

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्ये सिद्धयर्थे भिक्षाम् देहि च पार्वति ।। ११ ।।

COLOPHON :

इति शङ्कराचार्य विरचितं अन्नपूर्णास्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९१० वैशाख कृष्ण एकादश्यां भौमवार ।।

15388

अवधूत शतकम्

Avdhūtaśatakam̐

Folio 6, 9.5 x 20.5 cms, paper, 6 to 7 lines on a page - Devanāgarī Script , Age- x, Scribe- x, Condition - bad.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

कैलाश शिखरासीनं देवं पृच्छति पार्वती ।
लक्षणान्यवधूतस्य कथयत्तु मम प्रभो: ।। १ ।।

ENDS :

भवेद्योग सिद्धं भ्रूवोमान............. प्रसादात् ।। १० ।। इति

COLOPHON :

15289

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

Ādityahṛdayastotram̐

From -Bhavisyottarpurāṇa (भविष्योत्तरपुराण)

Foll- 24, 9 x 15.4 , Cms, paper, 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x , Scribe- x ,Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : Ādityahṛdayastotram - a hymn in praise of Āditya from the Bhavisyottarpurāṇa in 64 stanzas.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

शतानीको उवाच
कथं आदित्यमुपतिष्ठेत्सनातन: ।।

एतन्मे ब्रूहि विपेन्द्र प्रपद्ये शरणं तव: ।। १ ।।
शुभंतोवाच ।

ENDS :

उदयगिरिमुपेतं भास्करं पद्महस्तं सकलभुवन नेत्रं रत्नरत्नोपमेयम् ।
तिमिरक मृगेन्द्र वोधकं पद्मिनीनां सुरनर... भिवदै सुन्दरं विश्वरूपम् ।।
६४ ।।

COLOPHON :

भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आदित्यहृदयस्तोत्रम् संपूर्णम् ।।

15319

आदित्यहृदय स्तोत्रम्

Ādityahṛdaya Stotraṁ

From - Ārṣa Rāmāyaṇa (आर्ष रामायण)

Foll- 10, 9 x 13.3 Cms, paper, 6 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1931 Samvat , Scribe - Devṣdatta, Condition - good, slightly worm eaten.
Author : not mentioned.

BEGINS:

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ आदित्याय नमः
ततो युद्धपरिश्रांतं समरे चिन्तया स्थितम् ।।
रावणं जाग्रतो दृष्टवा युद्धाय समुपस्थितम् ।। १ ।।
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणे ।।
उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवाँस्तदा ।। २ ।।
राम राम महावाहो शृणु गुरवं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन्वत्स समरे विजयिष्यसे ।।
आदित्यहृदयं पुरा यं सर्वशत्रु विनाशनम् ।। ३ ।।

ENDS :

अथ रविरवदन्निरीक्ष्यं रामं मुदितमना: परमं प्रहृष्यमाण: ।
निसि(श)चरपति संक्षयं विदित्वा सुरगणमध्य गतो वचस्त्वरेति ।। ३१ ।।

COLOPHON :

इत्यार्ष रामायणे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् ।।
१९३१ ।।

प्रथम आषाढ शुक्ल ८चन्द्रे— देवीदत्तस्य लिखितं
अंगनलालस्य पाठार्थ शुभम् ।

15293

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

Ādityahṛdayastotram̐

From -Bhavisyottarpurāṇa (भविष्योत्तरपुराण)

*Foll- 22, 11 x 22.5, Cms, paper, 7 lines a page,
Devanāgarī Script , Age - x, scribe - x , Condition -good ,
slightly worm eaten.*

Author : not mentioned.

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्रीसरस्वत्यै नमः ॐ सूर्याय नमः ।।

शौनक उवाच—

कथमादित्यमुद्यतमुपतिष्टे द्विजोत्तमः ।
एतन् मे ब्रूहि विप्रेन्द प्रपद्ये शरणं तव ।।

सूत उवाच—

इममर्थ पुरा कृणं शंखं चक्रगदाधरम् ।
प्रणम्य शिरसां देवमर्जुनेन महात्मनः ।। १ ।।

ENDS :

ॐ नमो धर्मनिधानाय नमस्ते कृतसाऽक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः ।। १२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्री आदित्यहृदय
स्तोत्रं मन्त्रम् संपूर्णम् ।

15272

आनन्दलहरी

Ānāndalahrī

Foll- 63 , 14.4x 29-5 Cms, paper 9 to 12 lines on a page, Devanāgarā Script , Age - 1910 Samvat, Scribe - x , Condition - bad.
Author : Śaṅkarācārya
The Work :
BEGINS :

।। श्री महामंगलमूर्त्तये गणेशाय नमः ।।
वारंवारमुदारं सुस्मितमुखं सिक्थोपरि स्थापितम् ।

ENDS :

नरैः साधकैस्तान्कुर्वीत कवीन्नृपेन्द्र ।
मुकटा संधृष्टं पादांबुजान् ।। १०५ ।।

COLOPHON :
इति श्रीशंकराचार्य विरचितानन्दलहरी समाप्ता ।श्री शुभम् भूयात् ।। इत्यानन्दलहरी टीका समाप्तिमगमत् संवत् १९१० शाके १७५५ आषाढ़ कृष्णाष्टमी भौमे ।

15403

आदिभवानीपटलम्

Ādibhavānīpaṭalaṃ

Foll- 12, 9.5 x 22.5 Cms , Paper 6 line on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x , Condition - good.
Author : not mentioned.
BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
कैलासं अचलकूटस्थं देवदेवं महेश्वरम् ।
चन्द्रार्धमौलिन्दुं नदीनीरांचित जटाधरम् ।

हिमकुन्देन्दु धवलं सूर्येन्दु.......ने क्षणम् ।
पन्नगभरणोपेतं मुण्डमालाविभूषितम् ।
गजचर्मपरिधानं भस्मभूषितमस्तकम् ।।

ENDS :

इत्येवं साधकः कुर्यात्प्रयोगानां च साधनम् ।
येन काली पदं याति साधको मन्त्रसाधकः ।।
इतीदं पठ्यते गुह्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।।
तवभक्तया मया ख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।

COLOPHON :

इति श्रीरूद्रयामलतन्त्रे श्री आद्यभवानी पटलम्।

15405

इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

Indrākṣī stotraṁ

From - Skanda purāṇa (स्कन्द पुराण)

Foll- 2, 10.5 x 23 cms, paper 8-9 lines on a page, DevanŚgari Script, Age - x, Scribe- x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work : Indrākṣī stotram - professing a part of Skanda Purāṇa, Complete in 16 stanzas . The introductory portion giving information about ṛṣi metere etc.

BEGINS

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिरनुष्टुप् छन्दः ।। इन्द्राक्षी देवता ।। लक्ष्मी बीजं भुवनेश्वरीशक्ति ।। माहेश्वरीतिकीलकं ।। इन्द्राक्षी स्तोत्रं जपे विनियोगः अथ करन्यास।। ॐ इन्द्राक्षी अंगुष्ठाभ्यां नमः ।।

ENDS :

सकामो यो जपेत्स्तोत्रं तदापूजा कुमारिका ।।
पंचकैर्वा दशादिनैःरतः सिद्धिः प्रजायते ।। १४ ।।
आर्ति गृहे प्राप्तश्च ....रान्निर्यदा जपेत् ।
दिवसत्रयमात्रेण लभते नात्र संशयः ।। १५ ।।
एवं संपूज्य इन्द्राक्षीं इन्द्रपरमात्मनः ।

पदंलब्धवा इतो पुत्रान् भगवत्या प्रसादतः ।। १६ ।।
।। इति इन्द्राक्षीस्तोत्रं दिव्यमन्त्रं संपूर्णम् ।।

15391

उड्डीश
Uḍḍīśa

Foll- 21, 12 x 30.2 Cms, kpaper 8 to 11 lines on the page , Devanāgarī Script , Age - x, Scribe -x , Condition- good, water stained.
Author : not mentioned.

The Work : Uḍḍīśa - a tantra of the kaula class, treating of sorcery of different kinds.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
उड्डीशे च समाकीर्णे योगविन्दे समाकुले ।
प्रणम्य शिरसा गौरी परिपृच्छति—शंकरम् ।। १ ।।
विशेषेण तु तत्सर्वंकथयस्व मम प्रभो ।
अन्येपि विविधा कार्या मन्त्रानस्तु ब्रूहि भैरव ।। २ ।।
ईश्वर श्रोतुमिच्छामि लोकनाथ जगत्प्रभो ।
प्रसादं कुरु मे देव ब्रूहि कर्मार्थ साधनम् ।।३ ।।

ENDS :

ॐ उं कण्ठः ।।
अनेन विल्वकाष्ठकीलकं दशांगुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितम्।
यस्य गमेनाम लिखितानि लिप्यते सपरिवार सहितो प्रेतो भवति ।।
उद्वते नमो क्षः ।।
ॐ हं हं अमुकं ठं ठं ठं ।। लोह त्रिशूल कृत्वा विष रुधिर लिप्तं अयुतेनभिमतं ।।

15434

कार्त्तावीर्याजुनमालामन्त्रकवचम्

Kārtāvīryārjunamālāmantrkavacam̐

From- Ḍāmaratantra (डामरतन्त्र)

Foll- 23, 10 x15.3 Cms, Paper, 6 to 9 lines on a page Devanāgarī script , Age -1917 Samvat, Scribe-x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ऊँ श्रीगणेशाय नमः ।।

देव्युवाच — देवाधिदेव सर्वज्ञ सर्वलोकहितेरत ।

केन रक्षा भवेन्नृणां भीतानां विविधापदि ।। १ ।।

राजा चौरादि पीडास्तु शस्त्रग्निविषपातने ।

भारीदुःस्वप्न पीडास्तु ग्रहरोगभयेषु च ।। २ ।।

ENDS :

द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ।

सम्पदाअस्य जायन्ते जनालस्य वशे सदाः ।। १६५ ।।

Colophon :

इति उडामर तन्त्रे उमामहेश्वर संवादे श्री कार्त्त्विीर्यार्जुनमालामन्त्रकवच संपूर्णम् कार्त्तवीर्याजुनायनमः संवत् १९१७ मार्ग कृ. १ गुरौ शुभं भूयात् श्रीरस्तु ।

15380

कालभैरव स्तोत्रम्

Kālabhairavastotram̐

From : Kāśīkhaṇḍa (काशी खण्ड)

Foll- 4, 8 x 14, cms, paper, 7 to 8 lines a pege, Devanāgarī script, Age- x , Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ महासिद्धिकरं भैरवाष्टकमभीष्टकर्म महासिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।। ॐ अस्य श्री कालभैरवस्तोत्र मंत्रस्य अगस्तये ऋषिं रूद्रोदेवता अनुष्टुप् छंदः अंग विनियोगः ।। ॐ कं अंगुष्टाभ्यां नमः ।।

ENDS :

भैरावाष्टकमिदं पुण्यं षष्ठमास पठेन्नरः ।
सयाति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ।। १० ।।

COLOPHON

इति श्रीकाशी खण्डे काल भैरव स्तोत्र समाप्तम् ।

15372

गङ्गाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

Foll- 3 , 11 x15 , Cms, paper , 7 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good .

Author : Śaṅkarācārya

The Work : Gaṅgāṣṭakam - a hymn in praise of the Gaṅgā in eight stanzas. Composed by Śaṃkarācārya.

BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः । श्रीनारद उवाच

वासुदेवं हृषीकेशं गमनं जल शायनम् ।।

ENDS :

Damaged

COLOPHON :

श्रीमद्शङ्कराचार्य विरचितं गङ्गाष्टकं समाप्तम् ।

15372

गङ्गाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakaṁ

Foll- 1 , 11 x 15 Cms , paper, 7 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The work :

BEGINS :

गङ्गातीरे गते: पापं गङ्गा च शिवमास्ते ।।
सर्वत्र गामिनी गङ्गा हरिगङ्गा नमोस्तुते ।।

ENDS :

गङ्गा वैस्त्र विमूर्ति ब्रह्ममूर्ति सरस्वति रेवा च च संकीरी मूर्तित्रयो रेवा च संकीरी मूर्त्ति त्रियो देवा वात्रया नदी ।। ८ ।।

COLOPHON :

इति श्रीगङ्गाष्टकं स्तोत्रं समाप्तं सम्पूर्णम् ।।

20173

गंगाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakaṁ

Folio 3 , 13 x 15 Cms, paper, 10 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - Good.

Author : Vālmīki

The Work : Gaṅgāṣṭakam - a hyman in praise of the Gāngā in eight stanzas. composed by Vālmīki.

BEGINS :

।। ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नम: ।।

ॐ माताशैलसुता सयत्नवसुधा श्रृंगारहारावली स्वर्गारोहिणि वैजयंती भवति भागीरथी प्रार्थये त्वत्तीरे वसतस्त्वदंवु पिबतस्तव बीचिषु प्रेषित: स्त्वन्नामस्मरत् ।।

ENDS :

प्रभाते वालमीकिनां विरचितं शुभदं मनुष्यः
प्रक्षाल्य गात्रकलिकलमलं यं कमाशु मोक्षम्
लभेत्य तत नैव तरो भवाद्यौ ।।

COLOPHON :

प्रभाते वालमीकिनां विरचितं..................इति श्रीगङगाष्टकं समाप्तम् ।।

15309

गङगाष्टकम्

Gaṅgāṣṭakam̐

Foll- 1, 11.5 x 20 Cms, paper , 12-13 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- bad.

Author : Kalidāsa

BEGINS ;

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

कत्यक्षीणि करोटयः कति कति द्वीपि द्विपानां त्वच
काकोलाः कति पन्नगाः कति सुधायाम्नश्च खंडाः कति ।
देवि त्वञ्च कति त्रिलोकजननी त्वद्वारिपूरोदरे
मज्जज्जन्तु कदम्बकं समुदयत्येकैकमादाय यत् ।। १ ।।

ENDS :

श्लेषमश्लेषणायांगते मतविले कामाकुले व्याकुले
कंठे घर्धरघोषघोरममिले काये च सम्मीलति।।
यां ध्यायन्नपिभारभंगुरतरः प्राप्नोति मुक्तिं नरः ।
सा नश्चेतसि जाह्नवी निवसतां संसार संताप् हत् ।।

COLOPHON :

इति श्रीकालिदास विरचितं गङ्गाष्टकं समाप्तम् ६६६

15372

गंगासहस्रनाम

Gaṅgāsahasranāma

From - Skanda purāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 32 , 11 x 15 Cms , paper , 7 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1878 Samvat , Scribe-x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work : Gaṅgāsahasranāma - a hymn in praise of Gaṅgā in 95 stanzas said to from the kāśikhaṇḍa of the Skandapurāṇa.

BEGINS : ------

ने चतीर्थानि --------

ENDS :

गंगास्नान प्रतिनिधिस्तोत्र मे तन्मयेरितम्।
सिस्ना सुजाह्न्वी तस्मादेततस्तोत्रं जपेत्सुधीः ।। ९५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कदपुराणे काशीखण्डे गङ्गा सहस्रनामैकोनत्रिंशतिमोध्यायः।। सं. १८७८ सर्व सं. ३२ ।।

15267

गङ्गामाहात्म्य

Gaṅgāmāhātmya

Foll- 24, 12 x 27.5 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page Devanāgarī Script, Age-x , Scribe -x, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work : Gaṅgāmāhātmya - a hymn in praise of Gaṅgā.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

नत्वा तातपदाब्जरेणु निचया स्तत्वावबोधाक्षमाम् ।
सूरी भूरिमतिश्च शास्त्रनिपुणा ....पुराणान्यथ ।।
नित्यं तत्परिशीलनादिति सित पानत्वा सतां प्रीतये गङ्गा ।
गङगावाक्यं मनोज्ञ मौक्तिमयीं मालेयमातन्यते ।। १ ।।

ENDS :

गङ्गास्नानात्परो लाभः क्वचिदन्योन्न विद्यते ।
तस्माद्गंगामुपासीन गंगैव परमः पुमान् ।।
तीर्थमत्यन्तप्रसशंति गङ्गा तीरे स्थिताश्रमे ।
गङ्गान............मन्यंते ते स्यु र्निरयगामिनः ।।
वशिष्ठ गर्ग सहस्राणि गंगां रक्षन्ति सर्वदा ।।
अभक्तानां च पापानां ते वा विघ्नं प्रकुर्वते ।

COLOPHON :

इति श्री गङ्गामाहात्म्ये चत्वारिंशत्प्रकरणं सम्पूर्णम् ।
श्रीरामायनमः ।।
यादृशं पुस्तकं दृष्टां तादृशं लिखितं मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।
श्रीरस्तु ।। श्रुभम् ।। ६ ६

15468

गङ्गालहरी

Gaṅgālahrī

Foll- 30, 7.2 x 10.5 Cms, paper 5 to 6 lines on a page, Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - Durgādatta miśra , Condition- good.
Author : Jagannātha paṇḍitarāja
The Work : Gaṅgālahrī- a hymn in praise of Gaṅgā..
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

समृद्धं सौभाग्यं सकल ..... सुधाया किमपितन्
महेश्वर्यं लीलाजनित जगतः खण्ड परशोः ।
श्रुतीनाम् सर्वस्वं सुकृतमंथ मूर्त्तिं सौन्दर्य्यं ते सुधा सलिलम् ।।

ENDS :

इमां पीयूषलहरीं जगन्नाथेन निर्मितां यः पठेत्तस्य सर्वत्र जापन्ते जय सम्पदः ।। ५३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमन्महापण्डितराजत्रिश्रूली जगन्नाथेन विरचिता गङ्गालहरी समाप्तिमगमत् श्री गंगायै नमः दुर्गादत्तमिश्रेणलेखि श्री गङ्गार्पणं भवतुतराम् ।।

15310

गजेन्द्रोपाख्यान

Gajendropākhyāna

Foll- 13 , 9 x 20 , Cms, paper , 6 lines on a page , Devanāgarī script, Age - x , Scribe- x , Condition- bad, worm eaten.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

उवाच—

आसीद्गिरिवरोराजंस्त्रि कूट इति विश्रुतः
क्षीरोदेनावृतः श्रीमान् यो जनैयुतमुच्छ्रितः ।। १ ।।

ENDS :

गङ्गा सरस्वती नंदा कालिन्दी सितवारिणीम् ।
ध्रुवं ब्रह्मऋषीन्सप्त पुण्यश्लोकाश्च मानवान् ।। २३ ।।
उत्थायापर रात्रौ ते प्रयताः सुसमाहिताः स्मरन्ति ।
ममरूपाणि मुच्चयन्ते चेत् नमो खिलात् ।। २४ ।।
ये मांम स्तुवान्त्येते नांग प्रतिबुध्येनिशात्यये ।
तेषां प्रार...........ये चाहं ददामि विपुलां गतो ।। २५ ।।
श्रीशुक उवाच — इत्यादिश्यऋषीकेशप्रध्याय जल ।

COLOPHON :

15407

गणेश अष्टकम्

Gaṇeśa aṣṭakam̐

Foll- 7, 10.2 x 21.5 Cms, paper 7, lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x ,Scribe- x, Condition- good.

Author : Ṛṣi Vyāsa.

The Work : Gaṇesa astakam - a hymn in praise of lord Ganesa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

गणपतिपरिवारं चारुकेयूरहारं गिरिवरधरसारं योगिनी
चक्रवारम् ।
भवजलपारवारं दुःखदारिद्रयहारं गणपतिमभिवन्दे
वक्रतुण्डावतारम् ।। १ ।।
अखिलमलविनाशं पाणिनान्तं सुपाशं कनकगिरि–
निवासं सूर्यकोटिप्रकाशम् ।
भजत भयविनाशं मालतीतीरवासं गणपतिमभिवन्दे
मानसे राजहंसम् ।। २ ।।

ENDS :

कल्पद्रुमधं स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणि शुंडम् ।
विभ्राणमत्यद्भुतरूपं पठे.........ये तस्य समस्त सिद्धम्।। ८ ।।
व्यासाष्टकमिदं पुण्यं गणेशस्तवनम् ।
नृणां पठनात्दुःखनाशाय विद्यां श्रियमवाप्नुयात् ।।

COLOPHON :

इति श्री गणेशाष्टकम् समाप्तम् ।।
श्री गणपतये नमः ।।

15467

गायत्रीउत्कीलन

Gāyatrīutkīana

Foll- 2 , 10 x 16-5 , Cms , paper, 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - x, Scribe-x , Condtion- good.
Author- not mentioned
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ गायत्रीउत्कीलनं लिख्यते । ॐ अस्य श्रीगायत्री उत्कील मन्त्र जपे विनियोगः ।

ENDS :

कूर्मासनाय नमः । अनेन मंत्रेणासने उपविशेत् ऊर्द्धकेशी विरूपाक्षी मांसशोणित भोजनेतिष्ठदेवि शिखां बन्धे मुण्डे ह्य पराजिते अनेन शिखां बध्नीयात् ।।

COLOPHON :

15366

गायत्रीकल्प

Gayatrīkalpa

Foll- 20, 10.5 x 231 Cms, paper, 8-9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition - bad, worm eaten.

Authour : Not mentioned

The Work :

BEGINS :

ENDS :

COLOPHON :

15389

गायत्रीस्तवराजः

Gāyatrī Stavarājaḥ

Foll- 5, 11x21,Cms, paper, 5 to 7 lines on a page- Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x, Condition - bad.

Author : not mentioned .

The Work- Gāyatrī Stavarājaḥ - a hymn in praise of Gāyatrī with introductory information about ṛṣi etc.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अस्य श्री गायत्री स्तवराजस्तोत्रस्य महामन्त्रस्य विश्वामित्रः ऋषिः अनुष्टुप् छंदः गायत्री परमात्मा देवता सर्वोत्कृष्ट परं धामः
तत्सवितुर्वरेण्यं पादवीजं सर्वोत्कृष्ट परं धाम भर्गोदेवस्य धीमहीति द्वितीय पाठ शक्तिः ।

ENDS :
COLOPHON :

15313

गोपालसहस्रनाम

Gopālasahasranāma

Foll- 10, 12.5 x 15Cms, paper, 11-12 lines on a page , Devanāgrī Script , Age-x , Scribe- x , Condition- good slightly worm eaten.

The Work :

Gopālasahasranāma - a hyman in the praise of lard Kṛaṣṇa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ कैलाश शिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ।।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ।। १ ।।
त्वमेव पूज्यसे लोकैः ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः ।।
नित्यं पठसि देवेश कस्यस्त्रोत्रं महेश्वरः ।। २ ।।

ENDS :

COLOPHON :

15290

जानकीसहस्रनाम

Jānakīsahasranāma

From- Siddheśvaratantra (सिद्धेश्वर तन्त्र)

Foll- 18, 10x14 , Cms, paper , 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x, Scribe -x,Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work :

Jānakīsahasranāma -a hymn in praise of Jānakī from Siddheśvaratantra.

BEGINS :

...........प्ता सरोजाक्षी सकला सर्वरूपिणी ।
भक्तवाश्या महोग्रा च सर्वतन्त्र विशारदा ।। ६ ।।
धरात्मजा महामाया सिद्धिरूपी महोत्सवा: ।
रामचर्मणी भद्रा यज्ञोत्सव विभूषिता ।। ७ ।।

ENDS :

क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यस्तु धनलाभासद्यै: ।
शूद्रस्तु सुखमश्नुते ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम्।
इच्छा कामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममक्षयम् ।

COLOPHON :

इति श्रीसिद्धेश्वरतन्त्रे जानकीसहस्रनाम संपूर्णम् ।

15423

चण्डीकवचम्

Cṇdikavacam̐

From- Rudrayāmalatantra (रूद्रयामलातन्त्र)

Foll- 5, 11.5 x 16 cms, paper , 8 to 9 , lines on page,Devanāgarī, script, Age - x , Scribe - x Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।
ॐ नमश्चंडिकायै अधुनादेविवक्ष्येहं कवचं ।
मन्त्रगर्भकं दुर्गाया: सारसर्वस्वं कवचेश्वर संज्ञकम् ।।१ ।।
परमार्थप्रदं नित्यं महापातकं नाशनम् ।
योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम्।। २ ।।

ENDS :

इदं रहस्यं परमं चण्डी कवचमुक्तमम् ।
गुह्यातिगुह्यतमं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।। ४ ।।

COLOPHON :

इति रूद्रयामलतन्त्रे चण्डीकवचम् ।।

15424

चण्डीपटलम्

Caṇḍīpaṭalaṁ

From- Rudrayāmalatantram **(रूद्रयामलतन्त्र)**

Foll- 11, 11.5 x 16.3 Cms, paper, 19 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1908 Samvat , Scribe - x
Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
नवार्णपटलं वक्ष्ये सर्वाभीष्टप्रदायकम् ।
वश्यादि षट् प्रयोगेषु विधिनास्वष्टपदम् ।। १ ।।
सदा मन्त्रोच्चारं प्रथमतो न वाण्याः करोम्यहम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण नृणां ज्ञानं प्रजायते ।। २ ।।

ENDS :

अभीष्टसिद्धये त्वत्र जपेत् विनियोगत ।
ध्यानयुक्तं महेशं हि सर्व कामफलप्रदम् ।।

COLOPHON :

इति रूद्रयामलतन्त्रे चण्डीपटलम् ।।
संवत् १९०८ ज्येष्ठ सित त्रयोदशी वुधे श्री ।।

15425

चण्डीस्तोत्रम्

Caṇḍīstotraṁ

From- Rudrayāmalatantram **(रूद्रयामलतन्त्र)**

Foll- 4, 11.5 x 16 Cms, paper 8-9 line on a page. Devanāgarā script, Age - 1907 samvat , Scribe - x
Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। अथ स्तोत्रम् ।। भैरव उवाच ।।
अधुना देवि वक्ष्यामि चण्डीस्तोत्रं मनोहरम् ।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्व सारस्वतपदम् ।। १ ।।
दुर्गातीर्थममुं पुरा यं साधकानां जयप्रदम्।
चण्डिकायांगभूतं च स्तोत्रराजं परात्परम् ।। २ ।।

ENDS :

श्रीभैरव उवाच । इदं रहस्यं परमं चंडी सर्वस्वमुत्तमं पञ्चांग वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।। १७।।

COLOPHON :

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे चण्डीस्तोत्रं संपूर्णम् ।।
समाप्तश्चरुद्रा पञ्चांग ।
ध्यानं रक्तां चतुर्भुजो वामे त्रिशूलं दक्षिणे कुशम्
वरदाभय हस्तां च सिंहासीनां सुभाषिताम् ।।
वश्यति त्रिभुवनं साधकस्य हितैषिणाम् ।
नवकोटि शक्ति सहितां नवार्णतां सदा भजेत ।। २ ।।
श्री संवत् १९०७ आषाढ़ कृष्ण द्वितीय बुधवासरे ।।

15276

चण्डीस्तोत्रम्

Caṇḍīstotraṁ

From- Mārkāṇḍeya purāṇa (मार्कण्डेय पुराण)
Foll- 16 , 15.3 x 27-5 Cms, poaper, 12 to 14lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1884 Samvat ,
Scribe - x , Condition - good , slightly worm eaten .
Folio- 2 & 3 are missing .
Author : not mentioned
Commentator : Nāgojībhaṭṭa

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

सामंविधिं ब्राह्मणोपायः कामयेत् । ....पुनर्भवं कामम् वाधिकृत्य तदानुसंधेयोऽस्या मन्त्र मुक्तः रात्रिं प्रपद्ये पुनर्भूमयो भू ।

कन्यां शिखंडिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिणीमादित्यश्चक्षुषे वात: प्राणाय सोमो गन्धर्वपि: स्नेहाय मनोज्ञानाय ----- धिव्यै शरीरामिति ।।

ENDS :

अर्गलाकीलके श्लोका अष्टविंशति: ।। २८ ।। अथो इहास्य त्रयस्य त्रयोध्याया: ।।

COLOPHON :

इति श्रीमदुपाध्याय नामक शिवभट्टसुत सतीगर्भज नागोजीभट्ट कृत मार्कण्डेयपुराणांतर्गत सप्तशताख्य चण्डीस्तोत्र व्याख्याने चण्डीस्तोत्र प्रयोगविधि: समाप्त: । संवत् १८८४ मार्गकृष्ण नवमी भौमे श्रीश्री भगवत्यैभक्त मनोरथ पूरिणयै नमो नम: ।। श्रीरस्तु ।। छ छ छ ।।

15422

चण्डीसहस्रनाम स्तोत्रम्

Caṇḍīsahasranāmastotram̐

From- Rudrayāmalatantram **(रूद्रयामलतन्त्र)**

Foll- 20, 11.5 x 16.5 Cms, paper , 8 to9 lines on a page , Devanāgarī script, Age- x, Scribe- x, condition- good.
Author- not mentioned.
TheWork :
BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नम: ।।

।। देव्युवाच ।।

भगवन्सर्वधर्मज्ञभक्तानामभयंकर:
पुरा मे यत्त्वया दत्तोवर: कैलासमानत:
परमाकृपया नाथ तन्मेदातुं क्षमो भव ।

ईश्वर उवाच :

सत्यमेतत्त्वया प्रोक्तं वरय पार्वति तं वरम् ।
प्रयच्छामि संसिद्धयै मनसा यदभीप्सितम्।।

ENDS :

शुद्धा युक्तो युक्ताय साधकाय महात्मने
स्वाचाराय सुशीलाय दत्वा मोक्षमवाप्नुयात् ।। ९० ।।

COLOPHON :

इति रूद्रयामले चण्डीसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् सं १९०७ ।

15281

देवीकवचम्

Devīkavacam̆

Foll- 16 , 10 x 20 Cms, paper , 5 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, Condition - good slightly worm eaten.
Author : Hariharabrahma
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मार्कण्डेय उवाच
यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्नकस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ।। १ ।।

ENDS :

देहांते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ।। ५३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीहरिहर ब्रह्मविरचितं देव्याकवचं संपूर्णम् ।। शुभमस्तु।।

8203

देवीकवचम्

Devīkavacam̐

Foll- 7, 9 x 22 Cms, paper , 7 lines on a page , Devanāgarī script, Age- x, Scribe- x, Condition- good, slightly worm eaten .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

मार्कण्डेय उवाच ।।

यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।

यन्नकस्यचिदाख्यातं तन्मेब्रूहि पितामह ।। १ ।।

ENDS :

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः

सरस्या (सरहस्य)र्गलोपेतां संपूर्ण फलम् कृते ।।

इति कीलकं संपूर्णम् ।।

शुभमस्तु लेखक पाठकयोः ।।

COLOPHON :

15358

देवीपंचरत्नस्तोत्रम्

Devīpañcaratnastotram̐

Foll- 2, 11.5 x 18 Cms, paper, 7 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age-x, Scribe -x , Condition - good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work : Devīpañcaratnastotram - a hyman in praise of Śakti devī

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

न मोक्षस्याकांक्षा भव विभववांक्षापि न च मे

नविज्ञानापेक्षाशशिमुखि सुखेच्छापि न दिवा

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातुमभवै

मृडानी रूद्राणी शिव—शिव भवानीति जपत् ।। १ ।।

ENDS :

परित्यक्ता देवाविविधविध:सेवा कुलतया
मयापश्चाशीतेरधिकमुपनीते . च वयसी
इदानीमप्यन्तस्तव यदि न मात: सकरूणां
निरालंवोलंवोदर जननिकयामि शरणम् ।। ५ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमच्छकराचार्य विरचितम् देवीपंचरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् शुभं भूयात् ।। राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।।

15454

देवीमाहात्म्य

Devīmāhātmya

From - Mārkaṇḍeya purāṇa (मार्कण्डेयपुराण)

Foll- 91, 8 :5 x 21 Cms, paper, 4 to 5 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x . Scribe- x , Condition - bad .
Author : Not mentioned
The Work :
BEGINS :
ENDS :
COLOPHON :

15304

द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रम्

Dyādaśapañjarikāstotraṁ

Foll- 4 , 10 x 21.2 Cms, paper , 6 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1778 Samvat , Scribe - Gosāigautamagiri, Condition- good, slightly worm eaten .
Author : Śaṅkarācārya.
The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालक्रीडति गछत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ।।
भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भजमूड्मते ।।

ENDS :

पुनरपि जननंपुनरपिमरणं पुनरपिजननी जठरेशयनम् ।
इह संसारे भव दुस्तारेकृपत्वं नायम् ।।
लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ।। ३ ।।
तदपिकिमर्थं क्रीयते (क्रियते) शोकः ।
भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दंभज मूड्मते ।। ४ ।।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचितं द्वादशपञ्जरिका स्तोत्रं संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। संवत् ।। १७७८ लिखितं गोशाई गौतम गिरिः ।। ६ ।। ६ ।। ६ ।। ६ ।। ६ ।।

15454

दुर्गापाठ

Durgāpāṭha

Foll- 91, 9 x 20.5 CMs, paper, 4 to5 lines on a page Devanāgarī Script, Age - x, Scribe - x, Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ मार्कण्डेय उवाच ....

ENDS :

COLOPHON :

15280

दुर्गासप्तशती

Durgāsaptaśatī

Foll- 53, 10x 22.5 Cms, paper, 7 to 8 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1967 Samvat. Scribe - x , Condition - bad .

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ENDS :

एवं देव्यावरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्य्याज्जन्मसमासाद्यं सावर्णिः भविता मनुः ऊँ॥

COLOPHON :

इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मनवन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ वैश्योर्वरप्रदानं माम् ॥ १३॥ दुर्गायै नमः ॥ १९६७ पौषसित द्वितीयामालेखि । शुभं भवतु लेखक पाठकयोः ॥

15279

दुर्गासप्तशती

Durgāsaptaśatī

Foll- 19 , 11 x 15 Cms, paper, 7 to 8 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good , slightly worm eaten.

Author : not mentioned.

The work :

BEGINS :

॥ श्रीरामचन्द्राय नमः॥
ऊँ नमश्चण्डिकायै

ऊँ अस्य श्री सप्तशती स्तवानमाला मन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिरनुष्टुप् छंदः ।
महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती देवता ॥

ENDS :

प्रथमं पठिते देव्याश्वमात्वा चैव शुभं भवेत् ।
शुचिद्दैव्यास्तदा भक्त्या जनो अभीष्ट फलं लभेत् ।। ७ ।।

COLOPHON :

इति भगवत्या स्तुति कीलकं समाप्तम् श्री ।

15371

दुर्गास्तुति कवचम्

Durgāstutikavacam̐

Foll- 27, 7 x 13.5 Cms , paper , 4 lines on a page ,
Devanāgarī script , Age -x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS:

।। ॐ श्रीमद्भगवत्यै नमः ।।
ॐ नमश्चंडिकायै ३ मार्कण्डेय उवाच ।
यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ।। १ ।।

ब्रह्मोवाच—

अस्तिगुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छ्रणुष्व महामुने ।। २ ।।

ENDS :

ऐश्वर्यं तत्प्रसादेन सौभाग्यरोग्य सम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ।। ४ ।।

COLOPHON :

इति देव्याः कीलकं संपूर्णम् ।। श्री देव्यै नमः ।।

15387

नवग्रहस्तोत्रम्

Navagraghastotram̐

Foll- 1, 17.5 x 25 cms, paper,9 to 11 lines on a page-
Devanāgarī Script , Age- x ,scribe- x,, Condition-
good,

Author : Veda vyāsa
The Work : Navagrhastotram in 12 stanzas ascribed to Vyāsa.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।। ॐ
जपा कुसुमसंकाशं काश्यपे य महाद्युतिम् ।
ध्वान्तार सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ।।१ ।।
दधिशंखतुषारावंक्षीरार्णवन्समुद्भवम् ।
नमामि शशिनं देव शंभोर्मुकुटभूषणम् ।। २ ।।

ENDS :

ऐश्वर्य्यमतुलं चैव आरोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।
नरनारी नृपाणां च भयदुःख प्रणाशनम् ।।
ग्रहनक्षत्र पीडायां तस्कराग्निर्भयेषु चः ।
एतानि ग्रह नामानि जप्तव्यानि समाहितैः ।। १२ ।।

COLOPHON :

इति श्रीवेदव्यास रचित सूर्यादिनवग्रहस्तोत्रं समाप्तम् ।।

15404

नवरत्नमाणिक्यस्तोत्रम्

Navaratnamāṇikyastotram̐
From Mārkaṇḍey saṃhitā

Foll- 5, 10.5 x 22.8,Cms, paper, 9-10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -x, Scribe -x, Condition-good slightly worm eaten.
Author : Hariharabrahma
The Work :
BEGINS :

श्रीमद्रामानन्द अनन्तानन्दयो जपन्।
ब्रह्म उवाच — हेम्नाभमरविन्द सुन्दर दृशं सौन्दर्यसद्वैभवाम् ।
मंद–मंद मनोहरीस्मितमुखीं मंदारमालान्विताम् ।।
कुंदेन्दु वर पाटलीसुरभिता वृन्दमुकैर्वन्दितां
वन्दे राघव सुन्दरीं त्रिभुवनैकांनन्द दीपांकुराम् ।। १ ।।

ENDS :

मञ्जरीरत्न परिशोभितं पाद पद्मे मन्दार चंपक
विराजिन्माल्यभूषै ।
कुंजातपत्र कमनीय विशाल नेत्रे देविं प्रसीद
रघुनन्दन वल्लभे माम् ।। ६ ।।
माणिक्य मञ्जरी पदारविन्दांरामार्कसंफुल्ल—
मुखारविन्दाम् ।।
आचार्य दामोदर पाद पद्मां देवीं भजे राघव
वल्लभाम् ।। ७ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमार्कण्डेय संहितायां हरिहरब्रह्म विरचितं नवरत्न माणिक्यं स्तवन नम पंचदशोध्यायः ।।

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

15321

नारायणहृदयस्तोत्रम्

Nārāyaṇahṛdayastotraṁ

From - Atharvaṇarahasya (अथर्वण रहस्य)

Foll- 10, 11 x 8 Cms, paper , 9to 10 lines on a page , Devanāgari Script , Age - x , Scribe -x , Condition- good.

The Work : Nārāyaṇahṛdayastotram - with the introductory information about the ṛṣi devatā etc. in 31 stanzas said to from the atharvaṇarahasya.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।।श्रीपरमात्मने नमः ।।

ॐ अस्य श्रीनारायणहृदयस्त्रोत्रं मन्त्रस्य मनुभार्गव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॐ नारायण परं ज्योतिरिति अंगुष्टाभ्यां नमः ॐ नारायणं परं ब्रह्मेति तर्ज्जनीभ्यां नमः ।।

ENDS :

लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत्सुधीः भृगुवासरे च रात्रौ तु पूजयेत्पुस्तकद्वयम्।। ३०।।

सर्वदा—सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधयेत्सुधीःगोपनीयात्साधनाल्लोके धन्योभवति तत्वतः ।।३१।।

COLOPHON :

इति अथर्वणारहस्ये उत्तरभागे नारायणहृदयस्तोत्रं संपूर्णम् ।

8210

निरञ्जनस्तोत्रम्

Nirañjanastotraṁ

Foll- 3, 3.6 x 6 Cms., Paper , 7 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

स्थानं नमानं न च नादबिन्दुं रूपं न रेखा न च धातु वर्णः ।

इष्टान इष्ट श्रवण न श्राव्यः तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनाय ।।

ENDS :

COLOPHON :

8210

निर्वाणाष्टकम्

Nirvāṇāṣṭakaṁ

Foll- 2, 3.6 x 6 Cms., Paper , 7 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work :

BEGINS :

मनोबुद्धिरहंकारश्चितादि नाहं न श्रोत्रं न जिह्वा न
च घ्राण नेत्रम् ।

न च व्योम भूमि न तेजो न वायुश्चिदानंद रूपं
शिवोहं शिवोहम् ।।२।।

ENDS :

निर्विकल्पो निराकाररूपं विभुर्व्यापी सर्वत्र शिवोदायणम् ।
सदासेवितं निर्मोक्ति बोधांश्चिदानंद रूपं शिवोहं शिवोहम्।।

COLOPHON :

इति श्रीमत्शङ्कराचार्य विरचितम् निर्वाणाष्टकं सम्पूर्णम् ।

15375

प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्

Pratyaṅgirā stotraṁ,

Foll- 19, 9.5 x 10 Cms., Paper , 7 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

सिद्धि: ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

......प्रत्यङ्गिरायै........... मंदिरस्थं.............सुखसीनं......... *etc.*

ENDS :

Damaged.

COLOPHON :

15369

प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्

Pratyaṅgirā stotraṁ,

From - Śūlatantra

Foll- 12 , 11 x 18.1 , Cms, paper, 6 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1942 Samvat , Scribe-x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रमहामन्त्रस्य वामदेवः ऋषिः अनुष्टुप् छंदः प्रत्यङ्गिरा देवता ह्रीं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः ॐ मन्दिरस्थं सुखसीनं भगवन्तं महेश्वरं उपसंगम्य चरणौ पार्वती परिपृच्छति ।। १ ।।

ENDS :

एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रात्यारणं ध्रुवम् महोत्पातं भवेत्तस्य तप्ततामग्रशलाकया नामुच्चार्यं शत्रोः सप्ताहान्तष्ट तद्बलम् ।

COLOPHON

इति श्रीशूलतन्त्रे महेश –गौरी संवादे प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।। सम्वत् १९४२ ।।

15379

बालग्रहस्तवः

Bālagrhastavaḥ

Follio 8, 14x6 cms, paper, 6 to 7 lines on a page, Devanāgari Scrtipt, Age - 1875 samvat , Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ बालग्रहस्तवः प्रयोगसारे
प्रणम्य शिरसा शान्तं गणेशानं तमीश्वरम् ।
बालग्रहस्तवं वक्ष्ये समस्ताभ्युदयप्रदम् ।। १ ।।

ENDS :

भवानीनाम संतुष्टाबालकं पांतु सर्वदा भूर्लोके च भुवर्लोके स्वर्लोके याश्चमातरः अधश्चोर्द्धवतिर्यक् च क्रीडन्त्योन्तमूर्त्तयः इंत्थंअनंतमूर्तयः प्रसन्नयोग सम्पन्ना दिव्यैश्वर्यसमन्विता स्वच्छंद पदपद संभूतै भैरवैः परिवारिताः रक्षंतु बालकं प्रीताः शान्तिं नयन्तु चेतसा दिव्यं स्तोत्रमिदं पुण्यं वालरक्षाधिकारकं जपेत्सन्तानरक्षार्थं बालग्रहोपशांतिदम् ।।

COLOPHON :

इति बालग्रहस्तवः सम्वत् १८७५ ।।

15381

भजगोविन्दस्तोत्रम्

Bhajagovinda stotram̐

Foll- 3, 105 x 15.5, cms, paper, 8 lines on a page- Devanāgarī Scribe, Age - x . Scribe- x, Condition - good.

Author : Saṅkarācārya

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भज मूढ़मते
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षतिडुकृञ् करणे ।। १ ।।

ENDS :

भज० कोऽहं कस्मात्कुत आयातः
का मेजननी कोमे तातः इति परिभाषितं संर्वत्य
.... स्वप्न विचारं बारं बारं ।। १४ ।।
भजगोविदं — भजगोविन्दं गोविन्दं भज मूढ़मते ।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचितं गोविन्दस्तोत्रं संपूर्णम् ।

8210

भजगोविन्दस्तोत्रम्

Bhajagovinda stotram̐

*Foll- 3, 3-6 x 6, Cms, paper, 9 to10 lines on a page-
Devanāgarī Scribe, Age - x .Scribe- x, Condition - good.
Author : Saṅkarācārya
The Work :
BEGINS :*

15361

भस्मगायत्री

Bhasmagāyatrī

*Foll- 13, 12 x 23 Cms, Paper ,8 line on a page
Devanāgarī Script, Age- x , Scribe - x, Condition - bad
The Work :
BEGINS :*

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। भस्मगायत्री ।।

*ENDS :
COLOPHON :*

15357

।। भीष्मस्तवराजः ।।

Bhīṣmastavarājaḥ

From- Mahābhārata (महाभारत)

*Foll- 11, 10 x 20 , Cms paper, 8 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script , Age- 1849 Samvat, Scribe- Bholābhārtī , Condition- good.
Author : Veda vyāsa.*

The Work :

Bhiṣmastavarājaḥ *- a hymn in praise of Bhiṣma in 86 stanzas. Said to from the śāntiparva of Mahābhārata.*

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। श्रीजनमेजय उवाच ।।
शरतल्पे श्यानास्तु भारतानां पितामहः ।
कथमुत्सृष्ट्वान्देहं कं च (व) योगमधारयत् ।। १ ।।
वैशम्पायन उवाच ।
शृणुष्वावहितो राजन् शुचि भूत्वा समाहितः ।
भीष्मस्तु कुरू शार्दूलदेहोत्सर्ग समाश्रयात् ।। १ ।।

ENDS :

स्तवराज समाप्तोयं भीष्मोद्भुतकर्मणः ।
गांगजेन पुरागीतो महापातकनाशनः ।। २६ ।।

COLOPHON :

इति श्रीमहाभारते शांति पर्वाणि भीष्मस्तवयंवरास्तव संपूर्णशुभमस्तु संवत् ।। १८४९ ।। फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां बासरे शुक्र लिखनार्थ भोलामारति ग्राम जसमौली ।।

15388

भैरवाष्टकम्

Bhairavāṣṭakaṁ

From- Bhairavatantra (भैरवतन्त्र)

Folio 6, 9.5 x 20.5 ,Cms, Paper, 6 to 7 lines on a page-Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x, Condition- bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ श्रीभैरवाष्टक स्तोत्रम् ।। मन्त्रस्य ईश्वर ऋर्षिः भैरव देवता अनुष्टुप् छंदः ममसर्वकामनासिध्यर्थे जपे विनियोगः ।। श्री कालिकायै नमः श्रीनाथादि गुरूत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवसिद्धेभ्यो वटुकत्रयं पदयुगं इति क्रमशंतवं ...।।

ENDS-

COLOPHON :

इति श्रीभैरवतन्त्रे ईश्वरपार्वती संवादे भैरवाष्टक स्त्रोतं संपूर्णम् ।।

15469

भैरवकवचम्

Bhairavakavacam̐

Foll- 10, 13.5 x 9 Cms, paper, 13 to 14 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x, Scribe-x, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। श्रीवटुकभैरवाय नमः ।।

ॐ अस्य श्री वटुकभैरवानामाष्टशतकस्य आपदुद्धारणस्ते । अस्य वृहदारण्यको ऋषिः शिरसि अनुष्टुप्छंदः । मुखे आप दुष्टाद्वार भैरवदेवता हृदये अष्टवाहु त्रिनयनमिति । वं शक्तिः ह्रीं कीलकं चतुर्विधपुरुषार्थ सिध्यर्थे राम साधने विनियोगः ।।

ENDS :

ध्यात्वा जपेत्सुसंदृष्ट । सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
एवं संश्रुत्य ततो देवि नामाष्टशतमुत्तमम् ।। ५६ ।।
भैरवस्यप्रसादेन संवर्तणं महात्मनः ।
जपापरया भक्ता तदा सर्वेश्वरी ।।

COLOPHON :

इति श्रीविश्वसारे भैरवकवचं संपूर्णम् शुभमस्तु । । राम राम ।

15084

मङ्गलाष्टकम्

Maṅglāṣṭakam̐

Foll- 1, 9.7 x 16.5 Cms., paper , 10 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age -1810 Samvat, Scribe - x , Condtion- bad, worm eaten.
Author : Kālidāsa
The Work : Maṅglāstakama - a hymn in eight stanza in praise of the leading hindu gods and Goddesses .
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ब्रह्मावेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्य्य दिवसपतिः
शक्रोदेवपतिर्यमः पितृपतिश्चंद्रश्च तारापतिः ।
वह्निर्यज्ञपतिः हविर्हुतपतिः स्कन्दश्च सेनापति एते वै
पतयः सर्वऐते समुद्रसहिताः कुर्बतु नो मंगलम् ।। १ ।।
नंदा नारद नर्मदा नग सुतां .... ।

ENDS :

मंगलं भगवान्विष्णुर्मगलं गरुडर्ध्वजः ।।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः ।। ८ ।।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ।।
मंगलं सर्वभूतानां भूमे र्भूपतेर्मगलम् ।।

COLOPHON :

इति श्रीकालिदास कृतं मङ्गलाष्टकं संपूर्णम् संवत १८१० ।

15439

मंगलस्तोत्रम्

Maṅgalastotram̐

Foll- 6 , 6.5 x 15.2 Cms, paper , 5 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x, Scribe- x ,Condition -good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ अस्य श्री मंगलस्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिरनुष्टुप्छंदो मंगलोदेवता भुवनेश्वरः शक्तिः । सकलपापऋणं क्षयार्थे धनहेतवे सुख सुतहेतवे जपे विनियोगः ।

मंगलो भूमिपुत्रश्च । ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः ।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ।।

ENDS :

सर्वदुष्ट विनाशाय अपराधं क्षमस्वमे ।
प्रार्थना लोहिताक्ष नमस्तुभ्यं महाकाय नमोस्तुते ।।
ग्रहादिश महीपुत्र मम शान्तिप्रदो भव इति ।

COLOPHON :

15414

मृत्युञ्जय मन्त्रभेद

Mṛtuñjayamantrabheda

From Rudrayāmalatantra (रूद्रयामलतन्त्र)

Foll- 15, 6.7 x 16 Cms, paper, 5 to 6 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1900 Samvat , Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGiNS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अद्येहेत्यादि अमुकस्य विद्यमानशरीराविरोधेनशदित्युपस्थित । जन्म वर्ष लग्नाद्यथास्थनस्थितः सूर्यादि नवग्रह संसूचिता । अखिलरोगाशेषारिष्ट प्रशमनं सर्वम दीर्घायुर्वलपुष्टिः प्राप्ति कामो। महामृत्यञ्ज्यमन्त्रस्याश्वत्थ मूलस्पर्श सहस्रसंख्याक जपंत ।

ENDS :

एवं षोड्श भेदास्तु मृत्युञ्जयमनोर्मताः तस्यै कस्यापि भेदस्य महिमा केन वर्णयते ।

COLOPHON :

इति रूद्रयामले विश्वसारोद्धार उमामाहेश्वर संवादे महामृत्यञ्जय मंत्र भेद कथनं नामौकोनपंचाशत् पटलः ४९ सं. १९०० ज्येष्ट सित २ बुधे ।

17418

मनोहरहनुमद्‌कवचम्

Manoharahanumadkavacaṁ

Foll- 8, 9.5 x 13 Cms, Paper, 7-9 Lines on a page- Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x ,Condition -good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अस्य श्रीपंचमुखी हनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः , हनुमत् परमात्मा देवता अनुष्टुप् छंदः सीतारामो देवता ।

ENDS :

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः ।
एकवारं पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रविर्वधनं ।
त्रिवारं तु पठेन्न्त्यिं सर्वसंपत्करं परम् ।
सप्तवारं पठेन्नित्यं इष्टकामार्थ सिद्धिदम्।
नववारं पठेन्नित्यं राजभोगं समारभेत् ।।
दशवारं त्रिसप्तवारं पठेत् कवचं स्मरणादेव
महाबलसमन्वितः ।

COLOPHON :

इति रामचन्द्रसीता मनोहर हनुमत्कवचं सम्पूर्णम् ।

8219

मल्लारि सहस्रनाम

Mallāri sahasranāma

From- Padmapurāṇa **(पद्मपुराण)**

Foll- 4, 18 x 47 ,Cms, paper , 15 lines on a page,
Devanāgarī Script , Age - x , Scribe-x , Condition- good.

Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
मल्लारिं जगन्नाथं त्रिपुरारिं जगद्गुरुम् ।
मणिघ्नं .....साकांतां वन्दे तं कुलदैवतम् ।
ॐ स्थितं कैलास निलये प्राणेशं लोकशंकरम् ।
उवाच शंकरं गौरी जगद्धित चिकीर्षया ।। १ ।।
पार्वत्युवाच ।।
देव देव महादेव भक्तानन्दविवर्धनम् ।
पृच्छामि त्वां परं चैकं दुःख दारिद्रयनाशनम् ।।

ENDS :

धर्ममर्थं च कामं च बहुधा कल्पितं मुदा ।
पठञ्श्रृण्वन्न वाप्नोति पाठयन्नपि मानवः ।। ८८ ।।
रोहिकं सकलं मुक्तः ततः स्वर्गमवाप्नुयात् ।
मुमुक्षुर्लभते मोक्षं पठन्निदमुत्तमम् ।। ८९ ।।
सर्वक्रतुफलं तस्य सर्वतीर्थफलं तथा ।
सर्वदानफलं तस्य मल्लारिर्येन पूजितः।। ९० ।।
मल्लारीति नामैकं पुरुषार्थप्रदं ध्रुवं ।
सहस्रनाम विद्यायाः कः फलं वेत्ति तत्वतः ।। ९१ ।।
वेदस्याध्ययने पुण्यं योगाभ्यासे च यत्फलं ।
सकलं समवाप्नोति मल्लारेर्भजनात्त्रयम् ।। ९२ ।।
तव प्रीत्यै मयाख्यातं लोकोपकृति कारणात् ।
सहस्रनाममल्लारेः किमन्यच्छोतुमिच्छसि ।। ९३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे शिवोपाख्याने मल्लारि प्रस्ताव मल्लारि प्रकृतिभाव शिवपार्वती संवादेमल्लारि सहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

15400

महाकालीसूक्त

Mahākālī sūskta

Foll- 5, 12.5 x 24 Cms, paper, 8 to 11 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x , Condition - good, water stained.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ब्राह्मेर्वा .... तोरपश्चिमतनोः संति कर्म साम्येतिः शेष पाश पटल हिदुरानि मेवा ....कल्याणदेशिक कटाक्ष समाश्रयेण कारुण्यतो भवति शाम विदेशिशिष्टा । । १ ।।

ENDS :

महाकाली सूक्तमृते पठेन्सप्तशतींनरः ।
दारूणं नरकं गच्छेत्सत्यं मेव्याहृतं शिवः ।। १४ ।।
महाकालीसूक्त अन्यश्च श्रूयतां देव सप्तसत्याहः फलं लभेत् ।
यस्य स्मरमात्रेण ब्रह्महत्याक्षयं व्रजेत् ।। १५ ।।

COLOPHON :

श्रीवक्त वीक्तं माम य श्रीभवानी शंकराभ्यान्न महाकाली सूक्त ।

15441

महामृत्युञ्जय कवचम्

Mahāmṛtuñjaya Kavacam̐

From- Rudrayāmalatantra (रूद्रयामालतन्त्र)

Foll- 5, 9.7 x 18.6 Cms., Paper, 6 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x, Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

पार्वत्युवाच — देवदेवमहादेव भक्तानुग्रहकारकम् ।
यदि तुष्टोसि देवेश वद मृत्युञ्जयाभिधम् ।। १ ।।
कवचं सर्वसिद्धिनां साधनं यत् परमाद्भुतम् ।
देहसिद्धि करं नित्यं महामृत्युनिवारणम् ।। २ ।।

शंकर उवाच :

ENDS :

आत्मानं शिवरूपं तु ध्यात्वा मृत्युञ्जयति ध्रुवम्
आत्मानं शिवरूपं तु ध्यात्वा मन्त्रशतं जपेत्
महारोगास्तु संस्पृष्टास्तारयेत्साधकोत्तम: ।।

COLOPHON – इति रूद्रयामलेमहामृत्युञ्जयकवचं सम्पूर्णम् ।

15413

महामृत्युञ्जयसहस्रनाम स्तोत्रम्

Mahāmṛtuñjayasahasranāma Stotram̐

From Rudrayāmalatantra(रूद्रयामलतंत्र)

Foll- 24, 8x 16.5 Cms, paper, 5 lines on a page- Devanāgarī Script, Age -1900 Samvat, Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

श्रीभैरव उवाच अधुना शृणु देवेशि सहस्राख्यं स्तवोत्तमम् महामृत्युञ्जस्यास्य सारात्सारोत्तमोत्तमं अस्य श्री महामृत्युञ्जयसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भैरव ऋषि: उष्णिक् छंद: श्रीमहामृत्युञ्जयो देवता ॐ बीजं भू शक्ति: स: कीलकं चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे जपे विनियोग: ।

ENDS :

षड्मुखस्यापिनोक्तव्यं गोपनीयं तथात्मन: ।
दुर्जनाद्रक्षणीयं च पठनीयमहर्निशम् ।। १२२ ।।
श्रोतव्यं साधकमुख रक्षणीयं स्वपुत्रवत् ।।

COLOPHON :

इति श्रीरूद्रयामले महामृत्यञ्जय सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत ।। १९०० । । शाके १७९५ ज्येष्ठ सिता अष्टमी सोमे ।। श्रीराम ।

15281

महास्तोत्रम्

Mahāstotraṁ

Foll- 7 , 10 x 20 Cms, paper , 5 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, Condition- good , slightly worm eaten .
Author : not mentioned.
The Work :
BEINGS :

जयन्ती मंगला काली भद्रकालीकपालिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ।। १ ।।

ENDS :

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
सरहस्यार्गलोपेतां संपूर्णफलम् लभते ।
इति कीलकं संपूर्णम् ।। शुभमस्तु राम ।

COLOPHON :

15274

महिम्नव्याख्या

Mahimnavyākhyā

Foll- 29 , 15.5 x 39 Cms, paper 12 to15 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x , Condition - good.
Author : Puṣpadanta
Commentator: not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ विश्वेश्वरं गुरुं नत्वा महिम्नाख्यास्तुतेरयम् ।
पूर्वाचार्यैर्कृतव्याख्या संग्रहः क्रियते मया ।। १ ।।

एवं किलोपाख्याते कञ्चितिकालं गंधर्वगजः कम्य
चिद्राज्ञः प्रमदावनं कुसमानि हग्न्नासीत् ।

ENDS :

COLOPHON :

15399

महिम्नःसटीक

Mahimnaḥ saṭīka

Foll- 14 , 10x 27 Cms, papers , 5 to 10 lines on a page , Devanigarī Script, Age - 1768 samvat ,Scribe - Ghoṣamaṇi miśra , Condition- bad.

Auhtor : Puṣpadanta

Commentator : not mentioned.

The Work.

BEGINS :

हे भगवन् ते महिम्नः परं पारं अविदुषो स्तुतिः यदि असदृशी । तदाब्रह्मादीनामपि गिरस्त्वयि विषये अवसन्नाः । अथ सर्वः स्वमति परिणामावधिगृणन् अवाच्यः । तर्हि हे हर स्तोत्रे ममापि एषः परिकरः निरपवादः ।

श्रीगणेशाय नमः

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।।
अथावाच्यः सर्व्वः स्वमतिपरिणामवधिगृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हरं निरपवादः परिकरः ।। १ ।।

ENDS :

यदि सा(शा)रदासनवर्ती उर्वी पत्रं गृहीत्वा सर्वकालं गुणानं पारं श्रूतं नयाति नयात्मेतीति ।। ३२१ ।।

COLOPHON:

इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितै महिम्नाख्यस्तोत्रस्य टिप्पणं समाप्तं ।। शुभमस्तु ।। १ ।। १७६८ कार्त्तिकमासि कृष्णपक्षे तृतीया यां गुरूवासरे लेः श्री मिश्र घोषमणि ।।

15356

महिम्नस्तोत्रम्

Mahimnastotram̐

Foll- 10, 11x19-5 Cms, paper, 8 lines on a page, Devnāgarī Script, Age - 1856 Samvat , Scribe-Gosaibholābhārti , Condtiion- good.

Author : Puśpadanta

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामवधिगृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।। १ ।।

ENDS :

जायस्यजायमानस्य गर्भस्थस्यैव देहिनः ।
महाभूतकुले .... न देवताः ।। ४३ ।।
प्रातः परतरं नास्ति नारायण परायणम् ।
ये पितरम् न गच्छन्ति ते निन्दन्ति महेश्वरम् ।। ४४ ।।

COLOPHON :

इति श्री पुष्पदन्ताचार्य्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् । समाप्तम् संवत् १८५६ समयनाम पौष शुक्लपक्षे तिथि चतुर्थी गुरूवार पुस्तकं लिखितं गोसाई भोलाभारति पठनार्थं गोसाई विशालगिरि ।। वासी ग्राम जसमेलि मध्ये ।। शुभमस्तु ।।

15447

रघुनाथपञ्चक स्तोत्रम्

Raghunātha pañcaka stotraṁ

Foll- 1, 11.5 x 21 Cms, paper,8 lines on page, Devanāgarī Script, Age - x. Scribe -x , Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work : The Raghunāthapañcaka stotram - a hymn in praise of Rāma, anonymous.
BEGINS :

।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।।
प्रातस्स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दम् ।
मन्दास्मितं मधुराभासविसा(शा)लभालम्।।
करणावलंविचलकुण्डल(शो)सोभि गण्डम् ।
कर्णान्तं दीर्घनयनं नयनाभिरामम् ।। १ ।।

ENDS :

यः श्लोक पंचकमिदं मनुजः पठेत् ।
नित्यं प्रभातसमये नियतः प्रवुद्धः ।।
श्रीराम किंकरजनेषु स एव मुख्यो ।
भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्यलभ्यम् ।। ६ ।।

COLOPHON :

इति श्रीरघुनाथ पंचकस्तवं सपूर्णं समाप्तम् ।।
मनोजवं मारुत तुल्यं वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूतं स(श)रणं प्रपद्ये ।।
श्रीमते रामानुजाय नमः ।।

15306

रामाष्टकम्

Rāmāṣṭakaṁ

Foll- 2, 9. 7 x Cms,paper , 7 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition- good, slighjtly worm eaten.
Author : Śaṅkarācārya
The Work : Rāmāṣṭakam- a hymn in praise of the Rāma- By Śaṃkarācārya

BEGINS :

।। श्रीरघुपतये नमः।।

जयति रघुवंशतिलकः कौशल्या हृदय नंदनो रामः ।
दशवर्ते निधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ।
श्यामावदातमरविन्दं विशाल नेत्रम्।
बंधूकपुष्पसदृशाधरपाणिपादं सीता सहायं मुदितम् ।।
धृत चाप वाणं रामं नमामि शिरसारमणीयवेषम् ।। १ ।।
पटुजलधरधीरध्वानमादाय चापम् ।
पवनजवनमेकं वाणमाकृष्य ।
तूर्णात् अभयवचनदायी सानुजः
सर्वतो में रणहतदनुजेन्द्रोरामचंद्रः सहायः ।। २ ।।

ENDS :

कनकाभिमले कान्त्या सीतयालिंगितांगो ।
मनु तनुज वरेण्यः सर्वगीर्वाणवन्द्यः ।।
निबूहबन्धुलीलया बद्धसेतुः ।
सुहृदनुज कपीन्द्रो रामचन्द्रः सहायः ।।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचित रामाष्टकं समाप्तम् ।।

15368

रामाष्टकम्

Rāmāṣṭm̐

Foll- 3, 10 x 2 Cms,paper , 5 to 7 lines on a page ,
Devanāgarī Script , Age- 1724 Śaka Samvat , Scribe - x ,
Condition- good, slighjtly worm eaten.

Author : *Śaṅkarācārya*

BEGINS :

व्रतम ।। रामानाथपादोदकं ख्यात ताता सुवर्णादि रत्नासनि संवर्णिदाता कपर्दी ।

ENDS :

रामाष्टकं इदं पुण्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
यथोक्तं फल दातारं सर्वकामार्थ सिद्धये ।।९।।

COLOPHON :

इति श्री शङ्कराचार्य विरचितं गमाष्टकं संपूर्णम् शुभम् श्री शाके १७२४ ज्येष्ठवदी १४ लिखितमिदं पद्मनिधी।

15382

रामचन्द्र स्तवराज:

Rāmacandra stavarājaḥ

From Sanatkumāra Saṃhitā (सनत्कुमार संहिता)

Foll- 14, 9.5 x 15.1, Cms, Paper, 8 to 9 lines on a page- Devanigarī script, Age -1903 Samvat Scribe- Rādhākṛṣṇa, Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नम: ।।

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्रस्त्वराजमंत्रस्य सनत्कुमार ऋषिरनुष्टुप् छंद: श्रीराम देवता सीता बीजं हनुमत्शक्ति: श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:युधिष्ठिर उवाच ।

ENDS :

रघुवर तव मूर्तिर्मामकेमानसाज्वे नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखेमे ।
अतिप्रतिशमतुलं भक्त्या मस्तके त्वत्पादाब्जम् भवजलधि निमग्नं रक्षमामार्त्तबन्धो ।। २६ ।।
रामं रत्नमहं वंदे चित्रकूटपतिं हरिम् कौशल्याशुक्तिसंभूतं जानकी कण्ठभूषणम् ।। २७ ।

COLOPHON :

इति श्रीसनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्रीरामस्तवराजं स्तोत्रं समाप्तम् संवत् १९०३ शाके १७६८ ।।

कार्त्तिके कृष्ण पक्षे तु सोमवारेष्टमीतिथौ रामं विशस्यांर्थ राधा कृष्णो विलीलिखत् (व्यलीलिखत) । ।

15435

रामरक्षाकवचम्

Rāmarakṣākavacam̐

Foll- 4, 10x 17.2 Cms, Paper, 6to 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अस्य श्रीरामरक्षाकवचस्य बुध कौशिक ऋषिरनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीरामो देवता । श्रीरामप्रीत्यर्थे रामरक्षा पाठे विनियोगः ।।
चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।। १ ।।

ENDS :

अबाध गताज्ञाहः सर्वत्र लभते जप मंगलम् ।।
आर्दित्वान् यथा स्वप्ने रामरक्षाभिः मां हरः ।। १ ।।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रवुद्धे ।

15322

लक्ष्मीहृदय स्तोत्रम्

Lakṣmīhṛdayastotram̐

From- Atharvaṇarahasya (अथर्वणरहस्य)

Foll- 41,10.5 x9 Cms, paper, 7 lines on a page , Devanāgarī script , Age- 1950 Samvat, Scribe-x , condition- good.

The Work : Lakṣmīhṛdayastotram - with the introductory information about Ṛṣi. devatā., etc. said to from the Atharvaṇarahasya.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्रीलक्ष्मी हृदय नारायण हृद प्रागंभः

अस्य श्री नारायण हृदय स्तोत्रं मंत्रस्य वेद भार्गव ऋषिः । श्री लक्ष्मीनारायणो देवता ।। अनुष्टुपृछंदः श्री लक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थेजपे विनियोगः ।। नारायणः परं ज्योतिरिति ।। अंगुष्टाभ्यां नमःनारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः ।। नारायणं परो देवेति ।। मध्यमाभ्यां नमः । नारायणः परं धामेति अनामिकाभ्यां नमः ।।

ENDS :

श्री ध्याये त्वां प्रहसितमुखीं कोटिवालार्कभाम्यां ।
विद्युद्वर्णां वर धरां भूषणाद्यैः सशोभां ।।
वीजापूरं सरसिजयुगलं विभ्रतीं स्वर्णपात्रं ।
भक्त्यायुक्तं मुहुरभयदांमह्यमप्यच्युत श्रीः ।। १०६ ।।

COLOPHON :

इति श्रीअथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदय स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९५० ।।

15385

वाराह ध्यानम्

Vārāha dhyānam̐

Foll- 2, 7. 2 x 15 Cms, paper 6 to 7 lines on a page- Devanāgarī Script, Age - x, Scribe- x , Condition -good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।
अथ वाराह ध्यानं ।। अथ ध्यानं ।।

प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशने। वराहरूपिणं देव संस्मरन्नर्चयन् जयेत् ।। १ ।।

ENDS :

COLOPHON :

15373

विष्णुपञ्जर स्तोत्रम्

Viṣṇupañjara Stotram̐,

From- Brahamāṇḍa purāṇa (ब्रह्माण्डपुराण)

Foll- 4 , 8.7 x 14.2 Cms, paper, 6 to 7 lines ona page, Devanāgarī Script, Age- x ,Scribe -x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Viṣṇupañjara Stotram - with the introductory information about ṛṣi metre etc. said to from the brahamāṇḍa purāṇa.

BEGINS :

ॐ अस्य श्री विष्णुपञ्जरस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषिरनुष्टुप् छंदः । श्रीविष्णु परमात्मा देवता ब्रहवीजं सोहं शक्तिः ।। ॐ इति *etc.*

ENDS :

इति श्रीब्रह्माण्ड पुराणे इन्द्रनारद संवादे श्रीविष्णुपञ्जरस्तोत्रं संपूर्णम् ।।..........

15363

विष्णोरपमार्जन स्तोत्रम्

Viṣṇorapmārjanastotram̐

From- Viṣṇudharmottarapurāṇa (विष्णुधर्मोत्तर पुराण)

Foll- 16, 13.5 x 18 Cms, paper line on a page, Devanāgarī Script, Age-1914 samvat, Scribe-Hariprasādamiśra , Condition- good.

The Work :

The apāmārjana stotram - comprising 26 stanzas in honour of God Viṣṇu Calculated to cure Kṣaya Apsmāra and such other diseases and professing to from Viṣṇudharmottarapurāṇa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

दालभ्य उवाच ।।

भगवन् प्राणिनः सर्वे विषरोगाद्युपद्रवैः ।

दुष्टग्रहोपघातैश्च सर्वकालमुपद्रवाः ।। १ ।।
अभिचार कृत्याभि स्पर्शरोगैश्च दारूणैः ।
सदासम्पीड्यमानास्ते तिष्ठन्ति मुनिसत्तमः ।। २१ ।।
येन कर्मविपाकेन विषरोगाद्युपद्रवाः ।
न भवन्ति नृणां तन्मे यथवद्वक्तुमर्हसि ।। ३१ ।।

ENDS :

पुलस्त्य उवाच ।।
कोटिजन्मकृतं पापं पठनादेव नस(श्य)यति ।
गोसहस्रफलं तस्य परमानन्दमाप्नुयात् ।। २६ ।।

COLOPHON :

इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे विष्णोरपमार्जन स्तोत्र संपूर्णम् । सं. १९१४ ज्येष्ठ शुक्ल दशम्यां मौमवासरे इयं लिपिरियं मिश्रहरिप्रसाद तस्यात्मज गिरिधारीलालेनमगमत् श्री रामजीसदा सहाय शुभम्भूयात् ।।

15412

विष्णुमाहिम्न स्त्रोत्रम्

Viṣṇumahimnastotram̐

From - Śivarahasya (शिवरहस्य)

Foll- 9, 10 x 17.6 Cms, paper, 7-8 lines on a page- Devanāgarī Script, Age - x , Scribe-x, Condition-good, Ink stained.

Author : not mentioned.

The Work : Viṣṇumahimnastotram - a hymn in praise of Viṣṇu from Sivarahasya .

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
श्री विष्णो उवाच !
..........अनन्ताघं त्रिगुणाद्वितमेयविमल स्वराकाराय
रमितगुणगुणाकारनिवृत्तेः ।
वाराम स्वर निराकारपरमं प्रभाप्तराकार वरं परं
नमो वेद्य शिवते ।। १ ।।

ENDS :

त्वयापि शंकरंलिंगपूजनीयं प्रजलतः ।
विदुपे वान्य देवानां पूजनं शोभं सर्वदा ।। ४९ ।।

COLOPHON :

तत्सादिति श्रीशिवरहस्ये विश्वकृतं विष्णुमहिम्नस्तोत्रं पूर्णम् शुभम् ।

8210

विज्ञाननवका

Vijñānanavakā

Foll- 3, 3-6 x 6 Cms, paper, 7 lines on a page-Devanāgarī Script, Age - x , Scribe-x, Condition-good,
Author : Śaṅkarācāryā
The Work :.
BEGINS :

तपोयज्ञदानार्दिभः शुद्धबुद्धिर्विरक्तो नृपादेर्पदेतु ...बुध्या परित्यज्य सर्वं यदाप्नोति तत्वं परं ब्रह्म नित्यं तवेवाहमास्मि ।।

ENDS :

उपक्रमोपसंहारो । अभ्यासो पूर्वता फलम् अथर्वादोपपतिश्च लिंग तात्पर्य्य निर्णये ।।

COLOPHON :

श्री शङ्कराचार्य विरचितं विज्ञाननवका सम्पूर्णम् ।

8183

शतचण्डी विधिः

Śatacaṇḍī vidhiḥ

Foll- 19, 11 x 22 Cms, paper 9 to 10 lines on a page , Devanāgarī Script ,Age - 1949 samvat , Scribe - Śriyodhana , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ शतचण्डी विधिः — तत्र मूल वचनानि मंत्रमहोदधे । शंकरस्य भवान्या वा प्रासाद निकटे शुभं मंडपद्वारं वेद्याद्य कुर्यात्सध्वज तोरणाम् ।

ENDS :

गुह्यतिगुह्यगोपनीयत्वं गृहाणास्मत्कृतम् जपं सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।। ।।

COLOPHON :

इति शतचण्डी विधिः समाप्तः । वैक्रमादित्य संवर्षे नगा व्यजेन्दु संज्ञके....... शालिवाहन शाकाब्दे अग्निनीन्दु नगभूभूमिते ।। १७१३ ।। १९४९ ।। ज्येष्ठमास्य सितेपक्षे गुरौ व प्रतिपत्तयोः श्रीयोधनाख्येना लेखि समाप्तमिति पुस्तकम् ।। शुभमस्तु ।।

15452

शनिस्तोत्रम्

Śanistotraṁ

From - Padampurāṇa (पद्मपुराण)

Foll- 9, 8.5 x 15.5,cms. paper , 5 lines on a page, Devanāgarī script , Age -1878 Samvat, Scribe - x , Condition - good.

Author : not mentioned.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अस्य शनैः (सौर) मन्त्रस्य दध्यअथर्वण ऋषिः गायत्री छंदः शनिर्देवता। शनिप्रीतये पाठे विनियोगः ।

कण्ठस्थः पिंगलो विभुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः ।। १ ।।
ऐतानि शनिनामानि पठेद् यः सन्निधौ ।
शनैश्चरकृता पीडानकादाचिद् भविष्यति् ।। २ ।।

ENDS :

प्रत्येकमुच्चारयन्नाम सौरस्तं तत्र पूजयेत् ।
एकादशाक्षरं मन्त्र जपेद् शवत्थ्य सन्निधौ ।।
तुष्टिं याति न संदेह पीडां मोच्येत् शनैश्चरः ।। ३८ ।।

COLOPHON :

इति पद्मपुराणो कृष्ण नारद संवादे प्रोक्तं शनिस्तोत्रं संपूर्णम् ।। संवत् ।। १८७८ ।।

15320

शाक्तस्तोत्रम्

Śāktastotraṁ

Foll- 3 ,9 x 16 Cms, Paper , 7 to 8 lines on a page , Devanāgrī Script , Age - x , Scribe - x , Condition- good.

Author : Pūrṇānanda

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

उपासकान्महादेव शृणु चैकमनाः स्वयम् ।
मनुश्चन्द्रःकुबेरश्च मन्मथस्तदन्तरम् ।।
लोपामुद्रामुनिर्नदी शक्रः स्कन्दः शिवस्तथा ।
क्रोधभट्टारकश्चैव पञ्चमी परिकीर्तितः ।
दुर्वासा व्यास सूर्यो च वशिष्ठश्च पराशरः ।।

ENDS :

सत्यभामा द्रौपदी च उर्वशी च तिलोत्तमाः ।
पुष्पदन्तो महाबुद्धो वाणकालश्च मन्दरः ।।
कैलाशः क्षीरसिन्धुश्च उदधिर्हिमवाँस्तथा ।
नारदश्च भजय पूजाचर्न होमो अभिचाराय कल्पते ।।
एतत्स्तोत्रं पठित्वा तु सांगतामान ये ध्रुवम् ।।

COLOPHON :

इति श्री पूर्णानन्द रमिते विरचिते शाक्तविषयकं यं स्तोत्रं समाप्तम् ।।

शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।। श्री श्री श्री ।

15450

शिवाष्टकम्

Śivāṣṭakam̃

Foll- 2, 7 x12.5,Cms,Paper, 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x Condition-good.

Author - Saṅkrācārya

The Work : Śivāṣṭakam - a hymn in praise of lord Śiva .

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्दगाथम् ।
भवद भव्यं भूतेश्वरं भूतनाथं शिवशंकरं शंभूमीशममीडे ।। १ ।।

ENDS :

स्तुवं यः प्रभाते नवसू(शू)लपाणे पठेत् प्रेमयुक्तं स्वभावानरुच वर्गाणा भोगानुमहादेव रूपं शिवशंकरम् सिंभूमीशारामीडे ।। ९ ।।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचितं शिवाष्टकं संपूर्णम् ।।

15286

शिवकवचम्

Śivakavacam̃

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 8 , 10 x 15.5 Cms, paper , 9 , lines on a page , Devanāgarī Script , Age- x , Scribe - x , Condition - good, water stained .

The work : Śivakavacam - a hymn in praise of Śiva from the Brahmottar Khaṇḍa of Skandapurāṇa.

BEGINS :

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ऋषभ उवाच—

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।। १ ।।

ENDS :

इति भद्रायुषं सम्यगनुशास्त्र समातृकम्।
ताभ्यां संपूजितः सोथयोगी स्वैरगतिर्ययौ ।।

COLOPHON :

इति श्रीब्रह्मोत्तर खण्डे स्कन्दपुराणे शिवकवचं नाम स्तोत्रं संपूर्णम् ।। श्री शुभमस्तु लेखक पाठकयोः ।। शुभम् ।।

15287

शिवकवचम्

Śivakavacam̐

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 7, 10x14.5 Cms, paper , 7 to 8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x, Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGAINS

ENDS

COLOPHON :

इति श्री ब्रह्मणोत्तर.........पुराणे शिवकवचं समाप्तम् ।।

15436

शिवकवचम्

Śivakavacam̐

From- Skandapurāṇa (स्कन्दपुराण)

Foll- 9, 9 x 17.5 cms, paper, 7-8 lines on a page,Devanāgarī script, Age - 1906 , Samvat, Scribe- Rādhākrṣṇa śaramā, Condtion bad .

Author- not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॠषभ उवाच ।।

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमय वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्। ११ ।।

शुचौ देशेसमासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेंद्रियो जितप्राणाश्चिन्तयन शिवमव्ययम् ।। १२ ।।

ENDS :

इति भद्रायुषं सम्यगनुशास्य समातृकम् ।
ताभ्यां संपूजितः सोऽथ योगी स्वर्गगतिर्ययौ ।। ४३ ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कन्दपुराणो ब्रह्मोत्तरखण्डे शिवकवचं संपूर्णम् । श्रीरस्तु संवत् १९०६ शाके १७७१ पौष कृष्ण १३ बुधे शुभम् लिखितं राधाकृष्ण शर्म्मणां पाठार्थम्।

15410

शिवताण्डवम्
Śivtāṇḍavaṁ

Foll- 5, 10 x 19, Cms, paper, 6 to 7 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1872 Samvat , Scribe -x , Condition - good.
Author : Rāvaṇa
The Work : Śivtāṇḍavam- a hymn in praise of lord Śiva attributed to Rāvaṇa.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
जटाकटाहसभ्रमादभ्रमिन्निलिम्प्य निर्झरि
विलोलवीचिवल्लरी विराजमान मूर्धिन
धगग्धगग्धज्ज्वलल्लाट पटपावके
किशोर चन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणंमम

ENDS :

प्रचण्ड वाडवानल प्रभासुभप्रवारणे
महाष्ट सिद्धिकामिनी जनावदत्त जल्पता ।
विमुक्तवाम लोचना विवाह कालिक ध्वनि
शिवेतिमन्य भूष्णा जगज्जयाय जायताम्

COLOPHON :

इति श्रीदशवदन कृतं शिवताण्डव सम्पूर्णम् ।।

शुभंभूयात् श्री शिवाय नमः ।। संवत् १८७२ पौष मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां गुरूवासरे ।।

15353

शिवमहिम्न स्तोत्रम्

Śivamahimna Stotram̐

Foll- 8, 11.3 x 23.5 Cms, Paper , 6 lines on a page , Devanāgarī Script, Age 1786 Samvat , Scribe- Gusaī Ānanda giri, Condition-good.
Author : Puṣpadanta
The Work : Śivamahimna Stotram - a hymn of God Siva in 40 stanzas composed by puṣpadanta.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। ॐ नमः शिवाय ।।
महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।।
अथावाच्यः सर्वः सुमतिपरिणामावधिगृणन्— ।
ममाप्येषं स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।। १ ।।

ENDS :

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन ।
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।।
कण्ठिस्थतेन पठितेन समाहितैन ।
सुप्रीणतो भवति भूपतिर्महेशः ।। ४० ।।

COLOPHON :

इति श्री पुष्पदन्ताचार्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। संवत् १७८६ वर्षे पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्दश्यां सूर्य्य वासरे ।। लिखितमदः पुस्तकं गुशाई अनंद गिरिणा ।। श्री महागणधिपतये नमः श्री सरस्वत्यै नमः ।। काशीविश्वेश्वराय नमः ।। श्री कालभैरवाय नमः ।। लिखितं काशी मध्ये...........कर्णिके समीपे ।।

15458

शिवमहिम्नस्तोत्रम्

Śivamahimnastotraṁ

Foll- 28, 16 x 32.5 Cms, paper, 15 to 17 Lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x , Condition-good.
Author : Puṣpadanta
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
वश्वेश्वरं गुरूं नत्वा महिम्नाख्यं स्तुतेरयम् ।
पूर्वाचार्यकृत व्याख्यासार संग्रहः क्रियते मया ।

ENDS :

सुरगुरुभिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकेहेतुम्।
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिनान्यचेतः ।।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः ।
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।। ३३ ।।

COLOPHON :

13365

शिवसहस्रनाम

Śivasahasranāma

From- Padampuraṇa (पद्मपुराण)

Foll- 29, 9.4 x 23.5 Cms paper, 6 to 7 line on a page, Devanāgrī Script, Age -x , Scribe- x , Condition- good, Auhtor : not mentioned.
The Work :.
BEGINS :

जयशंकर सोमेश रक्षं रक्षेति चाब्रवीत ।। ६ ।।
जयाय । शिवसां(शां)करस्तोत्रं मुक्ति प्रदं विभौ ।
अनन्यमनसः शान्त पद्मासन सुतः शुचिः ।। ७ ।।

ENDS :

अविमुक्तं तु तद्गेहे नित्यं तिष्ठति शंकरः ।
अनेन मन्त्रितं भस्म दुष्ट दुःखं विघातिकम् ।। ९ ।।

पिशाचस्य विनाशाय जप्तव्यमिदमुत्तमम् ।
नाम्नां सहस्त्रेणानेन समं किंचिन्न विद्यते ।। १० ।।
शुभमस्तु लिखितं मण्डलो रत्न प्रतिना ।

COLOPHON :

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीकृष्ण मार्कण्डेय संवादे वेदसाराख्यं शिवसहस्रनाम समाप्तः ।। श्री शुभमस्तु ।

15291

शीतलाष्टकम्

Śītalāṣṭakaṁ

From - Skanda purāṇa - (स्कन्दपुराण)

Foll- 2, 10 x 14.5 Cms, paper ,10 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script, Age - 1912 Samvat. Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीशीतलास्तोत्रंमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्री शीतलागौरी देवता ह्रीं वीचं नमः शक्तिः ॐ कीलकं अस्य शरीरस्य पीडां परिहार द्वारा श्री परमेश्वरी शीतलागौरी प्रीत्यर्थेजपे विनियोगः । अथ ध्यानम् ।।

ENDS :

अष्टकाशीतलाय स्तुयात यो नियतः शुचिः ।
विस्फोटकं भयं घोरं नैवतस्य प्रजायते ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कन्दपुराणे शीतलाष्टकं संपूर्णम् ।। शुभंवतुतराम् ।। सं. १९१२ ।।

15419

शीतलाष्टकम्

Śītalāṣṭakam̐

From - Skanda purāṇa - (स्कन्दपुराण)

Foll- 4, 5 x 14.5 Cms, Paper, 4 lines on a page- Devanāgarī Script, Age- 1906 Samvat, Scribe - paramānanda pāṇḍey , Condition-good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

स्कंद उवाच :

भगवन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ।
वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयायहम् ।

श्रीरूद्र उवाच :

भृगुवत्स प्रवक्ष्यामि शीतलायाः स्तवं शुभम् ।
यस्यस्मरणमात्रेण विस्फोटकं भयं नहि ।।

ENDS :

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
उपसर्गविनाशाय परंस्वस्त्यं महत् ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कंदपुराणे रूद्र प्रोक्तं शीतलाष्टकं सम्पूर्णम् । संवत् १९०६ भाद्रकृष्ण भृगुवासरे लिखितं परमानन्दपाण्डेत्युपनामकेन शुभं भूयाल्लेखक पाठकयोः ।।

15359

शीतलाष्टकम्

Śītalāṣṭakaṃ

From - Skanda purāṇa - (स्कन्दपुराण)

Foll- 1 , 11 x18 , Cms, paper, 9 to 13 lines on a page, Devanāgarī Script , Age -1906 samvat , Scribe- Girdhārīlāla miśra , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री भगवानुवाच ।।

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ।।

स्कन्द उवाच ।।

भगवन्देवदेवेश शीतलाया स्तवं श्रुणु ।
वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकं भयावहम् ।। १ ।।

ENDS :

शीतलाष्टकमिदं पुण्यं नदेयं यस्य कस्यचित् ।
दातव्यं सततं तस्मै श्रद्धाभक्ति समन्विते ।। १४ ।।

COLOPHON :

इति श्रीस्कंदपुराणे शीतलाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम् शुभम् भवतुतराम् । मितीचैत्रकृष्णत्रयोदश्यां चन्द्रेलिखितं मिश्रगिरधारीलालेन स्व पठनार्थम् सम्वत् १९०६ ।।

15457

श्रीरामचन्द्र स्तोत्रम्

Śri Rāmacandra stotraṃ

From - Adhyātmarāmāyaṇa (अध्यात्मरामायण)

Foll- 3, 12 x 28.7 Cms. paper, 5 lines on a page, Devanāgarī script, Age - x , Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :
BEGINS :

।। ब्रह्मोवाच ।।

वन्दे देवं विष्णुमशेषस्थितिहेतुं त्वामध्यात्मज्ञानिभिरन्त
हृदिभाव्यम् ।
हेयाहेयछन्दविहीनं परमेकं सप्तमात्रं सर्वहृदिस्थितम्—
हार्यरूपम् ।। १ ।।

ENDS :

श्रद्धा युक्तो यः पठतीमं स्तवमाद्यं ब्राह्मं ब्रह्मज्ञानं व्याप्तं
भुविमर्त्तयः ।
रामं श्यामं कामितं कामप्रदमीशं ध्यात्वाध्यात्वापातकजालैर्विगतः
स्यात् ।। ९ ।।

COLOPHON :

15364

श्रीरामार्यस्तवराजः

Śri Rāmāryastavarājaḥ

Foll- 18 , 17x 12, Cms, Paper, lines on a page , Devanāgarī script, Age - 1676 śaka samvat , Scribe - Devīdatta, Condition - good ,water stained.
Aurthor : Mudgalācārya
The Work : Śri Rāmāryastavarājḥ alias Rāmāryaṣṭaka one hundred and eight stanzas in praise of Rāma by Mudgalācārya.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

त्वयि विमुखे मख मुख्ये सरव्ये नान्यस्य कस्यजीवामि ।
जीवामि तु भवदर्पित वसनाशनमात्रजीवनाःसर्वे ।। १ ।।

ENDS :

धनुषारिपुजयः जनुषा रुचिरतराकारनिर्जितांबुधरा
तरुणारूणनिभचरणा काचन करुणारूणारूण
... हृदयम् ।। १०८ ।।

COLOPHON :

इति श्री मुद्गलाचार्य विरचितं श्रीरामार्यास्त्वराजः समाप्तः ।। रसतर्क सिन्धुररसा प्रमिते रामाय नभस्य सितपक्षै वदि............... मित तिथ्यवनिजे । देवीदत्तो व्याधात्स्त्वस्य लिपिम् ।।

15461

श्रीरामचन्द्रस्तवराजः

Śri Rāmacandrastavrājaḥ

Foll- 13, 12 x 23, Cms, paper , 8 lines on a page , Devanāgarī Script, Age-x , Condition- bad.

Author : not mentioned.

The Work : Sri Rāmacandrastavarājaḥ- a hymn in praise of lord Rāma.

BEGINS :

।। श्री परमात्मने नमः।।

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रन्त्रस्य ।। सनत्कुमारऋषिः अनुष्टुप् छंदः । श्रीरामोदेवता । सीता बीजं । हनुमान् शक्तिः । श्रीराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । सूत उवाच । ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं व्यासं सत्यवतीसुतम् । धर्मपुत्र प्रहष्टात्मा प्रत्युवाच सत्यवतीसुतम ।।

ENDS :

भुवनकुलचरित्रं भूमिपुत्रीकलत्रम् ।
अमितगुणसमुद्रं श्रीरामचन्द्रं नमामि ।

COLOPHON :

15446

श्रीरामदुर्गास्तोत्रम्

Śri Rāmadurgāstotraṁ

From - Brahamāṇḍa Purāṇa. (ब्रह्माण्ड पुराण)

Foll- 3, 10.5 x 18.5 Cms, paper, 9 to 10 lines on a page,Devanāgarī Script , Age- x ,Scribe - x, Condition - bad.

Author : not mentioned.

The Work.

BEGINS :

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

ॐ अस्य श्रीरामदुर्गास्तोत्र मन्त्रस्य विश्वामित्रः ऋषिरनुष्टुप् छंदः ॥ श्रीरामचन्द्रः परमात्मा देवता ॥ ॐ वीजं नमः शक्तिः श्रीरामेति कीलकं मम समस्त भयानिरक्षणार्थे जपे विनियोगः ॥ श्रीराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ENDS :

करुणायामृतवर्षिणीं हरिहर ब्रह्मादिभिर्वन्दिताम् ॥

COLOPHON :

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे धरणीशेष संवादे श्री .... कवचं सम्पूर्णम् । श्रीराम श्रीराम ।

15460

श्रीरामपद्धतिः

Sri Rāmpaddhatiḥ

Foll- 13, 12.5 x 23.6 Cms, Paper , 9 lines on a page Devanāgrī Scripts , Age - 1961 Samvat, Scribe - Govardhandāsa Vaiṣṇava, Condition - bad, water stained.

Author : Rāmānujācārya.

The Work :

BEGINS :

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरम् ।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥

ENDS :

चाण्डालोपि विशुद्धात्मापूजयेन्नात्र संशयः ।

COLOPHON :

इति श्रीमद्रामानुजाचार्यकृतं श्रीरामपद्धतिः वेदोक्तं .... श्रीरामाय नमः ॥ श्री संवत् १९६१ प्रवर्त्तमाने........... पौषमासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ ॥ ....

लिखितं गोवर्धनदास वैष्णव भगवानदास पठनार्थम् ॥

15277

सप्तशतीस्तोत्रम्

Saptaśatīstotram̐

From-Mārkaṇḍey Purāṇa (मार्कण्डेय पुराण)

Foll- 88 , 14.5 x 21.5 Cms, paper ,9 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - 1933 Samvat , Scribe Śri Gopāla ,Condtion - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ सप्तशती स्तोत्र पाठ विधिर्लिख्यते ।

प्रथमं शुद्धभूमौ देवतायतने कंवलाद्यासने प्राङ्मुखो वा उपविश्याचम्य प्राणायामं कृत्वा अर्घं संस्थाप्य पाठ संकल्पं कुर्यात् ॐ विष्णु ३ नमः परमात्मने ....

ENDS :

सर्वं सरस्वतींस्तोत्रं यथोक्तविधिना पठेत् पश्चाद्रहस्यं प्रपठेत्संपूर्ण फलभाग्भवेत् ।। २४ ।।

COLOPHON :

इति मार्कण्डेय पुराणे देवीमाहात्म्ये मूर्त्तिरहस्यं नाम तृतीयोध्यायः ।। ३ ।। संवत् १९३३ आश्विने कृष्णपक्षे तु चतुर्दश्यां शनौ दिने श्रीगोपालेन लिखितं जगन्नाथस्य मन्दिरे ।

15283

सप्तशतीस्तोत्रम्

Saptaśatīstotram̐

Foll- 3, 10.5 x 19 Cms, paper , 5 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x , Scribe - x, condition- good.

Auhor : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। ॐगणेशाय नमः ।।

मार्कण्डेय पुराणोक्तं देवीमाहात्म्युत्तमम् ।

य:....... यावद्भक्त्या तम्यंमुक्तिर्नमंशय: ।। १ ।।

ENDS :

साक्षातुष्टुव: ।। क्रमश: शिवम् ।
लोकानां च हितार्थाय देवी मृक्तानि ।।

COLOPHON :

15318

सामगान सन्ध्या

Sāmagāna Sandhyā

Foll- 9, 11 x 10.7 Cms, paper , 11 to 12 lines on a page , Devanāgarī Script ,Age - 1848 Samvat, Scribe - Durgādartta, condition- good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नम: ।।

अथ सामगानां सन्ध्या तत्रादौ प्रात: सन्ध्याविधिर्लिख्यते ।। ॐ।।। मानस्तो केतनयो मान आयो मानौ गोषुमानो श्रश्वेषुरीषी: । वीरान्मानो रूद्रभामिनो वधीर्हविष्मंत: सदमित्वा हवामहे इति मन्त्रेण वामपार्श्वेशिखांवध्वा चन्दनं लापयित्वा आचम्य ततोइन्द्रियाणि संस्पृशेत् अंगुष्ठमूलेन.........

ENDS :

चास्तु देहे विष्णुस्त्वायथैयान्नं परिणामश्च वैयथा सत्येन तेनयद्भुक्तं तीर्यत्वन्नामिदं तथा इत्युच्चार्य्य स्वहस्तेन परिमार्ज्य तपोदरं अनायास प्रदायीनि कुर्य्यात्कर्माशपा तन्द्रित: इति भोजनम् ।।

COLOPHON :

श्री लिखितमिदं पुस्तकं मिश्र गंगाविष्नुस्यात्मज दुर्गादत्तेन श्रीरामार्य्यणा भूयात् शुभं भूयात् राम: संवत् १८४८ राम राम ।

15401

सीतास्तोत्रम्

Sitāstotram̐

From : Rudrayāmalatantra (रूद्रयामलयतन्त्र)

Foll- 4, 10.5 x 23 Cms , paper, 8 lines on a page,
Devanāgarī Script, Age - x , Scribe x, Condition - good.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

श्रीरामाय नमः ब्रह्मोवाच ।।
वंदेरामं जगद्वन्द्यं सुंदरास्यं सु(शु)चिस्मितम् ।
कंदर्प्प कोटि लावण्यं कामनार्थ प्रदायकम् ।। १ ।।
भास्वान्किरीटकटकं कटि सूत्रोपशोभिताम् ।
विशाललोचनं भ्रांजन्तरुणारूणकुण्डलाम् ।। 2 ।।

ENDS :

मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कन्याविन्दति सत्पतिम् ।
तस्य गेहे सदा लक्ष्मी सर्वदैवतमर्च्यति ।। ८ ।।
दातव्यं भक्तियुक्ताय शिष्याय परमात्मने ।
दाम्भिकाय न दातव्यं भक्त्या हिताय संपदाम् ।। ९ ।।
गोपनीयमिदं स्तोत्रं त्रिषुलोकेषु दुर्लभम्।। १० ।।

COLOPHON :

इति श्रीरूद्रयामले सिद्धभैरव—संवादे सीतास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।। श्री रामाय नमः ।।

15372

सुर्याष्टकम्

Sūryāṣṭakam̐

Foll- 1, 11 x 15 Cms, paper ,7 to 9 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - x ,Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : Sūryāṣṭakam̐ : -a hyman in praise of sūrya in eight stanzas.

BEGINS:

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ भास्कराय विदमहे दिवाकराय
यद्विमहितन्नो सूर्य प्रचोदयात्

ENDS :

सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
ते जाते अयम लोको पावदेव निरञ्जनम् ।। ११ ।।

COLOPHON :

इति सूर्याष्टकं संपूर्णम् ।।

15354

सौन्दर्यलहरी

Saundrayalaharī

Foll- 30, 10 x 16, Cms, paper, 7 lines on a page, Devanāgarā Script, Age - x , Scribe - x , Condition- bad, water stained.
Author : Saṅkarācārya
The Work : The Saundrayalaharī or Ānandalaharī as otherwise known, is a small poem in praise of Goddess Śakti.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ENDS :

COLOPHON :

15384

सौन्दर्यलहरी

Saundarya lahrī

Foll- 62, 10x12.5 Cms, Paper, 5 lines on a page- Devanāgarī Script , Age- 1933 samvat , Scribe-x , Condition - good.

Author : Saṅkarācārya

BEGINS :

।। ॐ श्रीभवानी शंकराय नमः ।

शिवः शक्त्यायुक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम् ।

न चेदेवंदेवो न खलु कुशलः स्पंदितुमपि ।। १ ।।

ENDS :

स्वकीयार्भिर्वार्ग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियं ।। १०३ ।

COLOPHON :

इति परमहंसपरिव्राजक शंकराचार्य्य विरचिता...............भवतु, सम्पूर्णम् । संवत् १९३३...................वार लिखितम् ।

15271

सौन्दर्यलहरी स्तोत्रम्

Saundaryalahrī stotram̐

Foll- 16 , 10.5 x 22.5 Cms, paper, 7 to 8 lines on the page , Devanāgarī Script , Age-x, Scribe-Prahlāda miśra, Condition- good.

Author : Saṅkarācārya

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

शिवशक्त्याः युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम् ।

न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पंदितुमपि ।

अतस्त्वामाराध्यां हरिहर विरंच्यादिभिरपि

प्रणंतुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ।। १ ।।

ENDS:

प्रदीप ज्वालाभिर्दिवसकर नीगजनविधिः सुधासूतेश्चन्द्रो पलजलवैर्र्धघटना स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधि सौहित्यकरणं त्वदीयाभिर्वाग्भिः स्तव जननि वाचां स्तुतिरियम्।।

COLOPHON :

इति श्रीमद्शङ्कराचार्येण विरचितं सौन्दर्यलहरी स्तोत्रं सम्पूर्णम् शुभम् । मार्गे शुक्लपक्षस्य द्वादश्यां रविवासरे लिखितं प्रहलादमिश्र नंदलालसुत श्री देव्यैनमः ।। श्री सरस्वत्यैनमः।।

15449

संकटमोचनस्तोत्रम्

Saṃkaṭamochanastotraṁ

Foll- 2, 12 x 19.2 Cms, Paper 9, lines on a page , Devanāgarī script , Age- 1899 Samvat, Scribe- Haradāsa vaiṣṇava, Condition- bad.

The Work :

Saṃkatamocana stotraṁ - a hymn in praise of Hanumāna from Kāśīkhaṇḍa.

BEGINS :

।। श्रीराम ।।
ॐ नमो काशी निवासिनी गङ्गातीरे
सदार्चितं चन्दनं रक्तपुष्पम् ।
सदा वंदितं पूजितं सर्वदेवम् ।
नमो संकटा कष्ट हरनी भवानी ।। १ ।।

ENDS :

COLOPHON :

तू ही संकटयोगिनी योगाधारं तू ही कामिनी कामराजम् ।

इति श्री काशीखंडे संकटमोचन नाम स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत् १८९९ ग्राम नाहल गंगातरे स्थान मध्ये लिखितं हरदास वैष्ण परमार्थे लक्ष्मणदास ।

15438

सन्तानगोपालमन्त्र

Santānagopālamantra

Foll- 6, 9.3 x 13 Cmm, paper, 9 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x ,Scribe -x, Condition - good
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। श्रीसन्तानगोपालाय नमः ।।
।। श्रीसन्तानगोपाल मन्त्र ।।
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहंशरणागतः ।
अयम् मन्त्र आगमे प्रसिद्धः ।
अथ वक्ष्यामि सन्तानगोपालाख्यमुत्तमम् ।

ENDS :

दक्षिणहस्तेन जलं गृहीत्वा इमं मन्त्रं पठेत् ।
गुह्यतिगुह्यं इति मन्त्रेण निवेदनम् ।।

COLOPHON :

।। इति सन्तानगोपाल मन्त्र विधिः श्रीकृष्णाय नमः ।।

15440

सन्तानगोपालमन्त्र

Santānagopālamantra

Foll- 4, 10.3 x 18.7 Cms, Paper , 8 to 9 lines on a page, Devanāgarī Script , Age - x, Scribe - x, Condition- good . water stained.
Author : not mentioned.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः।।

अथपुत्रप्रदं वच्मि। कृष्ण अनुष्टुप् देवकीसुत वर्णान्ते गोविन्दं पदमुच्चरेत् वासुदेव पदं प्रोच्यं संवुद्धयेत् जगत्पति देहि मे तनयं प्रोच्य कृष्ण त्वामहमीडयेत् शरणं गत इत्यतो मन्त्रो द्वात्रिंशदक्षर: नारदो मुनिरस्योक्तोनुष्टुप् छंद: ।।

ENDS :

अथसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारदऋषि: अनुष्टुप् छन्द: पुत्रप्रद: श्रीकृष्णो देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्ति: क्लीं कीलकं अमुक यजमानस्य दीर्घायु: सत्पुत्रप्राप्त्यर्थं अमुक संख्या परिमित सन्तानगोपालमन्त्र जपे विनियोग: । अथ मन्त्र: देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत: हस्ते जलं गृहीत्वा गुह्यति .... पठित्वा ततो सहस्रनामादिकं पठेत् ।।

COLOPHON :

8207

सन्ध्यापञ्चीकरण

Sandhyāpañcikaraṇa

Foll- 40, 7.3 x 11 Cms, paper , 6 to 8 lines on a page , Devanāgarī Script , Age - 1893 Samvat , Scribe - x , Condition-good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

श्री गणेशाय नम:, श्री गुरुभ्यो नम: ।।
ॐ शुक्लांबर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ।।

ENDS :

सुप्रसन्नोव ।। धेनुमुद्रया सानिध्यं कुरु ।। १ ।।

COLOPHON :

इति श्री परिव्राजकानां सन्ध्यापञ्चीकरण महावाक्यादि: समाप्तम्।। संवत् १८९३ शाके १७५८ ।।

15372

सरस्वती स्तोत्रम्

Sarasvatīstotraṁ

Foll- 1 , 11 x 15 Cms, paper , 7to 9 lines on a page, Devanāgarī script, Age , Scribe - x , Condition- good.
Author : not mentioned.
The Work : Sarasvatīstotraṁ -a hymn in praise of the sarasvatī, anonymous .

BEGINS :

ॐ स्वास्ति श्रीगणेशाय नमः ।।
ॐ या कुंदेन्दु तुषारहार धवलाया श्वेतपद्मासना ।
या वीणा वर दण्डमण्डित करा या शुभ्रवस्त्रान्विता ।।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेष जाड्यापहा ।। १ ।।

ENDS :

मालाधारी पांकरी सा मांपातु सरस्वती ।
भगवती निशेषा जाड्या पहा ।

COLOPHON :

इति श्रीसरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम् ।

8206

स्वर्णाकर्षण भैरवस्तोत्रम्

Svarṇākarṣaṇa bhairavastotraṁ

From- Rudrayāmalatantra (रूद्रयामलतन्त्र)

Foll- 8, 10 x 75 Cms, paper, 7 lines on page , Devanāgarī script, Age - x, Condition- good, slightly worm eaten.
Author : not mentioned.
The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।। ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः ।।

मार्कण्डेय उवाच ।।

भगवन्प्रमथाधीशः शिवतुल्यपराक्रमः ।।
पूर्वमुक्तस्त्वया मन्त्रो भैरवस्य महात्मनः ।। १ ।।

ENDS :

अचलं लभते सौख्यं सर्वदा मानवोत्तमः ।।
महाभैरव सायुज्यं सांतकाले लभे ध्रुवम् ।। ४७ ।।

COLOPHON :

इति श्रीरूद्रयामल तन्त्रे स्वर्णाकर्षण भैरवस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

8186

स्वरूपानुसन्धानस्तोत्रम्

Svarūpānusandhānastotram̐

Folio 1, 11.5 x 26 Cms, paper , 9 lines on a page , Devanāgarī script,, Age - x , Scribe- x , Condition- good.
Author : Saṅkarācārya.
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

तपोयज्ञदानादिभिः शुद्धबुद्धिर्विरक्तो ग्रहादर्यदे ...... ६ बुद्धया ।
परित्यज्य सर्वं यदाप्नोति त्वं परं ब्रह्मनित्यं तदेवाहमस्मि।।

ENDS :

यदानन्द सिंधौ निमग्नः पुमान् स्यादविद्याविलासः
समस्त प्रपंचः ।
यदानन्दस्फुरंत्यद्भुतं यन्निमित्तं परंब्रह्म नित्यं
तद्देवाहमस्मि चः ।। ८१ ।।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं स्वरूपानुसन्धानस्तोत्रं संपूर्णं समाप्तम्
।। श्री रामः ।।

15415

सर्वमन्त्रोत्कीलन स्तोत्रम्

Sarvamantrotkīlana Stotraṁ

From- Rudrayāmalatanrtra (रूद्रयामलतन्त्र)

Foll- 3, 8-5 x 16.5 Cms, paper 5 lines on a page- Devnāgarī Script, Age - 1900 Samvat, Scribe-x Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGING :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

पार्वत्युवाच देवदेवजगन्नाथ वैदिके तान्त्रिके खिलेऽकर्मणि प्रियंके वेशायेत् सिद्धिरुत्तमा जपेन मंस्मृतेनापि मन्त्रस्योत्कीलनं भवेत् । शिव उवाच् ।।

ENDS :

प्रीत्या सन्दीपन्ती निजगुणविविधैः षट् पदैः प्रेरयंती
वर्णानुज्जीवयन्ती दिति सुत दमनीयाथ संकीलहम्
वीक्ष्ये वीतस्यैव यथास्वरचित तु मन्त्रोपेक्षायताय

COLOPHON :

इतिरूद्रयामले सर्वमन्त्रोत्कीलनं स्तोत्रम् ।। १९००

15411

हनुमदष्टकम्

Hanumadṣṭakaṁ

Foll- 2, 8 x 16 , Cms paper, 6 lines on a page- Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x , Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work : Hanumadṣṭakaṁ - a hymn in ten stanzas in praise of Hanumāna.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अञ्जनीगर्भसमोतपन्नं वायुपुत्रं महावलम् ।
लंकाजने क्षयं कृत्वन्तं हनुवन्तं नमो नमः ।। १ ।।
वलंवीर्य भीमरूपं उग्रेन भयंकरम्।
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्नं हनुवन्तं नमोनमः ।। २ ।।
रामदूतं पराक्रमं रक्तवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
रक्तजिह्वाभिभिन्र्दन्त हनुवन्तं नमो नमः ।। ३ ।।

ENDS :

डाकिनी भूतप्रेतं च पिशाचा ब्रह्मराक्षसानि ।
नश्यन्ति पठतां तस्य हनुवन्तोऽष्टकं पठेत् ।। १० ।।

COLOPHON :

इति श्रीवायुपुत्रो हनुमतोऽष्टकं संपूर्णसमाप्तम् श्रीरस्तु शुभं भू ।।

15376

हनुमदष्टकम्

Hanumadṣṭakam̐

Foll- 4 , 15.6 x 10 , Cms, papers 7 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script ,Age- x , Scribe - x , Condition -good.

Author : Rāmacandra

The Work : Hanumadṣṭakam̐- a mystic mantra in praise of Hanumāna by Ramacandra.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

शं शं शं सिद्धिनाथं प्रणमति चरणं वायुपुत्रं च रूद्रम् ।
तं तं तं दिव्यरूपं मृदु हं हं हसितं गर्जितं मेघशब्दम्
तं तं तं त्रैलोक्यनाथं तपति दिनकरं तंत्रि नेत्र स्वरूपम् ।
रं रं रं रामदूतं रणरज रमितं रावणछेदनार्थम् ।। १ ।।

ENDS :

संग्रामे शत्रुमध्ये जलनिधितरणे व्याघ्रसिंहे च सर्प्पे ।
राजद्वारे च मार्गे गिरिगुहाविवरे निझरि कन्दरे वा ।।,

भूतप्रेतेषु सर्वग्रहणे विषमे शाकिनी योगिनीनाम् ।
विस्फोटं च ज्वराणां हन्ति हनुमन्तं मोहरौद्रं नितांतम् ।। ८ ।।
पठनाच्छ्रवणाज्जाप्यात्सिद्धिर्भवति वांछितम् ।।
निष्कामनां प्रभवति दुर्ल्लभं परमं पदम्।। ९।।

COLOPHON :

इति श्रीरामाविरचितं हनुमदष्टकं संपूर्णम् ।।

15417

हनुमदन्तर्वधगह्वरं स्तोत्रम्

Hanumadantaravadhagahvaram Stotram̐.

Foll- 35, 11x 16.5, Cms, paper, 6-7 lines on a page- Devanāgarī Script, Age-x, Scribe -x , Condition - good.
Author : not mentioned.
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
।। श्रीहनुमते नमः ।।

ॐ अस्य श्रीहनुमदन्तर्वधमालामन्त्रस्य शौनक ऋषिः । अतिजगती छंदः। हनुमान् रूद्रो देवता लं बीजं फट् शक्तिः ।। ॐ कीलकं हनुमन्त्मुलमन्त्र सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।। १ ।।

ENDS :

इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।।

COLOPHON :

इति वीरगरुडसंहितायां कृत्या संहारमण्डले अंतर्वधगह्वरं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

15421

हनुमत्स्तोत्रम्

Hanumatstotram̐

Foll- 3, 9 : 5 x 13 Cmm, paper , 7-8 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe -x ,Condition - good .
Author : Rāmcandra
The Work : The Hanumatstotram̐ - a hyman in praise of Hanumana. Composed by Rāmacandra.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
शं शं शं सिद्धिनाथं प्रणमति चरणं वायुपुत्रञ्च रूद्रम् ।
तं तं तं दिव्यरूपं मृदु ह ह हसितं गर्जितं मेघशब्दम् ।।
तं तं तं त्रैलोक्यनाथं तपति दिनं तं त्रिनेत्रं स्वरूपम् ।

ENDS :

भूतेप्रेतेषु सर्वग्रहगणविषये शाकिनीयोगिनीनाम् ।
विस्फोटं च ज्वराणां हन्ति हनुमन्तं मोहराद्रं नितांतम् ।
पठनाच्छ्रवणाज्जाप्यत्सिर्द्धिभवतु वांछितम् ।
निष्कामाणां प्रभवति दुर्ल्लभं परमं पदम् ।।

COLOPHON:

इतिरामचंद्रेण विरचितं हनुमदष्टकं मम्पूर्णम् ।

15453

हनुमत्स्तुतिसारसंग्रहः

Hanumatstutisāra saṃgrahaḥ

Foll- 40, 12 x 16.5, Cms, paper , 9-10 lines on a page , Devanāgarī script, Age - 1908 Samvat, Scribe - x, Conditian - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
सारसंग्रह अथ
राममेदुंन्वक्ष्ये श्रेष्ठा वैष्णवतन्त्रके ।
तन्त्रादौ मन्त्रराजस्तु षडागम उच्यते ।।

ENDS :

एककालं त्रिकालं वा पठन्नित्यामिमंस्अद्य सर्वान्कामान् वाह्नोति नात्रकार्या विचारणा विभीषणकृतं स्तोत्रं ताक्ष्येंरणं समुद्री शिलं ये यदिच्छयन्ति भक्ता वै सिद्धयस्तत्करां स्थिताः ।।

COLOPHON :

इति हनुमत्स्तुतिः सार संग्रहे संवत् १९०८ शा. १९७३ फाल्गुन कृष्णैकादशी ग्वौ शुभम् श्रीरस्तु ।।

15406

हरिनाममालास्तोत्रम्

Harināmamālāstotraṁ

Foll- 2, 11x Cms, paper, 6 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe- x, Condition -good.
Author : Śaṅkarācārya
The Work :
BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
गोविन्दं गोकुलानन्द गोपालं गोपिवल्लभम् ।
गोवर्धनंधरं धीरं तं बन्दे गोमति प्रियम् ।। १ ।।

ENDS :

हरिनामकृतामाला पवित्रं पापनाशनम्
नित्यं जपति प्राणीनां तस्य मोक्षं भवति हि ।। ६ ।।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचितं हरिनाममालास्तोत्रं समाप्तम् ।। श्री राम ।।

15314

हरिहरात्मकस्तोत्रम्

Hariharātmakastotraṁ

From - Harivaṃsa Purāṇa (हरिवंश पुराण)

Foll- 5, 10.7 x 13.5 Cms, paper, 8 to 10 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - x , Scribe - x , Condition- good.
The Work :

Hariharātmakastotraṁ - a hymn in 39 stanzas said to from the Harivaṃsa Purāṇa.

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। श्रीशिवाय नमः ।।

पितामह उवाच —

मन्दरस्योत्तरे पार्श्वे नलिन्यो भवकेशवौ

रात्रौस्वप्नान्तरे ब्रह्मन्मया द्रष्टौ हराच्युतौ ।। १ ।।

ENDS :

अपुत्रोलभते पुत्रं कन्याविन्दति सत्पतिम् ।

गुर्विणी शृणुते यातु वरं पुत्रं प्रसूयते ।। ३८ ।।

राक्षसाश्च पिशाचाश्च भूतानि च विनायकाः ।

भयं तत्र न कुर्वन्ति यत्रायं पठ्यते स्तवः ।। ३९ ।।

COLOPHON :

इति हरिवंशे हरिहरात्मकः स्तवः संपूर्णः शुभमस्तु ।।

15409

त्रैलोक्यमोहिनी स्तोत्रम्

Trailokyamohinīstotraṁ

Foll- 7, 10.2 x 12.5 Cms, paper, 6-7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age - 1908 Samvat, Scribe - x , Condition- good.

Author : Śaṅkarācārya

The Work : Trailokyamohinīstotraṁ - a hymn in praise of Kali, Composed by Śaṃkarācārya

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ करालवदनांघोरां मुक्तकेशीं चतुभुर्जाम्।

दक्षिणां कालिकां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ।। १ ।।

ENDS :

सृष्ट्यादिः सृष्टिकर्त्री विलसति वहुलां योगीनी वृन्दमध्ये ।

पश्चात्कुक्षौ समग्रं वहति च भुवनं स्वेच्छयाऽनेकरूपा ।।

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ।

COLOPHON :

इति श्रीशङ्कराचार्य विरचितं त्रैलोक्यमोहनीनाम श्रीकाली स्तोत्रं, संवत् १९०८ ।।

15316

ज्ञानस्तोत्रम्

Jñānastotraṁ

From - Mahābhārata (महाभारत)

Foll- 3,11.5 x 15.2 , paper 9 lines on a page , Devanāgarī Scripts ,Age-x , Scribe -x , Condition- good.

Author : not mentioned.

The Work : Jñānastotraṁ - in 22 stanzas said to from the āsvamedhaparva of the mahābhārata.

BEGINS :

श्रीब्रह्मोवाच

यदादिमध्यपर्य्यन्तं ग्रहणोपायेमेव च
नामलक्षणसंयुक्तं सर्ववक्ष्यामि तत्वतः ।। १ ।।
अहः पूर्वं ततो रात्री मासा शुक्लादयः ।
श्रवणादीनि ऋक्षाणि ऋतवः शिशिरादयः ।। २ ।।

ENDS :

इष्टं धत्तं यतोधीतं व्रतानि नियमाश्चये ।
सर्वमेतद्विनाशांतं ज्ञानस्यांतो न विद्यते ।। २१ ।।
तस्माद् ज्ञानेन शुद्धेन प्रशांतात्मा जितेंद्रियः ।
निर्म्ममो निरहंकारोमुच्यते सर्व पापादिभिः ।। २२ ।।

COLOPHON:

इतिश्री महाभारते आश्वमेधिक पर्वणि
गुरुशिष्य संवादे ज्ञानस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

15408

ज्ञानकरण स्तोत्रम्

Jñānakaraṇastotram̐

Folio 8, 8 x 13,Cms, paper, 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- x, Scribe - x, Condition - good.

Author : not mentioned.

The Work :

BEGINS :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ब्रह्मोवाच —

मनुष्याणां तु राजानः क्षत्रियोमध्यमोगुणः ।
कुन्जरोवाहनानां च सिंहश्चारण्यवसिनाम् ।। १ ।।
अवि पशूनां सर्वेषां महिस्तु विलवासिनाम् ।
गवां गो वृषभश्चैवस्त्रीणां पुरुष एव च ।। २ ।।

ENDS :

निर्द्वन्दो र्निनमस्कारो निःस्वाहाकार एव च ।
अचलश्च निकेतश्च क्षेत्रज्ञः सपरोक्षवित् ।। ४१ ।।

COLOPHON :

इत्याश्वयमेधिके पर्वणि गुरूशिष्य संवादे ज्ञानकरण स्तोत्रं सम्पूर्णम् शुभम् ।

विविध
Miscellaneous

8200

पाखण्डचपेटिका

Pākhaṇḍacapetikā

Foll- 19 , 10.5 x 24 cms, paper , 10 to 11 lines on a page , Devanāgarī Script , Age -1876 saka samvat , Scribe - Devaśaṃkar, Condition- good, worm eaten .
Author : Vijayarāmācārya
The Work :

।। श्रीगणेशाय नमः ।।
विश्वं चरी कीर्ति विभुः स्वलीलया तथा वरी
भर्त्यखिलं सनातनः ।
यः सजरीहर्त्ति क्लांत विग्रहस्तं सर्वभूताश्रयमानतोस्मि् ।। १ ।।
श्रीमद्विजयरामाख्यः पाखण्डचपेटिकाम्
आचार्य कुल संभूतस्तनोति विदुषां मुदे ।। २ ।।

ENDS :

आत्मज्ञानालये तस्माद्यतितव्यं नरोत्तमै ।। ४२ ।।
सर्वे ते सुखिनः संतु प्रसादात्कमलापतेः ।
ये भजन्ति महाविष्णुं सम्प्रदायानुसारतः ।। ४३ ।।
इति मदीयं साहसिकत्वं गुणगृह्वैस्तरिभिरंगी कर्तव्यम् ।

COLOPHON :

इती (इति) श्रीमद्विजयरामाचार्य विरचिता पाखण्डचपेटिका समाप्ताः ।। श्रीरस्तु श्रीः ।। सम्वत् १८७६ शाके १७ .... मिति फाल्गुन कृष्णदशम्यां १० सोम्य (सोम) वासरे द्विवेदी देवशंकरेण ।। श्री ।।

8212

अनेकतन्त्रसंग्रहीततन्त्रसारः

Anekatantrasaṃgrahītatantrasāraḥ

Foll- 762, 10.5 x 28 Cms, paper, 6 to 7 lines on a page, Devanāgarī Script, Age- 1996 samvat, Scribe- Cakradhara sarmā , Condition- good.
Author : Śri kṛṣṇānanda Bhaṭṭācārya
The Work :

BEGINS:

॥ ॐ नमो गणेशाय ॥
नत्वा कृष्णापदद्वन्द्वं ब्रह्मादिसुरवन्दितम् ॥
गुरूंचज्ञानदातारं कृष्णानन्दनं धीमन्तं ॥ १ ॥
तत्तद्ग्रन्थ कृताद्वाक्यान्नानार्थप्रतिपत्तये च ।
सौकर्य्यार्थं तत्र च संक्षेपात्तन्त्रसारः प्रतन्यते ॥ २ ॥
उच्यते प्रथमं तत्र लक्षणं गुरुशिष्ययोः ।
शान्तोदान्तः कुलीनश्च विनीतः शुद्धवेशवान् ॥ ३ ॥
शुद्धाचारः सुप्रतिष्ठः शुचिर्दक्षः सुबुद्धिमान् ।
आ .... मी ध्यान निष्ठश्च मन्त्रतन्त्र विशारदः ॥ ४॥

COLOPHON :

इति महामहोपाध्याय श्रीकृष्णानन्दभट्टाचार्य विरचित तंत्रसारः समाप्तः शुभमस्तु शकाब्दा १६१४ श्रीरामचन्द्र शर्मणा तदेतत् श्रीचक्रधर शर्मणा लिखितं तिरहुताक्षरादानीयदेवाक्षरं शाके १८६१ संवत् १९९६ पौष अमायां कुजे प्रातः काले ग्रामे मोहिउद्दीननगरे वास्तव्यः शुभं भूयात् लेखकस्य ॥ छः ॥

INDEX

Works

Authors

Commentators

Scribes

Places